अर्थात्

श्रीस्वामी रामतीर्थजी

के

गुरु प्रति लिखित पत्रों का हिंदी अनुवाद

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ।

लखनऊ

जून] द्वितीय संस्करण [१९३७

मूल्य

साधारण संस्करण, बिना जिल्द १) } { विशेष संस्करण, सजिल्द १॥)

Printed by B. Dularelal Bhargava at the Ganga Fine Art Press Lucknow

शुभ समाचार

यों तो श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ, समय-समय पर अधिकारी सज्जनों व धार्मिक पुस्तकालयों में यथाशक्ति अपनी पुस्तकें बिना दाम अथवा आधे दाम पर बाँटती ही है, किंतु धर्ममूर्ति सज्जनों को इस धर्मकार्य में हाथ बटाने का शुभ अवसर देने के लिये लीग ने यह निश्चय किया है कि जो सज्जन इस शुभ उद्देश्य से स्थायी रूप से जितनी रकम लीग के पास जमाकर देंगे, लीग उसके ब्याज से (जो अधिक-से अधिक ॥) प्रति सैकड़ा तक होगा) प्रतिवर्ष उनके नाम से पुस्तकें बिना दाम लिए अधिकारी सज्जनों व सार्वजनिक पुस्तकालयों में निरंतर वितरण करती रहेगी। आशा है, धर्ममूर्ति महानुभाव प्रसन्नतापूर्वक इस शुभ कार्य में हाथ बटायेंगे और इस रीति से यश व पुण्य दोनों के भागी होंगे।

भवदीय

मंत्री, श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ।

परम हंस स्वामी रामतीर्थ

अमरीका (अध्ययन गृह में) १९०१

SWAMI RAMA TIRTHA

(In study room)

America

निवेदन

बड़े हर्ष की बात है कि आज राम ग्रन्थावली के १७ व १८ भागों की पुनरावृत्ति जनता के सम्मुख रख रही है। उक्त भागों में परमहंस स्वामी राम के लगभग समस्त पत्र, जो उस समय तक प्राप्त हुए थे, राम भक्तों के सम्मुख रखे गये थे। उनकी संख्या उस समय २७२ थी, जिनमें से २६४ गुरु भक्त धनाराम के नाम थे और शेष ८ अन्य प्रेमियों के पास लिखे गये थे। इस नवीन आवृत्ति के प्रकाशन के पूर्व अकस्मात् एक उर्दू आवृत्ति प्राप्त हुई, जिसका उल्लेख भूमिका में किया गया है। उक्त उर्दू आवृत्ति में ११०० से ऊपर पत्र हैं और यह सब ही गुरु भक्त धनारामजी के नाम हैं। पत्रों की संख्या सौभाग्यवश बढ़ जाने से हमने अल्वाये-कुहसार का भाग, जो पूर्व राम-पत्र में दिया गया था, पृथक कर दिया है। और इसी कारण स्वामी राम ने जो पत्र अन्य प्रेमियों को लिखे थे, वे भी इस नवीन संस्करण में नहीं दिये गये हैं, यद्यपि खेलोपदेश की तीसरी जिल्द के निवेदन में उनके यहाँ देने का विचार प्रकट किया था। अब ये सब अन्य पत्र रामकृपा से खेलोपदेश के किसी दूसरे भाग में प्रकाशित किये जायेंगे। यद्यपि इस आवृत्ति में अल्वाये-कुहसार के लगभग १०० पृष्ठ व अन्य पत्र नहीं दिये गये हैं और केवल गुरुजी के नाम लिखित पत्र ही सम्मिलित किये गये हैं, तथापि पृष्ठों की संख्या पूर्व आवृत्ति से लगभग १५० बढ़ गई है। परन्तु जन साधारण का विचार रखते हुए मूल्य पर्ववत् साधारण संस्करण का १) व विशेष संस्करण का १।।) ही रखा गया है। यहाँ पर यह बतला देना उचित होगा कि राम के निज शब्द बड़े टाइप में दिये गये हैं और सम्पादक के शब्द छोटे टाइप में।

पत्रों के अवलोकन से मालूम होता है कि हमारे राम अपने गुरुजी को प्रति दूसरे या तीसरे दिन पत्र लिखा करते थे। और श्रीमान् आर० एस० नारायण स्वामीजी की भूमिका से यह भी स्पष्ट है कि गुरुजी अपने भक्तों को वे पत्र समय-समय पर दे देते थे, अतः संख्या ११०० से ऊपर होते हुए भी अभी सम्पूर्ण नहीं कही जा सकती। क्या ही अच्छा हो, यदि राम-प्यारे इस बात का यत्न करें कि जहाँ कहीं भी राम-लिखित पत्र हों, लीग के पास भेज दें जिससे जो कमी है, वह भी यथा सम्भव पूर्ण हो सके।

इन पत्रों के पढ़ने से राम-प्रेमियों को राम के हार्दिक जीवन का एक मूर्तिमान् चित्र मिल सकता है। राम भगवान् को अपने आरम्भिक जीवन में जिन जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिन परिस्थितियों से युद्ध करना पड़ा, जैसे उनके भावों की दशा थी, और जिस प्रकार उनके मानसिक जीवन की वृद्धि हुई, इन सब बातों का सच्चा इतिहास इन पत्रों के अन्तर्गत है। जो स्वामी राम के जीवन का पूरा पता लगाना चाहते हैं, जो स्वयं आशा-निराशा के पाश से मुक्त होकर संसार क्षेत्र में राम समान होने के इच्छुक हैं, उनके लिये राम-पत्र किसी धार्मिक ग्रन्थ से किसी बात में कम नहीं। आशा है रामोपदेश-प्रेमी इस आवृत्ति को शीघ्र हाथों हाथ लेकर लीग का उत्साह बढ़ायेंगे।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

जून, १९१७ } मंत्री
श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ

——o——

श्रीनारायण स्वामी

(शिष्य श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज)

R S. NARAYANA SWAMI

(Chief disciple of Swami Rama Tirtha)

ॐ

भूमिका

(द्वितीय संस्करण)

लगभग १५ वर्ष हुए उर्दू राम-पत्र के हिंदी अनुवाद का संपादन-कार्य मेरे सिपुर्द हुआ था, जिसे नवंबर, १९२२ में श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ने पुस्तकाकार में प्रकाशित किया था। उस आवृत्ति की भूमिका में यह स्पष्ट कर दिया था कि इन थोड़े से रामपत्रों के पाने में मुझे किन किन कठिनाईयों का सामान पड़ा और किस रीति से मैं इन को उर्दू में प्रकाशित करा सका। अब रामकृपा से न वह समय रहा और न वैसी कठिनाइयाँ ही रहीं। इसलिए पहले की अपेक्षा अब सुगमता से यह कार्य समाप्त हो सका।

ब्रह्मलीन श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज के गृहस्थाश्रम के गुरु भगत धन्नारामजी, जिनके नाम ये समस्त पत्र स्वामी राम ने बाल्यावस्था से देहत्याग पर्यंत लिखे थे, देहान्त से पूर्व अपनी सारी संपत्ति बेचकर यह वसीयत कर गये थे कि उक्त पत्र बिना कुछ घटाये बढ़ाये जैसे के तैसे प्रकाशित किये जायें। तदनुसार उस वसीयत के ट्रस्टियों ने उक्त पत्र कुछ वर्ष हुए उर्दू में प्रकाशित करके वितरण किये। उस आवृत्ति की कुछ कापियाँ उन्होंने प्रेम पूर्वक मेरे पास भी भेज दीं। उन समस्त पत्रों को आद्योपांत पढ़ने से जो आनंद प्राप्त हुआ वह लेखनी की सीमा से बाहर है और उनसे जो उपदेश मिल रहे हैं उनका जितना भी वर्णन किया जाय वह थोड़ा है।

पहली आवृत्तियों में केवल २७२ पत्र थे, और वे भी अपूर्ण, क्योंकि जिस पत्र में जो अंश प्राइवेट या व्यक्तिगत पाया गया अलग कर दिया गया था।

परंतु इस नवीन उक्त उर्दू आवृत्ति में पत्र ११०० से ऊपर पाये गये और वे भी पूरे के पूरे, कोई अंश किसी भी पत्र का नहीं छोड़ा गया था।

इस नवीन आवृत्ति के निकलने के बाद यह विचार हो रहा था कि हिंदी में भी ये समस्त पत्र प्रकाशित कर दिये जावें। आज यह देखकर हर्ष हो रहा है कि मुझे ही पुनः इस द्वितीयावृत्ति के संपादन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

स्वामीराम प्राय: पत्रों पर तारीख न देकर केवल दिन लिखते थे। उक्त उर्दू आवृत्ति में पत्रों का क्रम डाक की मोहर से रक्खा गया है, और मोहरों के मंद पड़ने से तारीख और सन् में कई जगह भूलें पाई गई हैं। अतः ५० वर्षों के पंचांग मँगवा कर प्रत्येक पत्र के वार के साथ उसकी तारीख का मुक़ाबला किया गया और तदनुसार पत्रों का क्रम रक्खा गया है। जो पत्र बिना डाक मोहर या वार के पाये गये, उनको यथासाध्य विषयानुसार देकर उनके नीचे टिप्पणी दे दी है।

स्वामीराम बहुधा कार्ड लिखते थे, एक ही पत्र कई कार्डों में समाप्त करते थे। उक्त उर्दू-आवृत्ति में पत्रों की संख्या कार्डों की संख्या के अनुसार है। पर हमारी संख्या पत्र-संख्या के अनुसार है। अत: हमारी पत्र-संख्या कुछ कम दीखती है। पर है वास्तव में अधिक, क्योंकि हमने उन पत्रों को भी दे दिया है जिनकी असल अब नहीं मिलती, किंतु जो पहली हिंदी-आवृत्ति में उद्धृत हैं। हमें कुछ पत्र औरों से भी मिले हैं, जो भगवती ने अपनी यादगार में उन्हें दिये थे। वे भी इसमें सम्मिलित हैं। अब सब रामप्यारों से नम्र निवेदन है कि जिस किसी के पास कोई पत्र स्वामीराम का लिखा हुआ हो, हमें कृपापूर्वक भेज दें। यदि वे चाहेंगे तो हम रजिस्टरी द्वारा उन्हें लौटा देंगे। जिन सज्जनों का नाम इन पत्रों में आया है, उनसे भी सविनय प्रार्थना है कि वे राम संबंधी अपना पूर्ण परिचय दे कर कृतार्थ करें और स्वामीराम के विषय में जो कुछ उनका अनुभव या जानकारी हो उसे लिखकर हमें अनुगृहीत करें, जिससे स्वामीराम की जीवनी पर अधिक प्रकाश पड़ सके।

जून, १८१७ आर, एस, नारायणस्वामी

ॐ

भूमिका

(प्रथम संस्करण)

बहुत काल से यह विचार उमड़ रहा था कि अपने परमात्मस्वरूप ब्रह्मलीन श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज की जीवनी का सविस्तर परिचय जनता को दिया जाय। पर कई कारणों से यह विचार अब तक ठीक-ठीक पूर्ण न हो सका। प्यारे सरदार पूर्णसिंहजी ने भी अपनी आँखों देखे समाचारों को इस जीवनी में प्रकाशित करने के लिये भेजने का वचन दिया था, पर वह भी कई कारणों से न भेज सके। इसलिये आज तक पूर्ण विस्तार के साथ पूज्य स्वामीजी की जीवनी न प्रकाशित हो सकी। केवल संक्षिप्त जीवनी सन् १९१० में रामवर्षा भाग द्वितीय की प्रस्तावना में दे दी गई थी।

इस संक्षिप्त जीवनी के प्रकाशित होने के बाद सन् १९११ में पता लगा कि श्रीस्वामी रामतीर्थजी के पूर्वाश्रम के गुरु भगत धन्नारामजी महाराज के पास राम के हस्त-लिखित पत्र ११०० से ऊपर की संख्या में मौजूद हैं, जिनसे राम के हृदय की क्रमशः उन्नति, गति व स्थिति का परिचय स्पष्ट मिल सकता है, और जो पत्र वास्तव में राम की सच्ची-सच्ची जीवनी व आत्मवृत्तांत (autobiography) का फ़ोटो हो सकते हैं।

इतना मालूम होते ही लेखक तुरंत गुजराँवाले नगर में जाकर भगतजी की सेवा में उपस्थित हुआ, और राम के पत्रों को देखने की जिज्ञासा प्रकट की। बहुत टाल-मटोल के बाद अन्त में भगतजी ने कृपापूर्वक एक मट्टी का घड़ा सामने रख दिया, जो पत्रों से लबालब भरा हुआ था। भगतजी उन पत्रों को अपने घर से बाहर ले जाकर पढ़ने की आज्ञा कदापि नहीं देते थे,

अतएव वहीं उनके सामने सब पत्रों को वर्ष, मास और तिथि के अनुसार कई दिन तक छाँटकर क्रमशः पढ़ना आरंभ किया। उनमें से लेखक ने लगभग २७० पत्र प्रकाशनार्थ चुने। इसने पत्रों को भी बाहर ले जाकर छपवाने की आज्ञा भगतजी नहीं देते थे। लेखक की पुनः-पुनः प्रार्थनाओं पर और उससे प्रतिज्ञा-पत्र लेकर उन पत्रों की केवल नक़ल करने की आज्ञा भगतजी ने अपने बहुत प्यारों के कहने पर कठिनता से कुछ काल के लिए दी। इस पर भी जब नियत काल से किंचित् विलम्ब सा हो गया, तो झट भगतजी स्वयं देहली में आये और पत्रों की नक़ल होते ही उन्हें वापस ले गये। इस तरह सन् १९१२ में उर्दू भाषा में राम के उक्त पत्र लेखक से संपादित होकर प्रकाशित हो सके। आज धन्यवाद का समय है कि इतने काल के बाद इनका हिंदी-अनुवाद भी पुनः लेखक से संपादित होकर प्रकाशित हो रहा है।

इस समय भी भगतजी से बार-बार प्रार्थना की गई कि वह कृपया असली पत्रों को तथा स्वामीजी की जन्म-पत्री इत्यादि आवश्यक वस्तुओं को थोड़े काल के लिये भेज दें, जिससे यह हिन्दी प्रति पहले से भी अधिक सविस्तर और बाद देख-भाल के छपे, और श्रीस्वामी राम की जीवनी पर उनकी ओर से भी कोई टिप्पणी दी जा सके। पर भगतजी ने एक न मानी और सब प्रार्थनाएँ निष्फल कर दीं, जिससे लाचार होकर उर्दू राम-पत्र का केवल अनुवाद-मात्र ही हिन्दी-जनता की भेंट करना पड़ा। ईश्वर भगतजी के चित्त में उदारता उत्पन्न करें और राम की जीवनी के कार्य को सफल करने में वह इस विषय में हम सब लोगों से अधिक उत्सुक हों। ॐ तथास्तु।

भवदीय
आर॰ एस॰ नारायण स्वामी

ॐ

भगत धन्नारामजी

की

संक्षिप्त जीवनी

भगत धन्नारामजी, जिन्हें तीर्थरामजी के बचपन (बाल्यावस्था) में ही उनके गुरु होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जाति के अरोड़ा और असल में मनोचे थे। भारत में (विशेष कर पंजाब में) यह जाति अपने को क्षत्रिय-वंश से निकली मानती है। पर जिन खिन नगरों में यह जाति क्षत्रिय मानी जाती है, वहाँ-वहाँ भी उच्च या उत्तम श्रेणी के क्षत्रियों में इसकी गणना नहीं होती, बल्कि क्षत्रिय-वंश के अन्तर्गत खत्रियों से भी कुछ नीचे मानी जाती है, और द्विजों (ब्राह्मणों) से तो कई ही गुना नीचे समझी जाती है।

तीर्थरामजी जाति के ब्राह्मण और उत्तम कुल के गोस्वामी थे, जो पंजाब में द्विजों के गुरु-घराने से प्रसिद्ध है। ऐसी उत्तम द्विजकुल की सन्तान का गुरु बनना भगत धन्नारामजी के लिये कुछ कम सौभाग्य का अवसर नहीं था। इसलिए ऐसी अवस्था में यदि वह बड़े भारी भाग्य शाली कहे या समझे जायँ, तो अनुचित न होगा।

भगत धन्नारामजी के पिता का नाम लाला जवाहरमल था। भगतजी का जन्मकाल कार्तिक संवत् १६०० बतलाया जाता है। भगतजी के जन्म लेने के कुछ मास पश्चात् ही उनकी पूज्य माता का देहान्त हो गया,

अर्थात् भगतजी अभी किञ्चित् सचेत भी होने न पाये थे कि उन्हें अपनी परम प्यारी माता के प्रेम-भरे आँचल से सदा के लिये पृथक हो जाना पड़ा और माता की प्रेम-भरी गोद देर तक नसीब न हुई।

इस छोटी सी आयु में भगतजी को उनकी प्रेम भरी भूआ (पिता की भगिनी) और दादी ने पाला-पोसा। बाल्यावस्था में वहाँ की रीति-रिवाज के अनुसार वह पाधा के पास पढ़ने को बिठाये गये, अर्थात् हिन्दी या देशी भाषा की पाठशाला में प्रविष्ट किये गये। दो चार वर्ष तक निरन्तर उन्होंने वहाँ लण्डे (सराफी अक्षर जिससे दुकानदार लोग अपना हिसाब-किताब लिखते और पत्र-व्यवहार करते हैं) और देशी हिसाब-किताब खूब सीखा, मानों दुकानदारी के हिसाब-किताब में अच्छे दक्ष (प्रवीण) हो गये।

भगतजी के मुखारविन्द तथा गुसाईं तीर्थरामजी की अपनी नोटबुक से मालूम हुआ कि बाल्यावस्था में ही भगतजी बड़े होनहार और करामाती थे। उनका पाधा जब लड़कों को छुट्टी दिया करता था, तो वह प्रायः कुछ होनहार लड़कों को गणित के कुछ प्रश्नों को मुखाग्र पूछने के लिये रोक लिया करता था, और जो लड़का उसके प्रश्न का पहले उत्तर देता, उसे तत्काल छुट्टी मिल जाती और शेष लड़के तत्पश्चात् बारी बारी छुट्टी पाते थे। प्रत्येक बार भगतजी ही इन प्रश्नों के उत्तर देने में प्रथम रहते और सब लड़कों से पहले छुट्टी पाया करते थे, मानों अपने सब सहपाठियों में प्रथम थे।

एक बार सहपाठियों ने परस्पर मिलकर भगतजी पर कोई झूठा दोष आरोपण करना चाहा, ताकि भगतजी सबसे पहिले घर जाने न पावें। इस प्रकार एक विद्यार्थी ने भगतजी के विरुद्ध एक झूठी शिकायत की और शेष सब विद्यार्थियों ने उसका समर्थन किया। इस पर पाधाजी ने दूसरे लड़के से भगतजी की पीठ पर पाँच थप्पड़ जोर से लगवाये, जिनके चिह्न बहुत काल तक उनके शरीर पर बने रहे। पाधाजी का

नाम बारी पाधा था। चूँकि यह सब दण्ड भगतजी को बिना अपराध और बिना ठीक-ठीक जाँच के मिला था, इसलिए वह हताश चित्त से घर पहुँचे। और घर में प्रविष्ट होते ही रोकर अपने पिताजी से यों कहने लगे—"देखा ! बारी पाधाजी ने बिना किसी अपराध के नाहक सख्त चपत दूसरों से मेरी पीठ पर लगवाये हैं, इसलिये मैं भविष्य को पाधे (पाठशाला) में कभी नहीं जाऊँगा। यदि आप मेरा इस पाठशाला में जाना बन्द कर देंगे, तो मैं घर में रहूँगा, अन्यथा नित्य के लिये घर से बाहर चला जाऊँगा।" इस पर पिता ने उन्हें सन्तुष्ट किया और प्रतिज्ञा की कि "हम तुम्हारा पाधे (पाठशाला) जाना नितान्त रोक देंगे, तुम घर से बाहर कहीं मत जाओ।" तदनुसार भगतजी का पाधे जाना बिल्कुल बन्द हो गया।

पाठशाला जाना तो बन्द हो गया, पर जैसा भगतजी का अपना कथन है, उस अनपराधी को अन्यायपूर्वक दण्ड देने का फल पाधाजी को यह मिला कि उसका बड़ा पुत्र शीतला के रोग से ग्रस्त होकर मर गया, और तत्पश्चात् पाधा के शेष पुत्र भी बारी-बारी एक के बाद दूसरे उसी रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गये। फिर उनकी प्यारी अर्धांगी भी परलोक सिधार गई, और अर्धांगी की मृत्यु के थोड़े काल पीछे आप स्वयं भी स्वर्गवास हो गये। तात्पर्य यह कि दो मास के भीतर भीतर ही पाधाजी का सारा वंश नष्ट हो गया।

इन्हीं दिनों में गुजराँवाले के एक और धनाढ्य पाधा रत्न ने भी अपने पुत्र के कहने पर भगतजी को बिना उनके अपराध के मारा था, जिसका फल उन्हें भी यह मिला कि पाधाजी का इकलौता पुत्र (सर्वदयाल) हैज़ा (विषूचिका) की बीमारी से मर गया। और शेष वंश का भी यही हाल हुआ, जो बारी पाधा के वंश का हुआ था।

पाधे से उठने अर्थात् पाठशाला छोड़ने के बाद भगतजी को उनके

पिता ने ठठेरे (कसेरा) का काम सीखने के लिए एक अच्छे अभ्यासी (प्रवीण) ठठेरे के सिपुर्द कर दिया। थोड़े काल के भीतर ही भगतजी ने उस काम में अच्छी मुहारत हासिल कर ली और अपनी रोटी (जीविका) कमाने के योग्य हो गये। उन्हीं दिनों में भगतजी को व्यायाम और कुश्ती से बड़ी रुचि थी। सायंकाल जब ठठेरे के कार्य से अवकाश पाते, झट अखाड़े में पहुँच जाते और वहाँ प्रत्येक प्रकार का व्यायाम करते थे। जो रुपया या सवा रुपया प्रतिदिन कमाते वह सब इसी पहलवानी (मल्ल-युद्ध) में खर्च कर देते थे। इस प्रकार जब युवावस्था को पहुँचे, अर्थात् जब वह लगभग १६ वर्ष के हुए, तो एक बार वैशाखी के मेले पर पञ्जाब के कटासराजतीर्थ की यात्रा को गये। यह तीर्थ भारतवर्ष का नेत्र कहलाता है, और पिंडदादनखाँ नगर से लगभग १५ मील की दूरी पर है। वैशाखी के दिन हिन्दुओं का मेला यहाँ बड़ी धूम-धाम से लगता है और इस मेले पर अनेक साधु-महात्मा आते हैं। इस तीर्थ यात्रा का समाप्त करके भगतजी जब कटासराज से पिंडदादनखाँ को वापिस आये तो उनका चित्त वहाँ ही रह जाने को चाहने लगा। और वहाँ ठठेरे का काम अधिक देखकर उन्होंने उसी व्यवसाय की दुकान खोल ली, और स्थायी रूप से वहाँ बसना शुरू कर दिया।

इस नगर (पिंडदादनखाँ) में कुश्ती (मल्ल-युद्ध) का रिवाज नहीं था। वहाँ केवल मुगलियों और मुगदर इत्यादि से व्यायाम करते थे। भगतजी इस कुश्ती के व्यवसाय में अति निपुण तो थे ही, अपने अभ्यास (शौक़) के कारण इस नगर में भी कुश्ती (मल्ल-युद्ध) का रिवाज डाल दिया और इस काम के लिये एक बड़ा अखाड़ा बनवा डाला। इस अखाड़े में वह आप भी प्रतिदिन मल्ल-युद्ध करते और कई एक अन्य युवकों को भी खूब वर्जिश कराते थे। इनकी देखादेखी इनके अखाड़े की तर्ज़ पर उस नगर में कई एक और अखाड़े भी बन गये।

थोड़े काल के बाद उन्हें एक बड़े शक्तिशाली मल्ल (पहलवान) से मल्ल-युद्ध करना पड़ा। यह मल्ल भगतजी से द्विगुणे क़द का और मोटा-ताज़ा था, तथापि अखाड़े में भगतजी ने उसे खूब पिछाड़ा। और एक घंटे के अंदर अंदर चित कर दिया। यह आश्चर्यजनक जीत भगतजी को शारीरिक बल से नहीं हुई थी, बल्कि जैसा उन्होंने स्वयं वर्णन किया, यह सब परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखने का परिणाम था।

इस युवावस्था में भगतजी जैसे कि बलवान् और पहलवान (मल्ल) थे, वैसे ही चित्त के बड़े शूरवीर और उदार थे। जो कुछ कमाते वह कुछ तो स्वयं खाते और बहुत सी रकम साधु महात्माओं की सेवा में खर्च कर देते थे। और इरादे (संकल्प) या हठ के भी इतने पक्के थे कि मन में जो ठान लेते, उसे जरूर निभाकर दिखा देते थे। इस पक्के इरादे की मदद से उन्होंने ऐसे ऐसे अजीब स्वभाव डाल लिये कि जो दूसरों का आश्चर्यित किए बिना न रहते। दृष्टान्त रूप से कितने समय तक वह केवल पाखाने जाते और पेशाब (लघुशंका) कदापि न जाते थे। ऐसे ही भोजन करते तो पानी नितान्त न पीते थे। एक बार ऐसा स्वभाव डाला कि दिन भर हँसते ही रहे, और फिर ऐसा मौन साधा कि नितान्त चुप रहे। कभी शीतकाल में नितान्त कपड़े न पहन कर नंगे तन जीवन व्यतीत करने लगे, और कभी गरम ऋतु में कपड़ों के भार से अपने को लाद लिया करते। तात्पर्य यह कि अपने अत्यन्त विचित्र स्वभाव भगतजी डाले हुए थे, जिनसे उनके संकल्प की दृढ़ता का काफी प्रमाण मिलता है।

बाल्यावस्था में ही भगतजी की रुचि कथा सुनने की थी। जहाँ कहीं कथा होती, वहाँ वह अपने साथियों समेत जाते, और जब उनके साथी कथा के समय बातचीत करते या शोर मचाते, तो भगतजी उनको चुप करा देते थे; बहुत ध्यान से आप कथा सुनते और दूसरों को भी चित्त लगाकर सुनने के लिये कहते थे। संक्षेप से यह कि उनकी रुचि धर्म के

कार्यों में पहिले ही से थी। और प्रेम व भक्ति की कथा से उनके चित्त पर इतना प्रभाव पड़ता था कि एक बार रासमण्डल में सुदामा भक्त की बेपरवाही और उस पर कृष्ण महाराज की अधीनता को देखकर उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आये।

इसी प्रकार जब एक ओर से शारीरिक बल और दूसरी ओर से चित्त की कोमलता, निर्मलता व दृढ़ता में उन्नति पाने लगे, तो भगतजी में कविता लिखने की योग्यता (शक्ति) प्रकट होने लगी। जब किञ्चित् भी वह समाहित चित्त होवें तो झट कविता उनके मुख से बिना यत्न निकल पड़ती। इन्हीं दिनों उनकी लेखनी से दो सीहरफ़ियाँ (कवितायें) निकली थीं, जिनके विषय में गोस्वामी तीर्थराम(पीछे स्वामी रामतीर्थ)जी अपनी लेखनी से यों लिखते हैं—"यद्यपि इन सीहरफ़ियों (कविताओं) के पद्य में मधुर स्वर और छन्द (Metre and Bright muse) इत्यादि अधिक नहीं हैं, तथापि प्रशंसनीय बात यह है कि इनमें परिश्रम का तो नाम तक भी खर्च नहीं हुआ, जैसा कि अन्य कवियों के विषय में देखा जाता है। दृष्टान्त रूप से फ़िरदौसी को लीजिये कि तीस वर्ष में केवल साठ हज़ार कविता बनाने पर भी, जिनका परिमाण (अन्दाज़ा) पाँच या छै पद्य प्रतिदिन होता है, फिर भी उनमें यह गुण या लक्षण नहीं पाये जाते।"

इन्हीं दिनों भगतजी को योगवाशिष्ठ की कथा सुनने का समागम हुआ, जिससे उन्हें प्रथम ही प्रथम यह पता लगा कि "मनुष्य सब कुछ कर सकता है और यह कि जीव वास्तव में ब्रह्मरूप है।" इस रहस्य को पाते ही भगतजी प्रत्येक को कभी सुन्दर, कभी ईश्वर, कभी ब्रह्म के नाम से पुकारते, और लोग उनको भी इन्हीं नामों से बुलाते थे। उस समय के परिचित लोग अभी तक भगतजी को ईश्वर (खुदा) के नाम से पुकारते हैं।

इस प्रकार बातचीत में तो वह यद्यपि प्रत्येक को ईश्वर के नाम से पुकारते या स्वयं भी ईश्वर कहलाते थे, पर भीतर की आँख (हृदय-नेत्र) पूर्ण रूप से खुली नहीं थी, अर्थात् उक्त रहस्य का पूरा-पूरा साक्षात्कार अभी तक हुआ नहीं था। इसलिये उनके चित्त में समय समय पर अशान्ति सी बनी रहती थी। और जब पिंडदादनखाँ में बहुत काल रहने पर भी किसी से उनके चित्त की शान्ति न हुई, तो फिर वह उस नगर को छोड़कर शान्ति(आनन्द) की ढूँढ में गुजराँवाले आये, और यहाँ उनको कुछ महात्माओं के दर्शन हुए। भगतजी को बड़ा अशान्त व अस्थिर चित्त देखकर एक महात्मा ने पूछा कि "ऐ प्यारे! तुम विस्मित और अशान्त क्यों और किसलिये हो?" भगतजी ने सविनय उत्तर दिया—"महाराज! सांसारिक सुख के सब साधन तो प्राप्त हैं, पर चित्त फिर भी अस्थिर और अशान्त रहता है।" महात्माजी ने कहा कि "मन को तुम अपने साक्षी आत्मा में स्थिर करो।" उसी वक्त भगतजी ने मन को अपने स्वरूप के ध्यान में लगाया और (भगतजी के कथनानुसार) उनका मन इस ध्यान में ऐसा लीन हो गया कि तीन चार घंटे तक उनको किसी प्रकार की सुध-बुध न रही। जब चार घंटे के बाद मन ध्यान से उतरा, तो महात्माजी को सामने उपस्थित न पाया। तब भगतजी ने साथ के दुकानदार से पूछा तो उत्तर मिला कि "आप तो चार घंटे के बाद होश में आये हैं, और महात्माजी तो केवल थोड़ी देर बैठ कर चले गये थे। हम हैरान (विस्मित) हैं कि आप इतनी देर तक कैसे लीन व समाहित चित्त बैठे रहे।" यह उत्तर सुन कर भगतजी खुश हुए और महात्मा के चले जाने का किञ्चित् शोक न किया, बल्कि दिल में यह विचार जमाने लगे कि "चलो, अब मन के एकाग्र करने का उपाय तो अच्छी तरह आ ही गया है, अब किसी और बात की हमें परवाह नहीं।" तब से भगतजी एकाग्रचित्त रहने के बड़े उत्सुक हो गये,

और प्रतिदिन नियमपूर्वक अभ्यास में बैठने लगे। इस प्रकार अभ्यास करते करते उन्हें थोड़ा ही काल बीता था कि उन महात्माजी के पुनः दर्शन हुए, जिनकी आज्ञानुसार चलने से उनका चित्त समाहित हो गया था। अब तो भगतजी उनके साथ हो लिये और उनके सहचारी बन कर जंगलों में जाकर खूब एकान्त अभ्यास करने लगे।

अधिकतर अभ्यास भगतजी को अनाहत शब्द का रहता था। जब जंगलों में उक्त महात्माजी की संगति देर तक की और एकान्त अभ्यास खूब किया, तो उन्हें मन वाणी की कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो गईं, अर्थात् जिसको वह जो कुछ कहते या जिसके विषय में जैसा भी ख्याल करते, वह तत्काल पूरा हो जाता था, और जिस किसी को वह कोई शाप देवे, वह भी तत्काल फल ले आता था। तत्पश्चात् भगतजी जंगल को छोड़कर अपने सांसारिक घर (गुजराँवाले) में आ गये, और शनैः शनैः इन सिद्धियों के कारण अपने नगर में प्रख्यात होने लगे।

लगभग इन्हीं दिनों में गोस्वामी तीर्थरामजी को उनके पूज्य पिताजी गुजराँवाले हाईस्कूल की स्पेशल क्लास (Special class) में पढ़ने के लिये अपने परम मित्र भगत धन्नारामजी के निरीक्षण में छोड़ गये। भगतजी की अनोखी व निराली प्रकृति और वाणी की सिद्धियों ने भोले भाले बालक तीर्थरामजी के चित्त पर कुछ अजीब प्रभाव डाला। भगतजी से वह ऐसा डरने लगे जैसे साक्षात् परमेश्वर से कोई आस्तिक पुरुष डरता है, और प्रतिदिन भगतजी की वाणी की सिद्धि और अन्य गुणों को देख कर बालक तीर्थरामजी के चित्त में यह ख्याल पक्का जम गया कि भगतजी साक्षात् ईश्वर का अवतार हैं।

भगतजी यद्यपि सर्वसाधारण की दृष्टि में जाति के अरोड़े और छोटे व्यवसायवाले ठठेरा थे, पर तीर्थरामजी के चित्त को यह परम ज्ञानी और भगवान् के साक्षात् अवतार मान होते थे। भगत धन्नाराम की

जीवनी के विषय में जो नोट गोस्वामी तीर्थरामजी ने अपनी नोटबुक में दर्ज कर रक्खे हैं, उनसे स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि गोस्वामीजी अपने गृहस्थाश्रम के समय भगतजी को केवल अपना गुरु ही नहीं मानते थे, बल्कि साक्षात् ईश्वर का अवतार भी उन्हें समझते थे। और यह गुरु-शिष्य-भाव गोस्वामीजी के चित्त में तब तक ही बना रहा, जब तक उनके भीतर निजानन्द ने अपना रंग व सिक्का जमाना शुरू नहीं किया था। जब अनन्य गुरु-भक्ति से अन्तःकरण शुद्ध होकर तीर्थरामजी के चित्त में निजानन्द तरंगायित हुआ, तो फिर कहाँ का गुरु और कहाँ का चेला, कहाँ का ईश्वर, और कहाँ का ईश्वर-अवतार, सबके सब द्वैत ख्याल स्वतः दुम दबाये अपने-अपने घोंसलों (आसनों, विश्राम-स्थानों) में छुप गये। और छुपे भी ऐसे कि नितान्त शश-शृंगवत लुप्त हो गये। स्वामी राम के चित्त की यह उन्नति का क्रम उनके अपने पत्रों से स्पष्ट विदित हो रहा है, और पाठकों को पूर्ण निश्चय दिला रहा है कि जब तीर्थरामजी का चित्त निजानन्द में तरंगायित होने लगा तो फिर प्रति दिन भगतजी को पत्र लिखने स्वतः बन्द हो गये। और कभी कभी भगतजी के पत्र के उत्तर में यदि कुछ लिखा भी जाता, तो वह उपदेश के रूप में निकलता, गुरु-शिष्य के भाव से या भगतजी से किसी प्रकार के उपदेश या आज्ञा की आशा रखते हुए नहीं लिखा जाता था। प्रथम तो पत्र लिखने ही बंद हो गये। द्वितीय यदि भगतजी के अनेक पत्रों के उत्तर में राम कुछ लिखते भी, तो अति संक्षिप्त या उपदेश-युक्त। दृष्टांत रूप से ८ नवंबर, १८९७ का पत्र लो। जब भगतजी ने तीर्थरामजी से शायद लगातार पत्र न लिखने या प्रत्येक पत्र का उत्तर न भेजने का कारण पूछा, तो राम ने उत्तर दिया कि—" यद्यपि मैंने इतने दिन कोई पत्र नहीं लिखा, पर आपके स्वरूप में लीन रहने के सिवा कोई और काम भी मैंने नहीं किया। जब अपना आप हो गये, तो पत्र किस को लिखें ?"

इस विधि (तारीख़) के बाद तीर्थरामजी के भीतर त्याग और वैराग्य की उमगें जोश मारने लगीं और उन पर हार्दिक संन्यास आच्छादित हो गया। इसके बाद जो पत्र भगतजी को लिखे गये, उनमें या तो भगतजी की युक्तियों और प्रश्नों के प्रबल उत्तर हैं या दिल पर चोट लगानेवाले प्रेम भरे उपदेश, पर किसी प्रकार का सांसारिक उद्देश्य या संबंध उनमें नहीं झलक मारता। इसके अतिरिक्त जो मासिक भेंट सहायता के रूप में पहले भगतजी की सेवा में भेजी जाती थी, जिसे स्वामीजी भूर्च करूँगा या भेंट करूँगा के वाक्य से अपने पत्रों में संकेत करते थे, वह भी भेजना अब स्वतः बंद हो गई। और जब भगतजी ने इस सबका कारण पूछा, तो मार्च सन् १८९९ में उनकी सेवा में रामजी यों लिखते हैं कि—

"भूर्च (निवेदन) यों है कि यहाँ किसी प्रकार का अनुमान तो दौड़ाया नहीं गया। सत्तर से भी एक दो कम रुपये महीने के मिले, उसमें से कौड़ी तो एकत्र करनी नहीं, जा जा आवश्यकताएँ सामने आईं, भुगत गईं। बाक़ी आवश्यकताओं का जवाब देना अर्थात् परे हटाना पड़ा। केवल १२) रुपये घर भेजे गये, जहाँ आठ मनुष्य खानेवाले हैं। गृहस्थों, स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों को अधिक ज़रूरत होती है और साधुओं की अपेक्षा अत्यंत हाजतमंद (इच्छाओं व आवश्यकताओं के दास) होते हैं, जिन साधुओं के लिये मधुमक्खिया के समान अनेक पुष्पों से मधुकरी लाना भूषण है। और जो हो रहा है अति उत्तम और उचित हो रहा है।"

अब अवस्था नितांत उलट गई। गोस्वामी तीर्थरामजी का भगतजी से उपदेश या शिक्षा मिलने के स्थान पर उलटा भगतजी को तीर्थरामजी से उपदेश या शिक्षा मिलने लगे। अर्थात् जो नदी कि पहिले किंचित् सूखी और किंचित् पानी की धारा लिये तीर्थरामजी की ओर बहती थी, वह अब अनंत उपदेशों के जल से परिपूर्ण होकर उलटी भगतजी की ओर बहने

लगी। पञ्जाबी रवायत (आख्यान) के अनुसार "हेठले ऊपर और ऊपरले हेठ हो गए।" अर्थात् जो नीचे थे वह ऊपर और जो ऊपर थे वह नीचे हो गए।

गुरु जो कि था वह तो गुड़ ही रहा।
चले (परंतु) उसका चेला शकर हो गया॥

जिस प्रकार स्कूल में जो लड़के कि अभी प्रविष्ट ही हुए होते हैं, उनको लोअर प्राइमरी (छोटी कक्षाओं) के अध्यापक भारी विद्वान् और ज्ञानी बल्कि देवता नज़र आते हैं। परन्तु जब उनमें से कुछ चतुर (होनहार) लड़के शिक्षा पाते या उसमें उन्नति करते करते हाईस्कूल या कालिज तक पहुँच जाते हैं, तो फिर उनको अपने पूर्व अध्यापकों की योग्यता या विद्या से पूर्ण परिचय मिल जाता है। यद्यपि प्रणाम व नमस्कार करना तो कुछ काल तक पूर्ववत वैसे ही चला जाता है, परंतु भीतरी विचार का रंग ढंग कुछ और ही हो जाता है; और यद्यपि छोटी श्रेणी के अध्यापकों का अहंकार विद्या में उन्नति न पाने के कारण कम नहीं होता (चाहे उनका विद्यार्थी लोअर प्राइमरी से उत्तीर्ण होता हुआ एम्० ए० पास भी क्यों न कर ले), परन्तु विद्यार्थी के चित्त की अवस्था विद्या में उन्नति पाने के कारण नितान्त बदल जाती है। और यदि ऐसा कोई एम्० ए० पास हुआ विद्यार्थी कदाचित् निरीक्षक (Inspector) के पद पर नियुक्त हो जाय और निरीक्षक की अवस्था में वह अपने लोअर प्राइमरी के पुराने अध्यापकों की परीक्षा निमित्त उन छोटी कक्षाओं में आवे, तो उन्हीं अध्यापकों को अपने भूतपूर्व शिष्य के आगे सिर झुकाना पड़ता है। और चाहे वे अध्यापक महोदय निरीक्षक को चित्त से अपना पुराना शिष्य ही समझते हों और अपनी अध्यापकता के अहंकार में फूले न समाते हों, पर वास्तव में प्रत्यक्ष रूप से वे सब अध्यापक उस अपने भूतपूर्व शिष्य के सामने छोटी पाठशाला के अध्यापक ठहरते हैं, और उसके

अधीन होते व सेवक कहलाते हैं। ठीक यही हाल भगतजी और गोस्वामी तीर्थरामजी के विषय में देखा जाता है। जब तीर्थरामजी धार्मिक शिक्षा में अभी कच्चे थे, उस समय नितान्त निराली और अजीब प्रकृति तथा ऋद्धि सिद्धिवाला पुरुष उन्हें पूर्ण महात्मा और भगवान् का अवतार दिखाई देता था, इसी से भगत धन्नारामजी को वह अपना परम गुरु समझते और साक्षात् भगवान् के अवतार के समान उनकी प्रतिष्ठा, पूजा और सेवा करते थे। पर ज्यों-ज्यों इस गुरु-भक्ति से होनहार राम ने आध्यात्मिक और मानसिक शिक्षा में उन्नति पाई, और उन्नति करते करते आध्यात्मिक शिक्षा का एम्० ए० पास कर लिया (अर्थात् निजानन्द में मस्त व मग्न होकर संन्यासी भी हो गये,) और भगतजी अपनी उसी ऋद्धि-सिद्धि की कुरसी पर ही जमे रहे, तो परिणाम यह निकला कि शिष्य महाराज तो विरक्तात्मा और मस्त स्वरूप हुए समस्त जगत के स्वामी या सम्राट् हो गये, और भगतजी जैसे लाखों उनकी मस्ती (निजानन्द) से आकर्षित होकर उनके शिष्य या भक्त हो गये।

यद्यपि भगतजी अपनी पूर्व स्थिति में ही स्थित रहे जिससे राम के समान मस्त व उदार होने न पाये, तथापि उनकी सादगी, संकल्प में दृढ़ता, साहस और बाल-ब्रह्मचारी अवस्था को देखा जाय तो लाखों पंडितों, और महात्माओं से वह कम न थे। और देहान्त से पूर्व तो अपनी सारी सम्पत्ति को बेच कर धर्म कार्यों में लगाने से वह करोड़ों से श्रेष्ठ हो गये। लगभग ८६ वर्ष की आयु में उन्होंने देह त्याग किया और राम के कारण सर्वत्र पूजनीये हो गये। धन्य है उनका जन्म कि जिनके शिष्य राम हुए, और धन्य हैं राम जो भगतजी की छत्रछाया में उन्नति करते करते इस उच्चावस्था को पहुँचे कि अपना व गुरु दोनों का जन्म सफल कर दिया।

आर० एस्० नारायण, स्वामी

आधीन होते व सेवक कहलाते हैं। ठीक यही हाल भगतजी और गोस्वामी तीर्थरामजी के विषय में देखा जाता है। जब तीर्थरामजी धार्मिक शिक्षा में अभी कच्चे थे, उस समय नितान्त निराली और अजीब प्रकृति तथा ऋद्धि सिद्धिशाली पुरुष उन्हें पूर्ण महात्मा और भगवान् का अवतार दिखाई देता था, इसी से भगत धन्नारामजी को वह अपना परम गुरु समझते और साक्षात् भगवान् के अवतार के समान उनकी प्रतिष्ठा, पूजा और सेवा करते थे। पर ज्यों-ज्यों इस गुरु-भक्ति से होनहार राम ने आध्यात्मिक और मानसिक शिक्षा में उन्नति पाई, और उन्नति करते करते आध्यात्मिक शिक्षा का एम० ए० पास कर लिया (अर्थात् निजानन्द में मस्त व मग्न होकर सन्यासी भी हो गये,) और भगतजी अपनी उसी ऋद्धि-सिद्धि की कुरसी पर ही जमे रहे, तो परिणाम यह निकला कि शिष्य महाराज तो विरक्तात्मा और मस्त स्वरूप हुए समस्त जगत् के स्वामी या सम्राट् हो गये, और भगतजी जैसे लाखों उनकी मस्ती (निजानन्द) से आकर्षित होकर उनके शिष्य वा भक्त हो गये।

यद्यपि भगतजी अपनी पूर्व स्थिति में ही स्थित रहे जिससे राम के समान मस्त व उदार होने न पाये, तथापि उनकी सादगी, संकल्प में दृढ़ता, साहस और बाल-ब्रह्मचारी अवस्था को देखा जाय तो लाखों पंडितों, और महात्माओं से वह कम न थे। और देहांत से पूर्व तो अपनी सारी सम्पत्ति का बेच कर धर्म कार्यों में लगाने से वह करोड़ों से श्रेष्ट हो गये। लगभग ८६ वर्ष की आयु में उन्होंने देह त्याग किया और राम के कारण सर्वत्र पूजनीये हो गये। धन्य है उनका जन्म कि जिनके शिष्य राम हुए, और धन्य हैं राम जो भगतजी की छत्रछाया में उन्नति करते करते इस उच्चावस्था को पहुँचे कि अपना व गुरु दोनों का जन्म सफल कर दिया।

आर० एस्० नारायण, स्वामी

गुरु भगत धन्नारामजी

गुजराँवाला (पंजाब)

GURU BHAGAT DHANNA RAMA

Gujranwala (Punjab)

ॐ

राम-पत्र

अर्थात्

स्वामी रामतीर्थजी के समग्र पत्र

(जो उन्होंने अपने पूजनीय गुरु भगत धन्नारामजी को समय-समय पर लिखे)

* सन् १८८६ ईस्वी

(१)   † ग्राम वैरोके, २४ मई, १८८६

तीर्थराम जी की गुरुभक्ति ।

रहनुमा-ए-सालिकाँ व पेशवा-ए-आरिफ़ाँ ! सलामत

(मुमुक्षुओं के मार्गदर्शक और ब्रह्मवेत्ताओं में नेता या शिरोमणि ! प्रणाम ।)

आपका कृपा-पत्र मुझे पटोकी के मेले से एक दिन पहले मिला

---

* जब सन् १८८६ ईस्वी में तीर्थरामजी की आयु बारह वर्ष और सात मास थी। इस काल में वह गुजरांवाला नगर के हाईस्कूल की इमिडिल कक्षा (क्लास) में अध्ययन करते थे। यहाँ यह बात विचारणीय है कि इस बाल्यावस्था में भी तीर्थरामजी की अपने गुरुजी के साथ कैसी तीव्र भक्ति थी।

† वैरोके में तीर्थरामजी का श्वसुरालय (ससुराल) था। इस ग्राम से मुरालीवाला डाकखाना लगभग तीन मील की दूरी पर है। बाल्यावस्था में ही तीर्थरामजी का विवाह हुआ था जबकि वह अपने ग्राम मुरालीवाला की प्राइमरी पाठशाला में पढ़ते थे। अब किसी आवश्यक कार्यवश तीर्थरामजी गुजरांवाले से यहाँ गये थे। और शायद पहली बार ही भगतजी से वह किंचित् अलग हुए थे। और भगतजी को मिले अथवा गुरु धारण किये भी अभी थोड़ा काल ही हुआ था। पर वाह री गुरु भक्ति ! जो उनकी बाल्यावस्था में भी इतनी उमड़ी कि केवल कार्ड लिखने निमित्त तीर्थरामजी को इतनी दूर से आए और बालक का भावुक हृदय प्रकट किये बिना न रहे।

था। उसमें लिखा था कि "हम मेले को आवेंगे" इसवास्ते मैं भी मेले पर गया, मगर मुझे आपके दर्शन न हुए। और यहाँ लिफाफ़े नहीं मिलते, इसवास्ते ख़त में देर हुई। आज केवल इस कार्य निमित्त गुजरांवाला आया हूँ। और मैं तो यहाँ से ही आपके चरणों में उपस्थित हो जाता, परन्तु सदा किसी न किसी कारण से रुक गया। और मैं यहाँ बड़ा ख़ास रहता हूँ। (और लाला रामचन्द्र साहब यहाँ नहीं हैं। आशा है कि आप कल आ जावेंगे। जब वह आयेंगे मैं वहाँ आ जाऊँगा। और अगर कोई अपराध हुआ हो, तो क्षमा करें। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

* सन् १८८८ ईस्वी

(मार्च में तीर्थरामजी की आयु चौदह वर्ष और पाँच मास थी)

(२) लाहौर, २० मार्च, १८८८

तीर्थरामजी की एंट्रेंस परीक्षा

जनाब महाराज बरगजीदह-ए-माबूदों व चीदह-ए-आरिफ़ों जी !

(श्रीमान् सन्तशिरोमणि व परम ज्ञानीजी महाराज !)

हाथ जोड़े मासूर प्रणामोत्तर प्रार्थना है कि आज सोमवार के दिन हमारा अंग्रेज़ी का इम्तहान हुआ है। परचे (प्रश्न-पत्र) न तो बहुत मुश्किल (कठिन) थे और न बहुत सहल। अच्छा जो आप करेंगे, हो जायगा। और हमारा इम्तहान २६ मार्च को ख़तम

* इस वर्ष एंट्रेंस इम्तिहान (प्रवेश परीक्षा) देने को तीर्थरामजी गुजरांवाले से लाहौर गये थे और वहाँ से अपने प्रतिदिन का समाचार गुरुजी को देते रहे। यहाँ विचारणीय बात यह है कि इतनी छोटी सी आयु में तीर्थरामजी को अपने गुरुजी पर इतना भारी विश्वास था पूर्ण श्रद्धा थी कि प्रत्येक कार्य की पूर्ति में अपने गुरुजी महाराज की कृपादृष्टि या दया के आश्रय ही रहते थे और बिना उनकी आज्ञा के कोई भी काम करना नहीं चाहते थे।

(समाप्त) होगा। जबकि मगल या बुद्धवार होगा। आपकी कृपा चाहिए, मेहरबानी करके अच्छा ख्याल करना और इनायत की निगाह (कृपा दृष्टि) रखनी। यह शरीर आपका गुलाम (दास) है। और हमारा इम्तहान बड़ी दूर होता है, कोई तीन-चार मील के फ़ासले पर।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(३) लाहौर, २१ मार्च, १८८८

जनाब महाराज, सतगुरुजी, सरगरोहह-ए-साधुओं व चौदह-ए-आरिफों जी। (सन्तशिरोमणि व परमज्ञानी श्रीसत्गुरुजी महाराज।)

बाद दस्तबस्ता नमस्कार के वाजय राय आली हो (सविनय हाथ जोड़े नमस्कारोत्तर विदित हो) कि आज हम अंग्रेजी, फारसी तथा उर्दू के इम्तहानों से फ़ारग हो (निपट) चुके हैं, अब तवारीख (इतिहास), जुग़राफ़िया (भूगोल), रियाज़ी (अंकगणित),अलजबरा (बीजगणित), और साइन्स (विज्ञान) आदि विषय बाक़ी हैं, जो बहुत मुश्किल (कठिन) हैं। आपकी कृपा चाहिये, दया-दृष्टि रखनी, मैं आपका गुलाम हूँ। मेहरबानी करके यह ख्याल करना कि जैसे मैं चाहता हूँ, वैसे परचे (प्रश्न-पत्र) कर आऊँ॥ ॐ॥

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(४) लाहौर, ८ मई, १८८८

एन्ट्रेंस परीक्षा का परिणाम और कालिज प्रवेश

श्रीमान् सतगुरुजी महाराज भगत साहब! मुझ पर खुश रहो।

मैं सोमवार के दिन मिशन-कालिज में दाखिल (प्रविष्ट) हो गया, और एक मकान बच्छोवाली में एक रुपया मासिक किराया पर लिया है। उस मकान का मालिक महताबराय मिश्र है, इसलिये मुझे पत्र उसके पते पर लिखा करो। और मेरा वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) नहीं लगा,

और न मैं दूअव्वल दर्जे में पास हुआ हूँ। मेरा नंबर पञ्जाब में अट्ठाईसवाँ है। यहाँ मिशन-कालिज में साढ़े चार रुपये फ़ीस है, इति। ज्यादा आदाब (विशेष सादर प्रणाम)। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

(५) * लाहौर, ११ मई, १८८८

गुरु की अप्रसन्नता का भय

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना के बाद विनती है कि मैंने आपको एक पत्र लिखा था, मगर आपका कोई कृपा-पत्र प्राप्त नहीं हुआ। कहीं आप मुझ पर खफ़ा (रुष्ट) तो नहीं हो गये ? आप मुझ पर नज़र इनायत (कृपा-दृष्टि) रक्खा करो। और अगर कभी-कभी मुझे पत्र लिखकर याद फ़रमाते रहा करो, तो (आपकी) बड़ी कृपा-दृष्टि है। मैं बहुत मशकूर (कृतज्ञ) हूँगा। और आप कृपा करके लिखें कि आप लाहौर में कब आवेंगे। मैं बच्छोवाली में महताब राय मिश्र के घर में रहता हूँ। इति।

आपका दास तीर्थराम, एफ़्० ए० क्लास

—— o ——

(६) १५ मई, १८८८

गुरु-कृपा पर अपनी प्रसन्नता

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

आज आपका मेहरबानीनामा (कृपा-पत्र) मिला, अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। यदि आप इसी प्रकार कृपा करते रहोगे, तो मैं बड़ा खुश रहूँगा। और आप अगर मुझे कृपा-पत्र कालिज के पते पर भेजा करें

---

* इसके बाद सभी पत्र प्रायः लाहौर से भेजे गये हैं इसलिए लाहौर का मुकाम तारीख के साथ लिखना बंद कर दिया गया है। लाहौर से इतर और जिस मुकाम से पत्र भेजा गया है, उसका नाम वहाँ तारीख के साथ दे दिया गया है।

तो अच्छा हो। आप अब यह लिखें कि आप यहाँ लाहौर में कब पधारोगे, इति। अनेक प्रणाम। *　　　आपका दास तीर्थराम, एम्० ए०

---

(७)　　　　　　　१ जून, १८८८

निवासस्थान की चिंता

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

आपके तीन कार्ड पहुँचे। मैं कल समाधि † को गया था। भाई गुरुदित्तसिंह ने कहा था कि यह मकान (जिसकी हमने तजवीज़ की थी) मुझे नहीं मिल सकता। और उसने अपने रहने का मकान दिखाया था। पर मैं अति विनय-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि उस मकान में रहने को मेरा जी (चित्त) नहीं चाहता। उसकी निस्बत (अपेक्षा) मुझ पच्छोवालीवाला मकान ज्यादा पसंद है। आशा करता हूँ कि आप मुझे क्षमा करेंगे, क्योंकि एक तो वह मकान किंचित् खुला भी नहीं है और दूसरे मैं पच्छोवालीवाले मकान में तंग (दुःखी) नहीं हूँ। इति। अनेक प्रणाम।　　　　आपका दास तीर्थराम

---

(८)　　　　　　　५ जून, १८८८

जनाब महाराज श्रीभगतजी साहब !

आपकी नित्य कृपा बनी रहे। मत्था टेकना के बाद निवेदन यह है कि मैंने (कोई दो-तीन दिन हुए हैं) आपकी सेवा में एक कार्ड भेजा था,

---

* इस पत्र के बाद २ मई का पत्र देना छूट गया था जो इस वर्ष के अंत में नं० ४ पर दिया गया है।

† समाधि से तात्पर्य यहाँ महाराजा रणजीतसिंहजी की समाधि है जो लाहौर में किले के समीप बनी हुई है। इसमें कुछ कोठरियाँ रहने के लिए खाली थीं और बहुत थोड़े मासिक किराये पर मिलती थीं। भगतजी ने यहाँ रहने के लिए लिखा होगा पर जब यहाँ एकान्त न देखा तो नगर के अन्दर तोपरामजी में रहना स्वीकार किया इस बात को भगतजी के पत्रों के उत्तर में यह दर्शाते हैं।

जिसमें समाधि में न जाने का ज़िक्र (वर्णन) था। मगर आपने कुछ नहीं लिखा। आप मुझ पर कहीं ख़फ़ा (रुष्ट) तो नहीं हो गये ? अगर ऐसा है तो मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाइयेगा, क्योंकि मैं आपका ग़ुलाम (दास) हूँ। इति। बहुत-बहुत प्रणाम। आपका ग़ुलाम तीर्थराम

—— o ——

(६) १० जून, १८८८

तीर्थरामजी की एकान्त प्रीति

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना। अर्ज़ (विनती) है कि दो-तीन दिन हुए, आपका कृपा-पत्र पहुँचा, जिसमें मेरे समाधि में न आने का कारण पूछा है। सो सबमें मुख्य कारण तो यह है कि यहाँ ऐसा एकान्त* स्थान और स्वतंत्रता नहीं है, जो यहाँ पर है। इसके अतिरिक्त और भी कई बातें हैं जो आपके सम्मुख बताई जायँगी। मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो ॥ ॐ ॥ न्याज़मंद (दीन दास) तीर्थराम

—— o ——

(१०) १२ जुलाई, १८८८

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना। अब मेरा इरादा (विचार) छुट्टियों मे पहले-पहले यहाँ आने का नहीं रहा, क्योंकि ७७ जुलाइ को हमें छुट्टियाँ हो जाती हैं। और ख़र्च के लिए मैंने तीन रुपये अयाध्याप्रसाद से उधार ले लिये हैं। और आप जब कृपा-पत्र भेजो, तो कालिज के पते पर लिखना। इति। अनेक प्रणाम। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

* इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि तीर्थरामजी इस छोटी-सी आयु में भी कैसे एकान्तप्रेमी और विरक्त थे।

(११) ८ जुलाई, १८८८

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना के उपरांत विनती है कि आपका कृपा-पत्र पहुँचा था। बड़ी ख़ुशी प्राप्त हुई। और लाला अयोध्यादास की ज़बानी मालूम हुआ कि आप किसी दिन यहाँ आओगे। मैं अब आपसे यह दर्याफ़्त किया चाहता हूँ कि आप कृपया मुझे लिखो कि किस दिन को आपके आने का विचार है। इति। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

(१२) २४ जुलाई, १८८८

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना। मैं शायद शुक्रवार को आऊँगा और ज़्यादा इरादा गुजराँवाले के मार्ग से ही आने का है। और आपका पत्र लाला अयोध्यादास को पहुँच गया है। और एक लड़का गुसाईं ईश्वरदास मुरालीवाले का यहाँ किसी काम निमित्त आया हुआ है। वह भी शायद मेरे साथ ही यहाँ से जायगा। और वह रोटी और जगह स्याया करता है। मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो। इति। दास तीर्थराम

—— o ——

(१३) *हाँसी, २० अगस्त, १८८८

श्रीमान् महाराज श्रीभगतजी साहिब ! नित्य कृपा-दृष्टि बनी रहे।

मत्था टेकना। आपका पत्र आज पहुँचा। मैं कल मंगलवार रात के नौ बजे की गाड़ी में यहाँ से रवाना हूँगा। एक दिन फ़िरोज़पुर और एक दिन लाहौर ठहरने का विचार है। आगे जैसा हो जाय। और मैंने एक पत्र आपको लाहौर भी भेजा था। बंसीधर यहीं रहेगा। और यह बड़ा अच्छा मुक़ाम है। इति। दास तीर्थराम

—— o ——

* हांसी में तीर्थरामजी के मौसा रघुनाथमल रहते थे [illegible] कालिज के दफ़्तर में [illegible] से [illegible] थे। इससे श्रीभगतजी रामतीर्थजी की छुट्टियों में प्राय: वहां जाया करते थे।

(१४) १७ अक्तूबर, १८८८

श्रीमान् महाराज श्रीभगतजी साहब ! नित्य कृपा बनी रहे !

मत्था टेकना। मैं इतवार की सुबह (प्रातः) को यहाँ पहुँच गया हूँ। और आपकी कृपा का नित्य इच्छुक हूँ। और आप अपने आने की सूचना दें कि यहाँ कब तशरीफ लाओगे (पधार्पण करोगे)। लाला अयोध्यादास यहाँ पहुँच गया है। और मकान के बाबत आपका क्या विचार है। नित्य मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो। इति। दास तीर्थराम

—— ० ——

(१५) १९ अक्तूबर, १८८८

तीर्थरामजी का हिन्दी*भाषा सीखना

श्रीमहाराज भगतजी साहब !

मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूँ, आपकी पत्रिका ने कृतकृत्य कर दिया। परमात्मा अब इस कार्य को सम्पूर्ण करे। अब मैं हिन्दी भाषा लिख पढ़ सकता हूँ। आप कृपा-दृष्टि रक्खा करो॥ ॐ॥

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(१६) २५ अक्तूबर, १८८८

जनाब महाराज श्रीभगतजी साहब ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे ! बारंबार नमस्कार। आपका खत (पत्र) लाला सरदारीमल साहब के हाथों का लिखा हुआ पहुँचा। बहुत खुशी हुई। मैं नौ रुपये लाला भगवानदास से जाकर ले आया हूँ। आप जब इमारत शुरू करेंगे, मुझे लिखना। और यह भी लिखना कि आया इमारत थोड़े दिनों की छुट्टियों से पहले खतम (समाप्त) हो जायगी कि नहीं। लाला सरदारीमल साहिब को

* तीर्थरामजी का हिंदी भाषा में लिखा हुआ यह पहला पत्र है। इस मास से लेकर सन् १८८९ तक के लगभग सारे पत्र हिंदी भाषा में लिखे हुए हैं।

पंन्गी (नमस्कार)। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखनी, मैं आपका नौकर (सेवक) हूँ। इति।

आपका दास तीर्थराम

---

(१७)   ११ अक्तूबर, १८८८

श्रीमान् महाराज श्रीसच्चिदानंदस्वरूप, सर्वप्रकाशक, सर्वशक्तिमान्जी !

मैं अपने आपको आपके अर्पण करता हूँ। आज बुद्धवार प्रातः सात बजे लाला अयोध्यादास वंड़यालें* गये हैं। जब वापिस आयेंगे, आपको लिखूँगा। हमारी त्रैमासिक परीक्षा १९ नवंबर सोमवार, जब मग्घर (मार्ग शीर्ष) की छठी होगी, आरंभ होगी, २६ नवंबर तक होती रहेगी। आप कृपा-दृष्टि रक्खें। और नवंबर के अंत में हमारी परीक्षा का परिणाम निकलेगा। अब इस मकान में मैं और वह हिंदुस्तानी लड़का† रहते हैं। लाला महेशदास रात को आता है। और वह लड़का अब स्कूल में दाखिल (प्रविष्ट) हो गया है। इति। अनेक प्रणाम।

आपका दास तीर्थराम

---

(१८)   १ नवंबर, १८८८

श्रीमान सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान ,सर्वप्रकाशजी !

मैं अपने आपका आपके अर्पण करता हूँ। मुझे अब यह हिंदुस्तानी लड़का यहीं डेरे में रोटी पका दिया करेगा। आज से शुरू (आरंभ) किया है। और वह आटा इत्यादि अपनी रसद से (जो उस राजा हरयसमिंह से मिलती है) दिया करेगा, और मैं उसे आठ आने महीना दिया करूँगा। अगर आपकी मरजी न हो, तो बंद कर दूँगा। मुझ पर आप कृपा-दृष्टि रक्खा करें। मैंने आपको दो कार्ड लिखे हैं, पर आपकी

---

* वड़याला गुजराँवाले ज़िले का एक क़स्बा है।

† पंजाब में संयुक्त प्रांत के निवासी को हिन्दुस्तानी कहा करते थे। अतः हिंदुस्तानी लड़के से अभिप्राय तीर्थरामजी का संयुक्त प्रांत-निवासी है।

तरफ़ से एक भी नहीं आया। और जिस दिन मैं आपसे आया था, केवल उसी दिन मुझे पाखाना आया था। उसके बाद आज तक बिलकुल नहीं आया। यह बीमारी हो गई है। आप मुझे फ़रामोश (विस्मरण) न करना।

आपका ग़ुलाम तीर्थराम

---

(१९) ६ नवंबर १८८८

तीर्थरामजी का संस्कृत सीखना

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वघटपूर्ण, सर्व शक्तिमान्‌जी!

मैं आपके चरणों में अपने आपको अर्पण करता हूँ। मैं और दो तीन अन्य विद्यार्थियों ने एम० ए० के इम्तहान के लिये कालिज के पंडितजी से संस्कृत आरंभ की है। केवल दो-तीन पुस्तकें हैं, अगर तब तक तय्यार हो गए, तो इम्तहान में ले लूँगा। अगर न हुए, तो न लूँगा। पुरुषार्थ करूँ यो कुछ बात ही नहीं। पर मैं आपकी आज्ञा बिना कुछ करना नहीं चाहता। केवल आपकी आज्ञा का भूखा हूँ, और आपकी कृपा-दृष्टि का चाहनेवाला। मुझे उत्तर ज़रूर भेजना। आपका दास तीर्थराम

---

(२०) ७ नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वघटव्यापक, सर्वशक्तिमान, पूर्ण ब्रह्मजी!

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपकी पत्रिका भी पहुँची, और भाई साहब ने भी संदेसा दिया। आज मेरा भाई गुरुदास[*] यहाँ आ गया है। मैं अब राज़ी हूँ। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें।

आपका दास तीर्थराम

---

[*] गुरुदासजी तीर्थरामजी के सगे बड़े भाई थे

(२१) ९ नवंबर, १८८८

श्री महाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, विभु अनंतजी !

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। लाला अयोध्यादास आया हुआ है। मैंने रुपये आपके वास्ते पूछे थे, पर वह लाया नहीं है। बहाने बहुत बताता है।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(२२) १२ नवंबर, १८८८

श्री सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वज्ञ, विभु, नित्य, अनंतजी !

मैं आपका सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैंने पत्रिका इस लिए देर से लिखी है कि आपके पत्र को देख रहा था, पर आपने बिलकुल कोई भी पत्र नहीं लिखा, नहीं मालूम क्या हेतु है। और आप लिखें कि इमारत कब शुरू करवाओगे।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(२३) १४ नवंबर, १८८८

तीर्थरामजी को छात्र-वृत्ति की नित्य लगन

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, पूर्णब्रह्म, सर्वज्ञ, विभु, नित्यजी !

मैं आपके चरणों में सब कुछ अर्पण करता हूँ, आपकी पत्रिका पहुँची, बड़ी खुशी प्राप्त हुई। अब हमारी त्रैमासिक परीक्षा इस सोमवार को होने वाली है। आपकी कृपा चाहिये। आपने चाहा, तो छात्र-वृत्ति* मिल जायगी।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

* इस छात्र-वृत्ति से अभिप्राय म्युनिसिपल अथवा गवर्नमेंट की छात्र-वृत्ति से है कि जो गुजरांवाला हाई स्कूल के छात्र को एंट्रेन्स-परीक्षा में उत्तम नम्बर पा लेने पर मिलनी थी कि जो सरकारी छात्र-वृत्ति पानेवाले विद्यार्थियों के नम्बरों से कुछ कम हो।

(२३) २१ नवम्बर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, पूर्णब्रह्म, सर्वशक्तिमान्, सर्व व्यापकजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैंने आपको इतने पत्र भजे हैं, आपने कोई भी नहीं लिखा। हमारा इम्तहान शुक्रवार और सोमवार को और होगा। मैं आपकी खुशी (प्रसन्नता) चाहता हूँ। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

(२४) २४ नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, नित्य, अनन्तजी !

मैं आपके चरणों का सब कुछ अर्पण करता हूँ। हमारी अंग्रेजी की परीक्षा मंगलवार को होगी, और फिर नतीजा निकलेगा। आपका एक भी पत्र नहीं आया। आप दया-दृष्टि रक्खा करें। आपका दास तीर्थराम,

—— o ——

(२६) २६ नवम्बर, १८८८

तीर्थरामजी की शारीरिक दशा

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, पूर्ण ब्रह्म, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपकी कोई पत्रिका नहीं आई। आप अब हमारा का हाल लिखें। आपके दर्शनों को जी (चित्त) बड़ा चाहता है। आप खुशी रक्खा करें। हमारी परीक्षा अब केवल कल मंगलवार ही को होगी। मेरी शारीरिक दशा ऐसी है कि यदि एक दिन शौच आता है, तो तीन दिन तक बिलकुल नहीं आता। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

(२७) २७ नवंबर, १८८८

बार-बार छात्र-वृत्ति की उत्कण्ठा

(विषय मना होने के कारण पत्र फ़ारसी अर्थात् उर्दू में लिखा गया)

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, पूर्णब्रह्म, सर्वशक्तिमान्‌जी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपके दो पत्र एक मेरे नाम और दूसरा लाला अयोध्यादास* के नाम मुझे आज मंगलवार को मिले। अत्यन्त खुशी प्राप्त हुई। हमारी परीक्षा आज समाप्त हो गई है। वह लड़का अमीचन्द राय†, जिसे कमेटी से वज़ीफ़ा (छात्र-वृत्ति) मिला था, अब पढ़ना छोड़ बैठा है। सुना गया है कि कमेटी का मंत्री भी मास्टर चन्दूलाल‡ हो गया है। इसलिये मैं आपकी सेवा में प्रार्थना करता हूँ कि आप लाला सरदारीमल आदि के द्वारा लाला ठाकुरदास आदि के सम्मुख मेरे वज़ीफ़े की कुछ फ़िक्र (ख्याल) रक्खें। और वज़ीफ़े का मेरा

---

* लाला अयोध्यादासजी जिला गुजरांवाला के एक कस्बे (शरक़ों जांबपाला) के रहने वाले थे। जब तीर्थरामजी लाहौर में पढ़ते थे तो उस समय यह लालाजी लाहौर में शेख़ूपुर के राजा हरबंस के वकील थे और तीर्थरामजी की [illegible] करते थे। यह भी बड़े शुद्धात्मा सत्संगी और सज्जन पुरुष थे और तीर्थरामजी के साथ अति स्नेह रखते थे। और इनकी भक्ति व श्रद्धा भी भगत धन्नाराम में वैसी ही थी जैसी कि तीर्थरामजी की। इसलिये तीर्थरामजी ने अपने पत्र में इन के विषय में बार-बार वर्णन किया है।

† सुना गया है और कुछ इस पत्र से भी स्पष्ट होता है कि अमीचन्द राय को छात्र वृत्ति कुछ पक्षपात से कमेटी से मिली थी पर कालिज में प्रविष्ट होने के पश्चात् वह निरुद्यमी और आलसी पाया गया जिससे कालिज के अध्यापकों ने इस विद्यार्थी के विरुद्ध रिपोर्ट कर दी जिस पर इसने कालिज से पढ़ना छोड़ दिया।

‡ मास्टर चन्दूलालजी पहले गुजरांवाला के हाईस्कूल में सैकेंड मास्टर थे और तीर्थरामजी को पढ़ाया करते थे यह तीर्थरामजी की विद्या और योग्यता से पूरे-पूरे परिचित थे और अब यह म्युनिसिपल कमेटी गुजरांवाला के मंत्री नियत हुए थे और कमेटी की ओर से जो छात्र-वृत्ति विद्यार्थियों को मिलती थी उसके देने का अधिकार उनको हो गया था इसलिये इस पत्र में तीर्थरामजी ने उनके नाम का वर्णन किया है।

हक अधिकार भी है, क्योंकि जिन लड़कों को सरकार से वजीफा मिला था, मेरा ही नाम परीक्षा में उनके पीछे आता है। मैं इस शनिवार को आपके चरणों में उपस्थित हूँगा। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें। मैं आपका दास हूँ। इति। विशेष सादर प्रणाम॥ ॐ॥

आपका दास तीर्थराम

—— o ——

(७८) १० नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंद स्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नित्य, अनंतजी !

मैं आपके चरणों के मय कुछ अर्पण करता हूँ। मैंने एक अर्ज़ी (प्रार्थना पत्र) अंगरेजी में लिखकर उस पर अपने कालिज के बड़े साहब की एक बड़ी उमदा (उत्तम) सिफारिश लिखवाकर गुजराँवाले की कमेटी में वजीफा के लिए इस कार्ड के साथ भेजी है, और एक दूसरा पत्र मास्टर चंदूलाल के नाम भी लिखा है। मैं आपके चरणों का आश्रय रखता हूँ। आप मेरे लिए कमेटी के मेम्बरों का अगर चाहे लाला सरदारी मल के द्वारा या आप (स्वयं) अगर कहें तो बड़ा अच्छा हो। मैं आपका नौकर हूँ। इति। बार-बार प्रणाम।

आपका एक कार्ड पहुँचा। मैं शनिवार आपके चरणों म पहुँचने का इरादा (सकल्प) रखता हूँ। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

(७६) ३ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, मर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नित्य, अनंतजी !

मैं आपके चरणों को मय कुछ अर्पण करता हूँ। मैं राजी खुशी यहाँ पहुँच गया हूँ। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें।

आपका दास तीर्थराम

(३०)　　　　५ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया-दृष्टि रक्खा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। आप मेरा ख्याल रखना। और इमारत का हाल भी लिखना।　　　　आपका दास तीर्थराम,

—— ० ——

(३१)　　　　६ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका पत्र कोई नहीं आया। आप दया दृष्टि रक्खा करें। मैं आपका दास हूँ। मेरा ख्याल भुला न देना।　　　　आपका टहलुआ (सेवक) तीर्थराम

—— ० ——

(३२)　　　　८ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, अंतर्यामी, सर्वप्रकाशक, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका कोई पत्र नहीं आया, आप इमारत का हाल लिखें, और यह भी लिखें कि कमेटी अभी हुई है कि नहीं, और मुझ पर कृपादृष्टि रक्खा करें।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(३३)　　　　१० दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, नित्य, अनंत, विभुजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आज लाला अयाध्यादास जंडयाले से वापिस आ गये हैं। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें। और यहाँ का हाल लिखें।　　　　आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(३४) ११ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्व प्रकाशक, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके पद-पंकजों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप कृपा-दृष्टि रक्खा करें, और लिखें कि अब जयपुर आने का कब इरादा है।

आपका दास तीर्थराम

—— • ——

(३५) ११ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, विभु, नित्य, अनंतजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया-दृष्टि रक्खा करें। हमारा साहब कहता है कि मैं कमेटी को लिख दूँगा कि जमीअतराय को वजीफा न मिलना चाहिए, और वह यह तब लिखेगा, जब उसे नंदलाल का पत्र पहुँचेगा। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(३६) १६ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वप्रकाशक, नित्य, विभु, अनंत, सर्वज्ञजी !

मैं आपके चरण-कमलों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपकी दया चाहता हूँ। मैं (अगर शनिवार को छुट्टियाँ हो गईं) तो उस दिन आपके चरणों में हाज़िर हूँगा। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

(३७) १८ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रकाशक, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरण-कमलों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें और लिखें कि क्या हेतु है, जो आपका कोई पत्र मुझे आज तक नहीं मिला, और बाक़ी सब तरह का हाल भी विस्तार-पूर्वक मुझे लिखें।

आपका दास तीर्थराम

— ० —

(३८)　　१६ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, विभु, अनंत, सर्वज्ञजी!

मैं आपके चरण-कमलों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका पत्र मिला, बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ। मैंने तो आपके चरण-कमलों में कई पत्र भेजे हैं। वह आपको मिले न होंगे। आप मुझ पर कृपादृष्टि रखा करें, और मेरे पत्रों में आपकी सब बातों का उत्तर लिखा है।　　आपका दास तीर्थराम

— • —

(३६)　　२१ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, नित्य, विभु, अनंत, शुद्ध, पूर्णजी!

मैं आपके चरण-कमलों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया-दृष्टि रखा करें। मैं अगर सोमवार की छुट्टी हो गई, तो शनिवार को आपके चरणों में आ जाऊँगा। अगर न हुई, तो सोमवार को आऊँगा। आपका एक पत्र आया था, फिर और कोई नहीं आया।

आपका दास तीर्थराम

— • —

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४०)*　　२० मई, १८८८

अनाथ श्रीभगतजी महाराज! नित्य कृपा बनी रहे। आपका कृपापत्र

---

* यह पत्र नं० ६ के बाद छपना चाहिये था, पर वहाँ देना छूट गया था इसलिए इसी वर्ष के क्रम में यहाँ दे दिया गया है।

मिला। अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। आप यह लिखें कि अब आप किस जगह रहते हैं और आपका पता क्या है, ताकि उस पते पर पत्र-व्यवहार किया जाय। और मुझ पर दयादृष्टि रखें। इति।

ज्यादह हदेअदब (बहुत बहुत प्रणाम)। आपका दास तीर्थराम
एम्० ए० क्लास मिशन कालिज, लाहौर

—:०:—

सन् १८८९ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े पंद्रह वर्ष के लगभग थी)

(४१) ५ जनवरी, १८८९

*श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान, नित्य, अनंत, परमानंद, विभु, अनिर्वाच्यजी।

मैं आपके चरणारविंदों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप मुझ पर दयादृष्टि रखा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। और महाराजजी! आप यहाँ लाहौर में कब चरण पायेंगे। आपका दास तीर्थराम

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (४२) ८ जनवरी, १८८९

मैं आपके चरणारविंदों में सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप मुझ पर कृपादृष्टि रखा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। आपका दास तीर्थराम

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (४३) ११ जनवरी, १८८९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। अभी ठाकुरदास संतराम को नहीं मिला। आपका दास तीर्थराम, लाहौर

— ० —

* इस पत्र के बाद प्रायः सभी पत्रों के आरंभ में यही संबोधन लिखा हुआ है इसलिए आगे इसे बार-बार न लिखकर संबोधन पूर्वोक्त लिखा गया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (४४) १४ जनवरी, १८९९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपकी दया से राजी हूँ। लाला अयोध्यादास अभी नहीं आया, और ठाकुरदास भी अभी संतराम का नहीं मिला। आपका पत्र भी कोई नहीं मिला। मैं इस शनिवार को अगर हो सका, तो आपके चरणों में आऊँगा।

आपका दास तीर्थराम, लवपुर

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५) १५ जनवरी, १८९९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। आपका पत्र मिला। लाला अयोध्यादास आ गया है, ठाकुरदास अभी नहीं मिला।

मैं (अगर हो सका) तो सनीचर (शनिवार) को आपके चरणों में आऊँगा।

आपका दास *

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६) १७ जनवरी, १८९९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। ठाकुरदास ने रुपया दे दिया है। मैं सनीचर को अब आऊँगा, अगर हो सका तो।

आपका दास

—— ० ——

उँगली पर चाकू का जख्म

संबोधन पूर्वोक्त, (४७) २२ जनवरी, १८९९

मैं आपको प्रणाम करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। और इस जगह मुझे उँगली पर चाकू का एक बड़ा भारी जख्म लगा है। आज एक अँगरेजी दवाई लगाई है। आप पत्र भेजते रहा करें।

आपका दास

—— ० ——

* यहाँ गोस्वामी तीर्थरामजी ने "आपका दास तीर्थराम" के स्थान पर केवल "आपका दास" कहीं-कहीं लिखा है।

संबोधन पूर्वोक्त, (४८) २१ जनवरी, १८८८

मैं आपको प्रणाम करता हूँ, आप दया रखा करें। मेरी उँगली को किसी क़दर आराम है। आप पत्र भेजते रहा करें। आपका दास

—— o ——

मुंह पर फोड़ा

संबोधन पूर्वोक्त, (४६) २५ जनवरी, १८८६

मैं आपका नमस्कार करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। मैंने दो पत्र भजे हैं। उत्तर कोई नहीं आया। अब मेरी उँगली को तो असल में आराम है, पर मुँह पर एक बड़ा फोड़ा हो गया था। अब उस पर भी कुछ आराम आया है। आशा है कि कल परसों तक बिलकुल राज़ी हो जायगा। आप दया रखा करें। आपका दास

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०) ३१ जनवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। आप दया-दृष्टि रखा करें। और पत्र मुझे अपने हाथों से लिखना। आपका दास

—— o ——

वज़ीफ़े की लगन

संबोधन पूर्वोक्त, (५१) १ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। हमारे साहब को अभी मास्टर चंदूलाल की तरफ़ से ड्राफ्ट मेरे वज़ीफ़े का नहीं आया, आपने भी कोई पत्र नहीं भेजा। आपका दास

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२) १ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दया रखा करें। आपको मालूम

हो कि सेठ रामरत्न कहीं बड़े असें का गया हुआ है। आपका पत्र कोई नहीं आया। वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला।

आपका दास

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५३)　　४ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दया रखा करें। आप यहाँ कब आवेंगे। मुझे वज़ीफ़ा (छात्र-वृत्ति) अभी कुछ देर से मिलेगा।

आपका दास

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५४)　　७ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका पत्र आया, जो आपके अपने हाथों का लिखा हुआ था, बड़ी ख़ुशी हुई; अगर इस सनीचर (शनिवार) को मुझे वज़ीफ़ा मिल गया, तो उस दिन को आपके चरणों में हाज़िर हूँगा; और अगर तब तक न मिला, तो मैं आपके पास नहीं आऊँगा। तब अगर आप ही दया करें, तो बड़ी अच्छी बात हो।

आपका दास

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५५)　　१२ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ, आप दया-दृष्टि रखा करें। वज़ीफ़ा अभी देर से मिलेगा। आपका भेजा हुआ पत्र मिल गया है। आप पत्र लिखते रहा करें।

आपका दास

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५६)　　११ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका कोई पत्र नहीं मिला। आज हमारे साहब ने मेरे वज़ीफ़े का बिल बनाकर गुजराँवाले भेजा है। अब जब मास्टर चंदूलाल रुपये भेजेंगे, मुझे मिल

जायेंगे । अब आप अगर यहाँ आने की दया करें, तो निहायत अच्छी बात हो ।

आपका दास

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (५७) १४ फ़रवरी, १८८८

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप कृपादृष्टि रखा करें । मुझे आशा है कि मेरा पत्र आपको आज मिल गया होगा । पर मैं इस सोच में हूँ कि आप आज यहाँ आने से किस हेतु करके रुक गये हैं । अब अगर कल आ जायें, तो अत्यंत दया की बात होगी । अगर चंदूलाल साहब ने आज रुपये भेज दिये हैं, तो मुझे कल मिल जायेंगे ।

आपका दास

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (५८) १६ फरवरी, १८८८

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें । मुझे अभी वजीफा नहीं मिला । आपका पत्र कल आया था । आप जल्दी आने की दया करें, तो अच्छी बात हो ।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (५९) २५ फ़रवरी, १८८८

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें । आज सोमवार को मुझे वजीफा नहीं मिला । मुझे आज कालिज के क्लार्क को मिलने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ, और वजीफे वही दिया करता है ।

आपका दास

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६०) २६ फ़रवरी, १८८८

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें । आज मालूम हुआ है कि साहब का हुक्म है कि वजीफे हमें बीरवार बीस तारीख़ को मिलेंगे । और यहाँ लाला अयोध्यादास की माँ व घर को (स्त्री) भी आ

गई है और साथ का मकान राजे के गुरूवाला भी अभी खाली नहीं हुआ।

आपका दास

संबोधन पूर्वोक्त,   (६१)   २८ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका कोई पत्र नहीं आया। वज़ीफ़ा मुझे आज भी नहीं मिला, क्योंकि आज बैंक घर के बंद होने के कारण क्लार्क को रुपये नहीं मिले। और बैंक के बन्द होने की यह वजह है कि आज शिवरात्रि की छुट्टी है।

आपका दास

छात्रवृत्ति की तीव्र चिंता

संबोधन पूर्वोक्त,   (६२)   २ मार्च, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दया रखा करें। वज़ीफ़ा अभी कुछ अर्से (काल) तक मिलता नज़र नहीं आता। कोई न कोई रोक पड़ ही जाती है। और मुझे कल तप (ताप) चढ़ गया था, और खाँसी थड़ी लगी हुई है। यह सब बलगम का विकार है, आप मुझ पर कृपादृष्टि रखा करें। मुझे भूलें नहीं।

आपका दास तीर्थराम

---

(६३)   ८ मार्च, १८८६

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, अनंत, विभु, अदेह, शुद्ध, बुद्ध, एकरस आदिपुरुष, अनिर्वाच्यजी !

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आपका मेहरबानीनामा (कृपापत्र) कल मिला था, मुझे खाँसी* ने तंग कर रखा है। दवा (ओषधि) भी

---

* इस पत्र व अन्य कई एक पत्रों से स्पष्ट होता है कि तीर्थरामजी का शरीर स्वस्थ नहीं रहता था बल्कि सारे विद्याध्ययन तक बहुधा रोगी ही रहे और इस पर भी वह विद्या में सर्वोपरि उन्नति करते गये।

बहुत की है और रोटी खाये भी पाँचवाँ संग (बार या वेला) है, और एक ही स्थान पर बैठा भी नहीं रहता हूँ, क्योंकि प्रतिदिन कालिज जाता हूँ। भूख का नाम तक नहीं। वजीफा नहीं मिला। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका दास हूँ। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४) १० मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका अयोध्यादास को लिखा हुआ पत्र मिल गया है। मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला। कल हमारा इम्तहान (परीक्षा) है। मुझे अब आराम है। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५) ११ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका पत्र मुझे आज मिला, बड़ी खुशी हुई। हमारा आज कल इम्तहान हो रहा है। मैं अब आराम में हूँ। मैंने तो आपको बड़े पत्र लिखे हैं, पर आप कहते हैं कोई नहीं आया, क्या वजह है। क्लार्क ने बिल भेज दिया है, रुपये अभी नहीं आये॥ आपका दास

—— ० ——

सबोधन पूर्वोक्त, (६६) १२ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें, पत्र लिखते रहा करें। अयोध्यादास के घर के सब आदमी चले गये हैं, क्योंकि उसकी बहन की बड़ी बीमारी की खबर आई थी। और मंतराम भी चला गया है, लालाजी व नीरजनाथ और मैं अब यहाँ हैं। आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७) १३ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें।

हमारा आज कल इम्तहान हो रहा है। गुजरांवाले से अभी वजीफा नहीं आया, बिल तो क्लार्क ने भेज दिया हुआ है। अगर शनिवार को छुट्टी हो गई, तो मैं शुक्रवार आ जाऊँगा, नहीं तो शनि को आने का संकल्प रखता हूँ।

आपका दास

—— ० ——

छात्रवृत्ति का मिलना

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६८)　　　　१८ मार्च, १८९९

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। मुझे आज वजीफा (छात्रवृत्ति) मिल गया है। आप दया रखा करें। संतराम आ गया है, आप पत्र लिखते रहा करें। लालाजी को मत्था टेकना।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६९)　　　　२१ मार्च, १८९९

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। हमें शायद इस सोमवार से लेकर आठ दिन की छुट्टियाँ हो जायेंगी। अगर हो गईं, तो मैं शनिवार को हो सका तो आ जाऊँगा, नहीं तो अगले शनिवार को आने की सलाह है।

आपका दास

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७०)　　　　२७ मार्च, १८९९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। मैं अब फिर उसी कमरे में रहता हूँ, जिसमें कि पहले रहा करता था, अर्थात् बाजार के समीप जो कमरा है, उस कमरे में रहता हूँ, और नीरजनाथ भी उसी कमरे में रहता है।

आपका दास तीर्थराम

——:०——

सम्बोधन पूर्वक, (७१) ३१ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। चाचाजी * (पिताजी) तीर्थों को चले गये हैं। पर मुझे बड़ा ही अफ़सोस आता है कि आपको जीत भजने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं बना। आप मुझ पर दया रक्षा करें। मैं आपका दास हूँ। लाला अयोध्यादास खबयाले गया हुआ है और महेशदास यहाँ आया हुआ है।

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वक, (७२) १ अप्रैल १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दयादृष्टि रक्षा करें। आप पत्र लिखते रहा करें। आप यहाँ कब आयेंगे। लाला अयोध्यादास तथा संतराम यहाँ नहीं हैं। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वक, (७३) ३ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रक्षा करें। आपका कोई पत्र नहीं आया, क्या हेतु है? डाक ने बिल तो भेज दिया है, पर अभी रुपये नहीं आये। आप यहाँ कब आयेंगे? आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वक, (७४) ५ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रक्षा करें। आपका कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या हेतु है? आप मुझ पर ख़फ़ा तो नहीं हो गये। अगर कोई मुझसे क़सूर हो गया हो, तो क्षमा करना। मैं आपका दास हूँ। आदमी से अक्सर क़सूर हो ही जाते हैं। आपका दास

—— ० ——

* तीर्थरामजी अपने पिता को चाचाजी कहा करते थे। इसलिए जहाँ जहाँ चाचा शब्द आया वहाँ वहाँ पाठकगण उसका अर्थ पिता समझें।

संबोधन पूर्वोक्त,		(७४)		६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। आप अगर आजकल यहाँ आ जायें, तो बड़ी अच्छी बात हो, क्योंकि एक तो अब जगह यही सुतंत्र आपके रहने के लायक़ है। राजे का गुरु चला गया है। और बीच का दरवाज़ा निकाला गया है। दूसरा इन दिनों यह मकान गौले रपे (शोर गुल) से ख़ाली है, तीसरा मेरा जी (चित्त) आपके दर्शन को बड़ा करता (चाहता) है। मुझे वजीफा अभी नहीं मिला।

आपका दास तीर्थराम

—— o ——

संबोधन पर्वाक्त,		(७६)		८ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप मुझ पर ख़ुश रहा करें। अगर आपका गुजरांवाला में कोई बड़ा भारी काम है जिस करके आप यहाँ नहीं आ सकते, तो वह काम मुझे लिखो, नहीं तो मेरी यह प्रार्थना है कि आप यहाँ ज़रूर आवें, क्योंकि मेरा चित्त आपके दर्शन को बड़ा चाहता है। मुझे वजीफ़ा अभी नहीं मिला।

आपका दास

—— o ——

संबोधन पर्वाक्त,		(७७)		९ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपके दो पत्र मिले। बड़ी ख़ुशी हुई। नय देवीदयाल तथा माहरसिंह आये तो मुझे इत्तला (सूचना) देनी। आप मुझ पर दया रखा करें और पत्र भेजते रहा करें। मुझे वजीफ़ा अभी नहीं मिला। हम अब नये कालिज में चले गये हैं। और मेरा माला अब यहाँ पढ़ने के लिये आ गया है। और अब जैसा आप कहेंगे, वैसा ही करूँगा। अगर कहोगे तो अब के में यहाँ आ जाऊँगा। आप मुझ पर ख़ुश रहा करें।

आपका दास

—— ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८) ११ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रक्षा करें। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। अगर हो सका तो इस सनीचर (शनिवार) को मैं आपके चरणों में आऊँगा। आपका पत्र आजकल कोई नहीं मिला। क्या वजह (कारण) है। पत्र लिखते रहा करो, ज़रूर, बड़ी ताकीद है। लाला अयोध्यादास जंडयाले से अभी नहीं आया। आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७६) १४ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। कल कालिज में जाऊँगा तो क्लार्क से पूछूँगा। आप दया रक्षा कर। आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८०) १५ अप्रैल, १८८६

मैं आपका सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रक्षा करें। आज क्लार्क से पूछा था। यह कहने लगा कि साहब ने रुपया आने की मुझे इत्तला (सूचना) नहीं दी, और आप ही रसीद भेज दी है। यह कहता है कि कल (वह) साहब से दर्याफ्त करके रुपये देगा। आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१) १६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका कोई भी पत्र नहीं आया। आज क्लार्क न साहब से मालूम किया है कि मेरा वज़ीफ़ा आया हुआ है, मुझे शुक्रवार को मिलेगा, क्योंकि सब वज़ीफ़े उस दिन का मिलेंगे। आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२) १६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आपका कोई भी पत्र नहीं

आया, क्या हेतु है ? आप पत्र लिखते रहा करें, और मुझ पर दया रखा करे । मुझे आज वजीफ़ा नहीं मिला, क्योंकि आज एक अँगरेज़ी त्योहार होने के कारण बैंक पर बंद था। शायद कल को मिल जाय। आप अब कब आयेंगे ?
आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८३)　　　　२० अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करे । क्लार्क ने मुझे वजीफ़ा सोमवार को देने का इक़रार किया है। क्योंकि आज दस बज के बाद उसे बैंक से रुपये मिलेंगे, और हमें दस बजे से पहले हफ्ता होने के कारण छुट्टी हो गयी है। गुजराँवाले के इन्ट्रेंस के इम्तहान में ये लड़के पास हुए हैं—राममल, रामकुँवर, अनंतराम, मलिक हजारी लाल, सोहनाराम, शिवनाथ, गोविंदराम, गोपालदास। आप अब यहाँ कब आवेंगे ? मुझ पर दया रखा कर । आपका एक पत्र (अभी) मिला।
आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८४)　　　　२२ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। मुझे वजीफ़ा आज भी नहीं मिला। ऐसा इत्तफ़ाक़ हो गया है। इसमें किसी का दोष नहीं है। आप यहाँ कब आवेंगे ? मेरा जी (मन) है कि आप आज कल यहाँ आ जायें। मैं आपका दास हूँ।
आपका दास

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८५)　　　　२१ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करे । आपके दो पत्र मिले। बड़ी ही खुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करे । मुझसे पत्र लिखने में कुछ देर हो गई है। मुआफ़ करे । मुझे वजीफ़ा अभी नहीं मिला।
आपका दास

—— ० ——

सयाधन पूर्वाक्त, (८६) २४ अप्रैल, १८८६
मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा कर। आपका एक पत्र आज मिला, यड़ी खुशी हुइ। मुझे आज वजीफा मिल गया है। आप इसी तरह पत्र लिखत रहा कर। और अगर शुक्रवार से पहल यहाँ आ जाओ, ता यड़ी ही दया हो। पत्र लिख चुकने के बाद छदमणदास, दयोदयाल का भाई मिला। आपका दास

—— o ——

सयोधन पूर्वाक्त, (८७) २६ अप्रैल, १८८६
मैं आपका सब कुछ अपण करता हूँ, आप दया रखा करे। मैंने सुना है कि ज्ञानचद गुजराँवाले मे गया हुआ है, आप अगर उसमे मेरे लिए यह किताब ले ले, ता मैं यड़ा खुश हूँगा। उसे उस किताब की खबर है। चाहे आप उसे कह द कि अगली बार लाहौर में अपन साथ लेता आये। लाहौर में मैंने उनके आगे इस किताब का जिक्र (चर्चा) किया हुआ है।

—— o ——

कुसग का त्याग

सयोधन पर्वोक्त, (८८) २७ अप्रैल, १८८६
मैं आपका सब कुछ अपण करता हूँ, आप दया रखा करें। निःसदेह कुसग मनुष्य का नाश कर देता है। आप मुझे जिस प्रकार कहें, मैं उसी प्रकार करूँगा। कहा ता उस लड़के का आज ही जवाब दे दूँ, और कहा तो अभी कुछ काल तक न जवाब दूँ, अर्थात न निकालूँ। आप यदि शीघ्र दर्शन दें, ता मुझे अति आनंद हो। आप की सीहर्फियाँ (कविताएँ) अति सुदर अक्षरों में आपके लिय लिखवाई हुई यहाँ पड़ी हैं। आपका दास तीर्थराम

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त,		(८६)		२६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रक्खा करें। आप जल्दी आवें तो मैं बड़ा खुश हूँ। मैंने सरमाया-ए-खिरद अभी खरीदी नहीं। आज या कल खरीद छोड़ँगा। अगर आपको तकलीफ (कष्ट) न हो तो ज्ञानचंद को भी मिलना। आप जल्दी आवें तो बड़ी खुशी हो।

आपका दास

—— ० ——

(९०)		२ मई, १८८६

संशोधन पूर्वोक्त,

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया रक्खा करें। आपने पत्र नहीं लिखा। मैं राजी हूँ और जब आप ज्ञानचंद से किताब ले लेंगे तो मुझे लिखना।

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त,		(९१)		३ मई, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। साक ने चिट्ठी भेज दिया है। आज पं० देवकीलाल का एक पत्र आपके नाम का मुझे मिला। आज लाला अयोध्यादास की कोठरी में से कपड़े और (बर्तन) खोये गये हैं, मगर सब जंगे (ताले) लगे के लगे ही रहे हैं। मैं उस वक्त पढ़ने गया हुआ था। और यह लालाजी आप की पुत्रियों में से एक तो पुरोहित का द गये हुए हैं और दूसरी नीरजनाम को। और चाचा साहब अभी नहीं आये।

आपका दास

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त,		(९२)		५ मई, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया रक्खा करें। आपका कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या हेतु है? आप पत्र लिखते रहा करें।

आपका दास

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३) ६ मई, १८९८

*सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म, आनन्दामृत, शान्तिनिकेतन, मंगलमय शिवरूपं, अद्वैतं, अतुलं, परमेशं, शुद्धं, अपापविद्धम्जी।

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। आप मुझ पर दया रखा करें। चाचाजी यहाँ नहीं आये। शायद मुझे मिले बिना मुरलीवाले चले गये हैं। मैं इस शनिवार को (अगर हो सका) तो आपके चरणों में हाजिर हूँगा। और हिस्टरी आफ इंडिया (History of India) मेरे ग्राम में भी है। अगर कहो तो वह ग्रामवाली आकर दे दूँगा, और अगर कहो तो यहाँ से मोल ले आऊँगा। जिस तरह कहोगे उसी तरह करूँगा।

तुम्हीं नित्य, तुम्हीं सत्, तुम्हीं ईश, तुम्हीं महेश।
तुम्ही आदि, तुम्हीं अन्त, तुम्हीं अनादि, तुम्हीं अशेष।
तुम्हीं ज्ञान, तुम्हीं प्रेम, तुम्हीं मोक्ष, तुम्हा महान्।

पत्रीका अभी नहीं मिला। यह पत्र डालने से पहले एक आपका और पत्र मिला। क्या आप ज्ञानचंद से उस किताब की बाबत पूछोगे?

आपका दास तीर्थराम

—— ० ——

* ६ मई १८९८ से लेकर १० अगस्त १८९९ तक सारे पत्रों के आरंभ में तीर्थरामजी ने अपने गुरुजी को "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" इत्यादि उपमा से लेकर "मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ आप दया रखा करें।" तक संबोधन लिखा है पर प्रत्येक पत्र के आरम्भ में बार बार यह संबोधन लिखना उचित और आवश्यक न समझकर उसके स्थान पर केवल "संबोधन पूर्वोक्त" ऐसा दे दिया गया है। ऐसे ही सब पत्रों के अन्त में आपका "दास तीर्थराम" है। इसे भी बार बार देना आवश्यक न समझकर छोड़ दिया गया है। अलबत्ता जहाँ कहीं अन्य रूप से संबोधन अथवा पत्र के अंत में अन्य शब्दों में अपने को तीर्थरामजी ने लिखा है वहाँ वैसा का वैसा ही दे दिया गया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (६४) ८ मई, १८८६

मेरा इरादा इस शुक्रवार को आपके पास आने का है, अगर हो सका तो। मुझे मुरलीवाले भी काम है। आप दया रखा करे। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। क्या ज्ञानचंद से आप पूछेंगे? आपका पत्र कोई नहीं आया। डिस्टी की बाबत मैं आपको लिख ही चुका हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५) १४ मई, १८८६

आपका कोई पत्र नहीं मिला। क्या हेतु है? आप दया रखा करे और पत्र लिखते रहा करे। मैं आपका दास हूँ। चाचाजी नहीं आये। वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६) १६ मई, १८८६

आपका कोई भी पत्र नहीं मिला। बड़ा फ़िक्र लगा हुआ है। आप पत्र भेजते रहा करें। मैं आपका दास हूँ। मुझ पर ख़फ़ा न होना।

तुम्हीं हमारे परम पिता हो, तुमहीं हो हितकारी।
तुम्हीं हमारे प्राण हो स्वामी, तुमहीं मंगलकारी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७) १७ मई, १८८६

आप मुझे पत्र क्यों नहीं लिखते, मुझ पर ख़फ़ा (रुष्ट) क्यों हो?

राजा रूठे नगरी राखे अपनी,
मैं दर रूठे कहाँ जाना ?
जे तुम काला नाग जो भेजो,
मैं शालग्राम कर माना।"

मेरे महाराजजी!! आप मुझ पर ख़फ़ा न हुआ करें।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६८) १८ मई, १८८८

चाचाजी आ गये हैं। मुझे वजीफा मिल गया है। आपने मुझे भुला क्यों छोड़ा है ? मैं आपका दास हूँ। मुझे पत्र लिखते रहा करो।

मैंने आपको इतने पत्र लिखे हैं, एक का भी उत्तर नहीं आया। क्या हेतु है ? मुझ पर खफ़ा न होना, मैं आपका नौकर हूँ। संतराम की कमेटी का हाल अगर मालूम हो, तो लिखना।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६६) १६ मई, १८८८

मैं नहीं जानता कि मुझसे कौन-सा क़सूर हो गया है, जिस कारण आपने मुझे भुला छोड़ा है। आप मेरे क़सूरों को मुआफ़ (क्षमा) करें, क्योंकि आप परम दयावान् और कृपाल हैं। आदमी से क़सूर हो ही जाते हैं। मैं अगर हो सका, तो इस हफ़्ते (शनिवार) आने का संकल्प रखता हूँ।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१००) २१ मई, १८८८

आपका पत्र मिला, बड़ा ही आनंद प्राप्त हुआ। मुझे वजीफ़ा मिल गया है। अब यहाँ मैं व मुकुंद एक तरफ़, नीरजनाम लालाजी के कमरे में, और संतराम दूसरी तरफ़ रहते हैं। इन दिनों इस मकान में हम चारों के बग़ैर कोई नहीं रहता। अगर शुक्रवार की छुट्टी हुई, तो मैं वीर को यहाँ आने का संकल्प रखता हूँ, नहीं तो शुक्रवार आने का इरादा है, इति।

——:०:——

संशोधन पूर्वोक्त, (१०१) २६ मई, १८८८

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। आप मुझ पर दया रखा करें, और आप मुझे पत्र लिखने में देर न किया करें।

—— ० ——

गुरुजी से हार्दिक प्रार्थना

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०२)　　२८ मई, १८८६

आपका पत्र कोई नहीं मिला, चित्त उस तरफ रहता है। लाला अयोध्यादास आये हुए हैं। आप यहाँ कब आवेंगे ? इति

शुद्ध करो मेरे मन को प्रभुजी !
पापी मन मम रुकत न राखे ,
धीर धरे नहीं छन को।　　तीर्थराम

मिशन विद्यालय, लायपुर

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०३)　　१० मई, १८८६

आपका कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या हेतु है ? आप पत्र लिखते रहा करें। ध्यान उधर ही रहता है।

सर्वसखा देवा, सकल सुखदाता, दुखहरा ,
दयावता स्वामी, अतुल शुभ-दाता प्रभु मरा।

—— ० ——

गुरु-विरह-वेदना

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०४)　　१ जून, १८८६

आपका पत्र कोई नहीं मिला। आप अब से लेकर ठाकुरद्वारे की मार्फत ज्यादा खत भेजा करो, यहाँ से जल्दी मिलता है। ध्यान आपके पत्र की ओर रहता है। मैं आपका दासानुदास हूँ।

तनक प्रभु चित दो मेरी ओर।
विरह-वेदना सहि न जात अब ,
हिरदय व्याकुल मोर। (तनक प्रभु)

मुकुंदलाल और लाला अयोध्यादास का मत्था टेकना।

—— ० ——

गुरु-भक्ति का उदाहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५) २ जून, १८८८

आपका एक कार्ड बहुत काल के पश्चात् आज मिला, बड़ा आनंद हुआ, शायद आज कल हम मकान की यह तरफ तबदील कर देंगे और उस तरफ (ओर) को चले जायेंगे, जहाँ कि एक बार राजा का गुरु उतरा था और इस तरफ में कोई और किरायादार आ जायगा। कल का लाला अयोध्यादास के पास बाबा बालकनाथ आया हुआ है। कुछ दिनों से लाला अयोध्यादास की वृत्ति बदल गयी हुई थी। यह एक भाई सुजानसिंह* के चेले के पीछे लगा हुआ था, और उस शिष्य ने उसे यह कहा था कि मैं तुमको साक्षात् परमेश्वर दिखलाता हूँ। इस बात से लाला अयोध्यादास उसके मगर (पीछे) लगा हुआ था, परंतु अब मैंने लालाजी का दिल उस ओर से नितांत हटा दिया है और यह आपके चरणों में दृढ़ हो गया है। महाराजजी। मैं आपको हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप इस सप्ताह (अर्थात् शनिवार को) अवश्य यहाँ पधारें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

गुरु से सविनय निवेदन

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६) ५ जून, १८८८

आज बाबा बालकनाथ चला गया है, और संतराम ने भी आज यह मकान छोड़ दिया है। अभी हम मकान की पहली ही तरफ हैं। आप अब अगर आवें, तो यही ही दया हो। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

आओ, आओ प्रभु ! पातकी-जन-पावन
होय दयालु, देओ नाथ ! पातकी को दर्शन।

---

* भाई सुजानसिंह गुजराँवाले में एक प्रसिद्ध मस्त और उन्मत्त संत थे।

देखो शुद्ध शांत मति, दूर करो सब कुमति,
प्रेम युक्त शांति देखो, यही है निवेदन।

—— ० ——

गुरु-अनुराग

संबोधन पूर्वोक्त,		(१०७)		६ जून, १८८९

आपका एक पत्र आज मिला, बड़ी खुशी हुई। आज हमने मकान की पहली तरफ छोड़ दी है, और उस तरफ में आ गये हैं, जिसमें एक वृन्द राजे का गुरु उतरा था। आप अगर आज कल आ जायें, तो बड़ी ही दया हो। मैं आपका नौकर हूँ।

तुम बिन कौन हमारो प्रभु जी।
हुए असत के हम अनुरागी
हित कर सत्य बिसारो।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,		(१०८)		८ जून, १८८९

आप यहाँ आज आये क्यों नहीं ? आप जल्दी दर्शन दें। आप पत्र लिखते रहा करें। मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,		(१०९)		१० जून, १८८९

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी खुशी हुई। मैं आखिरी हफ्ते को आने का संकल्प रखता हूँ। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,		(११०)		१२ जून, १८८९

आपका एक पत्र आज मिला, बड़ा आनंद प्राप्त हुआ। आप जरूर इस हफ्ते दर्शन दें। मैं आपका नौकर हूँ। मुझे वजीफा अभी नहीं मिला। मुकुन्दलाल व अयोध्यादासजी की ओर से मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१११) ११ जून, १८८९

आपका आज एक पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। आप जरूर मुझ पर कृपा करें, और मुझे दर्शन दें। मैं आपका दास हूँ। मैं आप यहाँ इसलिये नहीं आता कि हमें सिर्फ एक तो छुट्टी होती है और तिस पर काम बड़ा होता है। अगर आप आयें तो दो तीन दिन तक तो आपके दर्शन नसीब रहते हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (११२) १६ जून, १८८९

पत्र लिखते रहा करें। उस दिन आपके, मेरे कालिज से आने से पहले, चले जाने का दिल में बड़ा फ़िक्र हुआ।

धन्य लोचन बिन दरस तिहारो,
धन्य वह करे कथा तुम्हारी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (११३) २२ जून, १८८९

आपका पत्र कोई नहीं आया। मुझसे भी अब के पत्र भेजने में कुछ देर हो गई है। आप कृपा रखा करें। मुकुंदलाल व अयोध्यादासजी का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (११४) २४ जून, १८८९

मैं आपका दास हूँ। आपका एक पत्र आज मिला बड़ी खुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। गुसाईं रामदास, मुकुंदलाल, नीरंजनाम का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (११५) २९ जून, १८८९

आपका पत्र आता रहे, तो बड़ा चित्त प्रसन्न रहता है। आप पत्र लिखते रहा करें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

गुरु-पत्राकांक्षा

सबोधन पूर्वोक्त, (११६) २८ जून, १८८६

पत्र लिखते रहा करे । मुकुंदलाल का मत्था टेकना । पत्र ज़रूर भेजते रहा करे ।

—— o ——

सबोधन पूर्वोक्त, (११७) १ जुलाई, १८८६

मैं आपके चरणों का दास हूँ । पत्र लिखते रहा करे । आपको पत्र भेजे बड़ा अरसा हो गया है । आपके चरणों का दास

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (११८) १ जुलाई, १८८६

आपके दो पत्र मिले । बड़ी खुशी हुई । आप पत्र लिखते रहा करें । हमें छुट्टियाँ मिलने की पक्की तारीख अभी नहीं बतलाई गई । अगर ज्ञानचंदजी मिले, तो कृपा करके उन्हें कह देना कि अगर वह पुस्तक छुट्टियों से पहले-पहले हमें मिल गई, तो बड़ा अच्छा काम होगा । और मैं बड़ी जल्दी पुस्तक को देखकर वापिस कर दूँगा ।

—— o ——

सबोधन पूर्वोक्त, (११६) ५ जुलाई, १८८६

छुट्टियों की अभी पक्की खबर नहीं । आज कल हमें बहुत बड़ा काम होता है । आप दया रखा करें । आप की दया बिना कुछ हो नहीं सकता । जिस तरह आप कहें, मैं उसी तरह करूँगा । मैं आपका दास हूँ । आपका पत्र मिला है । मुकुंदलाल का मत्था टेकना ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१२०) ८ जुलाई, १८८६

पत्र लिखते रहा करें । छुट्टियाँ या तो २८ तारीख को होंगी या इस हफ्ते ही शायद हो जायें । आप दया रखा करे । अगर आपको पत्र न

हो, तो ज्ञानचंदजी से पूछना कि अगर पुस्तक छुट्टियों से पहले-पहले दिला दें, तो बड़ी ही कृपा होगी और मैं बहुत जल्दी देखकर दे भी दूँगा।

—— o ——

संबोधन पर्वोक्त,　　(१२१)　　११ जुलाई, १८८८

आपका और ज्ञानचंद का पत्र मिला, मगर वह मनुष्य अभी नहीं मिला। मुझे यथोक्त मिल गया है। मुझसे अब के पत्र भेजने में कुछ देर हो गई है। आप मुआफ़ फ़रमावें। लाला अयोध्यादास जी का मत्था टेकना। मुकुंदलालजी का मत्था टेकना।

—— o ——

सबोधन पूर्वोक्त,　　(१२२)　　१५ जुलाई, १८८८

आप पत्र भेजते रहा करें। हमें कोई दो हफ़्ते को महीने के आख़िर (अंत) में छुट्टियाँ होंगी। वह मनुष्य पुस्तकवाला नहीं मिला। मुकुंद लाल का मत्था टेकना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१२३)　　१७ जुलाई, १८८८

आपका पत्र आये बड़ा अरसा (काल) हो गया है। आप पत्र लिखते रहा करें। मैं आपका दास हूँ। वह विक्रमादित्य ज्ञानचंद की पुस्तक-वाला लड़का अपने गाँव चला गया हुआ है।

—— o ——

निज इच्छा-विरुद्ध भी गुरु-आज्ञानुसरण का भाव

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१२४)　　१९ जुलाई, १८८८

हमें इस सप्ताह (अर्थात् शनिवार) को आशा है छुट्टियाँ होंगी, और नीरंजनाम * मेरे साथ हमारे ग्राम में जाना पड़ा

* नीरंजनाम एक ब्राह्मण का लड़का था जो तीर्थरामजी का रसोइया बनाया करता था और साथ इनके इनसे विद्याध्ययन भी किया करता था। गुरुजी का इस लड़के का आचरण अच्छा प्रतीत नहीं होता था इसलिये इसकी संगति से तीर्थरामजी को रोकते

चाहता है। आप यदि मुझे कहें, तो मैं उसे लाऊँगा, नहीं तो न लाऊँगा। मैं आपके कहे पर अमल करूँगा (चलूँगा)। यह भाड़ा (किराया) अपने पास से देगा, और थोड़ा काल यहाँ रहकर उसका वापस चले आने का इरादा (विचार) है। मेरे पास वह पढ़ने के लिये रहना चाहता है। आप जल्दी लिखें कि मैं उसे लाऊँ या न लाऊँ।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०५)　　　　२२ जुलाई, १८८६

मैं आपका नौकर (सेवक) हूँ, मेरे अपराधों को मुआफ़ (क्षमा) फरमाया करें। आपके दो पत्र मिले, बड़ी ही ख़ुशी हुई। मैं नीरजनाभ को हरगिज़ (कदापि) साथ न लाऊँगा। मैं आपका आज्ञाकारी हूँ। आपका बीरवार का पत्र भी आज ही मिला, क्योंकि तीन दिन कालिज बंद रहा। मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

तीर्थरामजी की अधीनता

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०६)　　　　२३ जुलाई, १८८६

आपके दो पत्र आज और मिले। मैं बड़ा ही पापी और अपराधी हूँ। आप मेरे मन को शुद्ध करें, क्योंकि सब कुछ आप ही करनेवाले हैं। मेरे पिता भी आप हैं, भाई भी, और सब संबंधी भी आप ही हैं। मुझ पर रहम (दया) किया करो, क्योंकि "अब छुट्टों खाता

थ। परंतु तीर्थरामजी का यह गरीब और भोलाभाला दिखाई देता था इसलिये इस पढ़ाने तथा अन्य प्रकार से सहायता देने में तत्पर रहते थे। तथापि वह अपने चित्त के अनुसार बिना गुरु की आज्ञा के कुछ नहीं करना चाहते थे इसलिये इसके विषय में उन्होंने पत्र द्वारा गुरुजी से आज्ञा माँगी।

व अज बजुर्गों खता" (छोटों से अपराध और बड़ों से क्षमा) चली आती है। मनुष्य से अपराध भी हो जाते हैं। मैं आपका दास हूँ, जिस प्रकार कहोगे, उसी प्रकार करूँगा। मुफ्त दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

अन्तःकरण की कोमलता

संबोधन पूर्वोक्त, (१२७) २४ जुलाई, १८८८

आपका एक और पत्र आज मुझे मिला। मैं तो आपके इजार (सफेद) का भी हद से बढ़कर जानता हूँ आप फिर मुझे बार बार क्यों ताकीद करते हैं ? मैंने तो अब नीरजनाम से बोलना भी छोड़ दिया है। मुझ पर आप खफा (रुष्ट) क्यों होते हैं ? मेरा आपके बिना कोई ठिकाना नहीं। मुझ पर कृपादृष्टि करो। मुझ पर यदि आप राजी (प्रसन्न) होंगे तो भी मैं आपका हूँ, और यदि रुज (अप्रसन्न या नाराज) होंगे तो भी मैं आपके चरणों में पड़ा रहूँगा। मुझ पर करुणा करो।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१२८) २५ जुलाई, १८८८

आपके तीन कार्ड मिले। हमें आशा है, कल छुट्टियाँ मिल जायँगी। मैं कल आठ बजे आने का संकल्प रखता हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१२९) पैरोक ०१० अगस्त, १८८८

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। ये लोग अच्छी तरह से पेश आये हैं। मैं आपका दास हूँ। दया रक्षा करें।

—— ० ——

* यह यहाँ ग्राम है, जहाँ विद्यार्थी तीर्थराम का श्वशुरालय। [ससुराल] था और जिसका जायपर व गहमीन बमीरामा थे। इसका वर्णन पहले पत्र नं० १ के फुटनोट में

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३०)   घेरोके, १५ अगस्त, १८८६

मुझे अभी यह आने नहीं देते। और इस सोमवार को हमारे आने की तजवीज़ ठहरी है। आपने खुशी रखनी, मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३१)   लाहौर, ८ अक्तूबर, १८८६

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। लाला अयोध्यादास यहाँ नहीं हैं। आप ज़रूर बसद ज़रूर यहाँ जल्दी तशरीफ़ लायें। नीरजनाम बड़ा तंग करता है। मैं इस मकान में रहना नहीं चाहता। महेशदास भी यहाँ नहीं हैं। मगर अब यहाँ एक और ग़ैर आदमी भी रहता है। सो अब यहाँ मैं, मुकुन्द और यह तीसरा ग़ैर आदमी हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३२)   ६ अक्तूबर, १८८६

सुना गया है कि अयोध्यादास नौकरी से मौक़ूफ़ किया गया है, मगर यह ख़बर पुख़्ता नहीं है। आप ज़रूर तशरीफ़ लायें। जल्दी आयें। अगर ऊपर की ख़बर सच हुई, तब तो ख़्वाह मख़्वाह यह मकान छोड़ना पड़ेगा। इसलिए पहले से ही मकान की फ़िक्र करना अच्छा है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३३)   ११ अक्तूबर, १८८६

आप अभी तक आये क्यों नहीं। आप ज़रूर बहुत जल्दी आयें। अब नीरजनाम इस मकान में नहीं आता। जब लालाजी आयेंगे, फिर आया करेगा। आप ज़रूर जल्दी आयें।

—— ० ——

आ चुका है। इन सातों पत्रों से मालूम होता है कि कालिज में इन दिनों गर्मियों की छुट्टियाँ थीं जिसमें तीर्थरामजी कुछ दिन लाहौर में रहने के बाद गुजरांवाला में गोसाईं जी के पास आकर रहे हैं इसीलिये अगस्त से अक्तूबर मास तक केवल दो पत्र ही इनके मिले हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (१३४) ११ अक्तूबर, १८८६

आपका एक पत्र मुझे आज मिला और थोड़ा काल हुआ लाला अयोध्यादास भी आ गया है। आप अब जरूर ही आ जावें। जगह का समागम मुझे नहीं बनता। कृष्णचंद्र की जगह मन रही है। बाबा जवाहरदास भी लाला के संग आया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३५) १३ अक्तूबर, १८८६

कल एक पत्र महेशदास के हाथ का आया था। आप अब जरूर आवें, क्योंकि अब तो हमारे कालिज खुलने का दिन भी परसों आ गया है। आप जरूर आवें। मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३६) १६ अक्तूबर, १८८६

आज ५) रु० अर्जुनदास से वसूल पा लिये हैं। बड़ी खुशी हुई। आज मैंने मासड़(मौसा)जी को भेजने के लिये किताब ले ली है। आप दया रखा करें। मैं बड़ा खुश हुआ हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३७) २५ अक्तूबर, १८८६

मुझे आज कुछ आराम हो रहा है। आप अब जल्दी आना। अगर तकलीफ (कष्ट) न हो तो दया करके नीचे लिखी किताब लेते आना—(१) डिडक्टिव लॉजिक (Deductive Logic) । इस किताब की जिल्द नहीं बंधी हुई, और छोटी सी किताब है। इसके गिर्द शायद कोई कागज अखबार आदि का लगाया हुआ है। (२) इम्तहानों के पर्चे (परीक्षा-प्रश्न-पत्र) । (३) कैलेंडर (Calendar), यह वह किताब है, जिसके वर्के (पृष्ठ) सब उखड़े हुए हैं और जिल्द में जुड़े हुए नहीं हैं। मगर इसकी जिल्द बड़ी खूबसूरत है, और इसके

गत्ते एक कपड़े में पहले ही के मढ़े हुए हैं, और इसकी पुश्त (पृष्ठ) पर काले अक्षरों में इसका नाम खुदा हुआ है। ये तीन किताबें हैं। अगर आपको मालूम करने में तकलीफ होती हो, तो न लाना।

—— ० ——

सर्व ज्ञान आदि सम्बोधन,   (१३८)   २७ अक्तूबर, १८८६

आप अब कब आयेंगे? जल्दी आना। मैं आपका दास हूँ। भाई साहब आये हुए हैं कि नहीं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३६)   २६ अक्तूबर, १८८६

आपने कोई खत (पत्र) नहीं लिखा, क्या हेतु है? खत आप लिखते रहा करें। लाला अयोध्यादास आज आ गया है। आपको मालूम है भाई साहब अभी आये हैं कि नहीं? आप कब आयेंगे। जल्दी आना। मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१४०)   ३१ अक्तूबर, १८८६

आपका खत कल मिला; सो महाराजजी! आपने भी ज़रूर भाई साहब के साथ आना। मैं आपका दास हूँ, आप दया रखा करें। मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१४१)   १ नवंबर, १८८६

आपका एक पत्र आज मिला। आप जल्दी भाई साहब के साथ ही चले आवें। जबकि आप लाहौर से गये हैं मैं राजी नहीं हूँ। अब बलराम (श्लेष्मा) और खाँसी ने तंग कर रखा है। आपको लिखा इसलिये नहीं कि आपको तंगी न होवे।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४२) रात्रि, ६ नवंबर, १८८६

कोई हाल लिखने के क़ाबिल नहीं। भाई साहब जब जायेंगे, मैं आपको इत्तिला (सूचना) दूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४३) ८ नवंबर, १८८६

मैं आपका दास हूँ आपका पत्र कोई नहीं आया। मुफ़ु दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४४) १० नवंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था। मैंने कल से ही तेल सरसों का जलाना शुरू कर दिया है। भाई साहब कल जाने का इरादा रखते हैं, आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४५) १४ नवंबर, १८८६

मुझे आज किताबें कलकत्ते से आ गई हैं, जोकि यहाँ लिखी हुई थीं। मैं आपका दास हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४६) १७ नवंबर, १८८६

आपके कई पत्र आये हैं। अब हमारा सिमाही इम्तहान (त्रैमासिक परीक्षा) होनेवाला है। मैं आपका दास हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४७) १६ नवंबर, १८८६

हमारा इम्तहान कल से शुरू होगा और पंद्रह दिन तक होता रहेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४८) २० नवंबर, १८८६

आपके दो कार्ड आज मिले, बड़ा आनंद हुआ। आप अगर यहाँ आ जायें तो मुझे और क्या चाहिये। आप जरूर जल्दी दया करें।

श्रीमहाराजजी ! यह पत्र कल बुधवार का लिखा हुआ है, मगर डाक में डालना याद नहीं रहा था, इसलिये आज वीरवार भेजा जाता है, मुआफ फरमाना। मैं आपका दास हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४९) २२ नवंबर, १८८६

महाराजजी ! आप कल शनिवार को अगर आ जायें, तो बड़ी दया हो, क्योंकि कल से दो तीन दिन तक हमारा इम्तहान बंद रहेगा। और उसके बाद फिर होने लग पड़ेगा। ये छुट्टियाँ अगर आप यहाँ आ जायें तो बड़ी दया हो। आप जरूर आ जायें, मैं आपका दास हूँ। दो बातें और भी हैं जिस लिए आप यहाँ आयें। एक तो यह कि अब लाला अयोध्यादास का इरादा इस मकान को छोड़ देने का है, दूसरी यह कि अब खर्च की बहुत ही तंगी है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५०) २४ नवंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था। मैं राजी हूँ। आप अब जरूर यहाँ आवें। नीज् (साथ इसके) कलकत्ते का लॉर्ड (वाइसराय) भी यहाँ आजकल आया हुआ है, उसे भी देख लेना। मुकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५१) २६ नवंबर, १८८६

आप अब इस हफ्ते (सप्ताह) जरूर आ जायें, बड़ी दया होगी। आप पत्र ठाकुरद्वारे और कालिज दोनों की मार्फत भेजा करें। मैं आपका दास हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५२) २७ नवंबर, १८८६

हमारा इम्तहान इस शुक्रवार को खतम हो जायगा, आप अगर शुक्रवार आ जावें तो बड़ी ही दया होगी। आप जरूर इस शुक्रवार को आ जावें, मैं आपका दास हूँ। महाराजजी! जरूर आ जावें। मुकुन्द लाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५३) ४ दिसंबर, १८८६

यहाँ खैरियत (कुशल) है, आपका सुख मतलूब (इच्छित) है। लाला अयोध्यादास अभी इस तरफ नहीं आया।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५४) ६ दिसंबर, १८८६

लाला अयोध्यादास अभी इधर नहीं आया। जब आयेगा, मैं लिख दूँगा। यह पत्र शुक्रवार का लिखा हुआ है, मगर किताब में पड़ा रहा और डाक में डालना याद न रहा, इसलिये आज शनि को भेजा जाता है, आप मुआफ फ़रमाना, मैं आपका दास हूँ।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५५) ६ दिसंबर, १८८६

आप पत्र कालिज में जो भेजते हैं तो कई दफा (प्राय:) लड़के पढ़ लेते हैं। अब मेरा दूसरा पता यह है—"लाहौर, बाजार बारूदखाना, शामामल हलवाई की मार्फत तीर्थराम को मिले"। लाला अयोध्यादास के घर के (लोग) लाहौर में आ गये हैं। लाला आप अभी इस मकान में नहीं आया। आपका एक पत्र आज मिला।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५६) ११ दिसंबर, १८८६

आप दया रखा करें। आपका पत्र आये कुछ देर हो गई है। आप

पत्र लिखते रहा करे। चाचाजी अभी आये हैं कि नहीं? जब आयेंगे मझे इत्तिला (सूचना) देना।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१५७)　　१३ दिसंबर, १८८९

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है, आप दया रखा करे। पता—लाहौर, मस्ती दरवाजा या क़िलावाला दरवाज़ा, बाज़ार बारूद खाना, मार्फ़त शामामल हलवाई के तीर्थराम को मिले।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१५८)　　१५ दिसंबर, १८८९

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ा आनंद हुआ। आप एक पत्र कालिज में और एक पत्र इस मकान के पते पर भेजा करें।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१५९)　　१७ दिसंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। लाला अयोध्या दास को अभी आराम नहीं आया। हमारा फिर दो दिन इम्तहान है। छुट्टियों में आने की बाबत फिर लिखूँगा। मुकुंदलाल का मत्था टेकना। लाला अयोध्यादास का मत्था टेकना। लाला अयोध्यादास अभी इस बैठक में नहीं आया।　　आपका दास

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१६०)　　१६ दिसंबर, १८८६

मैं छुट्टियों में आपके पास आने का तो इरादा (सकल्प) रखता हूँ, पर गाँव (ग्राम) में जाने को जी नहीं चाहता। इसलिए आप अगर मेरे आने से पहले दस रुपया किसी तरह हमारे गाँव से मँगाकर अपने पास रखें, तो मुझे वहाँ जाना न पड़े। और आने का दिन फिर लिखूँगा।

संबोधन पूर्वोक्त, (१६१) २१ दिसंबर, १८८८

आपका पत्र आये अब कुछ देर हो गयी है। हमें शायद मंगल से लेकर छुट्टियाँ होंगी। मैं छुट्टियों के अंत में आने का ज्यादा संकल्प रखता हूँ। अगर जी चाहा, तो शुरू ही में आ जाऊँगा। आगे जिस तरह आप हुक्म करें, उसी तरह मैं करूँगा। आप अगर मुरालीवाले* से दस रुपया मँगवा रखें, तो बड़ी दया हो। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६२) २१ दिसंबर, १८८८

आज से लेकर हमें छुट्टियाँ हो गयी हैं। जिस दिन आप लिखेंगे, मैं हाजिर हो जाऊँगा। आपका एक पत्र कल मिला था। आप अब पत्र जल्दी भेजना। हमें तो छुट्टियाँ हुई हैं। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६३) २६ दिसंबर, १८८८

आपका एक पत्र आज मिला। अब मेरा संकल्प शनि की रात को आपके पास आने का है। एक दो दिन रहकर फिर यहाँ चला आऊँगा। आपकी किताब के लिये आज बाजार से पूछूँगा। लाला अयोध्या दास का जो असबाब इस डेरे में था, वह आप सवेरे (प्रात) यहाँ से ले गया हुआ है। वह असबाब उसने अपने गाँव में भेज दिया है। मुझे नहीं मालूम कि लाला अयोध्यादास ने कुरसियाँ खरीदी हुई हैं कि नहीं। अगर लाला अयोध्यादास ने कुरसियाँ ली हुई हैं, तो उसमे कहूँगा कि रेल पर चढ़वा दे। इति।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६४) ३० दिसंबर, १८८८

मैं आज यहाँ पहुँच गया हूँ। मुकुंदलाल अभी यहाँ नहीं आया।

* तीर्थरामजी का जन्म-स्थान यह ग्राम है।

आप पत्र भेजते रहा करें । आप दया रखा करें । मैं आपका दास हूँ ।

—— ० ——

सन् १८९० ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े सोलह वर्ष के लगभग थी ।)

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१६५)　　　　१ जनवरी, १८९०

कल हमारा कालिज खुलेगा । आप पत्र भेजते रहा करें । मुकुन्दलाल अभी नहीं आया । १) रु० किराया का मैंने दे दिया है ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१६६)　　　　३ जनवरी, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला । बड़ी खुशी हुई । मुकुन्दलाल आ गया हुआ है । लाला अयोध्यादास अभी शायद नहीं आया, क्योंकि जब वह यहाँ होता है, तो दिन भर में एक न एक दफा प्राय जरूर मिला करता है ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१६७)　　　　५ जनवरी, १८९०

लाला अयोध्यादास आ गया हुआ है । रुपये दे दिये हैं । मुकुन्दलाल से भी किराया के साढ़े तीन रुपये दिलवा दिये हैं । गोविंदसहाय को भी रुपये दे दिये हुए हैं । आप दया रखा करें । मुकुन्दलाल का मत्था टेकना ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१६८)　　　　६ जनवरी, १८९०

आप पत्र कालिज में भी लिखा करें और इस मकान पर भी । आप पत्र भेजते रहा करें । मैं आपका दास हूँ । आप दया रखा करें ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६९) ८ जनवरी, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला। बड़ी खुशी हुई। आप जरूर जल्दी यहाँ आवें। मैं आपके चरणों का दास हूँ। आप जरूर जल्दी दया करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१७०) १० जनवरी, १८९०

महाराजजी! आप कल जरूर ही आ जायें। मैं आपके चरणों का दास हूँ। आप दया रखा करें। जरूर ही आ जायें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१७१) १२ जनवरी, १८९०

महाराजजी! आपका पत्र मिला। बड़ा आनंद हुआ। आप जरूर ही अब तो जल्दी आ जायें। मुझ पर दया रखा करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१७२) १४ जनवरी, १८९०

आप अभी तक आये क्यों नहीं? जल्दी तशरीफ लाओ। मुझ पर खुश रहा करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१७३) १४ जनवरी, १८९०

आपका पत्र, जिसमें चाचाजी के आने की बाबत लिखा हुआ था, अब मिला। बड़ी खुशी हुई। आज प्रातःकाल मैंने आपकी तरफ एक पत्र लिखा था, अब फिर लिखता हूँ कि आप जरूर आ जाओ; मैं चाचाजी के वास्ते गाँव जाने का संकल्प नहीं रखता। चाचाजी को लिखा है कि वह यहाँ आ जायें। अब आप जरूर ही आओ।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१७४) १५ जनवरी, १८९०

मैंने दो पत्र कल आपकी तरफ भेजे थे, अब आपका एक और पत्र

आया। सो महाराजजी! जिस तरह आप मुझ कहें, मैं बिलकुल उसी तरह करूँगा। आप अगर मेरा आना वाजिब समझते हैं, तो मुझे शनिवार से पहले-पहले जवाब लिखें। मैं जरूर आ जाऊँगा। अगर आप आ जायें, तो बड़ी ही दया होगी। मैं आपको बहुत जल्दी मिलना चाहता हूँ। जरूर, जरूर, चाचाजी को मैंने भी लिखा है, और आप भी कहें कि वह खुद जरूर आप आकर मुझे मिल जायँ, आप मुझ पर दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१७५)　　　　१६ जनवरी, १८६०

महाराजजी! आपका एक पत्र आज और मिला, बड़ी खुशी हुई। मैंने तो आपको कितने ही पत्र लिखे हैं, पर आप आते ही नहीं। अब इस कार्ड को पाकर तो जरूर दया करनी। मेरा आना मुश्किल है। मुकु दलाल का मत्था टेकना। आज चाचाजी आ गये हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१७६)　　　　१८ जनवरी, १८६०

चाचाजी कल आने का संकल्प रखते हैं। आप जल्दी दया करना। मैं आपका दास हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१७७)　　　　२० जनवरी, १८६०

आज नौ बजे सुबह (प्रात) की गाड़ी में चाचाजी कर्मोके का टिकट लेकर चले गये हैं। अब आप जरूर ही बहुत जल्दी तशरीफ लायें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१७८)　　　　२५ जनवरी, १८६०

आज अयोध्यादास रुपये लाया था, कुरसियाँ उसने नहीं खरीदीं। अब जिस दिन वह गुजराँवाले जायेगा, आपको रुपये वालों के दे देगा। आप दया रखा करें।

—— o ——

कालिज में दाखिल कर दे। मैंने अभी लाला भगवानदास से रुपये नहीं लिये।

अब महाराजजी ! मुझे बड़ी फ़िक्र (चिन्ता) लगी हुई है, क्योंकि मुझे अपने आप पर बिलकुल ज़रा भी भरोसा नहीं। मैं बड़ा नालायक़ हूँ। अगर मेरा वज़ीफ़ा (छात्र-वेतन) अब के न लगा, तो मेरे दिल को बड़ा सदमा पहुँचेगा।

आप बिलकुल (पूर्ण) परमेश्वर हैं, सब कुछ कर सकते हैं, सब कुछ जानते हैं। तारफ़ आपकी सिफ़त (उपमा) मेरे लिखने की मोहताज नहीं। अब बात यह है कि अभी तो वक़्त है। अगर आपकी राय (सम्मति) में मुझे इस साल दाखिला भेज देना। वाजिब हो, तो मैं भेज देता हूँ, नहीं तो अगले साल इम्तहान दे दूँगा।

मैं आपका नौकर हूँ। आपने जवाब जल्दी लिखना और सोचकर लिखना। मुझे अपनी मेहनत या हुश्यारी पर तो कुछ भरोसा नहीं, मगर हाँ आप अगर मदद दें, तो मुझे सब कुछ उम्मेद हो सकती है। मुझे इसी साल वज़ीफ़ा मिल सकता है।

इतनी मुद्दत हुई आपका पत्र कोई नहीं आया। क्या वजह (कारण) है। अब मुझे आपने भी भुला दिया है। जब किसी के बुरे दिन आते हैं, तो ऐसा ही होता है।

तीर्थरामजी का धार्मिक परीक्षा का प्रवेश-पत्र भरना

संबोधन पूर्वोक्त, (१८९) १० फ़रवरी, १८९०

कल तक मैंने यह समझा था कि इम्तहान में दाखिल होना अथवा न होना मेरे वश (इख़्तियार) में है, मगर यह बात नहीं निकली। आज दो साहब ने तक़रीबन (लगभग) सबसे पहले मुझसे फ़ार्म

(प्रवेश-पत्र) पर नाम लिखवा लिया है। और जब फ़ार्म पर नाम लिखा गया, तो दाख़िला (प्रवेश-शुल्क) अवश्य देना पड़ेगा, और इम्तहान में ज़रूर आना पड़ेगा। इसलिए मैं आज लाला भगवानदास से रुपये कुछ दाख़िला देने के वास्ते ले आया हूँ। अब आप ज़रूर दया करना। मेरे गुनाहों (अपराधों) को क्षमा करना, मुझ पर दया रखना, मैं आपका दास हूँ। मिडल के इम्तहान की मुझे कुछ ख़बर नहीं।

—:०—

संबोधन पूर्वोक्त, (१६०) १३ फ़रवरी, १८६०

आपका पत्र एक भी नहीं मिला। मैंने आज दाख़िला द दिया है। आगे जिस तरह आपकी मरज़ी होगी, हो जायगा। आप दया रखा करें। आपने अब मुझे विसार क्यों दिया है। मैं आपका दास हूँ।

—०—

संबोधन पूर्वोक्त, (१६१) १४ फ़रवरी, १८६०

रिसाला 'नूरुलअसर'वाला आदमी मुझे अभी नहीं मिला और मेडिकल कालिज का रिसाला कल यहाँ मँगा रखूँगा मुकुंदलाल के हाथ। आज चार बजे कालिज से आती बार मैं उस जगह गया था, जहाँ पर रिज़ल्ट लगता है। पर उस वक़्त नहीं लगा था। फिर डेरे आकर मुकुंद लाल को भेजा। वह कोई पाँच बजे के क़रीब वहाँ पहुँचा। रिज़ल्ट लग गया हुआ था, मगर लड़कों ने गुजराँवाला, गुजरात, वज़ीराबाद, स्यालकोट इत्यादि के लड़कों के नाम बिलकुल फाड़ दिये हुए थे। इन जगहों के नाम किसी बेवक़ूफ़ हासिद (मूर्ख, ईर्षालु) लड़के ने इसलिये फाड़ दिये थे कि वहाँ के बड़े (बहुत) लड़के पास हुए थे। कई कहते थे कि गुजराँवाले के सारे के सारे लड़के अर्थात् ६६ कुल के कुल पास हो गये हैं। मगर मैं बड़ा ही अफ़सोस करता हूँ कि मैं आपको मोतबर

(विश्वास करने योग्य) खबर नहीं दे सका। मुफ़ दलाल रोज़ एक बार यहाँ यूनिवर्सिटी हाल में हो आया करता था। मगर उसकी सब कोशिश बेफ़ायदा गई। बड़ा अफ़सोस।

लाला दयीयपालजी मुझे कल आनकर मिल गये थे। शायद कल ही चले गये होंगे। मगर आप जानते हैं कि रघुनाथमल का (इम्तहान का) नतीजा पुख़्ता तौर पर न लिखने में मेरा कुछ क़सूर (अपराध) नहीं है। मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ। आप मुझ पर दया रखा करें, मैं आपका दास हूँ।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६७) १६ फ़रवरी, १८६०

मेडिकल कालिज का रिसाला हर महीने की पहली तारीख़ को छपा करता है। आज १६ तारीख़ है। अगर कहो तो इस महीने का छपा हुआ रिसाला लेकर डाक में भेज दूँ, नहीं तो नये रिसाले के वास्ते आइन्दा महीने तक इन्तज़ार करना पड़ेगा। कल मेंह (वर्षा) बरसा था, इसलिये वह आदमी, जिसके पास रिसाला नूरुलमसर था, नहीं मिला। आम आता है तो रक्खूँगा। आप अब पत्र में सदा ताख़ीर (विलंब) क्यों करते हैं। मैं आपका दास हूँ। इस बीदार अर्थात् २० तारीख़ से हमारे इम्तहान सिमाही (त्रैमासिक) शुरू होंगे और पहली मार्च तक होते रहेंगे, तत्पश्चात् १७ मार्च से असली इम्तहान शुरू होगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६३) १८ फ़रवरी, १८६०

अब आपने अपने ग़ुलाम को विसार क्यों दिया है। मैं रोज़ (प्रति दिन) लाहौरी दरवाज़े भी उस आदमी का कालिज से आती बार पता आया करता हूँ, और बलाओ (तालाब) के क़रीब भी रोज़ शाम (सायंकाल) का देख आया करता हूँ। पर आज चार बजे तक वह नहीं मिला।

गरम सो मदद शुमरदी शि स्वाजगी सद शुक्र ,
गरम क़बूल न करदी शि ना कसे फ़रयाद ।

भावार्थ—अगर आपने मुझे अपना गुलाम (सेवक) मान लिया, जैसे कि गुरु अपने शिष्य को मानता है, तो हजार हजार शुक्र (धन्य वाद) है । और अगर मुझे ऐसा स्वीकार न किया तो किसी के आगे फ़रयाद (शिकायत व उलाहना) नहीं है ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६४) १६ फ़रवरी, १८६०

आपके दो पत्र कल मिले थे । बड़ी खुशी हुई । आप दया रखा करें और पत्र भेजते रहा करें । वह आदमी रिसाला नूरुलयसरवाला आज तक नहीं मिला । मालूम नहीं उसे क्या हो गया । मैं आपका दास हूँ ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६५) २१ फ़रवरी, १८६०

रिसाला नूरुलऐन आपको भेजा जाता है । हमारा इम्तहान हो रहा है । आपका पत्र कोई नहीं आया । आप इस तरफ भी ध्यान रखा करें ।

इस तरफ़ भी तो तुम्हें लाज़िम है निगह गाहे गाहे ;
दम बदम लहज़ा बलहज़ा नहीं गाहे गाहे ।

अर्थात् मेरी ओर भी कभी कभी दृष्टि देना आपके लिये उचित (अवश्य कर्तव्य) है । यदि श्वास प्रतिश्वास अथवा पल पल नहीं, तो कभी कभी तो अवश्य चाहिये ।

आक़ा (मालिक लोग) अपने ग़ुलाम (दास) को भी याद रखा करते हैं ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६६) २४ फ़रवरी, १८६०

आपका पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई । जो किताब रिसाला नूरुलबसर

आपने (भेजने को) लिखी थी यह बिलकुल वही किताब रिसाला नूरुल ऐन है, जो मैंने आपको भेजी है। इसमें ज़रा शक (किंचित् संदेह) नहीं। नाम इसका आपको भी बिसर गया हुआ था और मुझको भी। मगर यही किताब थी जो मैंने आपके साथ उस आदमी के पास देखी थी। और यही किताब है कि जिसके साथ की पचास साठ जिल्द और भी उस आदमी के पास मौजूद हैं, हालाँकि (यद्यपि) रिसाला नूरुल बसर के नाम की कोई किताब न तो अब उसके पास है और न कभी थी ही। न उस आदमी ने रिसाला नूरुलबसर का नाम ही सुना है। जो आपने लिखी थी मैंने वही भेजी है। और यही किताब है जिसकी क़ीमत एक आना है। मेरा इसमें कुछ क़सूर (अपराध) नहीं। मुकुन्द लाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,	(१९७)	२७ फ़रवरी, १८९०

आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। आप अब जल्दी यहाँ हो आयें। हमारे कालिज के इम्तहान आज ही खतम हो गये हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,	(१९८)	२८ फ़रवरी, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला, बड़ी खुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। मुकुन्दलाल का बाप आज सुबह (प्रातः) का यहाँ आया हुआ है। शायद दो तीन दिन यहाँ रहेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,	(१९९)	१ मार्च, १८९०

आज सात बजे सायं तक तो आपके भेजे हुए दो २) रुपये मुझे बिलकुल नहीं मिले। अगर आपने नहीं भेजे तो अब डाक की मार्फ़त

न भेजना, आप ही अब आ जाना, और एक बार इम्तहान से पहले पहले दर्शन दे जाना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२००) २ मार्च, १८९०

आज दसराज से जाकर मैं २) रुपये ले आया हूँ। अब आप जल्दी तशरीफ़ लायें। हमारे इम्तहान में अब पन्द्रह दिन रह गये हैं। आप दया रखा कर। मुकुन्दलाल का पिता अभी यहीं है। मकुन्दलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०१) ३ मार्च, १८९०

आज मैंने मुरालीवाले एक पत्र में खर्च की बाबत सारा हाल लिखा है। मुकुन्दलाल का पिता अभी यहीं है। आप अब जल्दी आना।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०२) ४ मार्च, १८९०

आज चाचाजी का एक पत्र मिला। आज मुकुन्दलाल का पिता यहाँ से गुजराँवाले गया है। मगर इस रविवार या सोमवार को फिर यहाँ लाहौर में आ जायेगा। उसे कोई मुक़द्दमा है। आप अब जल्दी यहाँ आयें। लाला अयोध्यादास के लिये गोलियाँ क़ब्ज़कुशा (पाख़ाना लानेवाली) जैसी पहले कृपा की थी, ले आयें। लालाजी का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०३) ५ मार्च, १८९०

आपका पत्र आये दूर हो गई है। आज मुझे आठ रुपये का मनी आर्डर चाचाजी की तरफ से मिला है। अब मैं अयोध्यादास के साढ़े तीन ३॥) रुपये भी दे दूँगा। आप अब ज़रूर ही बड़ी जल्दी यहाँ आयें। मैं आपके चरणों का दास हूँ। आपका नौकर हूँ। मैंने चाचाजी की तरफ लिख दिया है कि मुझे भीमहाराजजी ने दो रुपये भेजे थे।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०४) रात्रि, ५ मार्च, १८८०

आज मैंने लाला अयोध्यादास को साढ़े तीन ३॥) रुपये दे दिये हैं। उसने तीन चार दफ़ा (बार) मुकुंदलाल से कहा था कि वह मुझसे माँगे। आप अब बहुत जल्दी आवें। जरूर, जरूर। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०५) ७ मार्च, १८८०

अब तो आप जरूर ही आ जावें। अब तो कोई दस दिन ही बाक़ी रह गये हैं। आपने कभी पत्र भी नहीं लिखा। हमारे रोल नंबर अभी नहीं आये। मुकुंदलाल का पिता भी अभी यहाँ नहीं आया। मुकुंदलाल का पिता डेरे में ज्यादा नहीं रहता। और अगर रहे भी तो नीचे मकुंदलाल के पास रहता है।

——:० ——

बुरे स्वभाववाले पड़ोसी से परहेज़

संबोधन पूर्वोक्त, (२०६) ८ मार्च, १८८०

आज अब दो बजे हमारे साथ का मकान कंजरियों (वेश्याओं) ने ले लिया है, और वे आज ही इस मकान में आना चाहती हैं, इसलिये फिलहाल (अभी थोड़े काल के लिये) हम आज ही कोई और मकान किराया पर ले लेंगे। फिर जब आप आयेंगे तो कोई और अच्छा मकान तजवीज़ कर लेंगे। आप जब आवें तो मेहरे से हमारे नये मकान का पता पूछ लेना। मैं आपका नौकर हूँ। आप ज़रूर ही बड़ी जल्दी दया करें, अर्थात् आप अवश्य शीघ्र पधारें। आप मुझ पर खफ़ा (रुष्ट) क्यों हैं? मैं तो आपका दास हूँ। उस मकान का पता चाहे शामा हलवाई से पूछ लेना।

—— ०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०७) ६ मार्च, १८९०

कल हमने कोई और मकान नहीं लिया था, आज लेने का यत्न कर रहे हैं। आप जरूर आओ, बड़ी जल्दी। अभी तक तो कंजर साथ के मकान में नहीं आये, पर आ जायेंगे जरूर। मैं आपका गुलाम हूँ। आपने मुझे विसार दिया है। हमने लाला अयोध्यादास के सामने का मकान अब ले लिया है। इस मकान का किराया डेढ़ १।।) रुपये से ज्यादा नहीं है। अब चार बजे इस नये मकान में आकर अपने-अपने काम में लग गये हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०८) १० मार्च, १८९०

आपका एक पत्र भी नहीं मिला, क्या वजह (हेतु) है ? आप अब जरूर आ जायें। आज से लेकर सिर्फ आठ दिन इम्तहान में रह गये हैं। यह बैठक लाला अयोध्यादास के सामने गुमटी बाजार में एक मसजिद के क़रीब वाक़े है।

—— o ——

परमेश्वर की दया और शान्तस्वरूप गुण।

(२०९)

संबोधन पूर्वोक्त, १० मार्च, १८९०

न तो आप ही आते हैं और न पत्र ही भेजते हैं। नहीं मालूम मैंने क्या अपराध किया है जो आपका दिल मेरी तरफ से इस तरह खिंच गया (उपराम हो गया) है। परमेश्वर के गुणों में से दयास्वरूप और शान्तस्वरूप होना एक बड़ा भारी गुण है। फिर आप मेरी भूलों से दर गुज़र (उपेक्षा over look) क्यों नहीं करते ? मुझे मालूम होता है कि आपको मेरी बाबत कोई बुरी बात परमात्मा की दरगाह (दरबार) से मालूम हुई है, इसलिये आप मेरे साथ अब बोलते नहीं, ताकि कोई यह न कहे कि तीर्थराम भगतजी का था और फिर अपनी मुराद को न

पहुँचा । मगर महाराजजी ! आप लोगों का ख्याल न करें । मेरा तो यह हाल है कि—

गर मख्वानी ई दरस्त, व ब्रर बरानी ई दरस्त,
बाये दीगर मन नदानम, ई सरस्तो ई दरस्त ।

(तात्पर्य) यदि आप बुलाएँ या सत्कार करें तो आपका ही द्वार है और यदि तिरस्कार कर तो भी आपका ही द्वार है । मैं और स्थान नहीं जानता, मेरा यह सिर है और आपका यह द्वार है ।

आनों कि खाक रा ब नज़र कीमिया कुनद,
आया बुवद कि गोशये-चश्मे बमा कुनंद ।
जो हम भूले बचन उचारे, क्षमा करो अपराध हमारे ।

—— ० ——

(२१०)

सम्बोधन पूर्वोक्त, ११ मार्च, १८८०

आपका एक पत्र आज मिला । अब आप आ जाओ । यहाँ का पता यह है—"बमुकाम लाहौर, गुमटी बाजार, बुलाक़ीराम मर्राफ़ की मार्फ़त तीर्थराम को मिले ।"

हमारे गाँव में भी इस पते की इत्तिला (सूचना) अगर हो सके तो कर देनी । मुकु दलाल का बाप अभी तक तो यहाँ नहीं आया । शायद आ जाय ।

—— ० ——

(२११)

संबोधन पूर्वोक्त, ११ मार्च, १८८०

आपका एक पत्र कल मिला था । परमेश्वर करे कि मेरे इस पत्र के पहुँचने से पहले ही आप लाहौर में आ गये हुए हों । अगर ऐसा न हो, तो मेरे पत्र के पहुँचने के बाद जो सबसे पहली गाड़ी आये, आप उसमें आ जायँ ।

—— ० ——

एफ़० ए० की वार्षिक परीक्षा

संबोधन पूर्वोक्त, (२१२) १६ मार्च, १८६०

आज हमारा फारसी का इम्तहान हो गया है। परसों रियाज़ी (गणित-शास्त्र) का, जिसे मैथेमैटिक्स भी कहते हैं, इम्तहान होगा। रियाज़ी (गणित शास्त्र) सबसे भारी मजमून है और सबसे सख्त है। आप दया रक्खा करें। आपकी सहायता बिना कुछ हो नहीं सकता।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (२१३) २१ मार्च, १८६०

आपका पत्र कोइ नहीं आया। आज हमने इम्तहान दिया था, कल फिर देना है। आप दया रक्खा करें, मेरी तरफ ख्याल रक्खें। मैं आपका दास हूँ।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (२१४) २२ मार्च, १८६०

आज के परचे बड़े सख्त (कठिन) आये थे। परसों हमारी साइन्स की परीक्षा है, जो कि महा कठिन मजमून है। भाई साहब परसों के मुराली वाले से आये हुए थे, आज चले जायेंगे। आपका पत्र कोइ नहीं आया।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (२१५) २४ मार्च, १८६०

आज हमारा साइन्स का इम्तहान हुआ। अमूमन (प्राय) सब प्रश्न ही किताब से बाहर थे। परसों अंग्रेजी व साइन्स (विज्ञान शास्त्र) की मुखपरीक्षा (ओरल) होगी। विज्ञान-शास्त्र की मुखपरीक्षा अत्यन्त कठिन होती है, क्योंकि अगर कोई उसमें न पास (उत्तीर्ण) हो, तो सारे विज्ञान-शास्त्र में फेल (अनुत्तीर्ण) गिना जाता है। अंग्रेजी की मुखपरीक्षा भी कठिन ही हुआ करती है। आप अवश्य मेरा ध्यान रक्खा करें।

— ० —

संशोधन पूर्वांक, (२१६) १० अप्रैल, १८६०

मैं चार बजे धारावाली यारा उतरा, यहाँ से गुमटी बाजार आया। अपनी बैठक पर ताला लगा हुआ देखा। क़रीब के किसी दुकानदार से कुंजी न मिली। आखिर (अंत में) रंगमहल गया। यहाँ मुकुंदलाल की जमाअत (कक्षा) को छुट्टी मिली हुई थी। फिर चेतु महरे के पास गया (चेतु मेहरा का तो बिलकुल कोई खतरह अर्थात् भय नहीं मालूम होता, मगर भाले की कोई खबर लाहौर में नहीं आई)। यहाँ से मालूम हुआ कि मुकुंदलाल बाबा फ़रीद के टिब्बा (टीले) में जा रहा है (यह जगह भाटी दरवाज़े के बाहर गवर्नमेंट कालिज के समीप है)। आखिर वहाँ गया। यहाँ से मुकुंदलाल किसी काम को गया हुआ था। जब वापिस आया, तो उस जगह मुकुंदलाल के चौबारे को देखा। यह एक ही तंग व तारीक (अंधकारमयी) कोठी थी, जिसमें दो चारपाइयाँ मुश्किल से आ सकें। यहाँ से मुकुंदलाल को साथ लेकर घी (घिस) बेचार (संग) होकर यूनिवर्सिटी-हाल में गया। यहाँ रीज़ल्ट (नतीजा) नहीं लगा हुआ था। वहाँ से शाहआलमी दरवाज़े मुम्मदयाल की तरफ गया (मुलदयाल ने कोई पत्र पर नहीं लिखा था, इसलिये उन्होंने मुझे यही ही ताकीद की थी कि उसे मिलकर हाल लिखाना या आप लिखना)। तत्पश्चात् मुकुंदलाल ने बताया कि मेरा बड़ा साला प्रभुदयाल फीरोज़ार का लाहौर में आया हुआ है। फिर उसकी तरफ गया, वह न मिला। उसके बाद गुमटी बाज़ार का रुख किया। महेशदास रास्ते में मिला। कुंजी मकान की उसके पास से मिली (आपको विदित हो कि मेरे पीछे लाला अयोध्यादास खुद तो इस मकान में नहीं आया था बल्कि महेशदास को मुकुंदलाल के साथ इस मकान में कर गया था, जिस पर मुकुंदलाल ने यह मकान छोड़ दिया)। मकान में आकर यही इरादा (संकल्प) किया कि मैं पहले की तरह काठ पर डेरा कर दूँ, और महेशदास मीच

रहे (जिस पर वह राजी है), और मुकुन्दलाल बाबा फरीद के टिब्बे में (जो उसे मंजूर है, क्योंकि वहाँ उसे किराया नहीं देना पड़ता)। मकान में डेरा लगाने के बाद रोटी खाकर अपने साले की तरफ मुकुन्दलाल के साथ एक बार फिर गया। वह मिल पड़ा। उसके साथ कुछ देर रहा। फिर गुमटी बाजार डेरे में आकर पूरा आराम किया, और ये (तीन) कार्ड लिखे। लाला अयोध्यादास मुझे आज बिलकुल नहीं मिले और आशा है कि बहुत कम मिला करेंगे, क्योंकि वह अधिकतर घर या और जगहों में रहते हैं और यहाँ (इस डेरे में) उनका कोई असबाब नहीं है। लाला महेशदास डेरे में बहुत कम आया करते हैं, क्योंकि वह प्रायः अपने बारिस्टर के साथ रहते हैं। चुनाँचि अब रात के साढ़े ग्यारह बज चुके हैं और उन्होंने अभी तक मुँह नहीं दिखलाया। अब यह मकान आगे की अपेक्षा ज्यादा शान्तिदेह (शान्ति देनेवाला) मालूम होता है। मेरे इस तूल कलाम (लम्बे वर्णन) से आप खफ़ा (रुष्ट) न होना। मैं आपका गुलाम हूँ। आप मेरी तरफ भी निगाह (दृष्टि) रखा करें। आज शुक्र को सुबह सवेरे (प्रातःकाल) अयोध्यादास ने आवाज दी। अच्छी तरह पेश आया। अभी मैंने उसे नीचे से नहीं बताया, पर आशा है कि बताया जायगा। आप मुझ पर राजी रहा करें। फिलहाल (इस समय) वह मैं और मुकुन्द जुदा जुदा हो गये हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२१७) १२ अप्रैल, १८९०

अभी नतीजा नहीं निकला। आज अयोध्यादास का यह बात बताई गई है। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका दास हूँ। आज इंट्रेंस का रीज़ल्ट निकल गया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२१८) १४ अप्रैल, १८९०

इस वक्त (दस बजे) तक तो हमारा रीज़ल्ट (नतीजा) नहीं

संपोधन पूर्वोक्त, (२१६) १० अप्रैल, १८६०

मैं चार बजे थाशामी बारा उतरा, वहाँ से गुमटी बाजार आया। अपनी बैठक पर ताला लगा हुआ देखा। क़रीब के किसी दुकानदार से कुंजी न मिली। आखिर (अंत में) रंगमहल गया। वहाँ मुकु दलाल की जमाअत (कक्षा) को छुट्टी मिली हुई थी। फिर घेमु महरे के पास गया (घेमु मेहरा को तो फिलहाल कोई खतरह अर्थात् भय नहीं मालूम होता, मगर मोले की कोई खबर लाहौर में नहीं आई)। वहाँ से मालूम हुआ कि मुकु दलाल बाबा फ़रीद के टिब्बे (टीले) में जा रहा है (यह जगह भाटी दरवाज़े के बाहर गवर्नमेंट कालिज के समीप है)। आखिर वहाँ गया। वहाँ से मुकु दलाल किसी काम को गया हुआ था। जब वापिस आया, तो उस जगह मुकु दलाल के चौबारे का देखा। यह एक ही तंग व तारीक (अंधकारमयी) कोठी थी, जिसमें दो चारपाइयाँ मुश्किल से आ सकें। वहाँ से मुकु दलाल का साथ लेकर जी (चित्त) बेज़ार (तंग) होकर यूनिवर्सिटी-हाल में गया। वहाँ रीजल्ट (नतीजा) नहीं लगा हुआ था। वहाँ से शाहआलमी दरवाज़े मुल्कदयाल की तरफ़ गया (मुल्कदयाल ने कोई पत्र घर नहीं लिखा था, इसलिये उन्होंने मुझे बड़ी ही ताक़ीद की थी कि उसे मिलकर हाल लिखाना या आप लिखना)। तत्पश्चात् मुकु दलाल ने बताया कि मेरा बड़ा साला प्रभुदयाल वीरवार का लाहौर में आया हुआ है। फिर उसकी तरफ़ गया, वह न मिला। उसके बाद गुमटी बाजार का क़स्द किया। महेशदास रास्ते में मिला। कुंजी मकान की उसके पास से मिली (आपको विदित हो कि मेरे पीछे लाला अयोध्यादास खुद तो इस मकान में नहीं आया था बल्कि महेशदास का मुकु दलाल के साथ इस मकान में कर गया था, जिस पर मुकु दलाल ने यह मकान छोड़ दिया)। मकान में आकर यही इरादा (संकल्प) किया कि मैं पहले की तरह कोठे पर डेरा कर दूँ, और महेशदास नीचे

रहे (जिस पर वह राजी है), और मुकुन्दलाल बाबा फ़रीद के टिब्बे में (जो उसे मंजूर है, क्योंकि वहाँ उसे किराया नहीं देना पड़ता)। मकान में डेरा लगाने के बाद रोटी खाकर अपने साले की तरफ़ मुकुन्दलाल के साथ एक बार फिर गया। वह मिल पड़ा। उसके साथ कुछ देर रहा। फिर गुमटी बाजार डेरे में आकर जरा आराम किया, और ये (तीन) कार्ड लिखे। लाला अयोध्यादास मुझे आज बिलकुल नहीं मिले और आशा है कि बहुत कम मिला करेंगे, क्योंकि वह अधिकतर घर या और जगहों में रहते हैं और यहाँ (इस डेरे में) उनका कोई असबाब नहीं है। लाला महेशदास डेरे में बहुत कम आया करते हैं, क्योंकि वह प्रायः अपने बारिस्टर के साथ रहते हैं। चुनाँचि अब रात के साढ़े ग्यारह बज चुके हैं और उन्होंने अभी तक मुँह नहीं दिखलाया। अब यह मकान आगे की अपेक्षा ज्यादा शान्तिदेह (शान्ति देनेवाला) मालूम होता है। मेरे इस तूल कलाम (लम्बे वर्णन) से आप खफ़ा (रुष्ट) न होना। मैं आपका गुलाम हूँ। आप मेरी तरफ़ भी निगाह (दृष्टि) रखा करें। आज शुक्र को सुबह सवेरे (प्रातःकाल) अयोध्यादास ने आवाज दी। अच्छी तरह पेश आया। अभी मैंने उसे नीचे से नहीं बताया, पर आशा है कि बताया जायगा। आप मुझ पर राजी रहा करें। फ़िलहाल (इस समय) तो मैं और मुकुन्द जुदा जुदा हो गये हैं।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२१७)　　　　१२ अप्रैल, १८९०

अभी नतीजा नहीं निकला। आज अयोध्यादास को यह बात बताई गई है। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका दास हूँ। आज इंट्रेंस का रीजल्ट निकल गया है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२१८)　　　　१४ अप्रैल, १८९०

इस वक्त (दस बजे) तक तो हमारा रीजल्ट (नतीजा) नहीं

निकला। अभी हमारे रीज़ल्ट में देर है। आज बी० ए० का निकलेगा, ऐसी अफ़वाह है। आप दया रक्षा करें। मैं आपका गुलाम हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२१९) १५ अप्रैल, १८९०

कल बी० ए० व एम० ए० का रीज़ल्ट निकल गया था, शायद आज या कल का हमारा भी निकल आयेगा। आप दया रक्षा करें।

—— ० ——

तीर्थरामजी को उग्र ज्वर

संबोधन पूर्वोक्त, (२२०) १६ अप्रैल, १८९०

अभी हमारा नतीजा (एफ० ए० की परीक्षा का परिणाम) नहीं निकला, शायद आज या कल निकल आवे। कल मंगलवार मैं सख्त बीमार हो गया था। दस बजे दिन का उग्र (सख्त) ज्वर चढ़ गया था, और सिर-दर्द तथा कमर-पीड़ा उससे अतिरिक्त थे। न मेरे पास कोई आदमी था, न आदमी की ज़ात (जाति) थी। ज्वर की यह शिद्दत (उग्रता) लगभग रात के बारह बजे तक रही। अब आराम है। रात के ग्यारह बजे के बाद लाला महेशदास ने मुँह दिखलाया था। आप दया रक्षा करें। मैं आपका गुलाम हूँ। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका एक पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२२१)* १७ अप्रैल, १८९०

परसों का हाल तो कल मैंने आपको लिख दिया था। कल मुझे यों

---

* इस पत्र के बाद २ मई तक कोई पत्र तीर्थरामजी का भगतजी के नाम लिखा नहीं पाया गया। इसके विरुद्ध तीर्थरामजी को किसी ने लाहौर से गुजरांवाला भगतजी की मार्फत २४ अप्रैल को निम्नलिखित पत्र भेजा है जिससे मालूम होता है कि बीमारी के कारण तीर्थरामजी लाहौर छोड़कर गुजरांवाला चले गये थे। (आगे पृष्ठ ६९ पर देखें)

सो बिलकुल आराम रहा था, मगर किसी क़दर टाँगों में दर्द रहा था। खाना खाये मुझे अब चार दण (उलझन) हो गये हैं। भूख नहीं लगती। कल रात को केवल एक चप्पा टुकर (रोटी का टूक) खाँड के साथ खाया था। मुझे कितने दिनों का पखाना क़ब्ज़ के साथ आता था, इस लिए कल रात को मैंने आध सेर दूध भी पिया था। और आज सुबह (प्रात:) को अयोध्यादास से छ गोलियाँ लेकर खाई थीं, इसलिए मुझे सुबह से लगभग दस बजे तक आठ-नौ दस्त केवल पानी के आ चुके हैं, और दो चार क़ै भी आई है। प्यास लगती थी, इसलिए अब हकीम से पूछकर मिश्री का शरबत पिया है। मगर शरबत पीने से कोई घंटा भर पहले का दस्त कोई नहीं आया। सुबह जब उठा, तो मुँह का ज़ायक़ा बड़ा खराब था। मगर अब शरबत पीने के बाद मे ज़ायक़ा अच्छा मालूम देता है। आशा है कि अब दस्त और क़ै बिलकुल बंद हो गये हैं। इम्तहान का नतीजा अभी नहीं निकला। आप दया रखा करें। मैं आपका गुलाम हूँ। आप ही का आश्रय है। अब दो बजे एक और दस्त आया है।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७७७)　　　　२ मई, १८९०

आप आज आये नहीं। मुझको बड़ा ही इंतज़ार था, इसलिए निहायत

"गुसांइ तीर्थरामजी ' बंदगी (नमस्कार) के उपरांत आपको मुबारक हो कि आप इम्तहान एफ० ए० में कामयाब (सफल) हो गये हैं। नंबर शुमार आपका २५ है अथात् २५ नंबर पर रदीफ़ में आपका नाम है। और दुर्गाचन्द्र छुप्पु बाबू साहब भी कामयाब हो गया है। अपनी तबीयत (स्वास्थ्य) का हाल लिखा और ख़ैरियत (कुशल) है। दरयातारण्य महाराज भगत साहब (भक्त भगतजी) का सभा में चरण-वंदना स्वीकार कीजे। गुलाम पर हर वक़्त दयादृष्टि रखा करें। और नेको बख़्त (पुण्य-पात्र) में सहायक रहें। केवल आश्रय आपका है। पुन: पुन: प्रणाम।"

२४ अप्रैल १८९०　　　　आप का सेवक

लाहोर　　　　मोहनराम मुंशी (क्लार्क) बाबू गणपतिराय बैरिस्टर।

तकलीफ हुई है। इसीलिए मुस्तक़िल (दृढ़) इरादा करना अच्छा होता है। अब आप जल्दी आओ। चाचाजी आप को रुपये दे गये हैं कि नहीं। किताबों की जरूरत है। फ़ीस की मुआफ़ी का अभी पुख्ता (पक्का) पता नहीं। वज़ीफ़े के रुपये भी अभी नहीं मिले। आप जल्दी तशरीफ लाओ।

—— ० ——

दृढ़ निश्चय के समान कोई पदार्थ संसार में नहीं

संबोधन पूर्वोक्त, (२७३) १ मई, १९००

आज आपका बड़ा ही इंतज़ार था, अर्थात् आपकी बहुत ही बाट ताकी, पर आप नहीं आये। मन को बड़ा रंज (अति दुःख) हुआ है। यदि आप ने नहीं आना था, तो पत्र ही लिख देते। सो आपने वह भी नहीं किया। चित्त में विचार उठ रहे हैं कि क्या कारण जो आज भी नहीं आये, शायद चाचा जी नहीं मिले या शायद आपकी अथवा उनकी प्रकृति में कुछ असर (बिगाड़) है, अथवा और क्या अकस्मात् विघ्न पड़ गया। एक दृढ़ निश्चय के समान संसार में अन्य कोई वस्तु नहीं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२७४) ४ मई, १९००

नहीं मालूम, आप ख़फ़ा (रुष्ट) हैं, या कुछ और कारण है, पर अब के तो आपने हद से परे की (अत्यंत) मौन धारी है। न तो कोई पत्र ही भेजते हो और न आप ही आते हो। मैं सख्त इज़तराब (बेचैनी) में हूँ। परमेश्वर के वास्ते आप कल ज़रूर आ जाओ। आज तंग होकर मैं रघुनाथमल* को लिखता हूँ कि फ़िलहाल (इस समय) मुझे दस रुपये भेज दे।

—— ० ——

* पं० रघुनाथमलजी तीर्थरामजी के मौसा (मामा) थे। वह लोगों हिसार आदि प्रान्त में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे थे। और समय समय पर तीर्थरामजी की धन से सहायता करते थे।

संबोधन पूर्वोक्त, (२२५) ८ मई, १८६०

कल धावे ने मकान बड़ी अच्छी तरह साफ करवा दिया था। और लेपन फिरवा दिया था। आज मैं यहाँ आ गया हूँ। अयोध्यादास ने न तो मंजी (चारपाई) दी है और न मूढ़े। इस मकान का पता यह है—

लाहौर, हीरामंडी, हवेली राजा ध्यानसिंह के सामने तीर्थराम गुसाँई तालिबइल्म (विद्यार्थी) को मिले।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२२६) १० मई, १८६०

कल चाचाजी मुरालीवाले मे आये थे, आज हम दो मूढ़े ले आये हैं। और वह खराब मंजी (छोटी चारपाई) जो महेशदासवाले डेरे में ले गये थे मैं फिलहाल (इस समय) यहाँ ले आया हूँ। कल आपका पत्र मिला था। आप दया रखा करें।

—— ० ——

डॉक्टर रघुनाथमल की सहायता

संबोधन पूर्वोक्त, (२२७) १२ मई, १८६०

आज सायंकाल की गाड़ी से चाचाजी के चले जाने का विचार है। आज मौसा(पं० रघुनाथमल)जी ने पचास रुपये भेज दिये हैं। आज ही मैं पुस्तकों* के लिये लिख देता हूँ, आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

रुपयों का खोना और काले सर्प की पूँछ का ऊपर आ पड़ना

संबोधन पूर्वोक्त, (२२८) १४ मई, १८६०

आपका पत्र आये बहुत काल हो गया है। आप शीघ्र कृपा करें। जब मैं इस मकान में आया था, सब सामान तो बाहर की कोठरी में रखा था, पर सन्दूक भीतर की कोठरी में। उस सन्दूक में पचास

* पुस्तकों से तात्पर्य यहां बी० ए० अपी का पुस्तकों से है क्योंकि इन्हीं दिनों तीर्थरामजी बी० ए० में प्रविष्ट हुए थे।

रुपये पं० रघुनाथमलवाले और सात रुपये जो वज़ीफ़े (छात्र-वृत्ति)* के मिले थे, रखे थे। पचास रुपये चाचाजी (पिताजी) अपने हाथ मे रख गये थे, और सात रुपये मैंने उनसे पहले एक काग़ज़ में बन्द करके आप रखे थे। कल मैंने कहा कि यह सात रुपये काग़ज़ मे निकाल कर उन पचास रुपयों के साथ मिलाकर रख दूँ। मगर पचास रुपये तो वहीं पड़े हुए पाये, किन्तु सात रुपये न निकले। उस समय तो मैंने सन्दूक़ बन्द करके ताला लगा दिया। फिर सायंकाल को मैंने कहा कि पुनः देखूँ। ज्यों ही कोठरी का द्वार खोला, तो एक काले, मोटे, लंबे सर्प की पूँछ बड़े ज़ोर से मेरे ऊपर आन पड़ी। मैं डरकर बाहर दौड़ आया, और एक मनुष्य से कोठरी को ताला लगवाकर ऊपर कोठे (छत) पर आ बैठा। आज सन्दूक़ को कोठरी के भीतर से बाहर निकलवाया है, और बाहर के कमरे में रखा है। किन्तु सन्दूक़ का कोना कोना सब पुस्तकें बाहर निकाल कर ढूँढ़ा है, तथापि उन सात रुपयों का पता बिलकुल नहीं मिला। महाराजजी! मैंने सन्दूक़ तथा कोठरी दोनों को बिना ताला लगाये कदापि नहीं छोड़ा, पर यह बड़े आश्चर्य की बात हुई है। महाराजजी! जिस साँप का मैंने ज़िक्र (वर्णन) किया है, उसमे अतिरिक्त एक या दो और साँप भी साथ के तबेले (अस्तबल) में अवश्य रहते हैं, क्योंकि उस मकान में मैं साँपों के चलने की रगड़ के चिह्न बहुधा पाता हूँ। आप दया रखा करें, और मुझको भुला न दें।

यद्यपि इस मकान में साँप तो ज़रूर हैं, पर प्रतिदिन मकान के बदलने में अति कष्ट होता है, इसलिये मैं अभी इस मकान से उपराम नहीं हुआ। आजकल आप क्या कर रहे हैं। जब लाला रामचंद्र रुपये भेजें, मुझे लिखना, मैं आपका ग़ुलाम हूँ।

---

* छात्र-वृत्ति से तात्पर्य म्यूनिसिपल कमेटी गुजरांवाले की छात्र-वृत्ति है सरकारी छात्र-वृत्ति नहीं।

सबोधन पूर्वोक्त,   (२२६)   १४ मई, १८६०

आज सुबह (प्रात:) मैंने आपको लिखा था कि सात रुपये खोये गये हैं। सो आपकी दया से अब मिल पड़े हैं। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (२३०)   १७ मई, १८६०

अभी किताबें नहीं आई। आशा है कि कल आ जायेंगी। आप दया रखा करें।

—— o ——

सबोधन पूर्वोक्त,   (२३१)   १६ मई, १८६०

आज किताबें नहीं आई। देखिये कब आती हैं। आपने पत्र कोई नहीं लिखा, क्यों ?

—— o ——

कर्त्तव्य-निष्ठा

सबोधन पूर्वोक्त,   (२३२)   २१ मई, १८६०

कल आपका एक पत्र मिला था। बड़ी खुशी हुई। किताबों की बाबत तो मैंने कल आपको लिख ही दिया था, आने की बाबत यह बात है कि मुझे आपकी आज्ञा से तो किञ्चित् इनकार नहीं, मगर काम इतना अधिक होता है कि (यदि मैं अपने कर्त्तव्य-पालन में त्रुटि न करूँ, तो) सिर खुजलाने को भी अवकाश नहीं मिलता। आगे जैसा आप लिखेंगे, उसी तरह कर लूँगा।

—— o: ——

सबोधन पूर्वोक्त   (२३३)   २१ मई, १८६०

आपका एक पत्र आज कालिज में मिला और कुछ दिन हुए हैं, एक डेरे में मिला था। जिस कुतुब-फ़रोश (पुस्तक-विक्रेता) को मैंने कहा था, उसने

किताबों की बाबत लिख दिया है। आप दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३४) २१ मई, १८९०

कल आपका एक पत्र डेरे में भी मिला था, आप पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३५) २५ मई, १८९०

कल बाबे ने मुझे बीच का किवाड़ (बुबा, द्वार) लगवा दिया है। मैं कल किसी क़दर बीमार था। आज अच्छा मालूम होता हूँ। आप दया रखा करें। पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३६) २७ मई, १८९०

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है? आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें। सरदार साहबसिंह धर्मी आये हैं कि नहीं?

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त (७३७) २८ मई, १८९०

आपका एक पत्र डेरे में मिला। बड़ी खुशी हुई। अब हमारे भी इम्तहान हफ्तावार (साप्ताहिक) शुरू हो जाते हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३८) ३० मई, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला। बड़ी खुशी हुई। किताबें शायद कल आ जायें। आप दया रखा करें। आप कब आयेंगे?

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३९) ३१ मई, १८९०

आज किताबें आ गई हैं। अब मेरे पास केवल १) रु० रह गया है।

(किताबों पर) कुल ४८) रुपया खर्च आया है, यह १२) रु० की किताब छालकर जो कि आपको पहले लिखी थी ।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२४०)　　　　२ जून, १८६०

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है ? दया रक्खा करे ।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२४१)　　　　३ जून, १८६०

आपका पत्र आये देर हो गई है । लाला साहब परसों बैरोके मे आये थे । मगर मुझे कल मिले थे । उन्होंने मोहकमचंद से मुक़द्मा जीत लिया है । मुझको १५) रुपये दे गये हैं । कल रात यहाँ मेरे पास रहे थे । आज प्रात चले गये हैं । ज्यादा रुपये उनके पास मौजूद नहीं थे । इसलिए ज्यादा नहीं दे गये । मुझको कह गये हैं, जब जरूरत पड़े, मँगा लेना । आप दया रक्खा करे ।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२४२)　　　　४ जून, १८६०

आपका पत्र कोई नहीं आया, क्या सबब (हेतु) है । आप दया रक्खा करे, मैं आपका गुलाम हूँ । आप मेरी तरफ़ भी ध्यान किया करे । आपकी निगाह (दृष्टि) के बिना कुछ नहीं हो सकता ।

कालिज के काम का भार

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२४३)　　　　६ जून, १८६०

परसों लाला देवीदयाल मुझे मिला था और कल भी । आपने लिखा था कि हम लाहौर आयेंगे । आप आये क्यों नहीं ? हमें कल और परसों छुट्टी है अगर आ जाओ तो बड़ी अच्छी बात हो । आपने पत्र में दूरी क्यों की है ? मेरी ओर से बिलकुल कोई फ़र्क़ (भेद-भावना) नहीं है । मैं सत्य कहता हूँ कि आजकल हमें अत्यंत ही बड़ा काम (अभ्यास का)

होता है, इसलिए मैं नहीं आ सका। अब हमें नाममात्र तो दो छुट्टियाँ मिली हैं, मगर काम इतना है कि दो हफ्तों (सप्ताह) में भी खतम मुश्किल से हो सकता है। लाचार अधूरा काम करना पड़ता है। आपने कोई और ख्याल मन में न लाना। मैं आपका दास (गुलाम) हूँ। आप अब आ जायें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४४) ८ जून, १८६०

कल आपका एक पत्र डेरे में मिला था। बड़ी खुशी हुई। कल लाला दयालदयाल चले गये थे। मुझे एक अठन्नी ।।) दे गये थे। आप गुलाम (दास) पर दया रखा करें। आजकल मुझे भूख बड़ी ही कम लगती है। और मेरे मुँह का जायका बड़ा कड़ुवा रहता है।

—— ० ——

ऐनक की आवश्यकता

संबोधन पूर्वोक्त, (२४५) १० जून, १८६०

पिछले रविवार मैं अपने साहब की चिट्ठी लेकर आँखें दिखाने गया था। तब आँखें देखनेवाले साहब (डॉक्टर) ने मुझे एक पत्र लिख दिया था, वह पत्र मैंने बम्बई भेजा है। वहाँ से मुझे पाँच रुपये की ऐनकें, जो मेरे योग्य हों, आयेंगी। इस शनिवार हमारी गणित की परीक्षा है। यहाँ वर्षा बड़ी हुई है, इसलिए कल से मेरे मुख का स्वाद किञ्चित् कम कड़ुवा है, और भूख भी कुछ अधिक है। मैं आपका गुलाम (दास) हूँ। आप दया रखा करें। पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४६) १२ जून, १८६०

परसों हमारा इम्तहान है। आपने पत्र कोई नहीं लिखा। क्या कारण है। आप मेहरबानी (दया, कृपा) रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४७) १४ जून, १८९०

आपका पत्र कोइ नहीं आया। क्या वजह (हेतु) है। आप दया रक्खा करे। मैं आपका गुलाम हूँ। इस समय रियाजी (गणित) का इम्तहान देकर डेरे में आया हूँ, और अगले हफ्ते (शनिवार) अंग्रेजी का इम्तहान देना है। आप पत्र लिखते रहा करे।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४८) १५ जून, १८९०

आपने अब विसार क्यों छोड़ा है। मैं तो आपका दास हूँ, आप दया रक्खा करे, और गुलाम को पत्र लिखते रहा करे। अगर तकलीफ (कष्ट) न हो, तो जब आओगे, वह फटी हुई किताब (कैलेंडर), जिसमें इम्तहानों के प्रश्न-पत्र हैं, लेते आना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४९) १६ जून, १८९०

महाराजजी। आज मेरी ऐनके तो नहीं आई, मगर पत्र आया है कि भेजी जाती हैं। पत्र में लिखा है कि पाँच रुपये सात आने ५।≈) महसूल इत्यादि के सहित देने पड़े गे।

और, आजकल मेरे साथ का मकान भी एक आदमी लेनेवाला है, बग्गी इत्यादि के लिए। अगर किसी ने ले लिया और कोई नौकर इत्यादि उस मकान में रहने भी लगा, तो मुझे बड़ी तकलीफ होगी। आप मेरे पर क्यों खफा (रुष्ट) हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५०) १७ जून, १८९०

कल आपका एक पत्र मिला था। बड़ी खुशी हुइ। आज ऐनके आ गई हैं। मगर मुझे जैसी चाहियें, वैसी बराबर नहीं आइ। वापिस कर दूँगा। आज साथ के मकान में कोइ आ गया है। बग्गी और घोड़ा वहाँ

बाँधा गया है। और एक साईस वहाँ रहा करेगा। मैं बड़े कष्ट में हूँ। आप जल्दी आयें।

—— ० ——

जाहरदारी (बाह्य आचार, बर्ताव) पर आभ्यन्तर अवस्था की प्रधानता

संबोधन पूर्वक, (२४१) २३ जून, १८६०

महाराजजी ! आप मुझ पर ख़फ़ा (नाराज) हैं, मगर मैं जानता हूँ कि इस नाराजगी का कारण इसके अतिरिक्त और कोई नहीं है कि आपने मेरे हृदय को नहीं देखा, और केवल बाह्य व्यवहार और बातों को देखकर ही आप मेरी बाबत बुरे अनुमान कर बैठे हैं। यदि आप मेरे हृदय को देखें तो मैं आशा करता हूँ कि आप ख़फ़ा (क्रुद्ध) न हों।

आप यह न ख्याल करना कि अगर मेरी तरफ़ से जाहरदारी के किसी मुआमले (बाहर के किसी सत्कार सम्मान सेवा) में कोई त्रुटि हो गयी है तो उसका कारण आपकी ओर से मेरे चित्त का विमुख हो जाना है, यह बात कदापि नहीं है, क्योंकि मैं प्रत्येक काम में आपकी सहायता का मोहताज (आकांक्षी) हूँ, और अपने चित्त में सदा आपका ख्याल रखता हूँ। प्रथम तो पढ़ने (अभ्यास) आदि अथवा किसी और उत्तम कार्य की ओर चित्त लगने में आपकी सहायता की आवश्यकता है, फिर उस काम-निमित्त तैयारी करने में आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति निमित्त आपकी सहायता चाहिये। तत्पश्चात् यदि उस काम में परिश्रम भी किया जाये, तो परिश्रम के सफल होने में भी आपकी सहायता की आवश्यकता है। संक्षेप से यह कि प्रत्येक काम में आपकी सहायता की आवश्यकता है।

यदि किसी जाहरदारी के काम (बाह्य व्यवहार तथा सेवा) में त्रुटि हुई है, तो उसका कारण ऐसा है—दृष्टान्त रूप से, यदि मैं पढ़ने में परिश्रम करूँ और उस पढ़ने में केवल स्वार्थ ही दृष्टिगोचर हो और

आपकी ओर से चित्त हटा लूँ, तो निःसन्देह यह बहुत ही बुरी बात है। मगर मेरी ऐसी हालत नहीं है। मैं अगर परिश्रम करता हूँ, तो मेरे चित्त में (मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ, आपने कोई और ख्याल न करना) किसी क़दर अपना रस (स्वार्थ) भी दृष्टि में होता है, परन्तु अधिकतर यह ख्याल होता है कि यह पढ़ना आपका काम है। यदि मैं अच्छा पढ़ूँ (अभ्यास करूँ), तो मानो आपकी अधिक आज्ञा पालन की है, और आपकी सेवा विशेष करके की है। और आपके विरुद्ध अंशमात्र भी कोई काम नहीं कर रहा।

अब यदि पढ़ने की ओर मैं अधिक ध्यान दूँ और किसी ज़ाहरदारी के काम में अर्थात् आपकी किसी शारीरिक सेवा में यदि त्रुटि हो भी जाये (मगर मैं सत्य कहता हूँ कि मेरा मन बिल्कुल पहले की तरह है, बल्कि पहले से भी बहुत अच्छी तरह आपका ताबेदार या सेवक है), तो चाहे बाह्य द्रष्टा की दृष्टि को मेरी त्रुटि दिखाई देती हो, मगर अन्तर्द्रष्टा की दृष्टि स्पष्ट देख रही है कि मैं पहले से भी अधिक आपकी सेवा कर रहा हूँ। चाहे अब आपको प्रतीत हो रहा है कि मेरा ख्याल आपकी तरफ कम है, परन्तु बाह्य रूप से मेरा यह कम ख्याल आपकी तरफ प्रतीत होना अन्त में मुझ ऐसा योग्य कर देगा कि आपकी सेवा लाख गुणा अच्छी तरह करूँ, यदि आप मेरी बाह्य चेष्टा पर क्रुद्ध या रुष्ट न हो जायें और मेरे परिश्रम (जो कि आपका काम है) के सफल होने में सहायता दें, क्योंकि अन्त में मैं आपकी सहायता का मोहताज (दीन) हूँ। यह कहावत प्रसिद्ध है "हिम्मते मर्दा मददे-ख़ुदा" जिसका अर्थ मैं यह करता हूँ कि मनुष्यों के यत्न में ईश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

मेरा पढ़ना (अध्ययन करना) आपका बहुत बड़ा काम है। और ज़ाहरदारी के कामों को बाह्य भले पुरुष इतना बड़ा काम नहीं समझते। इसलिये आपका बहुत बड़ा काम करने में अर्थात् पढ़ने में यदि आपके

कह, उसी तरह कर। इसलिए मैंने अभी वापिस नहीं की। आपकी क्या राय (सम्मति) है ?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५३) २५ जून, १८९०

हमारे लिए फ़ारसी मौक़ूफ़ नहीं हुई। पढ़नी पड़ेगी। कलकत्ता और लखनऊ से किताबें आ गई थीं। होमी से पत्र भी आया था। आपका पत्र क्यों नहीं आया, क्यों ?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५४) २६ जून, १८९०

फारसी की किताबें जो आई थीं, उन पर नौ आने ॥-) लगे थे। और अँग्रेजी की किताबों पर दो रुपया सात आने। मगर अब इस दफ़ा (शनिवार) हमें उन्होंने फ़ारसी की एक और किताब कालिज में पढ़ानी है, जिसकी क़ीमत १।) रुपया है। इसलिए यह किताब मैंने खरीद ली है। और अँग्रेजी की भी और किताब शुरू करनी है, क्योंकि एक किताब अँग्रेजी की हम ख़तम कर चुके हैं। मगर अँग्रेजी की किताब मैंने अभी खरीदनी है। मगर ॥-) + २।≡) + १।) अर्थात् सवा चार रुपये मेरे आपके पास लग चुके हैं और बारह आने ॥।) मेरे पास हैं। आप फ़रमायें (आज्ञा करें) कि अब आप दो रुपये के लिए रघुनाथमल को लिखूँ या इस समय अयोध्यादास से लूँ और फिर मँगाकर उसे दे दूँ। आप अब रुपये (शेष) भेज देवें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५५) २७ जून, १८९०

आपका पत्र कल मिला था, बड़ी खुशी हुई। आप दया करते रहा करें।

—— ०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२५६)　　　　२८ जून, १९२०

आपका एक पत्र कल भी आया था, बड़ी खुशी हुई। बारिश (वर्षा) यहाँ भी हुई थी कुछ दिन हुए, मगर बड़ी बारिश नहीं थी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२५७)　　　　१० जून, १९२०

अयोध्यादास कहीं गया हुआ था। शायद आज आ गया हो। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२५८)　　　　१ जुलाई, १९२०

कल आपका एक पत्र मिला था। आज मैंने रघुनाथमल को लिखा है कि मुझे १०) रु० भेज दे। अयोध्यादास से मैंने बिलकुल कुछ नहीं लिया।

—— ० ——

धार्मिक विषयों में अनुराग

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२५९)　　　　३ जुलाई, १९२०

अभी रघुनाथमल ने रुपये नहीं भेजे। महाराजजी ! आप एक दो पैसेवाले लिफाफे में लिखें कि आप जब लाहौर में आये थे, तो बाबा जवाहरदास * के साथ आपका क्या संवाद हुआ था, क्योंकि उसने यहाँ यह प्रसिद्ध कर रखा है कि भगतजी ने इस बात के सिद्ध करने में मेरे साथ बहस (चर्चा) की थी कि "जो मनुष्य मरता है (चाहे वह कोन हो), उसको अपने पाप पुण्य का फल कुछ नहीं मिलता, चाहे वह भले कर्म करे, चाहे बुरे, वह मुक्त हो जाता है।" क्या आपने सचमुच इस बात के सिद्ध करने में उसके साथ बहस की थी ? मगर मैं आशा करता हूँ कि बाबा ने आपके कथन का तात्पर्य बिलकुल नहीं समझा

* जवाहरदास एक उदासी साधु थे और प्रायः गुजरातवाले जिले में घूमते रहने के बाद कभी कभी लाहौर भी आया करते थे।

कह, उसी तरह कर। इसलिए मैंने अभी वापिस नहीं की। आपकी क्या राय (सम्मति) है ?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५३) २५ जून, १८९०

हमारे लिए फ़ारसी मौक़ूफ़ नहीं हुई। पढ़नी पड़ेगी। कलकत्ता और लखनऊ से किताबें आ गई थीं। होमी से पत्र भी आया था। आपका पत्र कोई नहीं आया, क्यों ?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५४) २६ जून, १८९०

फ़ारसी की किताबें जो आई थीं, उन पर नौ आने ॥-) लगे थे। और अँग्रेज़ी की किताबों पर दो रुपया सात आने। मगर अब इस हफ़्ते (शनिवार) हमें उन्होंने फ़ारसी की एक और किताब कालिज में पढ़ानी है, जिसकी क़ीमत १) रुपया है। इसलिए यह किताब मैंने ख़रीद ली है। और अँग्रेज़ी की भी और किताब शुरू करनी है, क्योंकि एक किताब अँग्रेज़ी की हम ख़तम कर चुके हैं। मगर अँग्रेज़ी की किताब मैंने अभी ख़रीदनी है। मगर ॥-) + २।≈) + १) अर्थात् सवा चार रुपये मेरे आपके पीछे लग चुके हैं और बारह आने ॥।) मेरे पास हैं। आप फ़रमायें (आज्ञा करें) कि अब आयन्दह ख़र्च के लिए रघुनाथमल को लिखूँ या इस समय अयोध्यादास से लूँ, और फिर मँगाकर उसे दे दूँ। आप अब ख़रची (राह) का जाने दें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५५) २७ जून, १८९०

आपका पत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। आप दया करते रहा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (२५६) २८ जून, १८६०

आपका एक पत्र कल भी आया था, बड़ी खुशी हुई। बारिश (वर्षा) यहाँ भी हुई थी कुछ दिन हुए, मगर बड़ी बारिश नहीं थी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५७) ३० जून, १८६०

अयोध्यादास कहीं गया हुआ था। शायद आज आ गया हो। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५८) १ जुलाई, १८६०

कल आपका एक पत्र मिला था। आज मैंने रघुनाथमल को लिखा है कि मुझे १०) रु० भेज दे। अयोध्यादास से मैंने बिलकुल कुछ नहीं लिया।

—— ० ——

धार्मिक विषयों में अनुराग

संबोधन पूर्वोक्त, (२५६) १ जुलाई, १८६०

अभी रघुनाथमल ने रुपये नहीं भेजे। महाराजजी ! आप एक वा पैसेवाले लिफ़ाफ़े में लिखें कि आप जब लाहौर में आये थे, तो बाबा जवाहरदास * के साथ आपका क्या संवाद हुआ था, क्योंकि उसने यहाँ यह प्रसिद्ध कर रखा है कि भगतजी ने इस बात के सिद्ध करने में मेरे साथ बहस (चर्चा) की थी कि "जो मनुष्य मरता है (चाहे वह कौन हो), उसको अपने पाप पुण्य का फल कुछ नहीं मिलता, चाहे वह भले कर्म करे, चाहे बुरे, वह मुक्त हो जाता है।" क्या आपने सचमुच इस बात के सिद्ध करने में उसके साथ बहस की थी ? मगर मैं आशा करता हूँ कि बाबा ने आपके कथन का तात्पर्य बिलकुल नहीं समझा

* जवाहरदास एक उदासी साधु थे, जो प्रायः गुजरांवाले ज़िले में घूमते रहते थे और कभी कभी लाहौर आ जाया करते थे।

होगा। इसलिये उसने झूठमूठ यह बात प्रसिद्ध कर दी है, और मुझे अयोध्याराम ने कहा है कि बाबा ने यह बात प्रसिद्ध की हुई है *।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६०) ७ जुलाई, १८९०

आपका पत्र आने देर क्यों हो गई। आप ज़रूर पत्र लिखें, जल्दी। रघुनाथमल ने अभी कुछ नहीं भेजा।

—— ० ——

कुल्फी न खाने की प्रतिज्ञा

संबोधन पूर्वोक्त, (२६१) ८ जुलाई, १८९०

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है? आप अवश्य पत्र लिखें। आज रघुनाथमलजी के १०) दस रुपये भेजे हुए मुझे मिले हैं, परन्तु यह बड़ी जल्दी ही जल्दी लग जायेंगे अर्थात् ख़र्च हो जायेंगे। पुस्तकों पर बड़ा ख़र्च आता है। मैं व्यर्थ ख़र्च बिलकुल नहीं करता। जिस दिन आपके सम्मुख मैंने कुल्फियाँ खाई थीं, उस दिन से मैंने सदा के लिये कुल्फी खानी बिलकुल छोड़ दी है। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ, आप पत्र क्यों नहीं लिखते?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६२) ९ जुलाई, १८९०

आपका पत्र किस लिए कोई नहीं आया? आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६३) १० जुलाई १८९०

आपका पत्र बिलकुल कोई नहीं आया। आप ज़रूर दया करें।

—— ० ——

* भगतजी महाराज से पूछने पर मालूम हुआ कि उन्होंने साधारण रूप से [illegible] से ऐसा नहीं कहा था, केवल इतना कहा था कि पानी को आग पर किसी और का रखा न हो जाए ऐसी धर्म का भेद नहीं जाना, और वह पर कर मुक्त हो जाना है।

गुरुजी के रोष (खफ़गी) को दूर करने की अत्यन्त चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२६४)　　　　११ जुलाई, १८६०

आप लिख तो दिया करें कि हम इस बात पर खफा (रुष्ट) हैं। अब खफ़गी अर्थात् रोष का कारण मालूम न हो और केवल इतना ही मालूम हो कि आप रुष्ट हैं, तो यही तकलीफ होती है। मैं बारंबार आपको जताता हूँ कि यदि कोई अनुचित बात मुझसे हुई है, तो वह जान-बूझकर कदापि नहीं हुई होगी। उसका कारण मेरी अज्ञानता होगी। आप क्षमा कर दें। क्या वह पत्र जिसमें मैंने बाबा जवाहरदास की बाबत कुछ लिखा था, आपके रोष का कारण है? यदि ऐसा है, तो आप रुष्ट हों, क्योंकि वास्तव में वह सारा पत्र अयाध्यावास के कहने पर था, मुझको उसमें कुछ दखल नहीं। चाहे आप कोई बात कहें, मुझको आप पर किञ्चिद् आपत्ति (एतराज) नहीं। इसलिए अब तो एक पत्र लिखो। और भविष्य में इस प्रकार तुच्छ तुच्छ बातों पर रुष्ट होना कुछ कम कर दें तो अति कृपा होगी। जब मैं आपके कहने मात्र से मान जाता हूँ, तो रुष्ट क्यों होना? जब सोंटे (छड़ी) से काम चल जावे, तो ढाँग (लठ) की क्या आवश्यकता है?

—— ० ——

छात्र-काल में मन का उद्वेग

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२६५)　　　　१२ जुलाई, १८६०

आपका एक पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। हमें छुट्टियाँ पहली अगस्त या उससे दो तीन दिन पहले को होंगी। अगर पहली अगस्त से पहले-पहले दौसी से बंसीधर या कोई और मौसीनी को गुजराँवाले न लाया, तो शायद मुझे जाना पड़ेगा, क्योंकि वह सख्त (भारी) बीमार है। और रघुनाथमल उसे जल-वायु बदलने के लिए यहाँ भेजना चाहता है। और अन्य कोई उसे वहाँ से लानेवाला नहीं है, क्योंकि सुना है, बंसीधर

छुट्टियों में मैं बड़ा परिश्रम करूँ, किसी तरह से कालक्षेप न हो, और मेरा परिश्रम यथार्थ रीति से हो, और परमेश्वर उस (परिश्रम) को सफल करे। क्योंकि मैं अपने आपको बड़ा ही नालायक (अयोग्य-निकम्मा) समझता हूँ, और वास्तव में हूँ भी बड़ा ही नालायक। इसलिये जो मेरा इरादा (संकल्प) है उसका तात्पर्य यही है कि किसी प्रकार से मैं परिश्रम अधिक करूँ, और कोई उद्देश्य नहीं। मैं आशा करता हूँ कि आप मुझे ऐसे इरादे में अवश्य सहायता देंगे। मेरे हाल (हालत) पर ज़रूर रहम (दया) करो, मैं बड़ा नालायक हूँ। मैं चाहे यहाँ रहूँ चाहे वहाँ रहूँ, आपका ही दास हूँ। और इस वक्त जो मेरा इरादा है, वह मैं लिख देता हूँ। अगर वह बदल गया, तो भी लिखूँगा। इरादा बड़ा हो, आप यह न ख्याल करना कि आपके विरुद्ध है, क्योंकि मेरे प्रत्येक इरादे से मुख्य उद्देश्य यह होता है कि आपके साथ प्रीति (सत्कार) और भी बढ़े। मेरा उद्देश्य उसके विरुद्ध कभी नहीं होता। अब इरादा यह है कि "पहले कुछ दिन अर्थात् सात या आठ दिन के लगभग तो मिलकुल लाहौर में ही रहूँ, और उन दिनों में अपने पिछले पढ़े हुए (अधीत पाठ) का अभ्यास (पुनरावर्तन) करूँ (यदि डौसी न जाना पड़ जाय, तो), तत्पश्चात् गुजरांवाला कुछ दिन रहकर देखूँ कि पढ़ा जाता है या नहीं। पाँच चार दिन पेंगोंपे रहने का भी इरादा है, और कुछ दिन मुरालीवाला। साथ इसके रोमी जाने का भी इरादा (विचार) है, क्योंकि सामान (सौदा) न लिया था। और अगर वहाँ एकान्त जगह मिल जाय, तो वहाँ ही शायद अधिक दिन अर्थात् एक मास के लगभग रह पड़ूँ। और पिछली (अन्तिम) छुट्टियाँ फिर लाहौर में आकर काटूँ।" मगर मैं आपसे यही माँगता हूँ कि मेरा किसी प्रकार से कालक्षेप न हो, रघुनाथदासजी* के

* रघुनाथदासजी प्रथम भगतजी की पुत्री का लड़का था।

लिए मैंने एक अति उत्तम बात सोची है, जिससे वह अच्छा भी हो जाय और उस्ताद (अध्यापक) की भी उसे कम जरूरत पड़े। अब और बात लिखता हूँ। अब तक हौंसी मे मैं ७०) सत्तर रुपये मँगा चुका हूँ, तीस और मँगवाने हैं। वह इसलिए नहीं मँगाये थे कि उनसे जो पुस्तकें खरीदनी थीं, वे भारतवर्ष में नहीं मिल सकती थीं, मगर अब भारतवर्ष के ग्रन्थविक्रेता (बुकसेलर) के पास थोड़े दिनों तक वे पुस्तकें विलायत से आ जाती हैं, और मेरी श्रेणी के सब विद्यार्थी उन पुस्तकों को छुट्टियों से पहले खरीद लेंगे, इसलिए कि छुट्टियों में उन्हें अपने घर देखें। इसलिए मैं भी उचित समझता हूँ कि रुपये मँगा लूँ, और क्योंकि पुस्तकें आयें, खरीद लूँ। उन पुस्तकों पर तीस रुपये से कुछ कम लगेगा। बीस रु० के लगभग लगेंगे। बाकी के रुपये आपकी दौलत हैं। बाद से मुझे भी दे देने। आप लिखें कि रुपये अभी मँगाऊँ या नहीं। ॐ।
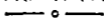
संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२६६) ९ बजे रात्रि, १२ जुलाई १८९०

आज पंडित वृषभीप्रसाद गुजरोंवाले गये हैं। अगर हो सका तो आप मेरे भाई साहब की तरफ यह पैग़ाम भेज देना कि प्रनलाल को जिस किताब की जरूरत हो, उसे फ़ौरन खरीद दें। उसका मेरी तरफ पत्र आया था कि उसके वास्ते उर्दू की तीसरी किताब ले आऊँ। आप अभी तक आये क्यों नहीं ? सरदार रामसिंहजी को नमस्कार।
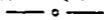
संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२६७)　　　　१५ जुलाई, १८९०

मेरा इरादा छुट्टियों में हौंसी आने का भी कुछ पता नहीं। और जब आप लिखेंगे तब रुपये मँगा लूँगा। इस हफ्ते (शनिवार) हमारा फ़ारसी का इम्तहान है। आप दया रखा करें। पत्र लिखते रहा करें।

बीमार है। मैं परमेश्वर से या आपसे प्रार्थना करता हूँ कि किसी मगर
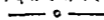
संबोधन पूर्वोक्त, (२६८) १६ जुलाई, १८९०

आपका पत्र आये देर हो गई है। रघुनाथमल रुपये अभी नहीं भेजे, इसलिए आज अयोध्यादास से मैं १) रु० लाया हूँ। आप दया रखा करें।

—— ० ——

लाहौर में छुट्टियाँ व्यतीत करने के विषय में अति उत्तम युक्तियाँ और उदाहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (२६९) १६ जुलाई, १८९०

हमें छुट्टियाँ पहली अगस्त से होंगी। आज १६ जुलाई है। मैं आपका सदा तावेदार (आज्ञाकारी) हूँ। आप कोई और ख्याल कभी न करें। जिस काम में कोई मनुष्य मसरूफ (प्रवृत्त) हो, उसे कुछ काल के बाद एक मलिका (शक्ति) जेहन (बुद्धि) में आ जाता है, जिससे उसको बिना सोचे उस काम के संबंध में जो अच्छी बात हो वह सूझ जाता है। और उस अच्छी बात के अच्छा होने की जो दलीलें (युक्तियाँ) हैं, उनका प्रभाव तो उसके मन में हो जाता है परन्तु वे (सिद्ध करने की) युक्तियाँ स्वयं उसके मन में न आवें। और बहुधा ऐसी युक्तियाँ मन में नहीं भी आतीं, क्योंकि युक्तियों का निकालना और बात है। यह बात पंडितों व तत्त्वज्ञानियों के साथ संबंध रखती है, और सारे मनुष्य पंडित या तत्त्वज्ञानी नहीं होते, और वह शक्ति जिससे यह मालूम हो जाता है कि अमुक काम अच्छा है, मगर उस काम के अच्छा होने में युक्ति मन में नहीं आती, उस शक्ति का नाम जमीर (Conscience या अंतःकरण) है। मैं जब छात्र था, तो कविता इत्यादि पढ़ने से तत्काल जाँच लेता था कि अमुक कविता उसी वज़न (वृत्त, Metre या छंद) पर है, जैसी कि अमुक दूसरी, या अमुक कविता और छंद की है, मगर यह नहीं जानता था कि क्या वज़न (वृत्त या छन्द) है, और उन दोनों में भेद किस बात में है, यद्यपि इतना मालूम होता था कि कुछ भेद अवश्य है। अथवा

अपने अनुभव के सिद्ध करने में दलील (युक्ति) नहीं दे सकता था, यद्यपि अनुभव बिलकुल सत्य होता था। जैसा कि केवल दस वर्ष के अध्ययन (अभ्यास) के बाद अब मैं कविता के विषय में युक्ति देने के योग्य हुआ हूँ, और जानता हूँ कि यह युक्ति उस समय भी दी जा सकती थी, चाहे मैं युक्ति से अपरिचित था, अर्थात् युक्ति अवश्य थी, यद्यपि मैं नहीं जानता था। इससे यह सिद्ध हुआ कि सदा मनुष्य हर वक्त (सदैव) युक्ति नहीं दे सकता, कोई कोई समय तो उसकी बात बिना युक्ति के भी माननी चाहिये, जबकि इतना हमें उसमें विश्वास हो कि "यह मनुष्य जान बूझकर बुरा काम नहीं करनेवाला, और अगर वह ऐसा काम कर रहा है कि जिसमें वह युक्ति नहीं दे सकता, तो वह अपनी जमीर (अन्तरात्मा) के अनुसार चल रहा होगा।

(उक्त दृष्टान्त का) दार्ष्टान्त यह है कि मैं आपको यक़ीन (विश्वास) दिलाता हूँ कि मैं आपका अन्तर्हृदय से गुलाम (सेवक) हूँ, और जो काम मैं करता हूँ, चाहे ऊपर से मैं उस विषय में युक्ति न दे सकूँ, पर वास्तव में वह काम ऐसा होता है जैसा मुझे इतने वर्ष की पढ़ाई (अध्ययन) का अनुभव दर्शाता है कि यह काम अच्छा है, और इस काम के करने में कल्याण होगा। इसलिये आप कहीं यह न ख्याल कर बैठें कि चूँकि यह (अर्थात् मैं) युक्ति नहीं दे सकता, तो इसको (अर्थात् मुझे) कोई और उद्देश्य अदिष्ट है, अथवा हम से बाग़ी (बागी, सरकश या विरुद्ध) हो गया है। यह बात कदापि नहीं। हाय, मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैं आपका गुलाम हूँ।

पुनः यह कि चूँकि मैं जानता हूँ कि आपकी जो राय (सम्मति या विचार) मेरे विषय में होती है, उसका अन्तिम लक्ष्य (मूल उद्देश्य) यही होता है कि मुझको आनन्द हो, चाहे ऊपर से वह लक्ष्य या उद्देश्य कुछ अन्य ही प्रतीत होता हो। इसलिये मैं ख्याल करता हूँ कि यदि मेरे

जमीर (अन्तरात्मा) से या किसी अन्य अति पवित्र रीति से मुझको मालूम हो कि यह बात मेरे लिये अच्छी है (मगर जो मेरे लिए अच्छी होगी वह आपके लिए मुझसे भी अधिक अच्छी होगी, आपके लिए वह कदापि कदापि बुरी नहीं हो सकती), तो जरूर आपकी भी उस विषय में यही सम्मति होगी जो मेरे जमीर (अन्तरात्मा) की, या उस परिपक्व उपाय की, जिससे कि वह बात मालूम हुई है। और इस विषय में यह न कहेंगे कि उसने (मैंने) हमारी आज्ञा भङ्ग की है, बल्कि यह कहेंगे कि उसने (अर्थात मैंने) हमारी पूर्ण रीति से आज्ञा पालन की है। पुनः यह कि मैं चाहे किसी स्थान पर हूँ, आपका तो दास हूँ।

अब बात (सारांश) यह है कि आपने लिखा था कि छुट्टियों में गुजरांवाला आ जाना। सो यह बात है कि आऊँगा तो मैं अवश्य ही (चाहे कैसी दशा हो), मगर यह बात नहीं हो सकती कि सारी छुट्टियाँ (गुजरांवाला) ही व्यतीत करूँ। मेरा जमीर (अन्तरात्मा) कहता है कि "लाहौर में अधिक काल रहो।" यह बात अन्तरात्मा की समझ कर मैं ने अधिक सोचा नहीं, मगर फिर भी दो एक युक्तियाँ लिखता हूँ (मैं बड़ा शोक करता हूँ कि मुझे इन निकम्मी युक्तियों पर समय व्यर्थ खोना पड़ता है, मगर मैं इसलिए इन पर समय खोने के लिए विवश होता हूँ कि कहीं आप क्रुद्ध और समझ कर रुष्ट न हो बैठें। अगर मुझे इस बात का भय न हो कि आप रुष्ट हो जायेंगे, तो मैं इन युक्तियों पर समय व्यर्थ न खोऊँ। क्या ही अच्छा हो यदि आप मुझको अपना दास समझकर मेरे शुद्ध निश्चय या सत्य वाक्यों में सन्देह न लाया करें)।

इस बात पर मैंने खूब समझा है कि लाहौर के बिना अन्य किसी स्थान में रहने से न केवल यह अवगुण (दोष) होता है कि वहाँ एकान्त स्थान नहीं मिलता, बल्कि एक बहुत ही बड़ा दोष और यह होता है कि वहाँ विद्यार्थी ऐसी नहीं रहती कि किसी सूक्ष्म बात का पता लग सके, वहाँ दीपक

जाती रहती है। इसका कारण यह है कि नफ़स (चिदात्मा) जो कि न देह है और न देह का अंग, वह विषयों की प्राप्ति से और भौतिक पदार्थों के संग से जईफ़ (दुर्बल) और नाक़िस (दूषित) हो जाती है। और लाहौर के बिना अन्य सब स्थानों में यह नुक़्स (दूषण या अवगुण) पाया जाता है, क्योंकि वहाँ सर्व साधारण के मेलजोल (संगति) से चित्त (स्वभाव) की मिट्टी ख़राब हो जाती है।

अब यदि कोई पूछे कि लाहौर में भी तो मेल जोल होता है, तो उसका उत्तर यह है कि लाहौर में जो मनुष्य मिलता है, उसके साथ ओपरले (बाह्य) चित्त से एक बात की जाती है, जिसमें मन का ध्यान उसकी ओर नहीं जाता। मगर और जगहों में जो मनुष्य मिलता है, वहाँ बलात्कार उसकी ओर चित्तवृत्ति देनी पड़ती है, क्योंकि उससे जो मिलाप होता है, वह बहुत काल के पीछे प्राप्त हुआ होता है। साथ इसके लाहौर से अतिरिक्त अन्य जगहों में अपने बन्धु जनों से मिलाप होता है, जिनकी ओर अधिकतम ध्यान देना ज़रूरी होता है। दूसरे, लाहौर में जो मेल मिलाप होता है, वह बहुधा अपने सहपाठियों से होता है, जो अधिक विक्षेप नहीं डालता।

अब यदि यह प्रश्न किया जाये कि क्या और भी कोई लड़का (विद्यार्थी) है, जो छुट्टियों में लाहौर रहेगा? तो सुनिये —रघुनदीन* जो पञ्जाब में इस बार प्रथम रहा था, बिलकुल एक दिन भी सारी छुट्टियों में अपने ग्राम नहीं जायगा। वह स्वयं कहता है कि वह दस बारह दिन अब वहाँ (अपने ग्राम) से हो आया है, मगर छुट्टियों में वहाँ कदापि नहीं जायगा, आप मालूम कर लें।

संसार में कोई मनुष्य होशियार अर्थात् विद्या में चतुर (निपुण) हो ही नहीं सकता, जब तक कि वह परिश्रम न करे। जो निपुण (चतुर)

* रघुनदीन से अभिप्राय उस विद्यार्थी रघुनदीन एम० ए० से है जो तत्पश्चात् मिण्टगुमरी के डिस्ट्रिक्ट जज के पद पर नियुक्त हुआ था।

हैं, वे सब बड़ा परिश्रम करते हैं, तब निपुण हैं। यदि हमें उनका परिश्रम ज्ञात न हो, तो वे गुप्त प्रकार से अवश्य करते होंगे, या वे पहले कर चुके होंगे। यह बातें बहुत तहक़ीक़ (अनुसंधान) की गयी है।

यह भी सच है कि छुट्टियों में कई विद्यार्थी घर जायेंगे, और फिर भी वे चतुर (निपुण) हैं। किन्तु उनके विषय में और बात (कारण) है। उनके घरों में या उन जगहों में जहाँ वे जायेंगे, ऐसे निमित्त (साधन) नहीं होते कि जो उनके चित्तों को अभ्यास से रोकें। वे विवाहे हुए नहीं होते, या कोई और हेतु होता है, अथवा उनके मन वही परिपकावस्था को प्राप्त हुए होते हैं, जो बाह्य पदार्थों की ओर नहीं जाते। पर मेरा मन पक्का नहीं, यह अति दुष्ट है।

ज़ेहन (मेधा) जिसको कहते हैं, यह शक्ति भी परिश्रम से बढ़ती है। पुन' यह कि यदि सभावना से कोई मनुष्य बिना परिश्रम किये किसी परीक्षा में अच्छा रह भी जाये, तो उसको पढ़ने का आनन्द कदापि नहीं आयेगा। वह मनुष्य बहुत बुरा है। वह उस मनुष्य के सदृश है जिसने आपको एक समय कहा था कि मुझे एक सीहर्फी (कविता) बना दो और बीच में नाम मेरा रखना। अब चाहे उसने लोगों में यह मशहूर (प्रसिद्ध या प्रख्यात) कर दिया कि सीहर्फी मेरी है, मगर आप जानते हैं कि उस कविता में जो आनंद आपका आता होगा, उस मनुष्य का कदापि कदापि नहीं आ सकता, अथवा वह उस मनुष्य के सदृश है, जिसको और की भारी (कमाई हुई विभूति) मिल जाये। अब चाहे उसके पास धन तो है, पर वह उस धन से आनद नहीं उठा सकेगा, तत्काल उसको (उजाड़) देगा। किंतु जिसने परिश्रम से धन कमाया है, वही लाभ उठायेगा।

आप मेरे पिता समान हैं, और पिता माता को ऐसा नहीं होना चाहिये जैसा कि वह गुजराँवाले का पाधा (पंडित), जिसके विषय में आपने एक समय सुनाया था कि उसने अपने बड़े होनहार (निपुणमति) बच्चे को

पाठशाला में पढ़ने से बन्द कर रक्खा था, केवल इसलिए कि उस को अपने पुत्र से प्रेम (मोह) बहुत अधिक था।

मगर आप तो बड़े ही अच्छे हैं, आपको तो इस विषय में उस पाधे (पंडित) की सी उपमा (तुलना) त्रिकाल में भी नहीं दी जा सकती। आपका और उसका उदाहरण तो प्रकाश और अन्धेरे के समान है। कदाचित् आपके चित्त में ये बातें नहीं बीती होंगी, जो मैंने ऊपर लिखी हैं। तभी आपने यह कहा कि लाहौर में मत रहना। अब दो वर्ष की बात है, अधिक काल भी नहीं। यदि अब परिश्रम न करूँ तो और कब समय आयेगा परिश्रम के लिये।

आप मुझे दो वर्ष की छुट्टी दो, फिर सारी आयु आपके संग हूँ। आपने यह समझ छोड़ना कि हमारा पुत्र परदेश (विलायत) गया हुआ है, जब आयेगा फिर हमारा है। और मेरा ख्याल जब इस (पढ़ने की) ओर अधिक हो, तो आपने मेरी बाह्य (अपेक्षाओं) जरूरतों की इस तरह खबर रखनी जिस तरह कि एक महाराज अपने योद्धाओं की रखता है, जिस समय कि योद्धा युद्ध-क्षेत्र में अपने महाराजा के लिए शत्रु से लड़ रहे हों। आप कभी कोई और ख्याल मेरे विषय में न लाना, मैं आपका दास हूँ।

मैं यह जानता हूँ कि परिश्रम अति उत्तम वस्तु है (पर मैं परिश्रम इस तरह पर नहीं करनेवाला कि रोगी हो जाऊँ), किंतु परिश्रम में लगने के लिए आपकी (सहायता की) आवश्यकता है। आप मुझे सहायता दें कि मैं पढ़ने में परिश्रम करूँ। आपकी सहायता बिना परिश्रम भी नहीं हो सकता। हे परमात्मा! मेरा मन प्रयत्न (परिश्रम) में ज्यादा लगे, मैं अत्यन्त परिश्रम करूं, क्योंकि मेरे इरादों को पूरा करनेवाले आप हैं। (सातवीं या आठवीं छुट्टी के पश्चात् मैं गुजरांवाला आऊँगा, थोड़े ही काल के बाद फिर लाहौर में यदि आ जाऊँ, तो बड़ी अच्छी बात हो)

आप इस लम्बे लेख से रुष्ट न हो जाना। इसमें वास्तव में अभि

हैं, वे सय बड़ा परिश्रम करते हैं, तब निपुण हैं। यदि हमें उनका परिश्रम ज्ञात न हो, तो वे गुप्त प्रकार से अवश्य करते होंगे, या वे पहले कर चुके होंगे। यह बातों बहुत तहक़ीक़ (अनुसंधान) की गयी है।

यह भी सच है कि छुट्टियों में कई विद्यार्थी घर आयेंगे, और फिर भी वे चतुर (निपुण) हैं। किन्तु उनके विषय में और बात (कारण) है। उनके घरों में या उन जगहा में जहाँ वे जायेंगे, ऐसे निमित्त (साधन) नहीं होते कि जो उनके चित्तों को अभ्यास से रोकें। वे बिगड़े हुए नहीं होते, या कोई और हेतु होता है, अथवा उनके मन यही परिपक्वावस्था को प्राप्त हुए होते हैं, जो बाह्य पदार्थों की ओर नहीं जाते। पर मेरा मन पक्का नहीं, यह अति दुष्ट है।

ज़ेहन (मेधा) जिसको कहते हैं, वह शक्ति भी परिश्रम से बढ़ती है। पुन यह कि यदि सभावना से कोई मनुष्य बिना परिश्रम किये किसी परीक्षा में अच्छा रह भी जाये, तो उसका पढ़ने का आनंद कदापि नहीं आयेगा। वह मनुष्य बहुत बुरा है। वह उस मनुष्य के सदृश है जिसने आपको एक समय कहा था कि मुझे एक सीहर्फ़ी (कविता) बना दो और बीच में नाम मेरा रखना। अब चाहे उसने लोगों में यह मशहूर (प्रसिद्ध या प्रख्यात) कर दिया कि सीहर्फ़ी मेरी है, मगर आप जानते हैं कि उस कविता में जो आनंद आपको आता होगा, उस मनुष्य को कदापि कदापि नहीं आ सकता, अथवा वह उस मनुष्य के सदृश है, जिसको और की मारी (कमाई हुई विभूति) मिल जाये। अब चाहे उसके पास धन बो है, पर वह उस धन से आनंद नहीं उठा सकेगा, तत्काल उसको (उजाड़) देगा। किंतु जिसने परिश्रम से धन कमाया है, वही लाभ उठायेगा।

आप मेरे पिता समान हैं, और पिता माता को ऐसा नहीं होना चाहिये जैसा कि वह गुजराँवाले का पाधा (पंडित), जिसके विषय में आपने एक समय सुनाया था कि उसने अपने बड़े होनहार (निपुणमति) बच्चे का

पाठशाला में पढ़ने से बन्द कर रक्खा था, केवल इसलिए कि उस को अपने पुत्र से प्रेम (मोह) बहुत अधिक था।

मगर आप तो बड़े ही अच्छे हैं, आपको तो इस विषय में उस पाधे (पंडित) की सी उपमा (तुलना) त्रिकाल में भी नहीं दी जा सकती। आपका और उसका उदाहरण तो प्रकाश और अन्धेरे के समान है। कदाचित् आपके चित्त में ये बातें नहीं बीती होंगी, जो मैंने ऊपर लिखी हैं। तभी आपने यह कहा कि लाहौर में मत रहना। अब दो वर्ष की बात है, अधिक काल भी नहीं। यदि अब परिश्रम न करूँ तो और कब समय आयेगा परिश्रम के लिये।

आप मुझे दो वर्ष की छुट्टी दो, फिर सारी आयु आपके संग हूँ। आपने यह समझ छोड़ना कि हमारा पुत्र परदेश (विलायत) गया हुआ है, जब आयेगा फिर हमारा है। और मेरा ख्याल जब इस (पढ़ने की) ओर अधिक हो, तो आपने मेरी बाहु (अपेक्षाओं) ज़रूरतों की इस तरह ख़बर रखनी जिस तरह कि एक महाराज अपने योद्धाओं की रखता है, जिस समय कि योद्धा युद्ध-क्षेत्र में अपने महाराजा के लिए शत्रु से लड़ रहे हों। आप कभी कोई और ख्याल मेरे विषय में न लाना, मैं आपका दास हूँ।

मैं यह जानता हूँ कि परिश्रम अति उत्तम वस्तु है (पर मैं परिश्रम इस तरह पर नहीं करनेवाला कि रोगी हो जाऊँ), किंतु परिश्रम में लगने के लिए आपकी (सहायता की) आवश्यकता है। आप मुझे सहायता दें कि मैं पढ़ने में परिश्रम करूँ। आपकी सहायता बिना परिश्रम भी नहीं हो सकता। हे परमात्मा ! मेरा मन प्रयत्न (परिश्रम) में ज्यादा लगे, मैं अत्यन्त परिश्रम करू, क्योंकि मेरे इरादों का पूरा करनेवाले आप हैं। (सातवीं या आठवीं छुट्टी के पश्चात् मैं गुजराँवाले आऊँगा, थोड़े ही काल के बाद फिर लाहौर में यदि आ जाऊँ, तो बड़ी अच्छी बात हो)

आप इस लम्बे लेख से रुष्ट न हो जाना। इसमें वास्तव में अभि

मा ना। आपने दास पर रुष्ठ न होना क्योंकि किसी दास के स्थान रहन में अत्यंत तकलीफ रहती है। इसलिए मैं अब रघुनाथमल को पत्र लिखता हूँ। साथ इसके हमारी किताबें भी आज कल में आनेवाली हैं। मैं फ़िज़ूलखर्ची नहीं करता।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त (२७४) २६ जुलाई, १८९०

आज से लेकर हमें छुट्टियाँ हो गई हैं। मैं अभी कुछ दिन यहाँ रहना चाहता हूँ। आप दया रक्खा करें। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका एक पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (२७५) २८ जुलाई, १८९०

आप पत्र लिखते रहा करें। रघुनाथमल से रुपये अभी नहीं आये। जब मेरे काम का वह हिस्सा जो मैंने यहाँ आने से पहले करने का इरादा किया हुआ है खतम (समाप्त) हो जायगा, मैं आ जाऊँगा। मगर सारा काम इतना है कि अढ़ाई महीने के स्थान पर यदि वर्ष भर की छुट्टियाँ भी होतीं, तो बड़ी कठिनता से समाप्त होता। इसलिए जितनी जल्दी वहाँ* से चला आऊँ, उतना ही अच्छा है। आप खफ़ा (रुष्ट) न होना। मैं गुलाम हूँ। शायद एक सप्ताह से कुछ दिन ऊपर के बाद मैं गुजराँ वाले आने के योग्य हो जाऊँगा। आप तक़्सीरें (भूल) मुआफ़ करना।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (२७६) २९ जुलाई, १८९०

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी खुशी हुई। बंसीधर मुझे बिलकुल नहीं मिला। और न अभी रघुनायमल से रुपये ही आये हैं।

— o —

* यहाँ से अभिप्राय तीर्थरामजी का हाँसी से है क्योंकि कुछ काम समाप्त करने के बाद उनका विचार रघुनाथमल के पास हाँसी जाने का था और वैसा ही उन्होंने आगे चलकर किया है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२७७)　　　　१० जुलाई, १८९०

आपका एक कार्ड कल रात को मिला था, जिसमें चला आने की बाबत लिखा हुआ था। सो मैं इस शनि, रवि या सोमवार (जिस वार आप लिखोगे) चला आऊँगा। अभी रघुनाथमल से रुपये नहीं आये। अधिक बातें वहाँ आकर करूँगा। मैं बड़ा नालायक़ (अयोग्य) हूँ। मेरे पर आप भी तरस नहीं खाते। इति।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७७८)　　　　११ जुलाई, १८९०

कल मुझे रघुनाथमल से बीस रुपये आ गये थे। मैंने पचीस उनमें से सुंदरमल कलईवाला जो बूढ़ा आदमी दुकानदार मेरे पास और बाबाजी के सामने रहा करता है, उसे रखने को दे दिये थे। और पाँच अपने पास रखे थे। मैं इस शनिवार आने का इरादा रखता हूँ। आपका पत्र आज और कल कोई नहीं मिला। आपने ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। इन दिनों यहाँ पर किंचित् भी कष्ट नहीं होता। मैं पौड़ियों (सीढ़ियों) में ममटी (गुमटी) के निकट बैठा करता हूँ। न यहाँ तबेले की गंदगी की बदबू आती है, न गरमी लगती है। शाम के वक़्त (सायंकाल) परेट में सैर करने (टहलने) जाया करता हूँ। बड़ी फरहत (प्रसन्नता) प्राप्त होती है। पढ़ने के समय पढ़ा अच्छा जाता है। खेलने के वक़्त खेला अच्छा जाता है। आप यह न ख़्याल कर लेना कि हमारे विरुद्ध चल रहा है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७७९)　　　　१ अगस्त, १८९०

आपका एक कार्ड आज मिला। कल मैं शाम (साय) को आ जाने का संकल्प रखता हूँ। ज़्यादा बातें आन कर करूँगा। आप दया रखा करें।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (२८०) * १० अगस्त, १८६०

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। हिंदुस्तानियों † ने अपना असबाब निकाल लिया है। जिस जन्दरे (ताले) की कुंजी टूटी हुई थी वह जन्दरा तोड़ दिया है। क्योंकि ऐसा किये बिना कोठे पर चढ़ने की कोई सूरत (विधि) नहीं थी, और साथ इसके वह ताला पहले से ही खराब हुआ था। मेरा असबाब सब ठीक है। किताबें निकट काल में ही आनेवाली हैं। अभी नहीं आईं। इसलिए मैंने चौबीस रुपये मुधरमल को दे दिये हैं और एक अपने पास रखा है, आप मेरी सब तक़सीरें (भूलें) मुआफ़ करनी। मैं आपका टहलुआ (चाकर) हूँ।

रघुनाथमलजी का एक पत्र यहाँ मिला है, जिसमें लिखा है—"हाँसी जरूर आना।" इत्यादि। मैंने यहाँ जाने का अभी कोई दिन मुक़र्रर (नियत) नहीं किया।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (२८१) ११ अगस्त, १८६०

आज मैं भागभरी ‡ आपको रवाना करता हूँ इस कार्ड के साथ। आप रसीद से सूचित करना। मेरा इरादा इस शुक्रवार को यहाँ से रवाना होकर हाँसी जाने का है। आप इस इरादे की मंजूरी (स्वीकृति) या नामंजूरी (अस्वीकृति) का पत्र लिखना। खूती पाँव में कुछ रस गई (काट रही) है।

—— ०ः ——

* इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि तीर्थरामजी अपने लिखने के अनुसार शनिवार २ अगस्त को गुजरांवाले चले गये और वहाँ एक सप्ताह रहकर रविवार को वापिस लाहौर आ गए जिससे इस बीच में सप्ताह भर उन्हें कोई पत्र न लिखने की जरूरत पड़ी और न कोई पत्र इस बीच का मिलता ही है।

† हिंदुस्तानी से अभिप्राय उन दिनों पंजाब में संयुक्त प्रांत के निवासी से लिया जाता था, यहाँ तीर्थरामजी का आशय भी ऐसा ही है।

‡ भागभरी पुस्तक का नाम था।

गुरु-आज्ञा पालन-निमित्त ईश्वर से प्रार्थना

सम्बोधन पूर्वोक्त,   (२८२)   ११ अगस्त, १८६०

आपका एक कृपापत्र लाला देवीदयाल * के हाथों का लिखा हुआ मिला। अत्यन्त खुशी हुई। "हे परमात्मन्! मुझसे कभी कोई ऐसी बात न हो जो आपकी मरज़ी (इच्छा) के विरुद्ध हो।" हे पिताजी! मैं अपनी ओर से तो यही ही चाहता हूँ कि सदा ही आपकी मरज़ी के अनुसार चलूँ, मगर यदि कोई चूक हो जाय तो आप क्षमा करनी और उसकी सूचना देनी, ताकि पुनः उससे और भी बचने की कोशिश करूँ। लाला देवीदयालजी का सादर नमस्कार। मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूँ। नारायणसिंह, रघुनाथशरण, अनन्तराम का नमस्कार। हाँसी का पता यह है—"मुकाम हाँसी, ज़िला हिसार, पास रघुनाथमल डॉक्टर के पहुँच कर गुसाई तीर्थराम को मिले।

आज रघुनाथमल का पत्र आया है, जिसमें लिखा है कि जब आओ सायंकाल के चार बजे की गाड़ी में सवार होना अच्छा होगा, क्योंकि इस तरह रास्ते में अधिक काल तक ठहरना नहीं पड़ता, और दूसरे दिन की प्रातः का रात हाँसी पहुँच जाती है। और अगर किसी और वक्त की गाड़ी में सवार होया जाय तो रास्ते में फीरोज़पुर दिन के छः घंटे ठहरना पड़ता है, और रात भर फीरोज़पुर से हाँसी की रात में काटनी पड़ती है। जूती अब मुझे कष्ट नहीं देती। तेल लगाया था। सर्तोपसुरतरु मैं आप हाँसी से आनकर भेज दूँगा। या अगर मेरी कम्पनी की किताबें मुझे कल मिल गई तो वह भी मैं आपका कल ही भेज दूँगा। अगर आपको जल्दी है तो मुझे लिख दो ताकि यहाँ आने से पहले ही आपको भेज

* लाला देवीदयालजी तीर्थरामजी के गुरुभाई थे, अर्थात् वह भी भगत धन्नाराम जी का सत्संग किया करते थे।

दूँ । सो अब मेरा इरादा हाँसी की बावत यह है कि शुक्रवार सायं चार बजे की गाड़ी में रवाना हो जाऊँ । अगर इसमें कोई नावाजिब (अनुचित) बात हो तो मुझे कल ही लिख दो और मैं न जाऊँगा । आपने मेरी भूलें मुआफ करनी । आपका गुलाम हूँ ।

संबोधन पूर्वोक्त, (२८३) १५ अगस्त, १८६०

आपका एक पत्र कल मिला था। मेरी किताबें अभी नहीं आई । आपकी संतोषसुरतरु के लिए मेहरचंद के पास गया था। उसके पास बम्बई के छापे की है, जिसका दाम वह आठ आने ।/) माँगता है । इस लिये मैंने अभी नहीं ली । क्या हाँसी से आकर भेज दूँ ? गाड़ी दो बजे जाती है । मैंने स्टेशन के रास्ते में यह पत्र लिखा है । आप दया रखा करें । मैं आपका गुलाम हूँ ।

संबोधन पूर्वोक्त, (२८४) हाँसी, १६ अगस्त, १८६०

आज प्रातः आठ बजे मैं यहाँ पहुँच गया हूँ, आराम से । आप दया रखा करें, मैं कोई हफ्ते (सप्ताह) के लिये यहाँ रहूँगा । पता यह है— "मुकाम हाँसी, जिला हिसार, बाबू रघुनाथमल साहब डाक्टर द्वारा गुसाईं तीर्थराम को मिले ।

संबोधन पूर्वोक्त, (२८५) हाँसी, १८ अगस्त, १८६०

मेरा चित्त तो जल्दी आने को चाहता है, आगे देखें । आपका एक पत्र आज मंगल को मिला । बड़ी खुशी हुई ।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(२८६)　　　　　२१ अगस्त, १८९०

मैं आज प्रात: की गाड़ी से लाहौर पहुँच गया था, सर्व प्रकार से कुशलपूर्वक। मेरी किताबें यहाँ सब ठीक हैं। महाराजजी! जब मैं गया था तो सात ७) रु० मुहम्मद से ले गया था और बाक़ी १७) रु० उसके पास रहने दिये थे। किराया इत्यादि पर मेरे पाँच रुपये ख़र्च हुए, और आती बार रघुनाथमलजी ने १०) रु० नक़द, एक पोशाक कपड़ों की और दस सेर मोंझा घी (भैंस का घी) मुझे दिया है। आप किसी दिन अब यहाँ दर्शन देने आ जाना। मैं आपका गुलाम हूँ। आप दया रखा करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(२८७)　　　　　१० अक्तूबर, १८९०

मैं आज राज़ी ख़ुशी यहाँ पहुँच गया हूँ। मेरा असबाब सब ठीक है। मैं अब आपकी दया माँगता हूँ कि सब काम मुझसे यथार्थ तौर पर हों, और कोई विघ्न न आ जाय।

आज लछमणदास भी मिला। बाबा अब राज़ी है। मकान सारा मेरे तअल्लुक़ (सिपुर्द) हो गया है।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(२८८)　　　　　१२ अक्तूबर, १८९०

आज मैंने प्रात: को अपने घर मूँग की धोतवीं (धोई) दाल पकाई थी। मगर पानी बहुत पड़ गया था, और दिन को अभागी नींबू भी लछमणदास लाया था। मगर वह नींबू अभी बहुत नया था। मैंने केवल वह दाल और थोड़ा सा नींबू सहित दाल के पानी के खाया, तो मेरा जी (चित्त) मतलाने लगा और मुझे एक बार क़ै भी आ गई। पाख़ाना मुझे ख़ूब आ जाता रहा है। आज मुझे ज़रा सा तप (ज्वर) और बड़ी कमहिम्मती (उत्साहहीनता) रही। मगर आपने कोई फ़िक्र न करना।

मैं अपना हाल लिखता रहूँगा, इति। पुन सादर प्रणाम। लछमणदास कल प्रतापसिंह के पास जायगा।

संबोधन पूर्वोक, (२८६) १७ अक्तूबर, १८६०

कल का हमारा कालिज थोड़ा चिर (काल) ही खुला रहा, मगर आज बाक़ायदा (नियमपूर्वक) पढ़ाई हुई। कल ग्यारह बजे जब मैं कालिज से आया तो मुझे बड़ा तप (ज्वर) चढ़ गया और चार बजे तक रहा। आज मैं यद्यपि बहुत ही नियमपूर्वक चला, फिर भी कालिज में एक बजे तप (ज्वर) चढ़ गया और ढाई बजे तक मैं बोर्डिंग में पड़ा रहा। मेरे ऊपर पाँच लिहाफ़ (रजाई) थे। फिर भी लर्जा (कपकपी) और शीत (सर्दी) बन्द न हुई। आख़िर (अन्त में) ढाई बजे बोर्डिंग से चला। और चार बजे गिरते पड़ते मकान पर आ पहुँचा। अब शाम (सायं) को आराम है। आपने आने का कष्ट न उठाना। मेरा तो यही हाल है। आज लछमणदास यहाँ आया था। मूटामल को आपने ज़रूर भेज देना।

अपनी बीमारी के कारण स्वयं जानने की शक्ति

संबोधन पूर्वोक, (२६०) प्रातःकाल ४ बजे, १६ अक्तूबर, १८६०

कल एक बजे से पहले कालिज में मुझे बुख़ार (ज्वर) शुरू हो गया था, उस वक्त मैं घर चला आया। बड़ी ही कठिनता से लुहारी दरवाज़े तक पहुँचा। वहाँ से इक्का पर चढ़कर घर आया। यहाँ पाँच छै बार क़ै आई और एक बार पाख़ाना। मगर कमहिम्मती (शिथिलता) बहुत ही बढ़ गई। आख़िर (अंत में) नींद पड़ गई। और रात के बारह बजे जाकर होश आया। तब का अभी तक जाग रहा हूँ। अब तबीयत (स्वास्थ्य) अच्छी है। यह तीन दिन कालिज में आने से जो मुझे तप

(ज्वर) चढ़ा सो उसका कारण मैं यह समझता हूँ कि यहाँ बारह बजे के क़रीब मुझे पाख़ाना और क़ै (वमन) आनेवाली मालूम होती थी, मगर मैं वहाँ पढ़ाई में मशग़ूल (प्रवृत्त) रहा और इनकी फ़िक्र (चिंता) न की। ख़ैर, अब मैं ऐसा नहीं करूँगा। और मेरा ऊपर कहा कारण अगर सच है तो भविष्य में मुझे सेहत (नीरोगता) रहेगी। मैं आपका गुलाम हूँ। आप मेरी तक़सीर (भूल) मुआफ़ करनी। आप दीवाली के लिये कब आयेंगे ?

अब एक बड़ी बात लिखता हूँ कि हमारे रियाज़ी (गणित) के प्रोफ़ेसर ने कहा है कि दस बारह दिन को मैं दो नई किताबें शुरू कराऊँगा, तब तक तुम किताबों को मुहय्या कर लो अर्थात् मँगवा लो। मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि वे किताबें मेरे पास नहीं हैं और उनका दाम भी बहुत बड़ा है अर्थात् लगभग सत्रह रुपये। सो अब क्या रघुनाथमल को लिख दूँ कि रुपये भेज दे। क्योंकि उसने कहा हुआ है। या कोई और सबील (रीति या विधि) करनी चाहिये। जवाब ज़रूर व वापसी डाक भेजना।

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वोक्त,　　(२६१)* दो बजे दिन, १६ अक्तूबर, १८८०

अब आपका कार्ड मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। अभी तक तो मैं अच्छा हूँ। अगर आज सारा दिन और कल का दिन भी अच्छा रहा, तो मैं समझूँगा कि अब मैं राज़ी (नीरोग) हो गया, और अगर मुझे

---

* इस पत्र के बाद एक मास और दस दिन तक अर्थात् १ अक्तूबर १८८० से २८ नवंबर १८८० तक कोई पत्र तीर्थरामजी का नहीं मिला। २२ अक्तूबर से १९ अक्तूबर तक के पत्रों में तीर्थरामजी ने अपनी बीमारी का समाचार अपने गुरुजी को बार बार दिया है और २६ अक्तूबर के पत्र में उन्होंने इसी बीमारी के कारण अपने गुरु भगत धन्नारामजी को विनय पूर्वक बुलाया भी है और २८ नवंबर १८८० के पत्र में लिखा गया है कि

आज बुखार (ज्वर) चढ़ गया तो मैं आपको लिख दूँगा और आपने आ जाना। साथ इसके अगर कल को भी (ज्वर) चढ़ गया तो आपने आ जाना। प्रथम तो आशा है कि धन्नामल आज कल और परसों में गुजरांवाले अवश्य आ जायगा यद्यपि आपको न मिले। सरदार साहबसिंह का क्या हाल है ? आप मेरे ऊपर कृपादृष्टि रखा करें।

मथा सार रुपयों की बाबत रघुनाथमल को लिख दूँ या दस १०) रुपये उससे माँगूँ और बाकी के घर से ? या किसी और तरह करना चाहिये ? मगर महाराजजी ! घर से और ससुराल से मुझे आशा बहुत कम है। जवाब जल्दी लिखना। मैंने आपका कार्ड आने से पहले ही आपके लिखने के अनुसार अंग्रेजी दवाई आज और कल सायं को नहीं पी थी और भविष्य में बिना आपके मशविरा (सलाह) के न पीयूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२१७) २९ नवंबर, १८९०

मैं और भाई* साहब कल राजी खुशी यहाँ पहुँच गये थे। किताबें ले ली हैं। सत्रह रुपये से दो आना अधिक लगे हैं। आज कालिज में छुट्टी थी पंजाब-युनिवर्सिटी के जलसे कान्वोकेशन (Convocation) के कारण। मेरा असबाब सब ठीक है। भाई साहब रोटी पका देता है अच्छी तरह से। मैं राजी हूँ। आप पत्र लिखते रहा करो।

——ı० ——

तीर्थरामजी के साथ उनके बड़े भाई (गुसाईं गुरुदास) जी भी आये थे। जिससे स्पष्ट होता है कि तीर्थरामजी ज्वर के कारण इतने काल तक अपने गुरुजी के पास इलाज के लिए गुजरांवाला में ही रह होंगे, और इसी निमित्त अपने साथ अपने बड़े भाईको भी लाये होंगे। यही कारण प्रतीत होता है कि इतने काल तक उनका कोई पत्र नहीं मिलता।

* भाई साहब से अभिप्राय अपने सहोदर बड़े भाई गुसाईं गुरुदासजी से है क्योंकि इनसे इतर और कोई सहोदर भाई उनका नहीं था।

फ़ीस की मुआफ़ी निमित्त चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त, (९६३) १ दिसम्बर १८६०

आज मैं कालिज गया था, वहाँ और तो सब तरह से ठीक रहा, मगर मेरी फ़ीस के बिलकुल मुआफ़ होने में कुछ शक (संदेह) पड़ गया है, क्योंकि जौन सा प्रोफ़ेसर मेरी आधी फ़ीस अपनी जेब से देता था, अब उसने यह बन्द कर दी है। और वे (कालिज के क्लार्क इत्यादि) कहते हैं कि "हमें केवल आधी फ़ीस मुआफ़ करने का अधिकार है। और उस प्रोफ़ेसर* ने अपने पास से आधी फ़ीस देना इस लिये बन्द कर दिया है कि वह कहता है कि अब मेरे पास कोई काम ऐसा नहीं है जो तुमसे कालिज में करवा सकूँ, और मुफ्त में मैं देता नहीं।" पर हाँ, यदि कोई काम मेरे सम्बन्ध निकल पड़ा, तो मेरी फ़ीस सारी मुआफ़ रहेगी।

— ० —

गुरुकृपा पर पूर्ण विश्वास वा आशा

संबोधन पूर्वोक्त, (९६४) ३ दिसम्बर, १८६०

कल सायं को आपका कृपापत्र मिला था। बड़ी ख़ुशी हुई। अभी मेरी फ़ीस की बाबत कुछ पता नहीं मिला, क्योंकि बड़ा साहब बीमार पड़ गया है। मुझे आप पर तो आशा आगे ही है, चाहे आप चाहीं मेरी फ़ीस बिलकुल मुआफ़ रहने दें और चाहे कोई और सबील (उपाय वा विधि) रुपए की मेरे लिए बना दें। आप कृपादृष्टि रखा करें। जिस तरह

---

* यहाँ प्रोफ़ेसर से अभिप्राय मिस्टर गिल्बर्टसन (Gilbertson) एम. ए. है जो उन दिनों लाहौर मिशन कालिज में गणितशास्त्र के प्रोफ़ेसर थे और इस विषय में तीर्थरामजी से बहुत काम लिया करते थे। सन् १९१२ में यह साहब देहली के गवर्नमेंट हाई स्कूल में हेडमास्टर (मुख्याध्यापक) थे।

आप उचित समझते हैं बेशक कर दें। भाई साहब का मत्था टेकना। जब आपका जी (चित्त) चाहे आ जाना। और अगर रुपए की तंगी हो तो जिस तरह उचित समझें, करना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६५) ५ दिसम्बर, १८६०

अभी मेरी फीस की बाबत कुछ पता नहीं लगा। आपने यहाँ का हाल बराबर लिखते रहना। हमारा हफ्तावार इम्तहान होता है। भाई साहब का मत्था टेकना। जब आप यहाँ आये मेरे कपड़े ले आने, एक पगड़ी, चोगा, पाजामा; नहीं तो अगर हो सका तो पहले किसी तरह भेज देने।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६६) १० दिसंबर, १८६०

आज हमारा बड़ा साहब राज़ी (स्वस्थ) हुआ है। अभी फीस का रौला है। अयोध्यादास आज मिला था। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६७) १२ दिसबर, १८६०

हमें कोई नौ या दस दिन की छुट्टियाँ होंगी। आप कब आओगे? और फिर अमृतसर आने का क्या इरादा है। आप दया रखा करें। चौथे या पाँचवें दिन से हमारा सब चीज़ों का इम्तहान शुरू होगा। फ़ीस की बाबत अभी कुछ पता नहीं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६८) १३ दिसंबर, १८६०

आपका कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। मैं कल रविवार उन संतों के पास जाने का संकल्प रखता हूँ। और आपके पत्र के अनुसार ही अमल (बर्ताव) करूँगा। आप दया रखा करें। और हाल लिखते रहा

करें। अभी फ़ीस का कुछ फ़ैसला नहीं हुआ। इस बुधवार से लेकर हमारा इम्तहान शुरू होगा।

— o —

अन्य महात्माओं के दर्शन

संबोधन पूर्वोक्त, (२९९) १५ दिसंबर, १८९०

कल मैं और भाई साहब और अयोध्यादास उन महात्माओं* के दर्शन को छज्जू भगत के चुबारे गये थे। दर्शन हुए। गीता का सोलहवाँ अध्याय थोड़ा सा उनकी वाणी से सुना। आपका मत्था टेकना कहा और बात छेड़ी, बड़े खुश हुए। पर ये कहते हैं कि हम जाड़ा (शीतकाल) लाहौर ही में काटने का सकल्प रखते हैं। और फिर जब मौन आयगी गुजराँवाले में आयेंगे। अब चार बजे कालिज में आकर पत्र लिखा है। हमारा परसों गणित का और अतरसों (तीसरे दिन) अँगरेज़ी का इम्तहान है। मेरी तापतिल्ली दूर नहीं हुई, बल्कि बढ़ गयी है। आप दया रखा करें। हमें शायद इस शुक्रवार ही से छुट्टियाँ हो जायें।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३००) १७ दिसंबर, १८९०

शायद कल मैं आपके पास आ जाऊँ। अगर न हो सका तो न आऊँगा। कल हमारा इम्तहान ख़तम हो जाना है और छुट्टियाँ भी हो जानी हैं।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३०१) ७ बजे रात, २१ दिसंबर, १८९०

आज मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। सब कुछ ठीक है। परसों कालिज जाऊँगा। बाबाजी मिले हैं। अब रोटी खा कर डेरे में यह पत्र लिखा है।

— o —

* यह महात्मा स्वयंप्रकाश उदासी साधु थे यह स्वभाव के बड़े त्यागी (सुजान) थे। भगतजी ने तीर्थरामजी को उनके दर्शन के लिए सूचना दी थी जिस दर्शन का प्रभाव इस पत्र में तीर्थरामजी ने प्रकट किया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (३०२) *२६ फ़रवरी, १८६०*

मैं आपके चरणों का दास हूँ। आप अब पत्र में सदा देर क्यों करते हैं। हमारे कालिज के इम्तहान इस शनिवार अर्थात् पहली मार्च को खतम हो जायेंगे। अगर आपको तकलीफ़ (कष्ट) न हो, तो हमारे गाँव में आप यह संदेसा भेज देना कि अब तीर्थराम के पास खर्च बिलकुल नहीं है। और वज़ीफ़ा भी इस महीने नहीं मिलेगा।

—— o ——

सन् १८९१ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े सत्रह वर्ष के लगभग थी)

परीक्षा में फ़ारसी भाषा के मौक़ूफ़ होने पर हर्ष

संबोधन पूर्वोक्त, (३०३) २ जनवरी, १८९१

आज मैं कालिज गया था, फ़ीस की बाबत कुछ नहीं सुना, हमारी फ़ारसी मौक़ूफ़ हो गयी है। यह परमेश्वर ने बड़ी दया की है। आप अपने हाल से कृपया सूचना देते रहा करें। मैं राज़ी (प्रसन्न) हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०४) ४ जनवरी, १८९१

आपका पत्र कोई नहीं मिला। फ़ीस का कुछ नहीं सुना। मासड़ (मौसा) ने तिल्ली की गोलियाँ और भेजी हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०५) ६ जनवरी, १८९१

आज वह फ़ौलाद (लोहा) का सत्त जो आपने दे दिया हुआ था, खतम हो गया। तिल्ली अभी आयल (दूर) नहीं हुई। अब मासड़ (मौसा)

* यह पत्र पूर्व पृष्ठ ९ पर पत्र-संख्या १६० से पहले दिया जाना चाहिये था पर वहाँ देना भूल गये थे इसलिए इसे यहाँ सन् १८९० के अंत में दे दिया है।

की गोलियाँ यर्ता करूँगा। परसों रात को सुन्दरमल की दुकान की छत को चोरों ने फाड़ा था। कुछ थोड़ा ही नुक़्सान हुआ है। अभी फ़ीस का फ़ैसला नहीं हुआ। आज मेरे घुटने में ज़रा ज़रा दर्द हो रहा है। आपका पत्र कोई नहीं मिला। आप लिखते रहा करें।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३०६) ८ जनवरी, १८६१

मैं इस वक्त राज़ी हूँ। आपने कोई अपना पत्र नहीं लिखा, अब ज़रूर लिखो। आपके न लिखने की क्या वजह (कारण) है? ज़रूर दया करते रहा करें। आपने कब आना है? और साईं साहब ने कब?

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३०७) ३ बजे रात, १५ जनवरी, १८६१

मुझे अब के पत्र लिखने में देर हो गई है। आप मुआफ़ रखना। कल सरदार लैहनासिंह और एक और सामने वाला भगतराम को मिलने आये थे। मगर वह यहाँ नहीं था। फिर मेरे मकान पर थोड़ा चिर (काल) बैठ रहे थे। देवीदयाल यहीं है। भैंस की तलाश में इधर उधर गाँवों में फिरता है। आपका पत्र नहीं आया।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३०८) ८ बजे प्रातः, १७ जनवरी, १८६१

यहाँ बहुत बड़ी वर्षा हुई है। अब ज़रा आकाश साफ़ नज़र आता है। आपका पत्र कोई नहीं मिला। यहाँ क्या हाल है?

— o —

फ़ीस की मुआफ़ी पर प्रिन्सिपल साहब का वचन

संबोधन पूर्वोक्त, (३०६) आठ बजे रात, १७ जनवरी, १८६१

आज मुझे हमारे कालिज के डॉक्टर साहब मिले थे। वह कहते हैं कि हमने प्रिन्सिपल साहब से कहा था और प्रिन्सिपल साहब यह कहते

मिसफ़ेस (अभी तो) यात्री का नाम गोविंदसहाय गुसाइ से लेकर किताब ले लूँ और खर्च के लिए भी कुछ उसी से ले लूँ। बाबाजी का पत्र कोई नहीं आया। क्या मासड़ (मौसा) जी को चार पाँच रुपये के लिए लिख दूँ या ना ? जवाब जरूरी।

—— ० ——

संसार के लोग कभी किसी के नहीं होते।

संबोधन पूर्वोक्त, (३१७) ८ बजे रात, ११ जनवरी, १८६१

आज आपका एक पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। जब भाई * साहब गुजराँवाले में आयें, आपने जरूर जरूर रोक देना कि किसी बुरे काम में दख़ल न दें, और न अपने संबंधी बढ़ाने का यत्न करें, नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। रीछ को पकड़ लेना सुगम है, मगर उससे छूटना कठिन है। संसार के लोग कभी किसी के नहीं होते केवल अपनी ग़रज़ (स्वार्थ) ही दृष्टि में रखते हैं। सुन्दर-सुन्दर दाना देख कर जाल में न फँस जाना। और भाई साहब को कहना कि मुझे कोई पत्र क्यों नहीं लिखा ? आजकल अच्छा मौसम आता जाता है। सर्दी कम पड़ती है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१८) २ फ़रवरी, १८६१

आज आपका पत्र मिला, जो रघुनाथशरण की तरफ़ लिखा हुआ था और जिसमें उसे यहाँ रहने की इजाज़त दी हुई थी। परसों रात हमारे बाज़ार एक चोर पकड़ा गया था। भाई साहब का हाल लिखना। मेरी तिल्ली दूर नहीं हुई। आप मेरी जरूर दवा करें। कहीं ऐसा न हो कि बहुत ही तंग करने लग पड़े। और अब मैं कोई इलाज (दवा) तिल्ली का नहीं करता, क्योंकि मासड़ (मौसा) जी की गोलियाँ ख़तम हो गई हुई

* भाईजी से तात्पर्य तीर्थरामजी का अपने बड़े भ्राता गोस्वामी गुरुदासजी से है जो शायद अब परलोकनिवासी हैं।

हैं। आपने मेरे पर किसी बात से खफ़ा न होना, क्योंकि औलाद का नाज़ वालदैन (पिता-माता) पर ही होता है, आज मैंने यह किताब चार रुपये तेरह आने मे खरीद ली है। किताब निःसंदेह बड़ी उमदा (उत्तम) है। रोटी क्या रघुनाथशरण डेरे में पका लिया करे मेरी भी और अपनी भी या कि हम दोनों तनूर मे ही खाया करें ? जिस तरह आप लिखें, उसी तरह किया जायगा। आपने कोई पत्र मेरी तरफ अच्छी तरह से नहीं लिखा, क्या कारण है ? आप दया रखा करें।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३१६)   ४ फ़रवरी, १८६१

आज आपका पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। आज मासड़ (मौसा) जी का पत्र भी आया था। उन्होंने एक डिक्शनरी (कोष) की ज़रूरत जतलाई है, जो सवा रुपये १।) को आ सकती है। मेरा इरादा है कि इस आदित्यवार का मैं उन्हें कोष लेकर भेज दूँ। सवा रुपया किसी से उधार ले लूँ। और इस अवसर पर मैं उनसे कुछ माँगना भी उचित नहीं समझता।

हमारे कालिज के डॉक्टर साहब ने मुझे इस सप्ताह एक लेक्चर नक़ल करने का दिया है। शनिवार को हमारा गणित का इम्तहान है। दूसरे शनिवार को अँग्रेज़ी का। आप मुझे पत्र लिखते रहा करें और दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३२०)   ६ फ़रवरी, १८६१

आज भाई साहब का एक पत्र मिला था, बड़ी खुशी हुई। फिर जवाब लिखूँगा। खर्च की बड़ी तंगी है। रोटी अभी डेरे में नहीं पकाते, क्योंकि खुद दोनों के पास नहीं।

—— ० ——

विसफेल्ल (अभी दो) माओ का दाम गोविंदसहाय गुसाइ से लेकर किताब ले लूँ और खर्च के लिए भी कुछ उसी से ले लूँ। बाबाजी का पत्र कोई नहीं आया। क्या मासड़ (मौसा) जी को चार पाँच रुपये के लिए लिख दूँ या ना ? जवाब जरूरी।

संसार के लोग कभी किसी के नहीं होते।

संबोधन पूर्वोक्त, (३१७) ८ बजे रात, ११ जनवरी, १८९१

आज आपका एक पत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। जब भाई * साहब गुजराँवाले में आयें, आपने जरूर जरूर रोक देना कि किसी बुरे काम में दखल न दें, और न अपने संबंधी बढ़ाने का यत्न करें, नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। रीछ का पकड़ लेना सुगम है, मगर उससे छूटना कठिन है। संसार के लोग कभी किसी के नहीं होते केवल अपनी गरज (स्वार्थ) ही दृष्टि में रखते हैं। सुन्दर-सुन्दर दाना देख कर जाल में न फँस जाना। और भाई साहब को कहना कि मुझे कोई पत्र क्यों नहीं लिखा ? आजकल अच्छा मौसम आता जाता है। सर्दी कम पड़ती है।

संबोधन पूर्वोक्त, (३१८) २ फरवरी, १८९१

आज आपका पत्र मिला, जो रघुनाथशरण की तरफ लिखा हुआ था और जिसमें उसे यहाँ रहने की इजाजत दी हुई थी। परसों रात हमारे बाजार एक चोर पकड़ा गया था। भाई साहब का हाल लिखना। मेरी तिल्ली दूर नहीं हुई। आप मेरी जरूर दवा करें। कहीं ऐसा न हो कि बहुत ही तंग करने लग पड़े। और अब मैं कोई इलाज (दवा) तिल्ली का नहीं करता, क्योंकि मासड़ (मौसा) जी की गोलियाँ खतम हो गई हुई

* भाई साहब से तात्पर्य तीर्थरामजी का अपने बड़े भ्राता गोसामी गुरुदासमजी से है जो शायद अब परलोक निवासी हैं।

हैं। आपने मेरे पर किसी बात से ख़फ़ा न होना, क्योंकि औलाद का नाज़ वालदैन (पिता-माता) पर ही होता है, आज मैंने यह किताब चार रुपये तेरह आने से ख़रीद ली है। किताब निःसंदेह बड़ी उमदा (उत्तम) है। रोटी क्या रघुनाथशरण डेरे में पका लिया करे मेरी भी और अपनी भी या कि हम दोनों तनूर से ही खाया करें ? जिस तरह आप लिखें, उसी तरह किया जायगा। आपने कोई पत्र मेरी तरफ़ अच्छी तरह से नहीं लिखा, क्या कारण है ? आप दया रखा करें।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३१६)　　　　४ फ़रवरी, १८६१

आज आपका पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। आज मामड़ (मौसा) जी का पत्र भी आया था। उन्होंने एक डिक्शनरी (कोष) की ज़रूरत जतलाई है, जो सवा रुपये १।) को आ सकती है। मेरा इरादा है कि इस आदित्यवार को मैं उन्हें कोष लेकर भेज दूँ। सवा रुपया किसी से उधार ले लूँ। और इस अवसर पर मैं उनसे कुछ माँगना भी उचित नहीं समझता।

हमारे कालिज के डॉक्टर साहब ने मुझे इस सप्ताह एक लेक्चर नक़ल करने को दिया है। शनिवार को हमारा गणित का इम्तहान है। दूसरे शनिवार को अंग्रेज़ी का। आप मुझे पत्र लिखते रहा करें और दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३२०)　　　　६ फ़रवरी, १८६१

आज भाई साहब का एक पत्र मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। कल जवाब लिखूँगा। ख़र्च की बड़ी तंगी है। रोटी अभी डेरे में नहीं पकाते, क्योंकि ख़र्च दोनों के पास नहीं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२१) ७ फ़रवरी, १८९१

आपके रुपये मिल गये। दो रुपये मैंने लिये हैं। जब चाचाजी से आयेंगे मैं रघुनाथशरण को दे दूँगा। आप दया रखा करें। आप यहाँ कब आयेंगे? सारा हाल लिखो। आज मैंने मासड़ (मौसा) जी को भेजने के लिए किताब ले ली है। एक रुपये पाँच आने को।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (३२२) १० फ़रवरी, १८९१

कल मैंने मासड़ (मौसा) जी को किताब भेज दी थी। कल से लेकर शायद हम रोटी डेरे में खाया करेंगे। भाई साहब अभी नहीं आये, न चाचाजी का कोई पैग़ाम (संदेसा) आया है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (३२३) ११ फ़रवरी, १८९१

परसों बसन्त पंचमी है, और मेरे पास सभिया सभा के मकान में सनातन-धर्मवाला का एक बहुत बड़ा जल्सा होना है, और एक स्कूल क़ायम होना है। मौक़ा (अवसर) बड़ा अच्छा है। आप कल आ जायें, तो बड़ी ख़ुशी की बात हो। हमारा इस हफ़्ते (शनिवार) अँग्रेज़ी का इम्तहान है। आज से हमने डेरे में रोटी पकानी शुरू कर दी है। भाई साहब नहीं आये।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (३२४) १४ फ़रवरी, १८९१

कल मुझसे पत्र नहीं लिखा गया। मुआफ़ रखना। आज भाई साहब यहाँ आ गये हैं, आप नहीं आये। दिमाग़ और हाफ़िज़ा (स्मरण-शक्ति) की ताक़त के लिए कौन सी दवाई अच्छी है?

—o—

संबोधन पूर्वोक्त,		(३२५)		१७ फ़रवरी, १८९१

आज प्रातः चार बजे भाई साहब यहाँ पहुँच गये थे। मासड़ (मौसा) जी को सूचना दे दी है। आप अपना हाल लिखते रहा करें।

—o—

प्रतिदिन व्यायामार्थ प्रिन्सिपल साहब का विद्यार्थी नियत करना

संबोधन पूर्वोक्त,		(३२६)		१६ फ़रवरी, १८९१

आज मिडल का रिज़ल्ट (नतीजा) छपकर लग गया है। लद्धामल और रघुनाथशरण दोनों पास हैं। रघुनाथशरण के ४१४ नंबर हैं और अपने स्कूल में तीसरा नंबर रहा है। वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) मिशन स्कूल के लड़के लेंगे। आज मेरे दिल में एक ख्याल आया है कि अगर रघुनाथ शरण मेडिकल स्कूल में दाखिल हो जाय तो क्या हर्ज है। अगर आपकी राय (सम्मति) में भी यही बात अच्छी हो तो लिखो, नहीं तो यह तार के महकमा में आयेगा। आज मासड़ (मौसा) जी ने मुझे ताप तिल्ली (प्लीहा का रोग) की और गोलियाँ भेजी हैं। दो तीन दिनों से प्रिन्सिपल साहब ने मुझ पर एक विद्यार्थी (रुकनदीन) नियत किया है कि वह मुझे प्रतिदिन छुट्टी के पश्चात् आधा घंटा-तक व्यायाम किये बिना घर न आने दिया करे, क्योंकि मैं इन दिनों बहुत ही दुर्बल और रोगी सा हो चला था।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त		(३२७)		२१ फ़रवरी, १८९१

कल भाई साहब यहाँ से चले जायेंगे। आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है। आप दया रखा करें। आप यहाँ कब आयेंगे?

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (३२८) २४ फ़रवरी, १८६१

आज रघुनाथशरण वार का इम्तहान दे आया है। परसों नतीजा निकलेगा। आप दया रखा करें। आप कब आयेंगे ?

संबोधन पूर्वोक्त, (३२६) २५ फ़रवरी, १८६१

आज आपका ?) रु० मिल गया है, बड़ी खुशी हुई। आप नहीं आये। लद्धामल अब मिला है।

संबोधन पूर्वोक्त, (३३०) २७ फ़रवरी, १८६१

रघुनाथशरण वार के इम्तहान में पास नहीं हुआ। आपका एक पत्र कल मिला था। रुपया पहुँच गया है। आप कब आयेंगे ? जब आप आयेंगे, तब रघुनाथशरण को जिस तरह कहोगे, करेगा।

संबोधन पूर्वोक्त, (३३१) २ मार्च, १८६१

आज आपका कृपापत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। रघुनाथशरण अभी इसी जगह रहना चाहता है। कहता है कि यहाँ रहने में पढ़ने इत्यादि का लाभ है। आप अब जल्दी आ जायें तो अच्छा है। मुझे आजकल जरूरत तो है, मगर मैं गोविंदसहाय या अयोध्यादास से ले लूँगा। आपको कष्ट मैं नहीं देना चाहता। आप अपना कृपापत्र जल्दी लिखते रहा करें और दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (३३२) ५ मार्च, १८६१

आज लक्ष्मणदास मिला है। एक रुपया भी उसने दिया है, बड़ी खुशी हुई।। रुपये में से आठ आने मैंने रखे हैं और आठ आने रघुनाथ शरण न। आप दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (३३३) ७ मार्च, १८६१

अगले हफ्ते (शनिवार) हमारा गणित का इम्तहान है। रघुनाथशरण का मत्था टेकना।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३४) ८ मार्च, १८६१

कल एक बंगाली ने बिल्लून में चढ़कर ऊपर आकाश में जाना है। आप अगर हो सके तो आ जायँ, देख लें। बड़ा अफ़सोस (शोक) है कि मुझे अब से पहले यह बात आपको लिखनी याद नहीं रही। आज अयोध्यादास मुझे मिला था।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३५) १० मार्च, १८६१

आज रघुनाथशरण यहाँ से ऐमनाबाद गया है, और वहाँ से आपके पास जायेगा। किताबें यहाँ से लेकर फिर यहाँ आने का इरादा रखता है। आज अयोध्यादास ने दो रुपये रघुनाथशरण को दे दिये थे। लछमणदास आपको बड़ा याद कर रहा है और मैं भी बड़ा याद कर रहा हूँ। आप कब आयेंगे? हमें शायद इस महीने में एक हफ्ता भर की छुट्टियाँ हों। मगर अभी कुछ पक्का पता नहीं है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३६) ११ मार्च, १८६१

आपका एक पत्र अब मिला, बड़ी खुशी हुई। कल हमारा गणित का इम्तहान है और अगले हफ्ते (शनिवार) अँग्रेज़ी का। आप आ जायँ, तो बड़ी अच्छी बात है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३७) १५ मार्च, १८६१

आशा है, इस हफ्ते २२ मार्च को हमें छुट्टियाँ एक हफ्ता की होगी।

रघुनाथशरण का क्या हाल है ? अगर उसने यहाँ आना हो तो उसे २२ मार्च से पहले-पहले यहाँ भेज देना, ताकि मेरा डेरा खाली न रहे। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३८) १६ मार्च, १८८१

आज रलाराम ने आपका पत्र और दो रुपये दिये हैं। बड़ी ही खुशी हुई। आप दयादृष्टि रखा करें। उस किताब का नाम अच्छी तरह से फिर लिख दें, तो अच्छा है। मैं इस शनिवार या रविवार को आपकी सेवा में उपस्थित होने की आशा रखता हूँ। इस हफ्ते (शनिवार) हमारा अँग्रेजी का इम्तहान है। मेरा दिमाग़ (मस्तिष्क) थका थक जाता है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३६) १८ मार्च, १८८१

कल आपका एक कृपापत्र मिला था और आज भी मिला है। बड़ी खुशी हुई। मैं शायद रविवार को आ सकूँगा। रघुनाथशरण की घड़ी मैं नहीं लाऊँगा, क्योंकि टूट जाने का भय है। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४०) १० मार्च, १८८१

मैं कल यहाँ राजी खुशी पहुँच गया था। यहाँ सब कुशल ठीक है। मैं भाई साहब की किताबें इस शनिवार से पहले-पहले तो शायद बड़ी मुश्किल से भेज सकूँ, क्योंकि कोई छुट्टी नहीं और छुट्टियों के अंत में मैं यहाँ आया हूँ। अयोध्यादास मुझे नहीं मिला। मैं पोथियाँ शायद इसी रास्ते पेशावर को भेज दूँगा। आप दया रखा करें।

—— ० ——

(विश्वविद्यालय की ओर से) वार्षिक परीक्षा में गणित-शास्त्र में थोड़े नम्बर किये जाने पर विचार

सम्बोधन पूर्वोक्त, (३४१) १ अप्रैल, १८९१

आप लिखें कि भाई साहब अभी पेशावर को गये हैं कि नहीं, और घूटामल भी अभी यहीं है या चला गया है। महाराजजी! अब पंजाब-यूनीवर्सिटी (विश्वविद्यालय) में यह विचार हो रहा है कि गणित शास्त्र की परीक्षा में उसके नम्बर १५० के बदले १३० किये जायें, और कई अन्य विषय, जिनके नम्बर इस समय १०० या १०० हैं, उन विषयों के नम्बर भी १३० किये जायें, अर्थात् और कई विषयों को भी गणित शास्त्र के समान पदवी दी जाये। यह बात बहुत बुरी है। यह तो मानो परिश्रम और अपरिश्रम (अथवा प्रयत्न और अप्रयत्न) के भेद को उठा देना है। हमारा गणित शास्त्र का प्रोफ़ेसर कहता था कि मैं इसके विरुद्ध यत्न करूँगा। आगे देखिये क्या होता है। आप पत्र लिखते रहा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३४०) ३ अप्रैल, १८९१

आपका पत्र कोई नहीं आया, क्या कारण है। आप जरूर पत्र लिखें, और दया रखा करें। इस वक्त (शनिवार) हमारा इम्तहान कोई नहीं है। मेरी तापतिल्ली दूर हो गई है। चाचाजी का पत्र मुझको भी एक मिला था। आज मुझे बहुत बड़ा काम है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (३४३) ४ अप्रैल, १८९१

कल लछमणदास ने मुझे दा ७) रुपये आपके दिये हुए दे दिये थे। बड़ी खुशी हुई। यह भी मालूम हो गया कि भाई साहब और घूटामल चले गये हैं। महाराजजी! आज मुझे मासड़ (मौसा) जी का पत्र आया है कि उनकी सगी बहिन का एक पुत्र है, वह मेडिकल स्कूल में

दाखिल हुआ चाहता है। वह लाहौर आयेगा। और मुझे उन्होंने लिखा है कि अगर हो सके तो उसे मेडिकल स्कूल में दाखिल करा दूँ। और शायद यह भी कहेंगे कि उसे अपने पास मकान में रखूँ। बात अच्छी मालूम नहीं होती। आगे जैसी परमेश्वर की और आपकी मरजी। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४४) ५ अप्रैल, १८६१

आपका कृपापत्र मिला, बड़ी ही खुशी हुई। हमारे कालिज के डॉक्टर साहब ने मुझे एक और जो दवाई दिलवाई थी। अब कुछ तो वरजिश (व्यायाम) के कारण से और कुछ उस दवाई के प्रभाव से मेरी तिल्ली बिलकुल रफा (दूर) हो गई है। परमेश्वर की और आपकी बड़ी कृपा हुई है। आप दया रखा करें। आप अब यहाँ कब आवेंगे। राय सौंमीमल साहब का यहाँ आना बड़ा अच्छा काम हुआ है। मुझे पहले से मालूम था।

काम बहुत बड़ा होता है और परिश्रम चाहता है। आप कृपादृष्टि रखा करें कि मैं परिश्रम करता जाऊँ और सदा बड़ी अच्छी तरह से सारा काम करूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४५) ६ अप्रैल, १८६१

कल से हमारा एक बक्त आयगा। अर्थात् हम ७ बजे प्रात को कालिज आया करेंगे। मेरा मेदा (उदर) बड़ा कमजोर हो रहा है। प्यास बड़ी लगती है और भूख बहुत कम। मगर आज मैं बड़ी सैर करके आया हूँ। और वरजिश (व्यायाम) तो बराबर करता ही हूँ, इसलिए इस समय तो तबीयत (स्वास्थ्य) अच्छी मालूम होती है। आप दया रखा करें। बैसाखी को कहीं होने का इरादा है। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

तीर्थरामजी के घर में चोरी

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३४६)　　　　७ अप्रैल, १८६१

आज प्रातःकाल छः बजे मैं जरा (किंचित् काल के लिये) महाराजा साहब की समाधि * तक फिरने गया था । अधिक से अधिक पंद्रह मिनट लगे होंगे । वापस आया तो मकान का जन्दरा (ताला) बिलकुल गुम और द्वार आधा खुला था । अन्दर गया, तो भीतर की कोठड़ी, जो पौड़ियों (जीने) के नीचे है, खुली पड़ी थी । मगर परमेश्वर का शुक्र (धन्यवाद) है कि मेरी पुस्तकें और वस्त्र उसी तरह पड़े हैं, यद्यपि गड़वी, गिलास और पतीला नहीं हैं । एक टोपी चोर की यहाँ रह गयी है । आप दया रक्खा करें ।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३४७)　　　　६ अप्रैल, १८६१

जिस लड़के की बाबत मैंने आपको लिखा था, वह मुझे कल यहाँ मिला था । वह मेरे पास नहीं रहेगा । वह बिलफेल (इस समय) सनातन स्कूल में (जो मेरे पास है) पढ़ता है । और शायद मैट्रिकस स्कूल में इस साल दाखिल नहीं होगा । आपके पत्र का इन्तजार था । मगर आया कोई नहीं । क्या कारण ? आप दया रक्खा करें ।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३४८)　　　　११ अप्रैल, १८६१

क्या कारण है, आपका एक पत्र भी इस हफ्ते नहीं आया । आप जरूर कृपापत्र से कृतार्थ करें । आप दया रक्खा करें ।

— ० —

* समाधि से तात्पर्य महाराजा रणजीतसिंह की समाधि है जो लाहौर में किले के समीप है ।

समाधि महाराजा साहब

संबोधन पूर्वोक्त, (३४६) १२ अप्रैल, १८६१

आज-कल आपका पत्र कोई नहीं आया, और न आप ही आये हैं। आज मैं यहाँ तक फिरने आया था। भाईजी साहब ने बुलाया था। और मैंने नया पत्र उनको लिख दिया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५०) ११ अप्रैल, १८६१

मैंने कल वैसाखीवाले दिन से कोठे पर सोना शुरू कर दिया है। मैंने कल से यह 'गुजरात भाय' का कोट भी पहन लिया है। आज चाचाजी ने मुझे १०) रु० का मनीआर्डर भेजा है। मैंने रुपये सुन्दरमल को रखने दे दिये हैं। आपको इन दिनों अगर जरूरत हो, तो ले लो। अब हमें कोई महीने तक एक अँग्रेजी की नई किताब शुरू करायेंगे जिस का दाम ८) रु० से शायद अधिक होगा। आप अब मुझे पत्र लिखो। आप मेरे अपराधों को क्षमा फ़रमावेंगे।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५१) १४ अप्रैल, १८६१

एम्० ए० और बी० ए० का रिजल्ट (नतीजा) निकल गया है। एम्० ए० में तीन पास हुए हैं। एक गणित में भी हुआ है। बी० ए० में ३८ पास हुए हैं। हमारे कालिज के १६ में से १० पास हुए हैं। हमारे कालिज का एक (विद्यार्थी) तीसरा नंबर और एक पाँचवाँ नंबर रहा है। पंजाब में प्रथम एक प्राइवेट (विद्यार्थी) रहा है। हमारा कालिज और गवर्नमेंट कालिज अबके बी० ए० के रिजल्ट में एक समान रहे हैं। बहादुरचंद नहीं पास हुआ। शास्त्री म प्रथम हमारे कालिज का (विद्यार्थी) रहा है। आपने मझे भुला क्यों छोड़ा है ? एक पत्र भी नहीं लिखा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५०) १५ अप्रैल, १८६१

आज एफ़० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकल गया है। हमारा कालिज बहुत ही अच्छा रहा है। गुजराँवाले के अनंतराम, अमरनाथ और हीरासिंह पास हैं। आज आपका पत्र कालिज में मिला। बड़ी खुशी हुई। डेरे में आपका कोई पत्र नहीं मिला। और दरवाज़े के ऊपर भी कोई कदापि नहीं है।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३५३) १८ अप्रैल, १८६१

आज मैंने (भाई साहब ने जो किताबें कही थीं) वह पेशावर भेज दी हैं। क्योंकि उसका फिर पत्र आया था। आप दया रखा करें।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३५४) १६ अप्रैल, १८६१

कल रात को भाई गुरदित्तसिंह मुझको आपका पत्र दे गया था, बड़ी खुशी हुई। छतरी मैंने अभी नहीं ली। आप दया रखा करें।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३५५) २० अप्रैल, १८६१

आप इस शुक्रवार को आ जायें तो बड़ी अच्छी बात हो। इस शनिवार को हमें आखिरी हफ़्ते की छुट्टी है।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (३५६) २२ अप्रैल, १८६१

अब हमारे इम्तहान (जो हफ़्तेवार होते थे) सिमाही हो गये हैं, अर्थात् बजाये इसके कि हफ़्ते के बाद एक मज़मून का इम्तहान हो, तीन महीने के बाद सब चीज़ों का इम्तहान आगे से बहुत मुश्किल तौर पर हुआ करेगा। इसका कारण यह है कि अब गरमी के दिन हैं। शुक्रवार आपके आने की आशा है।

— o —

मकान देखे हैं। एक तो मैंने पहले ही नापसंद किया था, क्योंकि उसमें हाकिम राय आर्यसमाजी चाहिलका भी रहता है। दूसरा उसने मुझे दिखाया था। उसमें प्रथम तो इतने सुख नहीं हैं जितने इस मकान में हैं। दूसरे, उस मकान का मालिक मुल्तानी सराफ (जो अयोध्यादास के सामने रहता है) मुझसे किराया कुछ नहीं लेना चाहता, मगर मेरे से अपने भतीजे का (जो उस मकान में आगे ही रहता है) पढ़वाया चाहता है। अर्थात् एक रुपये के बदले २५) रु० का काम लेना चाहता है। और साथी आयु का एहसान इसके अतिरिक्त रखना चाहता है। इसलिए यह मकान भी मेरे नापसन्द है। जिस तरह आप आकर कहेंगे मैं उसी तरह आज्ञा पालन करूँगा। इस हीरामंडी के मकान में अभी तो कोई अवगुण नहीं। कृपापत्र आप भेजते रहें। आप दया रखा करें।

नवीन चारपाई पर हर्ष

संबोधन पूर्वोक्त, (३६५) ११ मई, १८९१

आपका एक पत्र अब मिला। बड़ी खुशी हुई। मेरी चारपाई अब बिलकुल ही टूट गयी थी, दो दिन तो माता पृथिवी पर ही सोता रहा। कल मैं पाँच आने का बान मोल ले आया था, आज मुंजी (छोटी चारपाई) नई बना ली है। पाँच पैसे बनवाने में लगे हैं। मैं अब नवीन बनी हुई मुंजी (चारपाई) को देखकर बड़ा खुश हुआ हूँ। आज हमें छुट्टी थी। किराया का रुपया कल बाबाजी को दे दिया था। अब मेरी तबीअत (स्वास्थ्य या प्रकृति) अच्छी है। मैंने भाई साहब का टोपी की रसीद लिख दी है।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६६) ११ मई, १८९१

दो तीन दिन हुए हैं लाला अयोध्यादास ने मेरे मकान आनकर कहा

था कि "हमारे बाज़ार (गुमटी) में एक मकान खाली हुआ है, उसे देख लो।" मैं गया था। मकान तो अच्छा है, यद्यपि पुराना है। डेढ़ रुपया किराया है। मगर मेरा जी (चित्त) अभी जगह बदलने को नहीं चाहता, क्योंकि इस मकान में भी बिलकुल कोई नुक़्स (त्रुटि) नहीं, बल्कि कुछ लाभ ज़्यादा ही हैं। जब आप आओगे, तब जिस मकान में आप कहेंगे चला जाऊँगा। मगर अभी जाने में बड़ी तकलीफ़ मालूम होती है। मुझे आज पत्र लिखने में एक दिन की देरी हो गई है। आप मुआफ़ फ़रमाना। आप कृपापत्र जल्दी लिखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६७)   १७ मई, ८९१
आप पत्र लिखने में विलंब न किया करें। ज़रूर जल्दी हाल लिखते रहा करें।

तीर्थरामजी का कालिज बोर्डिङ्ग में जाने का विचार

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६८)   ११ बजे दिन, १९ मई, १८९०

आप कालिज में आपका पत्र मिला था। बड़ी ही ख़ुशी हुई। अगर आप आ जाते, तो बड़ी ही अच्छी बात होती। क्योंकि मुझे वैसी चिन्ता न होती, जो इस समय किंचित् हो रही है।

इस समय तरद्दुद (चिन्ता) यह है कि जब आज प्रातः साढ़े पाँच बजे मैं कालिज पहुँचा गया, तो उसी समय बोर्डिङ्ग के सारे लड़के मुझे आकर कहने लग पड़े कि—"अब आपको (मुझे) बोर्डिङ्ग में अवश्य रहना पड़ेगा। अब प्रिन्सिपल साहब का हुक्म (आदेश) हो गया है।" फिर जब दो तीन घंटे बीते, तो कालिज के डॉक्टर साहब मुझे मिले और कहने लगे कि—"तू ने प्रिन्सिपल साहब का हुक्म सुना है कि नहीं ?" मैंने कहा कि सुना तो है, पर पहले मैं अपने घर लिखकर अपने वाल्दैन

(जिससे तात्पर्य आपसे था) की आज्ञा लेना चाहता हूँ । यह डॉक्टर * साहब कहने लगे कि "प्रिन्सिपल का हुक्म हर हालत में मानना पड़ेगा ।" फिर जब कालिज बन्द हो गया, अर्थात् दिन की पढ़ाई समाप्त कर चुके, तो प्रिन्सिपल साहब ने कहा कि—"तेरे लाभार्थ मैंने यह हुक्म दिया है ।" अब इस सारी बात की असल (जड़) मैं लिखता हूँ —

एक दिन जब हमें छुट्टी थी तो मैं अपने डेरे (स्थान) में बैठ कर पढ़ रहा था । हमारे कालिज के लगभग सारे विद्यार्थी (बोर्डिंग वाले तथा न बोर्डिंगवाले लड़के) मेरे मकान के सामने से गुजरे । वे चले तो और जगह थे, पर मुझे भी साथ ले जाना चाहते थे । उन्होंने मेरा मकान देखा और मुझसे सारा हाल पूछा । (मेरे साथ सारे विद्यार्थी अच्छा सलूक या बर्ताव करते हैं ।) महरे की (दुकान या तंदूर से) रोटी और मकान की कालिज से दूरी, और मकान का हवादार न होना, इत्यादि सब बातें देख कर कहने लगे कि—"हम तुम्हारे इस मकान में रहने पर राजी नहीं हैं । हमारे विचार में यही कारण है कि तुम बार-बार बीमार हो जाते हो । और फिर रोगावस्था में तुम्हारी यहाँ खबर लेनेवाला भी कोई नहीं । हम चाहते हैं कि तुम बार्डिङ्ग में चले आओ । वहाँ आपके पढ़ने में बिलकुल कोई रुकावट (बाधा) नहीं होगी, इत्यादि ।" मैं तो चुपका हो रहा, मगर वे कहने लगे कि हम प्रिन्सिपल साहब को कह देंगे । सो उन्होंने कह दिया । और प्रिन्सिपल साहब ने मुझे उक्त आज्ञा दे दी ।

अब महाराजजी ! आप देखते हैं मेरा किसी प्रकार का अपराध नहीं है । अब वहाँ जाना पड़ा है । आपने मुझ पर किंचित् गुस्सा (रोष) न करना । मैं आपका गुलाम हूँ । मुझ पर दयादृष्टि रखें । आपके वस (वश) में सब कुछ है । बोर्डिङ्ग में एक कोठरी (कमरा)

---

* यह डाक्टर मार्टिसन साहब थे जो उस समय मिशन कालिज में साइन्स के प्रोफ़ेसर थे ।

सबसे अलग है। वह हमारी श्रेणी के एक विद्यार्थी ने ली हुई है। पर वह विद्यार्थी अभी यहाँ नहीं है। अगर वह लड़का मान जाय कि वह कोठड़ी मुझको दे दे और आप अन्य विद्यार्थियों के साथ किसी और कमरे में रहे, तो बड़ी अच्छी बात हो। तीन रुपये और नौ आने ३।॥-) प्रत्येक मास (यहाँ) देने पड़ते हैं। रोटी, मकान, पानी, चूहड़ा (भंगी) इत्यादि सब खर्च के लिये।

महाराजजी। मैं जानता हूँ कि सब अपने मन के अधीन है। यदि हम चाहें तो मन को चाहे कहीं एकाग्र कर लें, यद्यपि बड़े परिश्रम और प्रयत्न की आवश्यकता होती है। जितना हम मन को अधिक एकाग्र करेंगे, उतना ही अधिक लाभ होगा, चाहे कहीं हों, जैसा कि बोर्डिङ्ग के विद्यार्थी भी तो कई बार प्रथम या द्वितीय रहते हैं।

मैं आपसे सहायता माँगता हूँ कि मैं मन को वहाँ इस स्थान से भी अधिक एकाग्र कर सकूँ। आप मुझको पहले से अधिक सेवक समझना। आप अब यहाँ कम आयेंगे। आप यदि वहाँ बोर्डिङ्ग में मेरे पास आकर रहें तो किसी प्रकार का डर नहीं, क्योंकि और विद्यार्थियों के सम्बन्धी भी तो सदा आते जाते रहते हैं।

अब चूँकि। वहाँ (बार्डिङ्ग में) जाना जरूरी हो गया है और वह भी बहुत जल्दी, इसलिये मैंने यह इरादा (संकल्प) किया है कि इस वीरवार या शुक्रवार वहाँ चला जाऊँ। मैं आपकी स्वीकृति, प्रसन्नता और कृपा चाहता हूँ, क्योंकि मैं सबके स्थान में आप ही को समझता हूँ, और मेरा बड़ा भरोसा आप ही पर है।

बारह आने की चार पुस्तकें अँग्रेजी भाषा की अति लाभदायक ली थीं। अब मेरे पास खर्च बिलकुल खतम हो गया है। खैर (अस्तु), लाला अयोध्यादास से ले लूँगा। आप इस पत्र का उत्तर तत्काल कृपया कालिज में भेजना, और मुझे पत्र लिखने में कभी विलंब न करना। मेरे पर कृपादृष्टि रखनी।

मैंने डॉक्टर साहब * को वह बात कही थी, जो मैंने पिछले पत्र में आपको लिखी थी। वह कहने लगे, प्रथम तो तुम्हारे मन में किंचित् भी फ़र्क़ (अंतर या विक्षेप) आयेगा ही नहीं, और यदि आये भी तो पहले दो तीन दिन कष्ट होगा, फिर तुम्हारा मन पढ़ने में अच्छा लग जाने लग पड़ेगा। और (इससे अतिरिक्त) बाह्य लाभ तो निःसन्देह वहाँ सब हैं।

तात्पर्य यह कि मेरा अब बोर्डिङ्ग में न आना किसी रीति से दिखाई नहीं देता। अब यह यत्न करना चाहिये कि बोर्डिङ्ग में जाकर मन पहले से भी अधिक लगे, क्योंकि अब वहाँ न जाने का यत्न करना व्यर्थ है। इस लिये इस बीरवार या शुक्रवार को मैं वहाँ जाने का इरादा (संकल्प) रखता हूँ। आप इस बीरवार से पहले यहाँ एक दिन हो आयें तो बड़ी कृपा हो। आपने अपने दास पर किसी प्रकार से गिला (शिकायत) न करना। मैं सर्व प्रकार से आपका आज्ञाकारी (सेवक) हूँ।

—— ० ——

बोर्डिंग का मासिक खर्च

संबोधन पूर्वोक्त, (३७३) २५ मई, १८९१

आज मैंने सब बातें पर्याप्त की हैं।

(१) गरमी की छुट्टियों में हमको किराया आदि कुछ नहीं देना पड़ता।

(२) जितने दिन हम रोटी खायें उतने दिनों का हिसाब देना पड़ता है, और अगर कोई मेहमान (अतिथि) हो, तो जितने दिन वह खाये, उतने दिन हमारे हिसाब में (दाम) अधिक किये जाते हैं।

(३) बोर्डिङ्ग की फ़ीस (अर्थात् मासिक किराया) नौ आने।⟌ पहली तारीख से लेकर बीसवीं तारीख तक चाहे कब न दें। मगर रोटी (भोजन) का खर्च दिनों के हिसाब से गिनकर मास के अन्त में दिया जाता है।

* डॉक्टर साहब से अभिप्राय डॉक्टर मार्टिसन है जो साइन्स के प्रोफ़ेसर थे।

(४) मैंने लाला * शिवराम को कहा था कि इतना खर्च मेरे वालदैन (पिता-माता) नहीं दे सकते, वह हिसाब करके कहने लगा कि लगभग एक रुपया यहाँ अधिक लगेगा । इसमें कुछ बड़ा कष्ट नहीं है । अगर भोजन अच्छा मिल जाये तो तुमने और खर्च कम कर देना । साथ इसके अगर इसमें कष्ट भी है तो केवल नौ मास (परीक्षा) तक । और फिर यह भी कहने लगा कि प्रथम तो हम अधिक खर्च नहीं होने देंगे, और फिर यह भी कहा कि यहाँ तुम्हें अधिक पुस्तकों के खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि तुम औरों से ले सकते हो। उसने यह भी कहा कि अगर यहाँ तक्लीफ़ (कष्ट) हो तो छुट्टियों के बाद चले आना ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,		(३७४)	आठ बजे रात, २७ मई, १८६१

कल मेरा बोर्डिंग में चला जाने का इरादा है, आगे जो परमेश्वर करे । हे महाराजजी ! मेरा मन यहाँ पहले से भी अधिक एकाग्र होने लग पड़े, तो अच्छी बात है । मगर यह बात मुश्किल नहीं है, अगर परमेश्वर की और आपकी दया हो तो । वह बीमारी जो मैंने आपको लिखी थी उससे मुझे अब आराम है । आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(३७५)		२६ मई, १८६१

आपके दो पत्र मिले, बड़ी खुशी हुई । महाराज जी ! वह बीमारी जो मैंने लिखी थी, वह फोड़ा नहीं था, मुझे ग़लती (भूल) से ऐसा मालूम हुआ था । वह असल में यह बात थी कि मुझे पैख़ाना फिरते समय अंदर का गुदा चमड़ा बाहर का आ गया था । यह बीमारी बच्चों को अक्सर (प्रायः) हो आया करती है । और एक ग़दूद (गुलथी) भी बीमारी

* लाला शिवराम उस समय कालेज बोर्डिंग के अध्यक्ष (सुपरिंटेंडेंट) थे ।

है। मगर मुझे अब इससे बिलकुल आराम आ गया है। मैं अफसोस करता हूँ कि मेरी ग़लती से आपको इतनी तकलीफ हुई।

कल मैं बोर्डिंग आ गया था। रात को पढ़ने का अच्छा मौक़ा मिल गया था। और अब दिन को एक सबसे अलग जगह है, वहाँ बैठा हूँ, और हवा भी आ रही है। एक महीने को हमारा सिमाही इम्तहान होगा, बड़ा मुश्किल। आप ग़ुलाम पर दया रखा करें, और पत्र लिखते रहा करें। मैं आपका नौकर हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७६) ११ मई, १८९१

आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है? आप दया रखा करें, और सदा पत्र लिखते रहा करें। मैं राज़ी हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७७) १ जून, १८९१

मिरात ने एक और मकान निहायत उमदा (अत्यंत उत्तम) बड़ी मुश्किल (कठिनता) से बीस रुपये महीना किराये पर लिया है, कालिज के समीप। इसमें चौदह लड़के आये हैं। तीन तीन लड़कों को एक एक बड़ा खुला कमरा अलग मिला है। इस में चूँकि पढ़ने का दूसरे मकान की निस्बत बहुत बड़ा आराम है, इसलिए हमारी चौथी जमाअत (Fourth year) के सब लड़के अर्थात् आठ (मुसलमानों के बिना) जिन्होंने बी० ए० का इम्तहान देना है और तीसरी जमाअत (Third year) के चार तथा पहली व दूसरी जमाअत (First year, Second year) का एक एक इस मकान में आ गये हैं। मैं अभी अकेला ही एक कमरे में हूँ। रामचंद मुल्कराज और दीनानाथ (ब्राह्मण लड़का जो गुजराँवाले में मेरे साथ इंट्रेंस में पढ़ता था और विष्णुदास का रिश्तेदार अर्थात् संबंधी है) यह दो मेरे कमरे में आ जायें। मगर

अभी आये नहीं। महाराजजी! मुझ पर ज़रा भी गुस्सा (रोष) न करना। मैं आपके गुलामों का गुलाम हूं। पत्र कालिज में जल्दी लिखें।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३७८)　　　　४ जून, १८९१

मेरा शरीर बिलकुल तन्दुरुस्त (स्वस्थ) है और अभी तक मन की एकाग्रता में भी फ़र्क़ (अन्तर) नहीं आया। आगे देखिये। महाराजजी! आप पत्र ज़रूर लिखें। मुसदयाज़ अभी नहीं आया।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३७९)　४ बजे प्रातः, ७ जून, १८९१

यहाँ पर लोग सवेरे (प्रातः) उठनेवाले भी हैं, जिन से किसी क़दर मुझे सवेरे उठने की आदत (स्वभाव) भी शायद पड़ जाय। रात को ज्यादा पढ़नेवाले भी हैं। कल दीनानाथ मेरे कमरे में आ गया था। मुस्तदयाल अभी नहीं आया। तकलीफ़, न तकलीफ़, आपको फिर लिखूँगा, अभी कुछ मालूम नहीं हुई। गुजरांवाले का अमरनाथ शहर से इस बोर्डिंग में कल आ गया है, मगर दूसरे कमरे में है। और हमारी अब कोई दुश्मनी (शत्रुता) नहीं। आपका पत्र कोई नहीं मिला, बड़ा अफ़सोस है। आप मेरे पर दया रखा करें। भूलें मुआफ़ फ़रमावें।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३८०)　　　　११ जून, १८९१

आज तीन रुपये आपके मुझे मिले हैं। बड़ी ही खुशी हुई। आप दया रखा करें। मुझे शायद अब के पत्र में देरी हो गई है, मुआफ़ फ़रमाना। हमारा इम्तहान सिमाही (त्रैमासिक) बहुत ही समीप है। मैं तंदुरुस्त (स्वस्थ) हूं। कोई दिमाग़ (मस्तिष्क) को बल (शक्ति) देनेवाली चीज़ लिखो।

संबोधन पूर्वोक्त, (३८१) १५ जून, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था। इन दिनों उसे बड़ा वैराग्य उत्पन्न हुआ है। आप कब आयेंगे ? आप मुझ पर दया रखा करें। मेरे कसूर (अपराध) मुआफ़ फरमावें। मैंने प्री ले लिया है। इन दिनों श्रम बहुत बड़ा होता है। इम्तहान बहुत निकट है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८२) १७ जून, १८६१

कल चाचाजी का पत्र आया था, लिखा था कि "हमने ५) रु० भगतजी को भेजे हैं तेरे लिये"। सो अगर आपको पहुँच गये हों, तो मैं रसीद उनको लिख दूँ। अगर आपको ज़रूरत हो, तो आपने ही वह रुपये रखने, नहीं तो जब आओगे तब ले आने। आप पत्र ज़रूर लिखते रहा कर।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८३) २० जून, १८६१

आपका कृपापत्र कल मिला था, बड़ी खुशी हुई। मैं चाचा जी को रसीद लिख देने लगा हूँ। आप पत्र मुझे जल्दी भेजते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८४) २० जून, १८६१

आज आपका एक और कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। छतरी की मुझे कुछ ज़रूरत नहीं है। मुझे पहले इस बात का खयाल नहीं आया था कि हमारे कालिज की फीस व रोटी का खर्च देने के दिन बहुत समीप आ गये हैं। मगर अब खयाल आया है। इसलिए आप अगर जल्दी रुपये भेज दें, तो अच्छी बात है। दूसरी बात यह चूँकि हमारा इम्तहान अब बहुत सिर पर (समीप) है, और रायसाहब की कोठी यहाँ से बहुत दूर, इसलिए अगर आप मनीआर्डर के द्वारा भेज दें, तो मुझे

विस्मृत न होगी। और अगर आपको मनीआर्डर द्वारा भेजने में कुछ तकलीफ होती हो तो जरूर ही राय मूलसिंह को कोठी के द्वारा भेजना। क्योंकि आपकी अपेक्षा मुझे कुछ तकलीफ नहीं होती।

संबोधन पूर्वोक्त,   (३८५)   २३ जून, १८९१

आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें। अब मेरी जूती जो बड़े दिनों की छुट्टियों में रूपसिंह के साथ जाकर ली थी, जब चाचाजी पेशावर नहीं गये थे, बिलकुल टूट गई है, छे महीने के बाद। अदद (फूसड फूसड) भी हो गई है। अब और लेने को जी (चित्त) चाहता है। रोटी का खर्च अब वह माँगते हैं। आपके रुपये अभी नहीं मिले।

संबोधन पूर्वोक्त,   (३८६)   २३ जून, १८९१

आज मुझे आपके पाँच ५) रुपये पहुँच गये हैं। बड़ी खुशी हुई। आप मुझे पत्र लिखते रहा करें। अब हमारा इम्तहान कोई दस ग्यारह दिन को होगा, बहुत निकट है। आप दया करो कि मैं चित्त की एकाग्रता के साथ परिश्रम करूँ।

विद्यार्थी अवस्था में सहपाठियों को प्रोफ़ेसर के स्थान पर पढ़ाना

संबोधन पूर्वोक्त,   (३८७)   २५ जून, १८६१

हमारा गणितशास्त्र का प्रोफ़ेसर बीमार था, इसलिये एक घंटा प्रतिदिन उसकी जगह मैं पढ़ाता रहा हूँ। फल मुझे अर्थात् गणितशास्त्र के विद्यार्थियों को पहले छुट्टी हो गयी थी। मैं कालिज से बोर्डिङ्ग आया। एक रुपया तुड़वाने के लिये सन्दूक से बाहर रखा (अपनी बैठन वाली जगह पर), मेरे कमरे का साथी दीनानाथ अभी नहीं आया था। मगर एक दो लड़के और बोर्डिङ्ग में आये हुए थे। मैं रोटी खाने रसोई में गया,

मगर रुपया बाहर ही पड़ा रहा, और कमरे का अन्दरा (ताला) भी मारा नहीं। रोटी खाकर आया, तो रुपया नहीं था। दीनानाथ ने बहुत पूछा पाछा, पर मिला नहीं। नहीं मालूम, किसने लिया। शायद नौकर ने लिया, या किसी विद्यार्थी ने ही उठा लिया हो। कल से मुझे एक बड़ा संदूक मिल गया है, इससे बड़ा सुख है।

चार पाँच दिन से मुझे प्रतिदिन नकसीर (नाक से रुधिर) आती थी, मगर कल रात को तो इतनी आई कि लगभग अचेत (बेहोश) हो गया। आज कालिज में भी नहीं गया, क्योंकि उस समय मस्तिष्क में अशक्ति अधिक थी। मगर सात बजे प्रातःकाल से लेकर अब तक तबीयत (स्वास्थ्य) अत्यन्त ठीक रही है। विद्यार्थी सब मेरे साथ हमदर्दी (सहानुभूति) करते हैं, और विशेष करके दीनानाथ बड़ी टहल (सेवा) करता है। आज मैंने बादाम और चार मगज घुटवाकर पिये हैं। इस समय सब तरह से आराम है। आप दया रखा करें। मुझे पत्र लिखते रहा करें।

गरम (तीक्ष्ण) वस्तुओं का नितान्त परहेज (त्याग)

संबोधन पूर्वोक्त, (३८८) २६ जून, १८८१

मैंने जो लिफाफा लिखा है उसमें एक बात लिखनी भूल गया था कि लाला शिवराम बोर्डिङ्ग के मोहतमिम (अध्यक्ष) को आप पर बड़ा विश्वास हो गया है। हम दोनों खाने से पहले भजन किया करते हैं। मैंने आपकी बातें सुनाई थीं। बड़ा खुश हुआ। मैं अब गरम चीजों (तीक्ष्ण वस्तुओं) से बिलकुल परहेज करता (नहीं बर्तता) हूँ।

संबोधन पूर्वोक्त, (३८६) २६ जून, १८८१

मुझे पत्र लिखने में अब के देर हो गई है। कारण यह है कि पत्र डालनेवाला संदूक (लेटरबक्स) दूर है, और इम्तहान समीप। आप

मुआफ़ (क्षमा) फ़रमावें। कल मेरी मंजी (चारपाई, जब मैं उठाकर डालने लगा) सो टूट गई थी। अर्थात् उसका जो टूटा हुआ पाया था वह बिलकुल ही अलग हो गया। ख़ैर (अस्तु), अब छुट्टियों तक तो किसी तरह गुज़ारह (निर्वाह) करूँगा।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६०) १० जून, १८६१

आज आपका कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। अब मेरा दिमाग़ (मस्तिष्क) अच्छा है। अब हमारे इम्तहान में छः दिन रह गये हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६१) ४ जुलाई, १८६१

मुझे पत्र लिखने में देर हो गई है। यहाँ कई बातों का सुख है और कई बातों की तकलीफ़ भी है। परसों हमारा इम्तहान शुरू होगा। आप पत्र लिखते रहा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६२) ७ जुलाई, १८६१

हमारा आधा अँगेज़ी का इम्तहान ख़तम (समाप्त) हो गया है, और आधा रहता है। आधा रियाज़ी (गणित) का भी ख़तम हो गया है और आधा रहता है। कल मेरा कोई इम्तहान नहीं। परसों वीरवार और अतरसों शुक्रवार को अँगेज़ी और रियाज़ी का इम्तहान होगा। आप दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६३) १० जुलाई, १८६१

आज हमारा इम्तहान ख़तम (समाप्त) हो गया है। छुट्टियों का अभी कुछ अच्छी तरह से पता नहीं। कोई कहता है २५ जुलाई से होंगी, कोई कहता है पहली अगस्त से होंगी। आप मेरे पर दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६४) १२ जुलाई, १८६१

आपका पत्र कोई क्यों नहीं आया। आप जरूर जल्दी पत्र लिखा करें। छुट्टियों के बाद मेरा इरादा (संकल्प) बोर्डिङ्ग में रहने का नहीं है। आगे जिस तरह परमेश्वर को मंजूर हो।

अति परिश्रम मस्तिष्क की निर्बलता का कारण होता है

संबोधन पूर्वोक्त, (३६५) १३ जुलाई, १८६१

यहाँ निहायत दर्जे की (अत्यंत) गरमी पड़ती है, और मैं (जिसकी प्रकृति पहले ही गरमीवाली है) बहुत ही तंग हूँ। मेरा दिमाग़ (मस्तिष्क) काम नहीं कर सकता। क्योंकि आज बहुत ही कम पढ़ सका हूँ। मेरा चित्त अब यह चाहता है कि छुट्टियाँ लेकर २५ जुलाई से पहले ही आपके पास आ जाऊँ, और कुछ आराम करूँ। अगर मेरा दिमाग़ ठीक हो गया, तब तो नहीं आऊँगा, और अगर न हुआ, तो आप लिखो कि मेरा आना उचित है कि नहीं। अगर उचित हो तो आऊँ, नहीं तो न आऊँ। दिमाग़ की निर्बलता का कारण यह भी है कि पिछले दिनों में सख्त (भारी) मेहनत (परिश्रम) करनी पड़ी थी। आप मेरे पर दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (३६६) १४ जुलाई, १८६१

कल और आज मैंने बादाम घुटवाकर पिये थे। और पढ़ा भी कम है, अर्थात् सहल सहल चीजें ही पढ़ी हैं। इसलिए आज मेरा दिमाग़ कल से बहुत अच्छा है। आज भाई साहब के हाथ का (आपके पास से) लिखा हुआ पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। अगर मैंने आना हुआ, तो इस शनिवार को आऊँगा, नहीं तो भाई साहब को कहना कि वह यहाँ से हो जाये। हमने अब नई किताबें शुरू की हैं। छुट्टियों से पहले आप

छुट्टियाँ लेने में हानि बहु होगी। आगे जिस तरह आप कहें। आप मुझे अपने हाथ का पत्र लिखें। मेरे पर दया करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६७)   १६ जुलाई, १८६१

मुझे इस बात की बड़ी चिन्ता लगी हुई है कि आपका एक पत्र भी इन दिनों नहीं मिला। आप पत्र जरूर लिख दिया करें। अगर कोई अनुचित बात मुझसे स्वाभाविक हो जाय तो क्षमा कर दिया करें, क्योंकि मैं इरादतन (जान बूझ कर) कोई ऐसी चेष्टा नहीं करनी चाहता, और नहीं करता जो आपको नापसन्द (अरुचिकर) हो। कल शुक्रवार हमें छुट्टी है ईद की। परसों छुट्टी नहीं। भाई साहब को कहना कि मुझको मिले बिना न जाना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६८)   १७ जुलाई, १८६१

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी खुशी हुई। कल हमारा इम्तहान है, इसलिए मैं अधिक नहा लिख सकता। कल सविस्तर हाल लिखूँगा। मैं आपका गुलाम हूँ। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६६)   १७ जुलाई, १८६१

आज आपके दो पत्र मिले, यह दो पैसे भरन वाला, और एक और, मैं अब बिलकुल तन्दुरुस्त (स्वस्थ) हूँ। छुट्टियाँ हमें २४ जुलाई को होंगी। मगर छुट्टियों से पहले मेरा आना कठिन है। क्योंकि एक तो पढ़ाई का हर्ज, दूसरा हमारे साहब की नाराजगी, तीसरा यह कि अगर २४ जुलाई को आयें तो रेल के किराया में (हमारे साहब के कहने पर) हमें रियायत होगी। भाई साहब को कहना कि वहीं मुझे यहाँ आकर मिल जायें। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४००) १६ जुलाई, १८६१

कल चाचाजी का पत्र आया था। आज मेरे बायें कान में जरा-जरा दर्द होता है, और बाईं पिन्नी (पिंडुली) पर एक फोड़ा हुआ है। अगर ज्यादा तकलीफ मालूम हुई तो छुट्टियों से पहले ही चला आऊँगा। अगर आराम आ गया, तो छुट्टियों को आऊँगा। भाई साहब आज तक यहाँ नहीं आये।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४०१) २१ जुलाई, १८६१

कल भाई साहब यहाँ आ गये थे। मैं आज अत्यंत तंग हूँ। कान में सख्त दर्द है। दो दिन हस्पताल से पिचकारी इत्यादि का इलाज करवाया है। आराम बिलकुल नहीं हुआ। प्याज का गरम पानी भी कान में डलवाया है। आज सब दिनों से ज्यादा तकलीफ है। मैं शायद कल आपके पास चला आऊँ। आप मुझ पर दया रखनी। शायद भाई साहब मेरे राजी (स्वस्थ) होने तक पेशावर नहीं जायेंगे।

—o—

तीव्र गुरु-भक्ति और सेवा

संबोधन पूर्वोक्त, (४०२) २६ सितंबर, १८६१

परमेश्वर के वास्ते एक पत्र लिखो। आपने वृक्ष को अब तक पाला है, और पानी दिया है, अब यक ब यक (अकस्मात्, एक दम ही) उस वृक्ष का ध्यान छोड़ना नहीं चाहिये। आप यद्यपि मुझे चाहें, अथवा न चाहें, तो भी मैं तो आपका गुलाम हूँ। पर इतना जरूर चाहता हूँ कि आप (यदि अधिक नहीं तो) इतना खयाल तो मेरी तरफ भी रखा करें जितना कि अपने पानी भरनेवाले महरे (कहार) या और किसी खिदमतगार (अनुचर) की तरफ रखते हैं।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४०३)　　　　६ अक्तूबर, १८६१

कल लाला अयोध्यादास ने बड़ी तलाश करने के बाद मुझे एक मकान पूरे बाजार के सिरे पर ले दिया है। मकान आजकल अजुआरियों (जुआ खेलनेवालों) ने बहुत रोक रखे हैं। इस मकान का किराया पौने दो १॥।) रुपया है। और मकान बहुत ही फराख (खुला) है। मैं आज बोडिंग से असबाब (सामान) ले आया हूँ और मैंने बरसाती में जो बड़ी बसी (खुली) है डेरा कर दिया है। आप बहुत जल्दी आयें तो भारी कृपा होगी।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४०४)　　　　८ अक्तूबर, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मुझे कहता था कि "राजा हर्यंससिंह का एक और नौकर है, और उसका एक लड़का है जो मेरा (तीर्थराम का) हमउम्र (समान आयु वाला) है और किसी स्कूल में पढ़ता है, मैं (अयोध्यादास) चाहता हूँ कि उसको आप अपने मकान की निचली मंजिल में रहने दो, तुम्हारा हर्ज कुछ नहीं होगा।" फिर अयोध्यादास उस लड़के के पिता को साथ लाकर मकान दिखला गया था। मैंने अयोध्यादास को यह कहा था कि "अच्छा, जैसी आपकी मरज़ी।" मगर मैंने दिल में यह ठान लिया है कि अगर उस लड़के के आने से मुझे कुछ तकलीफ न हुई तो इस मकान में रहूँगा, नहीं तो मकान बदल दूँगा। आप अब बहुत जल्दी पधारेंगे कीजिये। इस मकान का पता यह है— "मुकाम लाहौर, गुरु बाजार, सुलतानदास दूकानदार की मार्फत तीर्थराम गुसाई को मिले।" मकान निहायत खुला है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४०५)　　　　११ अक्तूबर, १८६१

कल आपका एक पत्र मिला। बड़ी ही खुशी हुई। लाला अयोध्यादास

बड़ा भ्रम करता है और कहता है कि "मेरा मतलब तो यह था कि उस लड़के से शायद आपको फायदा (लाभ) हो, क्योंकि मकान बड़ा फराख़ (खुला) था और किराया थोड़ा। मेरा ज़ाती फायदा (निजी लाभ) मुझे किंचित् भी दृष्टिगोचर नहीं था। और फिर यह कि मैंने आपकी सलाह पर छोड़ा था, अगर जी (चित्त) चाहे तो रखो, नहीं तो न।" अब वह कहता है कि उस लड़के या किसी और व्यक्ति को मैं निचली मंज़िल में रखने की सलाह (सम्मति) कदापि नहीं दूँगा। अफ़सोस करता है कि भगतजी के पत्र से किसी क़दर ख़फ़गी (रोष) के चिह्न ज़ाहिर हैं। और मुझको कहता था कि उनको लिख दो कि मुझ पर ज़रा (किंचित्) ख़फ़ा (रुष्ट) न हों। और वास्तव में वह हर तरह से मेरी ख़ातिरदारी करता है, और मेरी ख़बर रखता है। आप उसे एक ख़ुशी का पत्र लिखें। मेरे पड़ोसी बड़े ही कृपालु और भलेमानस हैं। मैंने घड़ी (टायमपीस) कोई नहीं ख़रीदी। एक दिन सायं को मैं रोटी खाने जा गया, तो मह्रे (कहार) की दुकान पर मेरी जूती कोई व्यक्ति बदल (बदल) कर ले गया। मेरी जूती के बदले में जो छोड़ गया है वह भी बड़ी पुरानी है। कितनी जगह से गठवाई हुई है और फिर भी गठवाने-वाली है। आप अभी तक आये क्यों नहीं?

सबोधन पूर्वोक्त, (४०६) ११ अक्तूबर, १८९१

कल हमारा कालिज खुलेगा। यह मकान है तो बड़ा फराख़ (खुला) मगर लिपाई होनेवाली है। मालिक मकान कहता है कि आजकल करा दूँगा। और हमने उसको कहा है कि हम किरायानामा तब लिख देंगे, जब लिपाई हो जायेगी। सो अभी तक किरायानामा नहीं लिख दिया।

संबोधन पूर्वोक्त,   (४०६)   १६ अक्तूबर, १८६१

मैं ख्याल करता हूँ कि अब के मुझे पत्र लिखने में देर हो गई है। आप मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाना। आप आये क्यों नहीं ?

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,   (४०७)   १८ अक्तूबर, १८६१

आज चूँकि छुट्टी थी, मैं रोटी खाकर ज़रा लाला अयोध्यादास के मकान पर गया था, वहाँ आपका पत्र (जो आपने लाला अयोध्यादास को लिखा हुआ था) देखा। रूपसिंह और लछमणदास भी वहाँ बैठे हुए थे। रूपसिंह की ज़बानी मालूम हुआ कि आप आज कल आयेंगे। और आपके पत्र से भी मालूम हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। आपने मुझे पत्र लिखने में इस बार देर क्यों लगाई है ?

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,   (४०८)   २१ अक्तूबर, १८६१

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है ? आजकल यहाँ एक डॉक्टर सैफ़ुवा साहब आये हुए हैं। लोग कहते हैं कि उनके इलाज में मोजज़े (करामात) का असर (प्रभाव) है। वह अपनी सुनहरी बग्गी में चढ़ कर शहर में फिरते हैं, इलाज करते हैं, और लोगों के साथ बातचीत भी करते हैं। आ कर देख जाओ। यह साहब अमरीका के हैं। मैस्मरिज़्म से इलाज करते हैं।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,   (४०९)   २४ अक्तूबर, १८६१

इतने काल आपका कोई पत्र न आने की क्या वजह (हेतु) है ? आप ज़रूर जल्दी पत्र लिखा करें। मैं आपका गुलाम हूँ। न तो आप स्वयं ही आये हैं और न पत्र ही लिखा है। अब दया करो। लड़कों ने मेरा बोर्डिंग छोड़ देना साहब को कह दिया था, सो एक दिन डॉक्टर

साहब (हमारे कालिज के प्रोफेसर) मुझे कहने लगे कि तू अब कहाँ रहता है ? मैंने कहा शहर (नगर) में। फिर कहने लगे कि रहने का मकान और खाने-पीने का इंतज़ाम अगर पहले जैसा है, तो यह मकान भी छोड़ देना पड़ेगा, नहीं तो खैर, यहीं रहो। मैंने यक़ीन (निश्चय) दिलाया कि अब मैं पहले से अच्छी हालत में रहता हूँ। फिर चुप कर रहे।

संबोधन पूर्वोक्त, (४१०) २५ अक्तूबर, १८९१

आप अब अपना हाल ज़रूर लिखें। आपने इतनी मुद्दत (अवधि या चिर) तक पत्र क्यों नहीं लिखा ? मेरे क़सूरों (अपराधों) को मुआफ़ फ़रमावें।

संबोधन पूर्वोक्त, (४११) ११ बजे रात, १०नवंबर, १८९१

आपका सूचीपत्र यहाँ रह गया है। आपको जाते समय मुझे चाक़ू देना याद नहीं रहा था। अस्तु, अगर हो सका, तो आप कोई चाक़ू लेकर हमारे गाँव में भेज देना। वैरोंके का प्रमुदयाल मुझे आज मिला था। कोई एक सप्ताह भर को हमारे सिमाही (त्रैमासिक) इम्तहान शुरू होंगे। आपने पत्र भेजते रहना।

संबोधन पूर्वोक्त, (४१२) ११ नवंबर, १८९१

मुझे थोड़ा-थोड़ा रेशा (श्लेष्मा) था, मगर अब आराम है। आप पत्र लिखते रहा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (४१३) १५ नवंबर, १८९१

आपका पत्र कोई [illegible] । हमारा दि[illegible] बहुत निकट है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१४)　　　　१७ नवंबर, १८६१

हमारे इम्तहान नवंबर की २० तारीख से लेकर ३० तारीख तक होते रहेंगे। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१५)　　　　२० नवंबर, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था, कहने लगा कि "मैं महेशदास के साथ रहना नहीं चाहता। इसलिए अगर कोई और जगह रहने का न मिली, तो आपके मकान की निचली मंज़िल में आ जाऊँगा।" मैंने कहा कि जिस तरह उचित समझो करना। फिर चुप कर रहा। कल हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१६)　　　　२२ नवंबर, १८६१

आज आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१७)　　　　२६ नवंबर, १८६१

मुझे शायद अब के पत्र लिखने में देर हो गई है, मुआफ़ रखना। काम बहुत था। मैं आपके लिए प्रतिदिन प्रार्थना किया करता हूँ। आप ने अपना हाल जल्दी लिखना। आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१८)　　　　१ दिसंबर, १८६१

आज हमारा कालिज खुला है, अर्थात् मामूली पढ़ाई शुरू हुई है। इम्तहान ख़तम (समाप्त) हुए हैं। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— ० ——

साहब (हमारे कालिज के प्रोफेसर) मुझे कहने लगे कि तू अब कहाँ रहता है ? मैंने कहा शहर (नगर) में। फिर कहने लगे कि रहने का मकान और खाने-पीने का इंतजाम अगर पहले जैसा है, तो यह मकान भी छोड़ देना पड़ेगा, नहीं तो खैर, वहीं रहो। मैंने यक़ीन (निश्चय) दिलाया कि अब मैं पहले से अच्छी हालत में रहता हूँ। फिर चुप कर रहे।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१०) २५ अक्तूबर, १८६१

आप अब अपना हाल जरूर लिखें। आपने इतनी मुद्दत (अवधि या चिर) तक पत्र क्यों नहीं लिखा ? मेरे क़ुसूरों (अपराधों) को मुआफ़ फ़रमावें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४११) ११ बजे रात, १०नवंबर, १८६१

आपका सूचीपत्र यहाँ रह गया है। आपको जाते समय मुझे चाक़ू देना याद नहीं रहा था। अस्तु, अगर हो सका, तो आप कोई चाक़ू लेकर हमारे गाँव में भेज देना। वैरोंके का प्रमुदयाल मुझे आज मिला था। कोई एक सप्ताह भर को हमारे सिमाही (त्रैमासिक) इम्तहान शुरू होंगे। आपने पत्र भेजते रहना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१२) १३ नवंबर, १८६१

मुझे थोड़ा-थोड़ा रेशा (श्लेष्मा) था, मगर अब आराम है। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१३) १५ नवंबर, १८६१

आपका पत्र कोई नहीं मिला। हमारा सिमाही इम्तहान बहुत निकट है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१४) १७ नवंबर, १८६१

हमारे इम्तहान नवंबर की २० तारीख से लेकर ३० तारीख तक होते रहेंगे। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१५) २० नवंबर, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था, कहने लगा कि "मैं महेशदास के साथ रहना नहीं चाहता। इसलिए अगर कोई और जगह रहने को न मिली, तो आपके मकान की निचली मंज़िल में आ जाऊँगा।" मैंने कहा कि जिस तरह उचित समझो करना। फिर चुप कर रहा। कल हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१६) २२ नवंबर, १८६१

आज आपका पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१७) २६ नवंबर, १८६१

मुझे शायद आप के पत्र लिखने में देर हो गई है, मुआफ़ रखना। काम बहुत था। मैं आपके लिए प्रतिदिन प्रार्थना किया करता हूँ। आप ने अपना हाल जल्दी लिखना। आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है ?

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१८) १ दिसंबर, १८६१

आज हमारा कालिज खुला है, अर्थात् मामूली पढ़ाई शुरू हुई है। इम्तहान ख़तम (समाप्त) हुए हैं। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

साहब (हमारे कालिज के प्रोफेसर) मुझे कहने लगे कि तू अब कहाँ रहता है ? मैंने कहा शहर (नगर) में। फिर कहने लगे कि रहने का मकान और खाने-पीने का इंतजाम अगर पहले जैसा है, तो यह मकान भी छोड़ देना पड़ेगा, नहीं तो खैर, यहीं रहो। मैंने यक़ीन (निश्चय) दिलाया कि अब मैं पहले से अच्छी हालत में रहता हूँ। फिर चुप कर रहे।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१०) २५ अक्तूबर, १८६१

आप अब अपना हाल जरूर लिखें। आपने इतनी मुद्दत (अवधि या चिर) तक पत्र क्यों नहीं लिखा ? मेरे क़ुसूरों (अपराधों) को मुआफ़ फरमावें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४११) ११ बजे रात, १०नवंबर, १८६१

आपका सूचीपत्र यहाँ रह गया है। आपको जाते समय मुझे चाक़ू देना याद नहीं रहा था। अस्तु, अगर हो सका, तो आप कोई चाक़ू लेकर हमारे गाँव में भेज देना। मैरोके का प्रभुदयाल मुझे आज मिला था। कोई एक सप्ताह भर को हमारे सिमाही (त्रैमासिक) इम्तहान शुरू होंगे। आपने पत्र भेजते रहना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१२) १३ नवंबर, १८६१

मुझे थोड़ा-थोड़ा रेशा (श्लेष्मा) था, मगर अब आराम है। आप पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१३) १५ नवंबर, १८६१

आपका पत्र कोई नहीं मिला। हमारा सिमाही इम्तहान बहुत निकट है।

—— o ——

नहीं होता। मैं शायद बीरवार को आऊँ। आप लिखें कि अस्बाब (सामान) का क्या इतजाम (प्रबंध) करके आऊँ। आप सारा हाल लिखें। आप मुझ पर दया रखा करें। मेरे चाचाजी अभी आये हैं कि नहीं ?

—— o ——

एकांत निवासार्थ सब सुखों का छोड़ना

संबोधन पूर्वोक्त, (४०२) २० दिसंबर, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था। वह अब अपने पहले मकान के सामने के मकान में रहता है, सहित अपने लंगर लशकर के। एक साबित (पूरा) पाजामा जो मेरे पास था वह मैंने पहना हुआ है। नया यहाँ आकर बनवाऊँगा। आज सारा दिन मेरे गले में सख्त (भारी) रेजश (जुकाम) रही है। अगर मैं बीमार रहा तो शायद बीरवार से पहले ही चला आऊँ। जब आऊँगा आपकी चीजें लेता आऊँगा। अयोध्यादास मुझे कहता था कि "जब जाना हो, मकान की कुंजी मुझे दे जाना।" इससे उसका यह मनशा मालूम होता है कि छुट्टियों में वह यहाँ (इस मकान में) आ जाय। पर महाराजजी ! मैं इस बात को कदापि नहीं चाहता। मैंने सब सुख छोड़े, और किराया भी इतना बड़ा देना मंजूर किया, केवल एकांत रहने की खातिर। और अयोध्यादास यहाँ आना चाहता है खराब मकान में। मैं कोशिश करूँगा कि कुंजी उसको न दूँ। आपने उसको इस विषय की बाबत कुछ न लिखना। अयोध्यादास को आपने जो पत्र लिखा था उसने जिक्र (चर्चा) किया था। मगर मैंने पत्र देखा नहीं। आपने सलाम पर सब तरह खुश रहना। मेरी ऐनक का एक शीशा निकल गया है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका पत्र मिला। आपके बीमार रहने का अफसोस (शोक) है।

—— o ——

संसार के सुख रात के पक्षी का साया (छाया) हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (४१६) ४ दिसंबर, १८९१

कल आपका पत्र मिला था, अत्यंत बड़ी खुशी हुई। मैंने कल का आपकी तरफ लिखने के लिये यह कार्ड अपने पास रखा हुआ था। मगर (गणित के) एक कठिन प्रश्न को हल करने में प्रवृत्त था। लिखने को अवकाश नहीं मिला। कल का बाक़ी कालिज का काम भी अभी तक और कोई नहीं किया। अब आठ पहर के बाद यह प्रश्न निकला है। अब और काम करूँगा। कल लाला अयोध्यादास मिला था। मेरा भाई अभी आया है कि नहीं? अगर आया है तो उसे कहना कि मुझे पत्र लिखे।

परमात्मा का स्वरूप अद्भुत चमत्कारों का मजमूआ (समूह) है, संसार के सुख ऐसे हैं जैसे * उस रात के पक्षी का साया (छाया) जिसको कभी किसी ने देखा नहीं, मगर उसके आने की आवाज़ ही केवल सुनी है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२०) १६ दिसंबर, १८९१

कल आपके कपड़े मैं धोबी से ले आया था। हमें आज से नवें दिन छुट्टियाँ मिल जायेंगी, अर्थात् वीरवार। मेरे नाक के अंदर की तरफ एक फुंसी सी हो पड़ी है, जिसके कारण सिर में भी ज़रा-ज़रा दर्द होता है। जब ख्याल किसी और चीज़ की तरफ हो तो दर्द मालूम नहीं देता। पर जब ख्याल और चीज़ से हटता है, तो मालूम देता है।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२१) १८ दिसंबर, १८९१

आज मेरे नाक के फोड़े का किसी क़दर आराम है। सिर दर्द अब

---

* भगत धन्नारामजी से विदित हुआ कि प्रत्येक रात्रि वह नियत समय पर एक पक्षी के उड़ने की आवाज़ सुना करते थे परन्तु बहुत यत्न करने पर भी वह पक्षी रात्रि के समय किसी को दिखाई नहीं देता था यद्यपि उसके उड़ने की आवाज़ अवश्य सबको सुनाई देती थी। उस पक्षी के दृष्टांत से तीर्थराम जी ने संसार के सुखों को दर्शाया है।

नहीं होता। मैं शायद बीरवार को आऊँ। आप लिखें कि असबाब (सामान) का क्या इंतजाम (प्रबंध) करके आऊँ। आप सारा हाल लिखें। आप मुझ पर दया रखा करें। मेरे चाचाजी अभी आये हैं कि नहीं?

—— ० ——

एकांत निवासार्थ सब सुखों का छोड़ना

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४७२)　　　　२० दिसंबर, १८९१

आज लाला अयोध्यादास मिला था। वह अब अपने पहले मकान के सामने के मकान में रहता है, सहित अपने लंगर लशकर के। एक साबित (पूरा) पाजामा जो मेरे पास था वह मैंने पहना हुआ है। नया यहाँ आकर बनवाऊँगा। आज सारा दिन मेरे गले में सख्त (भारी) रेजश (जुकाम) रही है। अगर मैं बीमार रहा तो शायद बीरवार से पहले ही चला आऊँ। जब आऊँगा आपकी चीजें लेता आऊँगा। अयोध्यादास मुझे कहता था कि "जब जाना हो, मकान की कुंजी मुझे दे जाना।" इससे उसका यह मनशा मालूम होता है कि छुट्टियों में वह यहाँ (इस मकान में) आ जाय। पर महाराजजी! मैं इस बात को कदापि नहीं चाहता। मैंने सब सुख छोड़े, और किराया भी इतना बड़ा देना मंजूर किया, केवल एकांत रहने की खातिर। और अयोध्यादास यहाँ आना चाहता है खराब मकान में। मैं कोशिश करूँगा कि कुंजी उसको न दूँ। आपने उसको इस विषय की बाबत कुछ न लिखना। अयोध्यादास को आपने जो पत्र लिखा था उसने जिक्र (चर्चा) किया था। मगर मैंने पत्र देखा नहीं। आपने गुलाम पर सब तरह खुश रहना। मेरी ऐनक का एक शीशा निकल गया है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका पत्र मिला। आपके बीमार रहने का अफसोस (शोक) है।

—— ० ——

सन् १८९२ ईस्वी

(इस वर्ष के आरम्भ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े अठारह वर्ष के लगभग थी)

संबोधन पूर्वोक्त, (४२३) ७ जनवरी, १८९२

आपने जो घड़ी के बाबत कागज लिखवाया हुआ था, वह यहीं रह गया है। आज मैंने देखा है। अयोध्यादास को दे दूँगा कि वह आपको पहुँचा दे। और अगर उसने कुछ और राय (सम्मति) दी, तो वैसा करूँगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२४) ९ जनवरी, १८९२

इस हफ्ते (सप्ताह) आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें।

अब मैं इतना पत्र लिख चुका तो अयोध्यादास आकर मिला। और उसने कहा कि मैं गुजराँवाले से हो आया हूँ। महाराजजी को मिला था।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२५) १२ जनवरी, १८९२

मैं राजी हूँ। आप पत्र जल्दी लिखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२६) १५ जनवरी, १८९२

आज हमें छुट्टी हो गई है मलिका के पोते की मृत्यु के कारण। आपके पत्र में देर क्यों हो जाती है ?

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२७) १८ जनवरी, १८९२

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है। आप जल्दी पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

संयोधन पूर्वोक्त, (४२८) ११ बजे रात, २७ जनवरी, १८६२

कल लछमणदास मिला था। उसकी ज़बानी मालूम हुआ कि आप बीमार हो गये थे। बड़ा अफसोस हुआ। आप अपना हाल लिखें। आज हमें छुट्टी थी और सारे लाहौर शहर की दुकानें दिन भर बंद रही हैं, और सब महकमों में छुट्टी रही है शहज़ादे के मातम (शोक) के कारण। आप सब हाल लिखें।

—— ० ——

संयाधन पूर्वोक्त, (४२६) ११ जनवरी, १८६२

बड़ी मुद्दत (अवधि) के बाद कल आपका एक कृपापत्र मिला था। अत्यंत खुशी हुई। लाला अयोध्यादास पाँच छे दिन का जंडयाले गया हुआ है। चाचाजी की बाबत जो आपने लिखवाया था उसमें दो तीन हरफ़ रह गये हुए हैं। अनुमान से जाना है कि वह मुरालीवाला में गये हैं। मगर आपको नहीं मिले। आपने इस बात का कुछ ख्याल न करना। इस बुद्धवार से लेकर शनिवार तक हमारा कालिज में इम्तहान होगा। फिर बड़े इम्तहान की तैयारी के लिये छुट्टियाँ मिल जायेंगी।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (४३०) ४ फ़रवरी, १८६२

आपने पत्र कभी क्यों नहीं भेजा? आप ज़रूर अपने हालात से सूचना देते रहा करें। मेरी गरदन के फोड़े को कम आराम है। मगर बिलकुल राज़ी नहीं हुआ।

—— ० ——

संयोधन पूर्वोक्त (४३१) ६ फरवरी, १८६२

आपकी तरफ से एक पत्र भी नहीं आया। आप ऐसा न किया करें। मेरी गरदन के फोड़े को बिलकुल आराम है। पिछले दो तीन दिन

सिर-दर्द पड़ी होती थी। मगर अब आराम है। आप जरूर पत्र लिखते रहा करें।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३०) ८ फ़रवरी, १८६२

अब मुझे खर्च की जरूरत है। साथ इसके १० फ़रवरी से १५ फ़रवरी तक हमसे इम्तहान के दाखले (प्रवेश-फ़ीस) लिये जाने हैं। मेरे पाँव की जूती भी अब टूट पड़ी है। आपका पत्र कभी नहीं आया।

—— ०——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३३) ६ बजे रात, ११ फ़रवरी १८६२

महाराज जी! आप मुझे (कम से कम आठवें दिन तो) एक पत्र लिखने की तकलीफ़ जरूर उठा छोड़ा करें। मैंने लाला अयोध्यादास को कहा था। वह मुझे अभी दो रुपये आन कर दे गया है। आप मेरे पर किसी तरह से खफ़ा (रुष्ट) न रहें। मैं आपकी दया का इच्छुक हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३४) ११ फरवरी, १८६२

कल भाई गुरुदास आ गया था। एक रुपया अपने किराये का काट कर उन्तालीस ३६) रुपये मुझको देकर आज चार बजे की गाड़ी धमोंके* चला गया है। आपके दो कार्ड भी आज मिले हैं। भाई साहब की जुबानी मालूम हुआ कि केवल आप ही की कोशिश से रुपये मुझको पहुँचे हैं। महाराजजी! आप मेरे अत्यंत कृपालु हैं। आप मेरे पर कृपादृष्टि रखा करें। मुझे पत्र जरूर लिखा करें। आज मैं कालिज से फ़ार्म ले आया हूँ। इसको भर कर के सोमवार इसके साथ रुपये भी द

* धमोंके एक कस्बा का नाम है।

दूँगा। तीस ३०) रुपये दाख़िले के, साढ़े तीन ३॥) रुपये एक मास की आधी फ़ीस के, देने हैं। पौने दो १॥।) रुपये किराया भी इन्हीं से देना है। आपका पत्र लेकर बड़ा चित्त खुश हुआ।

—— ० ——
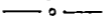
संबोधन पूर्वोक्त, (४३५) १५ फ़रवरी, १८९२

आज मैं तीस ३०) रुपये दाख़िले के दे आया हूँ। आपकी और परमेश्वर की दया चाहिये। उन्होंने सब लड़कों से दाख़िले के साथ ही पूरी दो मास की फ़ीस ले ली है, बिना किसी को छोड़े। इसलिए मुझे भी पूरे दो मास की आधी फ़ीस देनी पड़ी। अब निज के ख़र्च के लिए लाला अयोध्यादास से कुछ उधार लेना पड़ेगा। लाला अयोध्यादास के पहले दो रुपये मैंने दे दिये हुए हैं। आपने मुझ पर अब किंचित् ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। मेरा कोई अपराध नहीं है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३६) १२ बजे रात, १८ फ़रवरी, १८९२

आप पत्र ज़रूर कृपा करके भेजा करें। मेरे किसी क़सूर (अपराध) की तरफ़ मत देखना। मुझे जब कोई पत्र मिलता है, तो बड़ी ख़ुशी होती है।

—— ० ——
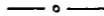
संबोधन पूर्वोक्त, (४३७) २½ बजे दिन, १६ फ़रवरी, १८९२

आज मैंने सुना था "मिडल का रिज़ल्ट (परिणाम) कल निकल गया है।" कालिज से आती बार देख आया हूँ। लाला हरमुगराय, नेकराम पास हैं। मुरलीवाले के काशीराम, नंदराम और लाला आसानंद साहब का लड़का हरजसराय पास हैं। चरणदास नहीं पास हुआ।
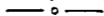
—— ० ——

खर्च की बार बार तंगी

संबोधन पूर्वोक्त, (४३८) २२ फ़रवरी, १८९२

आप जल्दी आ जायें तो निहायत मेहरबानी (बड़ी भारी कृपा) हो।

पन्तालीस ३६) रुपये जो भाई साहब लाये थे, उनमें से तीस ३०) रुपये दाखिला, सात ७) रुपये फ़ीस और दो रुपये प्रयोग्यादास के दे दिये थे। मैं खर्च से पहले की तरह तंग ही हूँ। दो रुपये एक लड़के से उधार लिये थे, वह भी लग गये हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३६) ३ मार्च, १८६२

मैंने पत्र इस बार देर से इसलिए लिखा है कि मुझे आशा थी आप अब तक यहाँ आ गये होने थे। देर क्यों लग गई है ? आप पत्र लिखते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४०) ५ मार्च, १८६२

आज चाचाजी यहाँ तशरीफ़ लाये (पधारे) हैं। और सब तरह से खैरियत (कुशल) है। आपका पत्र कोई नहीं मिला।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४१) ८ मार्च, १८६२

कल चाचाजी यहाँ से चले गये थे। शायद आपको मिले होंगे। गुजरोंवाले से खर्च मुझको भेजेंगे। मैं आशा करता हूँ कि उनकी ज़बानी सब हाल आपको मालूम हो गया होगा।

आपका कृपापत्र कल एक मिला था, निहायत बड़ी (अत्यंत) खुशी हुई। आपके और मेरे चोगों (फोटो) के लिए चाचाजी पट्टी लाये हैं। वह यहाँ पड़ी है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४२) ६॥ बजे शाम, १० मार्च, १८६२

आपने मेरे पर सब तरह से खुश रहना। आज कोई तीन चार बजे के लगभग लखाराम और हरिराम उसका भाई, मुरालीवाला के

पांचे, मेरे मकान पर आये थे। कोई एक मिनट ठहरे थे। एक लोई और दो सोटियाँ (हाथ की लकड़ियाँ) यहाँ रखकर चले गये थे। शायद यह मेरे मकान उतरना चाहते हैं। अब जब आयेंगे तो मैंने यह इरादा किया हुआ है कि उनको कह दूँ कि "अगर यहाँ उतरना हो तो निचली मंज़िल में रहना पड़ेगा।" महाराजजी! अगर और कोई बात उचित हो तो वह मुझे आप लिख दें। मैं जान बूझ कर तो कोई अनुचित चेष्टा नहीं करना चाहता।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४४३) ११½ बजे रात, १८ मार्च, १८६२

आज ८ बजे वह दोनों पांचे माई मुरालीवाले चले गये हैं। कल रात को देर के साथ यहाँ आये थे। और आते ही सो गये थे। आज दिन भर भी बाहर रहे। मेरा उन्होंने हर्ज नहीं किया। आप जरूर मेरा खयाल रखें। सोमवार, वीर, शुक्र और शनिवार हमारा इम्तहान है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४४४)　　　　२० मार्च, १८६२

हमारा इम्तहान कल हमारे मिशन कालिज में होगा। हमारा बड़ा साहब मुहतमिम (प्रबंधक) होगा। आपने जरूर मेरे लिए प्रार्थना करनी।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४४५)　　　　२२ मार्च, १८६२

आज आपका कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। अगर नारायणसिंह मिला, तो मैं कह दूँगा। मगर आप आ जायें तो अच्छी बात है। आपका जी (चित्त) चाहा तो इम्तहान के बाद अमृतसर भी जायेंगे। परसों और अतरसों हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है। मुझे इस बार रियाज़ी का बड़ा ही भय है। आपने जरूर प्रार्थना करनी।

संबोधन पूर्वोक्त, (४४६) २१ मार्च, १८९९

कल मेरे नाक से बहुत बड़ी नकसीर चली थी। अब मेरा दिमाग़ बड़ा ही कमज़ोर हो गया हुआ है, सो आपने ज़रूर मेरे लिए प्रार्थना करनी।

—— o ——

बी० ए० की वार्षिक परीक्षा की चिंता

संबोधन पूर्वोक्त, (४४७) २४ मार्च, १८९९

आज मैं एक रियाज़ी (गणित) का इम्तहान दे आया हूँ। एक परचा बड़ा मुश्किल (कठिन) आया था। पर मैं आशा करता हूँ कि आपने * मेरे लिये ख़याल किया होगा। अब कल दूसरी रियाज़ी का इम्तहान है। मुझे उसका अत्यन्त भय है। आपने ज़रूर प्रार्थना करनी। परसों ओरल (ज़ुबानी) परीक्षा है, जिसका मुझे सबसे अधिक भय है, क्योंकि अगर कोई उसमें पास (उत्तीर्ण) न हो, तो सारे इम्तहान में पास नहीं होता। शायद कल तो आप यहाँ स्वयं ही आ जायें।

—— o ——

संबोधन पर्वोक्त, (४४८) ७ अप्रैल, १८९९

पूटाराम, वह पेशावरिया, उसकी औरत (स्त्री) और बच्चे (यह दोनों *मुरालीवाले* चले गये हुए थे), चाचाजी, बेबे (माताजी) और मैं लाहौर आ गये थे कल सायं को। अब यह पेशावरिया, उसकी औरत

---

* इन दिनों भगत धन्नारामजी अपनी वाणी की सिद्धि में बड़े प्रसिद्ध थे, जो कुछ शाप तथा वर आप किसी को देते थे वह शीघ्र पूरा हो जाया करता था। तीर्थरामजी को उनकी इस संकल्प सिद्धि से पूरा-पूरा परिचय था, इसलिए तीर्थरामजी उनसे अपने लिए उत्तम संकल्प की याचना करते हैं और उनकी वृत्ति को अपने हित की ओर प्रत्येक पत्र में प्रार्थना द्वारा आकर्षित करते हैं।

और घसे और यूटाराम अमृतसर चले गये हैं। वेवेजी की आँखें दिखाने गये थे। मगर साहब बीमार था। इस लिए आज इत्तफ़ाक़ (अवसर) दिखाने का नहीं हुआ। कल अगर वह साहब न आया, तो कहते थे कि उसकी जगह कोई और काम करेगा। हमारा रिज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। आपने मेरे पर सब तरह से खुश रहना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४६) १० अप्रैल, १८६२

मैं कल यहाँ पहुँच गया था। अयोध्यादास का अभी तक मेल नहीं हुआ। और कोई बात लिखने के योग्य इस वक्त तक नहीं हुई। आपने मुझ पर दयादृष्टि रखनी। अगर मासड़ (मौसा)जी का पत्र आया, तो मुझको सूचना देनी। चाचाजी के जाने की सूचना देनी। पता—आपका गुलाम, लाहौर, सूतरमंडी, गंदी गली, सरबदयाल ज़रगर (सुनार) की बैठक।

—— १० ——

बी० ए० श्रेणी में पुन प्रविष्ट होना

संबोधन पूर्वोक्त, (४५०) २ मई, १८६२

*आज मैं कालेज में प्रविष्ट हो गया हूँ। लाला अयोध्यादास को मैंने रुपये रखने दे दिये हैं। यह भी उसको कह दिया था कि उसकी पोथी

---

* इस पत्र से प्रतीत होता है कि तीर्थरामजी इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुए, जिससे पुन: बी० ए० में प्रविष्ट हो गये। सुना जाता है कि समान सप्लिमेन्ट नम्बरों के विचार से तीर्थराम जी अपने प्रान्त के विश्वविद्यालय में प्रथम थे पर दैवयोग से अंग्रेजी विषय में नियत नम्बरों से उनके कुछ नम्बर कम आये। इस वर्ष किसी न किसी निमित्त से अनेक विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में रह गए थे जैसा कि इसके बाद के पत्रों से स्पष्ट हो रहा है और विशेष करके योग्य और निपुण विद्यार्थी तो रह गये परन्तु निकृष्ट अथवा अयोग्य विद्यार्थी जिनके विषय में अध्यापकों को भी कोई आशा नहीं थी उत्तीर्ण हो गये थे।

आपको अभी तक नहीं पहुँची। इन्ट्रेंस का रीज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। आपकी लकड़ियाँ अभी बिकी हैं कि नहीं ? हमारे कालिज का जो हलवाई (झंडूमल) है उसने मुझको पहले भी कई बार बड़ी प्रीति से कहा था कि मैं रोटी उसके घर से खा लिया करूँ और आज पुनः उसने हाथ जोड़ कर कहा था। मैंने आज उसको कह दिया है कि "अच्छा खा लिया करूँगा।" दो तीन दिन खा कर देखूँगा, अगर उचित समझा, तो फिर भी खाता रहूँगा, नहीं तो छोड़ दूँगा।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (४५१) ५ मई, १८९२

आपका कृपापत्र इस समय तक कोई नहीं प्राप्त हुआ। क्या कारण है। आप जरूर मुझे पत्र लिखें। चाचाजी अभी गये हैं कि नहीं ? पूटाराम ने कब हरद्वार जाना है ? आपने कब यहाँ आना है। आपका गुलाम तीर्थराम, मुक़ाम लाहौर, सूतरमंडी, गंदी गली, सरयू अड़िया की बैठक।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (४५२) ८ मई, १८९२

आपका कृपापत्र इस हफ्ते (सप्ताह) कोई नहीं मिला। मैं परसों का उस आदमी (झंडूमल) के घर रोटी खाया करता हूँ। बड़ी प्रीति की रोटी होती है। जब आप आयेंगे तब अगर आपने यहाँ रोटी खाना अनुचित समझा तो मैं छोड़ दूँगा। मैं ख्याल करता हूँ कि आपका (मेरे विषय में) ऐसा संकल्प था, इसलिये इस तरह का इत्तफ़ाक़ (अवसर) बन गया। मैं इन्ट्रेंस का रिज़ल्ट (परिणाम) देखने गया था, वह किसी क़दर फटा हुआ था, और किसी क़दर साबित था। साबित हिस्से में मुझको सरदार नारायणसिंह का नाम नहीं मिला था। आप मुझे ज़रूर लिखें कि नारायणसिंह का क्या हाल है ?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४३) १० मई, १८६२

आज आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी खुशी हुई। मेरी उँगली को अब किसी क़िस्म (प्रकार) का दर्द नहीं होता। ज़ख्म भी लगभग सारा मिल गया (भर गया) है। मगर अभी मैंने नंगा नहीं किया। आप पत्र ज़रूर जल्दी लिखते रहा करें। लड़कियों का क्या हाल है ? सरदार नारायणसिंह का मुफ़स्सिल (सविस्तर) हाल लिखना।

—— o ——

बी० ए० में एक अति अयोग्य विद्यार्थी का अँग्रेज़ी में प्रथम निकलना

संबोधन पूर्वोक्त, (४४४) १२ मई, १८६२

आज एक पत्र आपका कालिज में मिला। दूसरा मकान पर मिला, निहायत बड़ी (अत्यंत) खुशी हुई। सरदार नारायणसिंह के पास हो जाने की निहायत बड़ी खुशी हुई है। उनको कहना कि मिशन कालिज में दाखिल हों। मैं आपको एक अजीब (अद्भुत) बात लिखता हूँ कि पहले इतना तो आपको किसी क़द्र मालूम ही है कि इस बार बी० ए० के इम्तहान में बहुत से होशियार (निपुण) लड़के अँग्रेज़ी में रह गये हैं। अब जौन-सा लड़का अँग्रेज़ी के मज़मून में प्रथम रहा है वह इतना अयोग्य (नालायक़) था कि अँग्रेज़ी का प्रोफ़ेसर उसे इम्तहान में कदापि भेजना नहीं चाहता था। सब लोग हैरान (विस्मित) हैं कि वह प्रथम क्योंकर रह गया ?

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४५) १४ मई, १८६२

दो तीन दिन का मेरे दायें कान में ज़रा ज़रा रेशा (बहता) है। अगर परसों सोमवार तक बिलकुल आराम हो गया तो ख़ैर, नहीं तो शायद परसों सायं की गाड़ी में आपके पास चला आऊँ। आपकी लड़कियाँ अगर मिल गई हों, तो बड़ी खुशी की बात है। मेरा ख़याल

आपके चरणों की तरफ़ रहता है। मेरा भाई यूटामल अगर परसों तक यहाँ आ गया तब मैं गुजराँवाले शायद न आऊँ।

—— o ——

तीर्थरामजी के विषय में युनीवर्स्टी में कहा सुनी

संबोधन पूर्वोक्त, (४५६) १८ मई, १८६२

आपका कृपापत्र मिला था। अत्यंत खुशी हुई। पिछले दो तीन दिन मेरे कान का दर्द कम हो गया था, मगर आज फिर ज्यादा है। अगर यही हाल रहा तो शायद कल परसों मैं आपके पास आ जाऊँ। मगर पक्के तौर पर आने की बायत नहीं लिख सकता। अगर आप भद्रकाली के मेले पर आ सकते हों, तो यही अच्छी बात हो। अब मेरा बहनाई यहाँ गवर्मेंट कालिज में शास्त्री पढ़ा करता है, प्राज्ञ का इम्तहान इस बार देगा। वह प्रति दिन चार पाँच मिनट मेरे पास हो जाया करता है। आज कहता था कि "अगर ज़रूरत हो तो मैं तुम्हारे मकान ही सो रहता हूँ। मगर मैं ने कहा दर्द बहुत बड़ा नहीं है। तुम अपने मकान हो आराम करना। सरदार नारायणसिंह अभी किताबें मुरलीवाला से लाया है कि नहीं? मैंने एक रीति से अपना सारा वृत्तांत लिखकर साहब को दिखा दिया था। यह परचों के पुनः देखे जाने की राय (सम्मति) नहीं देते। मगर साहब ने यूनिवर्सिटी में मेरी बाबत बहुत कहा था कि इसको (अर्थात् मुझे) रियायत मिल जानी चाहिये। पर उसकी कोई बात मानी नहीं गयी। आज यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) ने यह विज्ञापन दिया है कि जिन्होंने बी० ए०, या एम्० ए० पास किया हो और आयु उनकी २१ वर्ष से अधिक न हो और वह रियाज़ी (गणित) अथवा साइन्स (विज्ञान शास्त्र) में विलायत का एम्०, ए० पास करना चाहते हों, वे प्रार्थनापत्र भेजें। जिस का अधिकार सब से अधिक होगा, उसको

काफ़ी वज़ीफ़ा (छात्र-वेतन) देकर विलायत भेजा जायगा। और जब वह विलायत से पास करके आवे, उसको बड़ी ऊँची पदवी दी जायगी। अब अगर मैं इस बार पास हो जाता, तो मुझको यह वज़ीफ़ा अवश्य मिल जाना था। प्रथम मेरी आयु के विचार से, द्वितीय मेरे गणित शास्त्र में नम्बरों के कारण से, तृतीय मेरे आचरण की दृष्टि से। मगर अब क्या हो सकता है। आप दया रखा करें। गुरुदित्ता व जीवनसिंह को खुशी कहनी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वांक, (४५०) २५ मई, १८९२

कल सायं के सात बजे लक्ष्मणदास ने मुझे कहा था कि "आज नौ बजे की गाड़ी में गुजराँवाले पहुँच जाऊँगा।" फिर आज आधा मिनट मेरे मकान लद्धामल के साथ ठहरा था और कहने लगा कि वहाँ जाने का इरादा (विचार) अब हटा दिया है।

बात यह है कि यहाँ दो चिट्ठीरसाँ (डाकिया) इस बाज़ार में आया करते हैं। एक तो मुसल्मान बूटा नाम है। यह व्यक्ति जो पत्र मेरा इसे मिले, मुझे तत्काल दे जाया करता है। दूसरे का नाम बालकृष्ण है। यह व्यक्ति अमली (नशेबाज़) है। जो पत्र इसे मिले रायन कर छोड़ता है। मैंने आज तक उसका दर्शन तक भी कभी नहीं किया। औरों के पत्र भी यह बहुत कम देता है। मेरी मरज़ी (इच्छा) है कि उसे मिलकर समझाऊँ। कल बूटा ने आपके दो पत्र दिये थे, आज एक दिया है। सरदार तीर्थसिंह का पत्र मैं बोर्डिंग (खालसा) में दे आया हूँ। आपने तीन या चार अजीब आदमी इससे पहले देखे हैं। अब लाहौर में आन कर एक और अजीब साधु को देख जाओ। यह साधु दरया के किनारे ठहरे हुए हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५८) ११ मई, १८९२

मैं आराम से यहाँ पहुँच गया हूँ। अयोध्यादास को आज मिला था, लाला गोविंदराम की बैठक में जा कर। आपका पैगाम (संदेसा) दे दिया था। नारायणसिंह मुझे चादर दे गया है। कालिज में भी मिला था, उसके वजीफ़े का अभी पक्का पता नहीं मिला। मेरा ख्याल आपकी तरफ़ बहुत रहता है। आपको अभी कामिल सेहत (पूर्ण नीरोगता) आई है कि नहीं? किताब अभी कोई नहीं भेजी। और कोई बात लिखने के क़ाबिल (योग्य) जब होगी तो आपको सूचना दी जायगी। जीवनसिंह, गुरुदित्तामल और रामसिंहजी को खुशी।

—— ० ——

निर्धनता के कारण पाठ्य पुस्तकों का बेचना

संबोधन पूर्वोक्त, (४५९) २ जून, १८९२

—— ० ——

सरदार नारायणसिंह * न मुझे कल मिला था और न आज, न कालिज में, और न मकान पर। पंडित दीनदयाल, जिसने पुस्तकें खरीदने को मुझसे कहा था, मुझे इन तीन दिनों में नहीं मिला, यद्यपि मैंने सुना है कि यहाँ आया हुआ है। मेरा इरादा है कि कल तीन चार रुपये की पुस्तकों के नाम एक काग़ज़ पर लिखकर विज्ञापन की रीति से कालिज की एक दीवार पर लगा दूँ, ताकि वे पुस्तकें बिक जायें। हमारा गणित शास्त्र का प्रोफ़ेसर बीमार पड़ा हुआ था, दस बारह दिन के बाद

* सरदार नारायणसिंहजी रामनगर के निवासी थे। इन दिनों में वह गुसाईं तीर्थरामजी से गणित पढ़ते थे और उसी मिशन कालिज में पढ़ते थे। इसी कालिज से इन्होंने बी० ए० पास किया था और एम० ए० गवर्नमेंट कालिज से पास किया था। तत्पश्चात् बड़े काल तक वकालत की वृत्ति ग्रहण की। फिर इसे त्याग कर खालसा हाईस्कूल, अमृतसर की हैडमास्टरी (मुख्य अध्यापकता) स्वीकार की थी।

आज कालिज में आया था। हमारी श्रेणी का एक होशियार (चतुर) विद्यार्थी थोड़े दिनों के तप के बाद कल सायंकाल को कालवश हो गया। और सब तरह से कुशल है। आप मुझ पर दयादृष्टि रखनी। आप अपना हाल जल्दी जरूर लिखना।

—— o ——
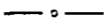
संबोधन पूर्वोक्त,   (४६०)   ५ जून, १८६२

आपने अपना हाल अभी तक क्यों नहीं लिखा? अब जरूर अपनी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल लिखो। किताबों का बाबत विज्ञापन मैंने अभी तक नहीं लगाया कालिज में, क्योंकि जिस जगह विज्ञापन लगाये जाया करते हैं, वह जगह सरकारी नोटिसों से लगभग सारी भरी हुई थी। सरदार नारायणसिंह मुझे पहले दिन के बिना फिर किसी दिन नहीं मिला। अगर हो सका तो आपने मेरा कुरता और पाजामा किसी के हाथ मुझे भेज देना। गुर्दित्तामल, जीवनसिंह और रामसिंहजी को खुशी।

—— o ——
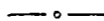
मकान दिलाने में झंडूमल की प्रशंसनीय सहायता

संबोधन पूर्वोक्त,   (४६१)   ८ जून, १८६२

आपकी तरफ से अब तक कोई कागज प्राप्त नहीं हुआ। आप जरूर पत्र लिखने की तकलीफ उठायें। अपनी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल लिखना।

जहाँ मैं रोटी खाया करता हूँ, उस घर के साथ एक और घर लाला गणपतिराय बैरिस्टर का है। वह घर लाला साहब का आजकल बिलकुल खाली पड़ा हुआ है। उनका विचार है कि इस घर को नये सिरे से बन वाया जाये। झंडूमल हलवाई ने (जिसके घर मैं रोटी खाया करता हूँ) बैरिस्टर साहब के भाई को मेरे लिये कहा था कि वह अपना यह मकान

मुझे (अर्थात् तीर्थराम को) इन गरमी के दिनों के लिये मुफ्त रहने को दे, और उसने मञ्जूर (स्वीकार) कर लिया था। मगर मैंने अभी तक यह मकान भीतर से नहीं देखा। बाहर से कोई बड़ा सुन्दर मालूम नहीं देता, और न बहुत बड़ा ही है। मेरे इस मकान से बहुत समीप है। गली में है, मगर यहाँ आसपास कोई बड़ा शोर गुल नहीं दिखाई देता।

यह बैरिस्टर साहब का भाई (लाला दुनीचंद) उनके काम का मुख़्तार है। एफ० ए० में मेरा सहपाठी था। बी० ए० की शिक्षा गवर्नमेंट कालिज में पाता रहा। इस वर्ष पास नहीं हुआ था, और फिर अब तक किसी कालिज में प्रविष्ट नहीं हुआ।

कड़ूमल को मैंने नहीं कहा था कि वह मेरे लिये लाला दुनीचंद० को कहे, मगर उसने स्वयं ऐसा कहा था, ताकि मुझे इन दो मास का किराया न देना पड़े। जब आप लिखेंगे तब मैं उस मकान में जाने की कोई सलाह बनाऊँगा। अभी कोई सलाह या विचार नहीं।

—०—

सम्बोधन पूर्वोक्त, (४६२) १० जून, १८९२

आपका कारड आज मिला। आपको नीरोगता न आने का हाल पढ़ कर बड़ा रञ्ज (दुःख) हुआ। आप जरूर यहाँ आ जायें, देर न करनी। चाचाजी का आज पत्र आया है कि उन्होंने मुझे आठ ८) रुपये भेजे हैं। मगर रुपये मुझे अभी तक नहीं मिले। और कोई नई बात अभी तक नहीं हुई।

—०—

निर्धन अवस्था के होते हुए भी सतोपवृत्ति वा तृप्ति

सम्बोधन पूर्वोक्त, (४६३) ११ जून, १८९२

आज एक मनुष्य ने हमारे प्रिंसिपल साहब को मेरे लिये प्रेषन ४३)

---

* यह लाला दुनीचंद वही हैं जो आजकल लाहौर में अपने भाई धनपतिराय की तरह बैरिस्टर हैं।

रुपये दिये हैं। साहब ने मुझको बुलाया था और कहने लगे कि यह ले लो। मैंने कहा कि किसने दिये हैं, वह कहने लगे कि हम नाम नहीं बतायेंगे। (मैं खयाल करता हूँ कि शायद वह अपनी गाँठ से ही दे रहे हों)। फिर मैंने कहा कि आधे इनमें से आप कालिज के कामों में खर्च कर दें और आधे मुझे दे दें। यह भी न माना। फिर मैंने कहा कि अच्छा। मिस्टर गिल्बर्टसन साहब जो हमें गणित पढ़ाते हैं और मेरी आधी फ़ीस देते हैं, उनको मैं व्यर्थ कष्ट नहीं देना चाहता, उनके बदले यह आधी फ़ीस इम्तहान तक मुझसे ले लो। वह कहने लगे कि इस बात का निर्णय गिल्बर्टसन साहब से करना होगा। सो मैंने रुपये लाकर लाला अयोध्या दास को दे दिये हैं। चाचाजी के रुपये अभी मुझको नहीं मिले। मुझे जुकाम उतरा हुआ है। आप अब जरूर ही यहाँ आ जायें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६३) १० बजे दिन, १२ जून, १८६२

इस समय मुझे आपका कार्ड मिला है, निहायत ही दर्जे का (अत्यंत) रंज (शोक) हुआ है। मैंने इसी वक्त बाबू रघुनाथसिंहजी की तरफ पत्र लिख दिया है, और शायद मैं खुद (स्वयं) कल आपके पास आ जाऊँ। परमेश्वर आपको जरूर इसी वक्त सेहत (स्वास्थ्य) दे। आज मैं इसलिए नहीं आया कि एक तो चाचाजी का मनीआर्डर आया हुआ है जो मुझे अभी तक नहीं मिला। और दूसरा साहब से आज रविवार के दिन छुट्टी नहीं ली जा सकती।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६४) १८ जून, १८६२

मैंने घास अयोध्यादास को दे दिये हैं। लाला बुलाकीराम भी उनके पास बैठा हुआ था। कैंची भी दे दी है। मकान अभी नहीं बदला। चाचाजी

की तरफ अब पत्र लिखूँगा । आनने अपना कुशलपत्र जरूर लिखते रहना। अगर आपको तकलीफ (कष्ट) न हो तो एक या दो पैसे की गाचनी (मुलतानी मट्टी) हमारे घर मुरलीवाले भेज देनी। उन्होंने मुझको कहा था।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६६) नया मकान लाहौर, २० जून, १८६२

आज मंझूमल मेरा असबाब (सामान) इस मकान में ले आया है, और मैं यहाँ आ गया हूँ। सरयू का किराया दे दिया है। परे मास में दो दिन कम थे। उन दो दिनों की मुहार काट ली है। और कैंची का दाम काट लिया है। इस हिसाब से एक रुपया और साढ़े नौ आने १॥-)॥ देने आये हैं । आपने अपना हाल जरूर लिखना और मुझे याद रखना। आपके चरणों की ओर खयाल रहता है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६७) २१ जून, १८६२

मैंने पिछले पत्र में आपको इस मकान का पता नहीं लिखा था, तब दर्योक्त नहीं किया था। अब आपको पता लिखता हूँ।

"लाहौर, मुहल्ला मोहलियाँ, गली रंगरेजाँ, मंझूमल भाटिया के द्वारा तीर्थराम गुसाईं को मिले।" आपने जरूर ही अपना हाल जल्दी लिखना। आपकी तरफ बड़ा खयाल रहता है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६८) २७ जून, १८६२

आपका एक कार्ड आज कालिज में मिला। निहायत बड़ी (अत्यंत) खुशी हुई। मैंने आपको पता मकान का लिख दिया हुआ है।

"मुकाम लाहौर, मुत्तसिल (समीप) बाजार सूतरमंडी, मुहल्ला मोहलियाँ, गली रंगरेजाँ, मार्फत मंझूमल भाटिया तीर्थराम गुसाईं।"

हमारा इस हफ्ते (शनिवार) अंग्रेज़ी का इम्तहान है। वर्षा यहाँ भी नहीं हुई। शायद इन दिनों हो जाय। आपने ज़रूर आ जाना। चाचाजी का पत्र मुझको आये देर हो गई है। सरदार नारायणसिंह को मिले भी चार-पाँच दिन हो गये हैं। मेरा दिमाग़ बड़ा थक जाता है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४६९)   २९ जून, १८९२

आज यहाँ थोड़ी सी वर्षा हुई है। आपने अब ज़रूर आ जाना, सरदार नारायणसिंह को मिले हफ़्ता (सप्ताह) हो गया होगा। आपने मुझे कालिज के पते पर पत्र लिखा करना, जल्दी पहुँचता है। आज कालिज से आते वार अनारकली में एक पैसा देकर दो सिरों वाला लड़का देखा है।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४७०)   २ जुलाई, १८९२

आज आपका कृपापत्र मिला, निहायत बड़ी (अत्यंत) खुशी हुई। आप अगर आज कल यहाँ आ जायें तो बड़ी खुशी की बात हो। आपके पित्त की हालत और आपकी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल पढ़ कर बड़ा आनंद हुआ। आपने ज़रूर आ जाना।

—— o ——

तीर्थरामजी का जनानी जूती पहनकर कालिज में जाना

संबोधन पूर्वोक्त,   (४७१)   ४ जुलाई, १८९२

कल रात को जब मैं दूध पीने गया, तो मेरी जूती का एक पैर शायद किसी की ठोकर से बदर रौ (गट्टर, नाली) में जा पड़ा। जब दूध पीकर जूती पहनने लगा तो एक पैर तो पहन लिया, दूसरा (नाली में), इधर उधर देखा, कहीं न मिला। हलवाई दीपक लेकर सारी बदर रौ

तिलारा कर आया, न मिला। दो लड़कों को पैसा देना करके कहा कि ढूंढो, उनको भी न मिला। पानी बड़े जोर से (नाली में) चल रहा था, शायद कहीं का कहीं चला गया होगा। मेरे मकान में एक पुरानी जनानी जूती पड़ी हुई थी। प्रातःकाल को एक अपनी जूती का पैर और एक उस पुरानी जनानी जूती का पैर पहनकर कालिज में गया। यह मेरी जूती अब अत्यन्त पुरानी हो गई थी। सो आज मैंने सवा नौ आने ॥~)॥ की एक नई जूती खरीद कर पहनी है। मेरा आपकी तरफ बड़ा खयाल रहता है। आपने मुझ पर सदा खुश रहना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४७२) ६ जुलाई, १८६२

कल मैंने सरदार नारायणसिंह की जमाअत (श्रेणी) के एक लड़के (गुरुदास) से, जो गुजराँवाले से आया हुआ है, पूछा था कि नारायणसिंह का क्या हाल है। यह कहने लगा कि "कोई दस ग्यारह दिन हुए हैं उसको खबर आई थी कि उसका वजीफ़ा (छात्रवृत्ति) नहीं लगा। इसलिए वह दयानंद ऐंग्लो वैदिक कालिज (आर्य कालिज) में जा दाखिल हुआ है।" मुझको सूचना इस बात की स्वयं उसने कदापि नहीं दी है। गुजराँवाले से भाई बूटाराम का पत्र भी आया था।

आप मुझे पत्र जरूर जल्दी लिखते रहा करें। मेरा खयाल आपके चरणों की तरफ सदा रहता है।

"ऐ कि हरगिज़ फ़रामुश न कुनम, हेच अज़ मा येह याद मे आयद"

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४७३) ८ जुलाई, १८६२

आपका पत्र आने देर क्यों हो जाती है? सरदार नारायणसिंह

मिला था। उसकी किताब जो लछमणदास लाया था वह अभी तक उसने ली नहीं थी। अब उसने माँगी थी। सो मैंने पहुँचा दी है।

इस मकान के जो मालिक हैं अर्थात् लाला गणपतिराय व दुनीचंद, उनकी माता कल कालवश हो गई थी। इसलिए उनका आदमी कल इस सारे मकान को खूब साफ करके छिनकाओ (पानी का छिड़कावो) कर गया था, और कह गया था कि यह स्वयं अब इस मकान को वरतेंगे और मुझको (तीर्थराम को) यहाँ से चला जाना पड़ेगा। मगर लाला दुनीचंद सायं के समय जब मुझे मिले थे तो कहने लगे कि "आप इस मकान में मुकीम (बसे) रहो, हम इस मकान को नहीं बरतेंगे। हमने तो केवल सबसे निचली मंजिल में एक दीया जलाय रखना है।" सो वह केवल दीवा यहाँ जला गये हुए हैं। इन दिनों गरमी अत्यंत पड़ती है। आप मुझे जरूर याद रखा करें।

—०—

संशोधन पूर्वोक्त,		(४७४)		११ जुलाई, १८९२

कल रात को यहाँ खूब वर्षा हुई थी। मगर अब हवा के बंद होने के कारण फिर हम्स (उमस) सा है। आज आपका एक पत्र कालिज में मिला है। निहायत दर्जे की (अत्यंत) खुशी हुई। हमारी छुट्टियों के मिलने की पक्की तारीख मालूम नहीं। आप आ जायें तो बड़ी अच्छी बात है। इस हफ्ते (शनिवार) हमारा रियाजी (गणित) का इम्तहान है। अगले हफ्ते अँग्रेजी का।

—०—

संशोधन पूर्वोक्त,		(४७५)		१३ जुलाई, १८९२

कल चाचाजी का पत्र आया था, राजी हैं। हमें छुट्टियाँ २९ तारीख माह हाल (जुलाई) से मिलेंगी। आप आ जायें तो बड़ी अच्छी बात हो। सरदार जीवनसिंह व गोविंदरामजी को खुशी।

—०—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७६) १९ जुलाई, १८६२

आपका कृपापत्र आये देर हो गई है। आप पत्र जल्दी लिखा करें। आपके न आने की क्या वजह (हेतु) है ?

——:०——

संबोधन पूर्वोक्त, (४७७) २१ जुलाई, १८६२

हमें २८ जुलाई वारबार से छुट्टियाँ मिलेंगी। मैं आशा करता हूँ कि वीर या शुक्रवार मैं आपके पास आ जाऊँगा। आज मैं लाला अयोध्यादास के पास आपकी घड़ी के लिए जाऊँगा। आपका पत्र अभी कोई नहीं मिला। मेरे लिए मकान तजवीज (प्रबंध) कर रखना। मुझे आज बड़ा रेशा (जुकाम) उतरा हुआ है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४७८) २५ जुलाई, १८६२

आपका शनिवार का कृपापत्र लिखा हुआ आज सोमवार कालिज में मिला। अत्यंत खुशी हुई। विदित हो कि मैं शनिवार सायं को लाला अयोध्यादास की ओर गया था, घड़ी के लिए। मगर वहाँ से मालूम हुआ कि वह उसी दिन जंडयाले चला गया था। और न लाला महेशदास ही आज तक मिला है। वह रात के आठ नौ बजे अपने मकान में आता है। और प्रातः छे बजे चला जाता है। इस वजह (कारण) से घड़ी की बाबत मुझको अभी तक कुछ मालूम नहीं हुआ।

मैं आज चरागदीन की तरफ़ गया था। वह कहने लगे कि नवलकिशोर के छापेखाने का रिसाला आतशक हमारे पास कोई नहीं, किन्तु छापाखाना अबु महम्मदी लखनऊ का एक रिसाला आतशक फ़ारसी जबान में हमारे पास है। जिसका दाम उन्होंने सवा आना -)। बताया, सो वह रिसाला मैंने अभी तक नहीं लिया। अगर आप लिखें तो ले आऊँ, अन्यथा खैर। साथ इसके मैंने एक दो और दुकानों में भी पूछा था,

उन्होंने भी यही कहा कि नवलकिशोर छापेखाने का यह रिसाला हमारे पास नहीं है। मेहरचंद की तरफ़ गया था, वह कहने लगा कि मेरे पास गोरखशतक तो नहीं, मगर गोरखनाथ-उत्पत्ति है। सो यह गोरखनाथ उत्पत्ति अगर आप कहें तो ले आऊँ, वरना न लाऊँ। आपने मेरे पर किसी तरह से खफ़ा न होना। मैं वीरवार शायद आ जाऊँगा।

—— ० ——

झड़ूमलजी की अमूल्य सहायता

संबोधन पूर्वोक्त, (४७९) १२ बजे दिन, ८ अक्तूबर, १८९२

मैं कल यहाँ पहुँच गया था। जिस मकान में मैं पहले रहता था, वह वर्षा के कारण गिर पड़ा था। परन्तु मेरा असबाब (सामान) झड़ूमल ने बचा लिया था। अभी तक कोई और मकान नहीं मिला। कल रात को झड़ूमल के घर पर सो रहा था। और रोटी भी उसी के घर खाता हूँ। बैठने के लिये लाला अयोध्यादास के मकान में आ जाता हूँ। अयोध्यादास ने जिस व्यक्ति को आपकी घड़ी दी हुई थी वह व्यक्ति बीमार है। और आपकी घड़ी दुरुस्त नहीं हुई।

—— ० ——

तीर्थरामजी का घर पर पढ़ाने का विचार

संबोधन पूर्वोक्त, (४८०) ८ अक्तूबर, १८९२

आपका कृपापत्र मिला, बड़ी खुशी हुई। आज हमारा कालिज खुला, पर किसी प्रोफ़ेसर के आगे यह ज़िक्र (वर्णन) करने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं मिला। अलबत्ता बहादुरचंद * मिला था, कहता था कि हीरामंडी में राजा ध्यानसिंह की हवेली के समीप एक बाबू लद्धाराम

* बहादुरचंदजी उन दिनों में एम्० ए० में पढ़ते थे जब तीर्थरामजी बी० ए० में थे। अब यह महाराज वकील हैं।

पेग्जैक्टिव इन्जीनियर हैं, उनके लड़के को अगर दो घंटे पढ़ाया, तो पन्द्रह रुपये मासिक मिला करेंगे। मगर यह कहता था कि कल रविवार में तुमको उनके पास ले जाऊँगा। मैंने स्वीकार कर लिया था। अब आगे देखिये, क्योंकि आपका मेरी तरफ ख्याल है, मैं आशा करता हूँ कि अवश्य कोई न कोई अच्छा इत्तफ़ाक़ (अवसर) बन जायगा। अगर आप किसी दिन यहाँ हो आयें तो बड़ी खुशी हो। पंडित देवकीनन्दन भी कल मिला था।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४८१) १० अक्तूबर, १८६२

कल लाला अयोध्यादास ने मुझे मकान किराया पर ले दिया था। यह मकान अयोध्यादास के मकान के समीप है और गुमटी बाजार के सिरे पर जो बहुत बड़ी सफ़ेद सी हवेली है उसके पीछे की तरफ़ वाक़्या है। और मालिक इस मकान का भी सरदार स्वरूपसिंह साहब है। किराया डेढ़ रुपया माहवार। पता यह है—"लाहौर, गुमटी बाजार, कन्हैयामल रईसाले के द्वारा-तीर्थराम गुसाईं को मिले।" आपने मुझे पत्र जल्दी लिखना। रामसिंहजी को मत्था टेकना।

—— • ——

बाजार के तन्दूर से रोटी खाना

संबोधन पूर्वोक्त, (४८२) १२ अक्तूबर, १८६२

आपका फ़रमान कोई नहीं मिला। अब कँवरमल की घरवाली (धर्मपत्नी) कहीं गयी हुई है, इसलिये मैं रोटी तन्दूर (दुकान) से खाया करता हूँ। अभी तक कोई पढ़नेवाला लड़का नहीं मिला। जब कालिज खुलेगा, किसी प्रोफ़ेसर को कहूँगा। शायद वह कोई इत्तफ़ाक़ बना दे। आप सब हाल लिखें। सरदार साहब को मत्था टेकना।

—— ——

विद्यार्थियों को पढ़ाने से तीर्थरामजी को प्रोफ़ेसर का रोकना

संबोधन पूर्वोक्त, (४८३) ८ बजे रात, १७ अक्तूबर, १८६२

वह आदमी जो गुजराँवाले गया था और जिसका नाम शायद निहालसिंह है, मिला था, बीमार रहा है, और उसके घर बीमारी है। बहादुरचंद मिला था, कहने लगा कि कल मेरा कोई रिश्तेदार (संबंधी) आया हुआ था, इसलिए मैं तुम्हारी तरफ़ नहीं आ सका। आज सायं को ज़रूर आऊँगा और तुम्हें बाबू लद्धाराम के घर ले आऊँगा। मगर आज भी नहीं आया। मैंने प्रोफ़ेसरों को कहा था, वह सबके सब कहने लगे, अब इम्तहान समीप आया है। अब अपना काल व्यर्थ न खो, और जिस तरह हो सके ऐसा काम न कर। तेरा समय अब दस पंद्रह रुपये से अधिक प्रियतम है। इत्यादि।

अस्तु, महाराजजी ! मैं हर हालत में खुश हूँ और आपने मुझ पर सर्व प्रकार से राज़ी रहना। जैसा होगा, निबाह लूँगा।

अब मैं अति शोकजनक बातें लिखने लगा हूँ कि इन छुट्टियों में मेरे दो दरस्त (मित्र) मर गये हैं। एक था लाला मुलरहमान, इसने इस बार बी० ए० पास किया था; दूसरा लाला शिवराम* जिससे आप भी परिचित थे और जो मेरा अत्यन्त कृपालु था। उनके वंश में अब कोई पुरुष नहीं रहा, सब विधवा हो गयी हैं। परमेश्वर अपनी दया करें। आप पत्र ज़रूर जल्दी लिखना।

संबोधन पूर्वोक्त, (४८४) ४ बजे सायं, १६ अक्तूबर, १८६२

आपका कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई। आज हमारे कालिज के शास्त्री के प्रोफ़ेसर पंडितजी ने मुझको कहा था कि अगर तुमको मेंबर

---

* यह लाला शिवराम वही हैं जो मिशन कालेज स्कॉटिश हाउस के क्यूरेटर थे और जिनका वर्णन पहले भी हुआ है।

(स्वीकार) हो तो भाई नंदगोपाल के हाँ एक लड़के ने मिडल का इम्तहान देना है, उसको पढ़ा आया करो। आठ रुपये मासिक मिलेंगे। वक्त डेढ़ घंटा १½ बताया। अब महाराजजी ! आपने बहुत जल्दी लिखना कि मंजूर करूँ या न करूँ। पंडितजी को मैंने कहा था कि सोच कर जवाब दूँगा। और अपने दिल में मैंने यह इरादा (निश्चय) किया है कि अगर इस तनख्वाह (वेतन) पर घंटे से अधिक समय मांगेंगे तो नामंजूर करूँगा। अन्यथा मंजूर कर लूँगा। और यह मेरा इरादा भी बिलकुल आपकी मरजी के वश में है। जिस तरह आपकी राय (सम्मति) होगी, वैसा करूँगा। मेरे भाई साहबजी को कहना कि लाहौर भी आवें। सरदार रामसिंहजी को फतेह।

कालिज के पंडित वेदान्ती

संबोधन पूर्वोक्त, (४८२) २१ अक्तूबर, १८९२

मैंने पत्र तो पहले लिखना था। मगर देर इसलिये हो गयी है कि मैंने कहा कि कोई ठीक परिणाम निकल ले, तो पत्र लिखूँ। अब बात यह है कि अभी कोई पढ़ाने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) मनशा दिखाई नहीं देता। आपने मुझ पर सदा खुश (प्रसन्न) रहना। मैं हर हालत में खुश हूँ। आगे जैसा होगा, वैसा निवेदन कर दूँगा। आपने इमारत शुरू कराई या नहीं। मेरा आपके चरणों की तरफ ख्याल रहता है।

हमारे कालिज के पंडित* साहब पक्के दर्जे के वेदांती हैं। उनको मैंने अपना निश्चय बताया था, इसलिये मुझ पर अति प्रसन्न हैं।

---

* पंडितजी से अभिप्राय तीर्थरामजी का पंडित गणेशदत्त से हो सकता है क्योंकि उस समय कालिज में वही पंडित थे।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४८६)　　　　१० अक्तूबर, १८९२

बहादुरपदवाले काम बनने की कोई आशा नहीं। मगर मैं भाई नंदगोपालजी के घर तीन चार दिन का पढ़ाने जाया करता हूँ। मैं एक घंटे में उस लड़के से सारा काम बहुत अच्छी तरह करा आया करता हूँ। यह लड़का चीफ्स कालिज में पढ़ता है। और इसने अब के मिडल का इम्तहान देना है। इसका पिता तो जीवित नहीं है, मगर इसका बड़ा भाई मुख़तार कार है। और मुझे अभी उसके बड़े भाई से मिलने का इत्तफ़ाक़ (समागम) नहीं हुआ। पंडितजी की ज़बान की बात है कि वह आठ रुपये मासिक दिया करेंगे। साथ इसके यह लड़का तो मुझे यह भी कहता था कि "तुम हमारे मकान में आन रहो।" मैंने वहाँ जा रहने या न जा रहने की बाबत कोई सलाह नहीं की। जैसा आप हुक्म (आदेश) देंगे किया जायगा। आपने सारा हाल लिखना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४८७)　　　　२ नवंबर, १८९२

आपका कृपापत्र आये बड़ी देर हो गई है। आपने इमारत कब की शुरू कराई हुई है, और आपको फ़राग़त (फ़ुरसत या छुट्टी) कब होगी? आपकी घड़ी तो तीन दिनों तक ठीक हो जायगी। मुश्किल से बची है। क्योंकि जिस मनुष्य के पास थी, उसकी बाक़ी सब घड़ियाँ चोरी हो गई हैं। जिस व्यक्ति को मैं पढ़ाने जाता हूँ, उसका बड़ा भाई अभी मुझको नहीं मिला। आपने कृपापत्र ज़रूर जल्दी लिखना। सरदार रामसिंहजी को मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४८८)　　　　६ नवंबर, १८९२

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप वहाँ का सारा हाल ज़रूर लिखें। आपकी घड़ी अभी नहीं बनी। दूसरी और कोई बात भी

लिखने योग्य अभी तक नहीं हुई। मैंने कल या परसों सुना था कि वह बरकतराय हाफिज़ाबाद का लड़का जो देवसमाज में दाखिल हो गया था और पढ़ना छोड़ बैठा था उसको अग्निहोत्री ने भी मार कर निकाल दिया था, और अब वह मर गया हुआ है।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (४८९) ७ नवंबर, १८९२

आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत खुशी हुई। चूँकि लिफाफा के ऊपर पता अच्छी तरह से नहीं लिखा हुआ था, इसलिए यह कार्ड पहले किसी और को चला गया था, अब फिर बहुत जगह से फिर कर मुझको मिला है।

यह पुराना पट्टी का कोट मैं पहन कर कालिज में जाया करता हूँ। क्योंकि नया कोट बड़ा गरम है, यहाँ तकलीफ़ देता है।

जिसको मैं पढ़ाया करता हूँ, उस लड़के का बड़ा भाई (सरदार दानसिंह) मुझे आज मिला था। निहायत बड़ी (अत्यंत) मुहब्बत (प्रेम) से पेश आया। और कहता था कि "अगर आप यहाँ आ जायें तो हम दो कमरे खाली कर देते हैं।" मैंने कहा कि "अच्छा, देखा जायगा।" अब जैसा आप लिखेंगे किया जायगा। यह दानसिंह गवर्नमेंट कालिज में पढ़ता है और इस बार इसने भी बी० ए० का इम्तहान देना है।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (४९०) ११ नवंबर, १८९२

आपका एक पत्र कल सायं को मिला था। अत्यंत खुशी हुई। एक पत्र सरदार रामसिंहजी के हाथों का लिखा हुआ भी मिला था। आप ठेके पर काम करते रहे हैं या दूसरी तरह? आप कृपापत्र बाहर *भेजते रहा करें। लाला अयोध्यादास ने १४ माह हाल (नवंबर) को* जम्मू जाना है लाला गोविंदराम साहब के साथ। वहाँ राजा साहब का

कोई मुक़द्दमा है। और कहता था कि यहाँ से फ़ौरन ही वापिस चले आना है। घड़ी अभी तैयार नहीं हुई।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६१) ११ नवबर, १८९२

इन दिनों हर शनिवार हमारे कालिज के डॉक्टर साहब इल्मे-फ़िज़ि-ओलोजी (शरीररचना-विज्ञान) पर एक लेक्चर दिया करते हैं। और लगभग सारे लड़के सुना करते हैं। मैं भी सुना करता हूँ। इल्मे-फ़िज़िओलोजी में देह के अंग व इंद्रियों के कामों की बेहस (विचार) है। और यह इल्म (विद्या) जैसा कि अंग्रेज़ी किताबों में है, परले दर्जे का दिलचस्प और लाभदायक है। आपकी इमारत कब ख़तम होगी? और आप यहाँ कब आयेंगे? अब हमारे सिमाही इम्तहान शुरू होने हैं। २४ माह नवंबर तक होते रहेंगे। उस वक़्त तक तो मैं इसी मकान में रहूँगा। फिर शायद आप भी यहाँ आ जायेंगे, और आपकी सलाह के साथ उन सरदारों के मकान चला जाऊँगा। आप मुझे ज़रूर जल्दी अपना सारा हाल लिखते रहा करें। मुरलीवाले का हाल भी लिखना। सरदार रामसिंहजी को नमस्कार।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६२) १६ नवंबर, १८९२

कल से लेकर इस महीने की २५ तारीख़ तक हमारे कालिज के इम्तहान होते रहेंगे। इनमें से २१, २२ और २५ तारीख़ को मेरे लिये हुए मज़मूनों (विषयों) का इम्तहान है। बाक़ी के दिन मुझे मानों छुट्टी होगी।

आप यहाँ का सारा हाल लिखें। लाला अयोध्यादास जम्मू से हो आया है। मगर मुझे मिले हुए बड़े दिन हो गये हैं। कहता था कि आपकी घड़ी तैयार है। मगर मैंने नहीं देखी।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९३) २० नवंबर, १८९२

आप मुझे कृपापत्र जरूर भेजें। सारा हाल लिखना।

आजकल हमारा सिमाही इम्तहान हो रहा है। हमारे गाँव के पढ़ाने-वाले मौलवी साहब यहाँ आये हुए थे। मुझे भी मिले थे। आज चले गये हैं। और कोई बात लिखने योग्य अभी नहीं हुई। इस वक्त दीवान लक्ष्मणदास मिला है। बड़ी खुशी हुई।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९४) २४ नवंबर, १८९२

मैं आशा करता हूँ कि आपका मकान अब तैयार हो गया होगा। और आप आज या कल यहाँ आ जायेंगे। आपने देरी न लगानी। मैं इन दिनों बीमार रहा हूँ। छाती पर रेशा पड़वा था। मगर अब बहुत आराम है। आपने आती वार मास्टर मंगूलालजी साहब का "खुलासा-उल-हिसाब यमन इल" खरीद लाना। शायद रलाराम की दुकान से मिल जाय। यह बस लड़के के लिए है। लक्ष्मणदास आया करता है।

हमारा इम्तहान कल खतम हो जायेगा। पंडित देवकीनंदन मिला था उसका मकान मेरे पास ही है।

—— ०:——

संबोधन-पूर्वोक्त, (४९५) २६ नवंबर, १८—

आज आपका कृपापत्र मिला। अत्यन्त खुशी हुई। सरदार ने बड़े खुशखत हरफों में लिखा हुआ था। मैं देखकर बड़ा ही हुआ था। लक्ष्मणदास ने भी तशकिरा (चर्चा) किया था कि रामसिंह ने आपको हमारत के काम में बहुत सहायता दी है। मेरी नमस्कार कह देनी। अब मुझे बिलकुल सेहत है, और कोई हाल योग्य अभी नहीं हुआ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९६) ६½ बजे दिन, १० नवंबर, १८९२

इस बार मुझे पत्र लिखने में देरी हो गई है। कारण यह था कि मैंने कहा आप मेरा पत्र यहाँ पहुँचने से पहले ही यहाँ आ जायेंगे। पर आप अभी तक आये नहीं। लाला कण्णचंद मिला था, कहता था कि भगतजी को मेरी तरफ से मकान तैयार हो जाने की बहुत बड़ी मुबारकबाद लिख देनी। अगर तकलीफ़ न हो, तो मास्टर चंदूलालजी के हिसाब की किताब ले आनी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९७) १ दिसंबर, १८९२

मैं आपका बड़ा ही इंतजार कर रहा हूँ। आप अभी तक आये क्यों नहीं ? आपने पत्र भी लिखने में बड़ी देर लगाई हुई है। वह भाई सुदर्शन, जिसको मैं पढ़ाया करता हूँ, आज गुजरांवाले एक बरात में गया है। मुझे पढ़ाते महीना (मास) तो हो गया है, मगर अभी तनख्वाह (वेतन) नहीं मिली। उसके बड़े भाई साहब से मिलने का इत्तफ़ाक नहीं हुआ। और अब वह सुदर्शन कहता था कि बरात से आकर रुपये दिला दूँगा। आपको अगर तकलीफ़ न हो तो आप मास्टर साहब का "खुलासा उल-हिसाब-मय-हल" लेते आना। मेरा भाई गुरुदास किसी जगह गया हुआ है। मुलाकात नहीं है। चाचाजी का पत्र आया था।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९८) ६ दिसंबर, १८९२

यहाँ सब तरह से खैरियत (कुशल) है और आपकी कुशल चाहता हूँ। आपको इंतज़ार है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९९) ७ दिसंबर, १८९२

आपका कृपापत्र भाई साहब के हाथों का लिखा हुआ मिला। अत्यंत

खुशी हुई। वह किताब मास्टर बंसीलालजी की सहित इस के जरूर ले आनी। वह लड़का गुजराँवाला से नहीं आया।

संबोधन पूर्वोक्त, (४००) ९ दिसंबर, १८९२

आज मासड़ (मौसा) जी का हाँसी से पत्र आया है। लिखा है कि बंसीधर पहली दिसंबर को हाँसी से रवाना हुआ था और उसने पेशावर का टिकट लिया था, मगर सात दिसंबर को उन्हें तार पहुँची है कि "बंसीधर दुपहर के वक्त मर गया है" तार भेजनेवाले का यह पता लिखा है "गुरुदित्तसिंह, गुजराँवाला।" मासड़ साहब अजब हैरानी में हैं, उन्होंने मुझे इस बात का पता लगाने के लिए लिखा है। सो पहले तो मेरा यह इरादा था कि गुजराँवाले मैं स्वयं चला आऊँ। पर अब इसलिए नहीं आया कि मेरी राय (सम्मति) में यह तार ग़लत मालूम होती है। अगर आप वहाँ तार बाबू से अच्छी तरह सुराग़ (पता) लगवाकर मुझे बहुत जल्दी लिखें या सीधा मासड़जी ही की तरफ़ सारा हाल लिख दें तो अत्यंत कृपा होगी। आपको तकलीफ़ तो होगी। मगर यह काम बहुत जल्दी करनेवाला है। आपने इस बात का पता लगाकर यहाँ ही चले आना। लेखक, आपका नौकर।

संबोधन पूर्वोक्त, (४०१) १६ दिसम्बर, १८९२

जिस दिन आप गये थे, उससे अगले दिन लाला कृष्णचंद साहब आया था, कहता था कि "मैं उनको भोजन कहने आया हूँ।" मगर आप यहाँ से चले गये हुए थे। फिर सरदार रामसिंहजी का पत्र मिला था। उसका मज़मून आपने उनसे पूछ लेना। फिर लक्ष्मणदास मेरे पास आया था, कहता था कि "मैंने अपने भाई की फ़तूही (जाकट) के जेब में से एक नोट पचास या उससे ज़्यादा रुपये का लिया है,

और चालीस के लगभग नक़द रुपये लिये हैं और सूचना कर दी है, साथ इसके आज ही चला जाऊँगा।' रात के समय लद्धामल के साथ मेरे मकान आया और कहने लगा कि अब आठ बजे की गाड़ी जाता हूँ। मैंने कहा कि प्रातःकाल तक ठहर जाओ, और लद्धामल ने भी कहा, मगर उसने एक न मानी। और एक रुपया १) आपके लिए मुझको देकर र वाना हो गया। और जल्दी में तीन किताबें (गुलज़ारे-मानी, विचार-माला, मुसद्दसे आरिफ़) भी यहाँ छोड़ गया। इसके बाद मुझको आपका पत्र मिला। फिर मैं उसके भाई को मिला। उससे मालूम हुआ कि उसके भाई ने उसे बड़ा रोका था, यहाँ तक कि उसके गरम कपड़े भी उसे नहीं दिये थे। मगर लछमणदास गरम कपड़ा के बिना ही चला गया।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४००) १७ दिसंबर, १८९२

लाला सोहनामल फिर मिला था। उससे मालूम हुआ कि लछमणदास एक सौ रुपये का नोट और चालीस रुपये नक़द ले गया है। सरदार रामसिंहजी को मेरी नमस्कार। आपने मुझे कृपापत्र ज़रूर जल्दी भेजते रहना। हमें अगले शनिवार से बड़े दिन की दस छुट्टियाँ मिलेंगी। आपने यहाँ ज़रूर आ जाना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४०१) १९ दिसंबर, १८९२

लाला कन्याचंद साहब मिले थे, कहते थे कि कल हमारे मुहकमे की पेशी है। इसलिए मैं बड़ा मशगूल (प्रवृत्त) हूँ। और भगत साहब का जो एक पत्र आया था, उसका उत्तर नहीं लिख सकता। आप मेरी तरफ से बड़ी हलीमी (अधीनता व नम्रता) के साथ उनको लिख दो कि "अभी कोई जगह हमारे दफ्तर में खाली नहीं है। वरना (अन्यथा) मेरी तरफ से किसी क़िस्म (प्रकार) का दरेग़ (कमी व कसर) नहीं।

साथ इसके यह कि अगर यह (रामसिंहजी) हमारे दफ्तर का काम जानते हों, तो उनके लिए बड़ी जल्दी कोई तजवीज़ हो सकती है। और चूँकि यह हमारे दफ्तर का काम नहीं जानते, इसलिए उनकी बाबत किसी अफ़सर को कहने में मन ज़रा कोताही (मुज़क) करता है।" मेरी तरफ़ से सरदार रामसिंहजी को नमस्कार। आप कृपापत्र जल्दी भेजें बल्कि स्वयं ही आ जायें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०४) २१ दिसंबर, १८६२

न आप ही आये हैं और न आपका पत्र ही आया है। हमें आज छुट्टियाँ मिल जायेंगी। यह पत्र लिखने के बाद आपका कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०५) ६ बजे रात, २१ दिसंबर, १८६२

आपका कृपापत्र आज प्रातः मिला था। मैं लाला कृष्णचंद्र के हाँ गया था। उनसे मालूम हुआ कि वह आपको रायसाहब के विषय पहले ही लिख चुके हैं कि वह ८ या ६ जनवरी को आयेंगे। लाला अयोध्यादास बहुत दिनों का जंडियाले गया हुआ है। आपने मकान का काम खतम कराते ही आ जाना।

—— ० ——

तीर्थरामजी का एक सहपाठी को पढ़ाना

संबोधन पूर्वोक्त, (५०६) ११ दिसम्बर, १८६२

मेरा बड़ा ही जी (चित्त) आपके दर्शन करने को चाहता है। चुनाँचि मैंने कल इरादा किया था कि एक रात के लिये गुजराँवाले हो ही आऊँ। मगर चूँकि सरदार सुदर्शसिंह का इम्तहान नज़दीक है, उसने आने नहीं दिया, बल्कि कहता है कि कल से लेकर तीन रातें

उसी के मकान पर सोया करूँ, ताकि उसे इम्तहान के दिनों में हर तरह से दिलेरी (उत्साह) और मदद रहे। साथ इसके अब हमारी जमाअत (कक्षा) के एक * विद्यार्थी ने मुझसे गणित पढ़ना आरम्भ किया है, पर वेतन की बाबत न मैंने कोई बात कही है न उसने ही। पर यह मनुष्य बड़ा ही अच्छा है। उपकार को जाननेवाला है। आपने शीघ्र मुझे अपना हाल लिखना। आप मुझ पर दया रखनी।

—— ० ——

सन् १८९३ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े उन्नीस वर्ष के लगभग थी)

सहपाठी से जरूरतों की पूर्ति का विश्वास

संबोधन पूर्वोक्त, (४०७) २ जनवरी, १८९३

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त खुशी हुई। सरदार सुन्दरसिंह का इम्तहान थोड़े दिनों तक समाप्त हो जायेगा। जिस सहपाठी को मैं गणित पढ़ाया करता हूँ, वह मेरे पढ़ाने से अत्यंत खुश है। और कम से कम वह इतना जरूर दे दिया करेगा कि जिससे मेरी सारी जरूरतें (दूध, किराया इत्यादि) पूरी हो जायें, और चाहे कितनी पुस्तकें अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में खरीद लूँ।

साथ इसके सरदार सुन्दरसिंह मुझे कहता है कि मैं उनके मकान पर रहूँ। अस्तु, जब आप यहाँ पदार्पण करेंगे, तो जैसा आप कहेंगे, किया जायेगा। मैंने आपका जिक्र (चर्चा) इस अपने सहपाठी से किया था। यह आपके दर्शनों की जिज्ञासा रखता है।

—— ० ——

* सुना जाता है कि यह विद्यार्थी जो तीर्थरामजी का सहपाठी था और उन दिनों उनसे पढ़ा करता था लाला ज्वालासहाय अग्रवाल वैश्य था। आजकल यह लाला साहब फीरोजपुर में वकील हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (४०८) ७ जनवरी, १८६१

आपका कृपापत्र मिला। निहायत दर्जे की अर्थात् अत्यन्त खुशी हुई। आज सरदार सुन्दरसिंह का इम्तहान खतम हो गया है। और शायद कल से मैं उनसे विदा हो जाऊँगा। मैं उनके मकान नहीं चला गया। और अभी वहाँ जाकर रहने का इरादा भी नहीं है। यद्यपि उनकी तरफ से मुझे कोई रोक नहीं। आपने मुझ पर कृपादृष्टि रखनी। मैं आशा करता हूँ कि आप अब बहुत जल्दी यहाँ पदार्पण करेंगे। अगर हो सका तो आपने मजजाक को उर्दू की तीसरी किताब भेज देनी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४०९) प्रातः, ९ जनवरी, १८६१

आपका कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई। मैं आपका पत्र देखते ही लाला कृष्णचंद की तरफ गया। उनसे मालूम हुआ कि उन्हें रायसाहब का पक्के तौर पर पत्र अभी नहीं आया। मगर पत्र के बहुत जल्दी आने की इंतजार है। जब पत्र आयेगा, आपको लिख देंगे। अगर पत्र आपको आ गया, तो आप सरदार रामसिंहजी को साथ ही ले आना। अगर न आया तो सरदार रामसिंहजी को पहले (११ तारीख को) भेज देना। उनके मुकद्दमे का हुक्म अभी नहीं सुनाया गया। मैं अब अपनी तरफ से पूछता हूँ कि अगर आप राय साहब से पहले यहाँ आ जायें तो क्या हर्ज है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१०) ११ जनवरी, १८६१

आज राय साहब आ गये हैं। रविवार तक यहाँ रहेंगे। आप अब यहाँ जरूर आ जायें।

—— ० ——

अपने अध्यापकों के सम्मान की चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त, (४११) ८ बजे रात, १९ जनवरी, १८९१

आज लाला कृष्णचन्दजी मिले थे। यह कहते थे कि उनके साहब ने उन्हें आज कहा था कि उसके लड़के के लिए उस्ताद निःसंदेह मँगा दें। मगर वह उस्ताद लायक (योग्य) हो, जो उस लड़के को उर्दू-भाषा अंग्रेजी द्वारा अच्छी तरह से पढ़ा सके। कल प्रातः हमारे दाखिले * लिये जाते हैं। मैंने तीस ३०) रुपये लाला अयोध्यादास से उधार ले लिये हैं। अगर आप मेरी बाबत कहीं ज़िक्र (चर्चा) करें, तो यह ख़याल रखना कि मेरे उस्तादों (अध्यापकों) की ओर कोई बुरा संकेत न हो जाय, बल्कि उनकी अत्यन्त भारी कीर्ति वर्णन हो। मैं उन जैसा संसार में किसी अन्य को योग्य नहीं समझता।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१२) २१ जनवरी, १८९१

हमारे दाखिले भेजे गये हैं। लाला ज्वालाप्रसाद परसों का आ गया हुआ है। आज सरदार निहालसिंहजी मिले थे, अत्यंत खुशी के साथ। अब रोटी मैं आज से लाला ज्वालाप्रसाद के घर खाता हूँ। पण्डित देवकीप्रसाद राजी हैं। आपने कृपापत्र जल्दी भेजना। वहाँ के सारे हालात से सूचना देनी।

—— ०: ——

गणित-शास्त्र के प्रोफेसर की सहायता और तीर्थरामजी की धन से उदारता का उदाहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (४१३) २३ जनवरी, १८९१

आज आपका कृपापत्र कालिज जाते जाते मिला, अति हर्ष हुआ।

* बी॰ ए॰ की पुनः परीक्षा के दाखिल (भरती-शुल्क) से यहाँ अभिप्राय है।

भेजनेवाले हैं। इस पत्र में आपके दर्शन की बड़ी अभिलाषा जाहिर की हुई है। हम अभी उसी मकान में हैं। आपने कृपापत्र भेजते रहना और सब तरह से खैरियत (कुशल) है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५१७) ६ फ़रवरी, १८६१

आज हम बोर्डिंग में नहीं गये। वीरवार जाने का विचार है। पंडित देवकीप्रसाद को कह दिया था कि यहाँ साहब को पढ़ा आया करे। आपने कृपापत्र जरूर जल्दी भेजते रहना। सारा हाल लिखना।

—— ० ——

तीर्थरामजी को झंडूमल का अधिक ध्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (५१८) ७ फ़रवरी, १८६१

आज हमारे प्रोफेसर* साहब ने मुझे वह पुस्तक ले दी है, जो मैंने उन्हें कही थी। साथ इनके उन्होंने मुझे एक मनुष्य (लाला चंदूलाल साहब) से पढ़ने के लिये वह पुस्तक † ले दी है जो भारतवर्ष में गणित शास्त्र के सूर्य ने लिखी है। इस पुस्तक की प्रस्तावना इंग्लैण्ड के एक गणित-शास्त्र के निपुण वेत्ता ने लिखी है। उस प्रस्तावना में हमारे देश के पुराने ज्ञान तथा कला कौशल की इतनी उपमा की है कि जिसका कोई अन्त नहीं। आप मुझे लिखते रहा करें।

अगर आपको कष्ट न हो, तो झंडूमल के लिये एक थाल बनवा छोड़ना।

—— ० ——

* प्रोफ़ेसर से तात्पर्य गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर गिल्बर्टसन साहब से है।

† यह पुस्तक "मैक्सिमा ऐंड मिनिमा" (Maxima and Minima) थी जो गणित-शास्त्र के प्रसिद्ध सूर्य प्रोफ़ेसर रामचन्द्र ने लिखी थी।

लाला झंडूमल हलवाई

लाहौर १९१०

L. JHANDU MALL HALWAI

Lahore 1910

चोरी और दूसरों की हमदर्दी (सहानुभूति)

संबोधन पूर्वोक्त, (५१६) १० फरवरी, १८९३

आपके दोनों कृपापत्र आज मिले, अत्यंत खुशी हुई। चाचाजी का पत्र भी आज मिला, बोर्डिंग में अभी तक जाने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं मिला। शायद आज चले जायें। परसों रात को गुमटी बाज़ार वाले मकान से मेरा नुकसान हो गया है। एक लिहाफ़ व तोशक, एक थाली, गड़वी और कौल [कटोरा] चोर अन्दरे (ताले) तोड़कर ले गये हैं। जो कपड़ों का जोड़ा धोना देने के लिये बिस्तरे में रखा हुआ था, वह भी ले गये हैं। पुस्तकें सब बच रही हैं। लाला ज्वालाप्रसाद और झंडूमल* कहते हैं कि "गुसाइजी, किंचित् भ्रम न करो, आपकी सब ज़रूरियात (ज़रूरतें) हम पूरी करते जायेंगे। कहते हैं कि हम नये वस्त्र सिलवा देंगे।" महाराजजी! आपने भ्रम न करना। मुझ पर खुश (प्रसन्न)

---

* लाला झंडूमल एक मिशन कालिज का हलवाई था। इसने तीर्थरामजी की उनके अध्ययन काल में तन मन धन से सहायता की। तीर्थरामजी के आगे के पत्रों से स्पष्ट होता है कि यदि किसी ने अपना स्वार्थ छोड़कर तथा बिना शारीरिक सम्बन्ध के होने पर भी केवल सहानुभूति तथा धर्म और निष्कपट प्रेम से तीर्थरामजी की (उनकी अत्यन्त निर्धन, दीन और तंग अवस्था में) सर्व प्रकार से सहायता की, तो वह यह झंडूमल हलवाई था। इसने उनको अपना मकान रहने के लिये मुफ्त दिया। बड़े प्रेम और सहानुभूति से अपने घर पर उनको कई मास तक लगातार भोजन बिना किसी प्रकार का दाम इत्यादि लिये खिलाया। जब इसका अपना मकान छूट गया अथवा न रहा, तो तीर्थरामजी को और पुरुषों से मकान बिना किराया के दिलाया और सब प्रकार के दुःख तथा कष्टों के दूर करने में जहां तक बन सका इस प्रकार से तीर्थरामजी की अत्यन्त सहायता की। संक्षेप से यह कि जिस चित्त प्रेम और दिल के साथ इसने तीर्थरामजी की सहायता की, वह लिखने की सीमा से बाहर है और अति प्रशंसनीय है।

रहना। अब मैं किताबें ज्वालाप्रसाद के डेरे से आया हूँ, और यह मकान छोड़ दिया है। आज सायंकाल बोर्डिंग में चले गये हैं।

—— ० ——

अपने ग्राम का नाम मुरालीवाला से मुरारीवाला बदलना

संबोधन पूर्वोक्त, (४२०) ११ फ़रवरी, १८६३

हम कल सायंकाल से बोर्डिंग में आ गये हुए हैं। प्रातः रोटी बोर्डिंग में खाया करूँगा, और सायंकाल को भगतमल के घर। मेरा प्रातः को रोटी बोर्डिंग में खाना भी भगतमल ने अति कठिनता से स्वीकार किया है। रुपये और कापियाँ गुजरांवाले पहुँच गये हैं। अगर हो सका तो इम्तहान से पहले मैं आपके चरणों में आ जाऊँगा। आपने मुझ पर दया रखनी। अब से लेकर अपने ग्राम को मैं मुरालीवाला के बदले मुरारी वाला कहा करूँगा। मुरारी के अर्थ परमेश्वर के हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२१) १४ फ़रवरी, १८६३

आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत खुशी हुई। हमें अब कालिज से छुट्टियाँ मिल गई हैं। मगर अभी यहाँ दूसरे तीसरे दिन आना ज़रूर पड़ेगा। इस वीरवार को हमारे अँग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर गिल्टी साहब (जिन्होंने मुझे गुजराँवाले से वज़ीफ़ा लेने के लिए मदद दी थी) विलायत जायेंगे। २२ फ़रवरी से २८ फ़रवरी तक हमारे कालिज के इम्तहान होंगे। हमारे बड़े इम्तहान से पंद्रह दिन पहले मैं शायद गुजराँवाले हाज़िर हो सकूँगा। और यहाँ एक सप्ताह रह कर फिर लाहौर में आना पड़ेगा। आगे जिस तरह आप आज्ञा करें, उसी तरह किया जायेगा। अगर आप उचित समझें तो लाला ज्वालाप्रसाद को भी अपने साथ गुजराँवाले ले आऊँ।

—— ० ——

झड्डूमल से पुन सहायता

संबोधन पूर्वोक्त, (४२२) १८ फ़रवरी, १८६३

आप का कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई, हमारा अगले हफ्ते (सप्ताह) इम्तहान होता रहेगा। उसके बाद आने की बाबत अच्छी तरह से लिख सकूँगा।

झंड्डूमल ने मुझे दो कुर्ते और एक पाजामा बनवा दिया है, और लाला ज्वालाप्रसाद के कपड़े (वस्त्र) मैं सब बर्त सकता हूँ। और सब प्रकार से कुशल है, आप मुझ पर दया रखें।

—— ० ——

संयोधन पूर्वोक्त, (४२३) २२ फ़रवरी, १८६३

आज हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान हुआ था। कल अँग्रेज़ी का है। फिर दूसरी रियाज़ी का होगा। उसके बाद मैं आपको पाँचवें दिन आने की बाबत लिखूँगा। भाई साहब का पत्र आज मिला था। आपने कृपादृष्टि रखनी।

—— ०।——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२४) २४ फ़रवरी, १८६३

कल हमारा अँग्रेज़ी का इम्तहान हुआ था। सोमवार हमारा दूसरी रियाज़ी का इम्तहान है। मैं अगर हो सका तो सोमवार रात की गाड़ी आपकी सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। और अभी तो आपके पास अधिक दिन ठहरने का इत्तफ़ाक़ लगता मालूम नहीं होता।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२५) २५ फ़रवरी, १८६३

हमारा इम्तहान सोमवार नहीं होगा, बल्कि मंगलवार होगा। इसलिए मैं शायद बुद्धवार प्रातः को आ सकूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२६) १½ बजे सिपहर, १ मार्च, १८६१

मैं अभी डेरे नहीं गया। रेल से उतरते ही गुलाबसिंह के पास आया हूँ। इसके पास वह किताब नहीं है। बाक़ी हाल फिर लिखूँगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२७) ५ मार्च, १८६१

लाला ज्वालाप्रसाद भी कल प्रातः चार बजे की गाड़ी में आ गये थे। थाल दे दिया था। यह कहते थे कि श्रीमत हम जरूर दे देंगे। मगर अभी दी नहीं।

हमारे गाँव का सुन्दरदास इम्तहान मिडल में कामयाब (सफल) हो गया है। मगर सरदार सुन्दरसिंह नहीं पास हुआ। उनकी जमाअत (कक्षा) के आठ लड़कों में से कोई भी पास नहीं हुआ। इस वर्ष बहुत कम लड़के पास हुए हैं। आप कृपादृष्टि रखा करें।

—— o ——

बी० ए० की आजमायशी परीक्षा

(Test examination) का परिणाम।

संबोधन पूर्वोक्त, (५२८) ११ मार्च, १८६१

आज हमारे रोल नम्बर आ गये हैं। मेरा नम्बर ८७ है। हमारी आजमायेशी परीक्षा का रिजल्ट (नतीजा) निकला है। मुझे परमेश्वर ने सर्वोपरि उत्तम रक्खा है। जितने नम्बर प्रथम दर्जे में रहने के लिये चाहियें उससे मेरे ६० अधिक हैं। अँग्रेज़ी में भी बड़ा अच्छा रहा हूँ। और एक गणित-शास्त्र के परचे में १५० में से १४८ नंबर मिले हैं। मगर मैं जानता हूँ यह सब आपकी ही कृपादृष्टि का फल है। आपने मुझ पर दयादृष्टि रखनी।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त,   (४२६)   १४ मार्च, १८६१

आपका एक कृपापत्र कल मिला था, और एक आज मिला। अत्यंत खुशी हुई। लाला ज्वालाप्रसाद का मत्था टेकना। हमारा इम्तहान अगले हफ्ते (सप्ताह) इस तरतीब (सिलसिले) से होगा—सोमवार—अंग्रेजी। वीरवार—रियाजी (एक)। शुक्रवार—रियाजी (दूसरी)। आरल (मुखाम) दूसरे सोमवार का होगा। आपने पूर्ण बेफिक्री (निश्चिंतता) के साथ यहाँ पदार्पण करना।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त,   (४३०)   १६ मार्च, १८६१

अभी तक आपका कृपापत्र कोई नहीं मिला। आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। आप मुझ पर दया रखा करें। मेरा हरदम आपके चरणों में खयाल रहता है। अब शायद पत्र मैं जल्दी न भेज सकूँगा। मुझ पर आपने खुश रहना।

——:०——

संशोधन पूर्वोक्त,   (४३१)   १८ मार्च, १८६१

मुझे इस बार पत्र लिखने में देरी हो गई है। आप अभी तक आये क्यों नहीं ? आप अब जल्दी पदार्पण कीजिये। मुझ पर दया रखा करें।

—— ० ——

बी० ए० की पुन वार्षिक परीक्षा

संशोधन पूर्वोक्त,   (४३२)   २१ मार्च, १८६१

मेरा प्रतिक्षण आपके चरणों में ध्यान रहा है, आप अभी तक नहीं आये। यही चिंता लगी हुई है। परसों (गुरुवार) और अतरसों (शुक्रवार) हमारा रियाजी का इम्तहान है। अंग्रेजी का इम्तहान हो चुका है। महाराजजी ! यदि मेरा साठ ६०) रुपये वजीफा (छात्र-वृत्ति) लग आये, तो पहले तीन मास का वजीफा सारा ही आपने रख लेना, और जो इनआम (उपहार) मिले, वह भी आप ही का। और यों

तो आप जानते ही हैं कि मैं स्वयं सारा ही आपका हूँ। अगर मैं रियासी के चारों परचे ही सारे के सारे कर आऊँ, तब मुझे तसल्ली होगी। अगर आपकी दया हो, तो यह बात किञ्चित् भी मुश्किल (कठिन) नहीं। लाला ज्वालाप्रसाद का मत्था टेकना। लाला ज्वालाप्रसाद आपको सदा याद करता है।

आपका नौकर

—— ० ——

बी० ए० की वार्षिक परीक्षा के परिणाम-संबंधी एक सहपाठी का प्रेम-पत्र

(४३३) मिशन कालिज, लाहौर, १७ अप्रैल, १८९३

बाबू तीर्थराम साहब दाम इनायतहु (नित्य कृपा बनी रहे)।

मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ, आप पंजाब भर में प्रथम रहे हैं। आपके नंबर ३१० हैं, और फर्स्ट डिवीज़न (प्रथम श्रेणी) में रहे हो, और आपको वैसे ही दो वज़ीफ़े भी मिलेंगे। द्वितीय लक्ष्मणदास, तृतीय गुलाम सरवर और चतुर्थ टोपनराम रहे हैं। सारे लड़के (विद्यार्थी) हमारे कालिज से २१ के लगभग पास हुए हैं। और समस्त विद्यार्थी सारे पंजाब भर में ५० (पचास) के लगभग पास हुए हैं। यह बात आपको अवश्य तार द्वारा सूचना देता, मगर इस बात का अपना चित्त बहुत व्याकुल है, इसलिये क्षमा रखें। (लिखनेवाले का नाम पत्र में दर्ज नहीं)

—— ० ——

सत्य ज्ञान इत्यादि संबोधन पूर्वक, (४३४) लाहौर, २९ अप्रैल, १८९३

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हुआ हूँ। बोर्डिंग में डेरा किया हुआ है। अभी कोई मकान नहीं मिला। इंट्रेंस का रिज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। आपने दयादृष्टि रखनी। सोमवार को पढ़ाई शुरू होगी।

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वोक्त,   (४३५)   २ मई, १९२३

गुजरांवाले के इंट्रेंस के इम्तहान में निम्न-लिखित नंबरोंवाले लड़के पास (उत्तीर्ण) हैं। ९१०, ९८२, ९३१, ९९२, ९८८, ९१२, ९८९, ९८५, ९९०, ९६१, ९८२, ९५७, ९७४, ९६६, ९६८, ९३२, ९५४, ९४९, ९७८, ९४१, ९४६, ९४८, ९३८, ९७३, ९५५, ९९६, ९७४, ९३७, ९८४, ९६०, ९६४, ९८३, ९७०, ९७६, ९७१, ९५६, ९४०, ९३५, ९८७, ९५२, ९६७, ९४२, ९४५ और भी पास होंगे। मगर भीड़ में कुछ पता नहीं लगा। तीर्थसिंह, द्वारिकालाल, लालचंद्र, परशराम, हरीराम, बशीर चंद, सावसिंह, दूलसिंह, विधावासिंह, जयगोपाल, दीनानाथ, अमरसिंह, मजलाल, रत्नचंद, इत्यादि, इत्यादि पास हैं। रामसिंहजी की बाबत अभी कुछ पता नहीं लगा। आप फ़ौरन ही आ जायें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४३६)   ६ मई, १९२३

आज यूनिवर्सटी आफ़िस में गुरुमुखी के इम्तहानों का प्रोस्पेक्टस लेने गया था। मगर फिर मालूम हुआ कि अब प्रोस्पेक्टस अलग छपने मौकूफ़ हो गये हैं। जिसको ज़रूरत हो वह बड़ाइ २।) रुपये की एक किताब (कैलेंडर) ख़रीदे। उस किताब से सब कुछ मालूम हो जायगा। आपने कागपत्र भेजते रहना। इस जगह का पता यह है:—

"लाहौर, चौक गुमटी बाज़ार, मुत्तसिल (समीप) हवेली सरदार स्वरूपसिंह, भगत सुखदयाल के पास पहुँच कर गुसाईं तीर्थराम को मिले।" जब मुरलीवाले यह चीज़ें भजाने, मुझे सूचना देनी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४३७)   प्रातः ६ बजे, ८ मई, १९२३

आपका कागपत्र अभी प्राप्त हुआ। अति ख़ुशी का कारण हुआ। आपकी नसीहतों (शिक्षाओं) पर मैं अमल करूँगा। आपके आने से

पहले मुझे रेशा (जुकाम) का बड़ा ज़ोर था। इसलिए यह हरीड़ें (हरड़ें) आपके यहाँ पहुँचने से पहले ख़तम हो गई थीं। सरदार रामसिंहजी को फतेहशाह गुरूजी की पहुँचे। आपने पत्र लिखते रहना। आज मैंने भगत हरभजराय को एक कार्ड लिख दिया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५३८) ११ मई, १८६१

लाला लछमणदास लाहौर में आया हुआ है। मेरे पास भी प्रतिदिन एक बार ज़रूर आता है। चाचाजी ने गज्जी और गलास मुझे पहुँचा दिये हैं। आज रात को यहाँ बड़ी वर्षा हुई थी। मासड़ (मौसा)जी का पत्र आया था। मेरे ऐसा पास हो जाने की बाबत अत्यंत खुशी ज़ाहिर की हुई है। ज्वालाप्रसाद का पत्र भी मिला था। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। मेरे हाल पर कृपादृष्टि ताज़े रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५३६) १३ मई, १८६१

महाराजजी! आपका कृपापत्र आये हुए बड़ी देर हो गई है। लछमणदास को अब मेरे डेरे आये हुए तीन या चार दिन हो गये हैं। चार किताबें जो बम्बई लिखी हुई थीं, उनमें से दो छोटी सी किताबें आई हैं। जिन पर १२॥।-) बारह रुपये तेरह आने खर्च आया है। यह रुपये भूतरचंद कुतुबफरोश ने अभी तो अपनी गाँठ से दे दिये हैं। बाकी की दो किताबें कलकत्ते लिखी हैं। देखिये, उन पर क्या लगता है। यह सब किताबें हमने छुट्टियों से पहले पहले फ़ारिग़ में पढ़नी हैं। अगर आप उचित समझें तो मैं मासड़ (मौसा) रघुनाथसिंहजी को लिख दूँ कि बीस या पचीस रुपये भेज दें। इन रुपयों में से थोड़े तो आपने अपने खर्च के लिए रख लेने और बाकी के कुतुबफरोश को दे देंगे। क्योंकि अक्तूबर तक जो वज़ीफ़ा मिला

करेगा, यह बड़ी मुश्किल से भी आपके और मेरे अखराजात को कफायत (पूरा) नहीं करेगा। सनातनधर्म स्कूल में मुद्दत (बहुत काल) का लाला टेकचंद बी० ए०, एम० ए० फ़ौरन हेडमास्टर मुकर्रिर हो गया हुआ है। जवाब जल्दी लिखना। मैं आपके हुक्म (आदेश) के अनुसार चलूँगा। जो उचित हो लिख दें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४७०)   १६ मई, १८६३

आपका कृपा पत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या हेतु है? मेरा हर वक्त आपके चरणों की तरफ ध्यान रहता है। मैंने बाबू रघुनाथसिंह को तरफ उस विषय में कुछ नहीं लिखा। लक्ष्मणदास को लाला मोहनलाल कहता था कि "गुसाईंजी को जो ज़रूरत हो मुझसे ले लिया करें।" आपने कृपापत्र जल्दी भेजना। और इस अँग्रेज़ी मास के अंत के लगभग यहाँ आ जाना।

—— ०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४७१)   १८ मई, १८६३

आपका कृपापत्र आये कई दिन गुज़र गये, क्या कारण है? आप जल्दी पत्र लिखा करें। जिस जगह मैंने यह किताबें लिखी थीं, वहाँ से नहीं मिलीं। अब और जगह लिख दी हैं। सरदार रामसिंह को नमस्कार।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४७२)   २० मई, १८६३

आपने जो लाला सोहनलाल की तरफ पत्र लिखा था, वह भी मिला। और उसके बाद जो आपने मेरी ओर लिखा था वह भी पहुँचा। इससे पहले केवल एक पत्र (मुद्दत हुई) आपकी तरफ से इस मकान के पते पर आया था। लक्ष्मणदास को औरतें बाद हुई हैं। इस कालिज

में बड़ी छुट्टियाँ होती हैं। आप अब जरूर जल्दी तशरीफ़ ले आयें, (चाहे) जल्दी चले आयें। हमारे प्रोफ़ेसर साहब बड़े खुशमिज़ाज (प्रसन्न प्रकृति के) हैं। भगत हरमतरायजी का एक पत्र आया था।

—:o:—

सम्बोधन पूर्वोक्त, (४४३) २२ मई, १८६१

आपने जो पत्र दरजी भेजा था वह जयगोपालदास ने मुझको दे दिया था। मगर मैं अब सरदार तीर्थसिंह या जीवनसिंह का पता नहीं जानता, अब उनका पत्र उन्हें क्योंकर पहुँचाया जाय ? आपने जो पत्र डाक में इसके साथ भेजा था वह भी इस वार मिल गया है। आप अब यहाँ जल्दी तशरीफ़ ले आयें। अभी तक मैंने लाला सोहनलाल या मासड़ (मौसा) जी से कुछ नहीं लिया। आशा है कि बीटयार का कलकत्ते से किताबें आ जायेंगी। मासड़ (मौसा)जी का पत्र आया था कि अगर कुछ थोड़ा सा रुपया चाहिये तो बेशक (निःसंदेह) मँगा लो। ध्यान आपकी तरफ़ रहता है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४४४) २३ मई, १८६१

आज दीवान लछमणदास शायद आपके पास आया होगा, उससे चिट्ठीरसाँ (डाकिया) की बाबत हाल मालूम हो जायगा, आप अब जरूर यहाँ तशरीफ़ ले आयें।

—:o:—

गुरुजी की ज़रूरत और कष्ट का अधिक ख़्याल

संबोधन पूर्वोक्त, (४४५) २५ मई, १८६१

आपका पाँच रुपये का मनीआर्डर पहुँचा, मगर जिस हालत में मुझे यहाँ से रुपया मिल सकता था, आपने व्यर्थ क्यों कष्ट उठाया ? क्या आपकी ज़रूरतें मेरी ज़रूरतें नहीं हैं ? यदि आप आज्ञा दें, तो आपको

मैं लाला सोहनलाल से या मौसा मे या किसी अन्य स्थान से जितने रुपये आवश्यक हों लेकर भेज दूँ। आपने यह कष्ट क्यों उठाया ? मगर इसमें अपराध मेरा है कि इससे पहले मैं इस विषय में आपको लिखना भूल गया। अब आप आयेंगे कब ? मनीऑर्डर के बाद आपका एक और पत्र आया। यह पत्र बालकृष्ण लाया था, और भविष्य में आशा है कि मेरा पत्र ग़बन न कर लिया करेगा। हमें छुट्टियाँ तो हैं, पर काम भी बहुत है, इसलिये अगर आप ही आ जायें तो अच्छा होगा। नहीं तो जैसा मुझे आज्ञा करो मैं वैसा करने को उद्यत हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५४६)　　　　२६ मई, १८९३

आज कलकत्ता से दो किताबों का पारसल आया था। मगर मुझे यह आशा नहीं थी कि इतनी बड़ी क़ीमत लगेगी। चुनाँचि पचीस रुपये और एक आना २५-) डाकख़ाने में जाकर देना पड़ा, तब किताबें मिलीं। ये किताबें हम आजकल कालिज में पढ़ते हैं। यह रुपये लाला सोहनलाल से लिये हैं। जलसा के बाद आपने फ़ौरन तशरीफ़ यहाँ ले आनी। आपने मुझ पर दया रखनी। ये किताबें यद्यपि दाम में बहुत बड़ी हैं, मगर दिलचस्प और लाभदायक भी हद से ज्यादा हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५४७)　　　　२८ मई, १८९३

आपका एक कार्ड आज प्रातः मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैंने तो रुपये नहीं भेजे, मगर मेरा इरादा भेजने का ज़रूर था। परमेश्वर ने ख़ुद भेजे होंगे। आप मुझ पर दया रखा करें। हमारी छुट्टियाँ आज ख़तम हो गई हैं। आज मुरालीवाले से पत्र आया था।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१८) १० मई, १८९१

आज आपका एक पत्र मिला। अत्यत खुशी हुई, अब आपके आने का हाल पढ़ा। इस सोमवार को हमारे प्रोफेसर साहब ने मेरा इम्तहान लेना है। दीवान लछमणदास राजी खुशी है। और सब तरह से आनंद है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१९) ५ जून, १८९१

मैं कल का यहाँ आ गया हुआ हूँ। इस शनिवार को मेरा इम्तहान होगा। आप जब आयेंगे, अगर हो सका, तो आपने योगवाशिष्ठ की एक प्रति जरूर यहाँ ले आनी। मेरे लिए यह तकलीफ बरदाश्त करनी (सहनी) पड़ेगी। दीवान लछमणदास राजी खुशी है। मोहनलाल की बाबत अगर आपको मालूम हुआ हो आपने लिखना। सरदार जीवन-सिंहजी व रामसिंहजी को नमस्कार।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४०) १० जून, १८९१

आपका कागपत्र कल साय को मिला था। अत्यंत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि इस पत्र के यहाँ पहुँचने से पहले आप यहाँ आ जायेंगे। राज मजदूरों से आपने यहाँ से वापिस आने के बाद काम ले लेना। यहाँ पहले तरीफ़ लानी। वाशिष्ठ शास्त्री (संस्कृत) अक्षरोंवाला न लाना, दूसरा लाना (अगर कष्ट न हो तो)।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४) १२ जून, १८९१

मैं हर वक्त हर रोज (प्रतिदिन) आपका इंतजार करता रहता हूँ। मगर आपकी तरफ से कभी हवा भी इधर को नहीं चली। अब कौन सो

रुकावट दरपेश है। वजीफा अभी नहीं मिला। और हर तरह से कुशल है।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (४५०) १४ जून, १८९१

आपका कृपापत्र आज प्रात मिला था, अत्यन्त खुशी प्राप्त हुई। काम कितने दिनों तक खतम हो जायगा? अब आप बैठक का दरवाजा अलग बनवा रहे हैं या कुछ और? वजीफा अभी नहीं मिला। और सब तरह से आनंद है।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (४५३) १५ जून, १८९१

कल शायद दीवान लछमणदास आपके पास पहुँच गया होगा। अगर कोई आदमी मुझे यहाँ से गुजराँवाले जाता मिले, तो मैंने उसके हाथ मोहन के लिए एक खिलौना भेजना है। लछमणदास मुझे जाती बार मिलकर नहीं गया। इसलिए उसके हाथ नहीं भेज सका। आपने शनिवार को यहाँ जरूर तशरीफ ले आनी। और वाशिष्ठ की एक जिल्द भी (अगर आपको तकलीफ न हुई तो) ले आनी।

— o —

संबोधन पूर्वोक्त, (४५४) १६ जून, १८९१

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत खुशी हुई। अगर आपका काम खतम हो गया हुआ है तो आप अभी तक आये क्यों नहीं? यहाँ बड़ी वर्षा हुई है। बैठके से पत्र आया था कि "यहाँ ४ आषाढ़ को विवाह है, जरूर आना।" मगर आशा नहीं कि मैं यहाँ जा सकूँ।

— o —

शहूमर की अत्यंत प्रेरणा

संबोधन पूर्वोक्त, (४५५) ६॥ बजे रात, २५ जून, १८९३

कल रात लाला जयगोपालदास और मुकुंदलाल आपको देखने मेरे

मकान आये थे। मैंने बीस इक्कीस मिनट बैठाया था। आज लाला कृष्णचंदजी साहब आपकी रोटी पकड़ने आये थे।

कल जिस समय आपको रेल पर छोड़कर मैं आया, तो उस समय झंडूमल मिला, और उसने आपको पूछा। उसका यह मंशा (विचार) था कि उसने जो अब अपना मकान (घर) खरीदा हुआ है, यह आपके पसंद कराये और उसमें मुझको रखे। यह मकान केवल परसों खाली हुआ था। झंडूमल अत्यन्त दर्जे की प्रेरणा करता है कि मैं उसके मकान में बिना किराया देने के रहूँ। आगे जैसी आप आज्ञा देंगे वैसा ही करूँगा। यह मकान झंडूमल की अपनी गली में है, मगर पुराना है, और अधिक हवादार भी नहीं। दो छत्ता है, आपने उत्तर से शीघ्र कृपा करनी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५५३) २८ जून, १८९१

आपका कृपापत्र मिला था, बड़ी खुशी हुई। दाताजी मुझे नहीं मिले। साथ इसके उनका स्थान, पता मुझे मालूम नहीं है। अन्यथा मैं स्वयं उनके पास चला जाता। मैं झंडूमल के मकान में नहीं जाऊँगा। यहाँ खूब वर्षाऐं हो रही हैं। आपने दयादृष्टि रखनी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५५७) १ जुलाई, १८९१

आपका कृपापत्र आये बहुत दिन हो गये हैं। आप जल्दी याद फरमाते रहा करें। मैं हर तरह से आनंद हूँ। थोड़े दिनों को हमारा इम्तहान है।

—— o ——

गुरुजी के लिये परमेश्वर से प्रार्थना

संबोधन पूर्वोक्त, (५५८) ५ जुलाई, १८९१

मैंने अभी परमेश्वर के आगे यह प्रार्थना की थी कि आपको भीतर

तथा बाहर सर्व प्रकार से परमानन्द रहे, कभी भी कोई कल्पना और विक्षेप दुःख न दे।

महाराजजी ! आप मुझे याद रखा करें।

जीविका की अन्वेषणा (तलाश)

संशोधन पूर्वोक,   (५५६)   रात, ६ जुलाई, १८६३

आज सायं को आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यन्त ही खुशी हुई। लाला कृष्णचंदजी साहब प्रायः मिला करते हैं। वह खुश हैं, मगर इस वक्त मैं विशेष मिलने नहीं गया। कल अगर मिले तो मैं उनका हाल आपकी तरफ से अच्छी तरह से पूछ आऊँगा और लिखूँगा। आज लाला ज्वालाप्रसाद लाहौर में पढ़ने की खातिर आया है।

आज मैंने कुछ कुछ खबर सुनी है कि वैदिक कालिज, लाहौर का गणित शास्त्र का प्रोफ़ेसर छुट्टी लेनी चाहता है। अगर आप परमात्मा से कहकर मुझे उसके स्थान पर अभी नियत करा दें, तो यह मेरे और आपके लिये अत्यन्त खुशी की खबर होगी। शायद कल वजीफे की बाबत पिछले मास का कट कटा कर केवल चार रुपये आठ आने ४।।) मुझे मिलें। आपने किसी प्रकार से कदापि तंग न रहना। जिसको मैं पढ़ाया करता हूँ, वह मुझसे अत्यंत प्रसन्न है। आप मुझे बहुत जल्दी पत्र लिखा करें।

संशोधन पूर्वोक,   (५६०)   ६ जुलाई, १८६३

वैदिक कालिजवाली बात यों ही थी। अव्वल (प्रथम) तो वह जायेंगे नहीं, और अगर गये भी तो उन्हीं के कालिज का एक आदमी वहाँ काम करेगा। लाला कृष्णचंद के पास मैं कल गया था। वह कहते थे, यों तो सब तरह से आनंद है, मगर मुकद्दमात का सिलसिला उसी तरह से जारी है। आपको मत्था टेकते थे। कल चार रुपये बारह आने

था।) वज़ीफ़े की बाबत मिले थे। महाराजजी! आप मुझ पर दयादृष्टि रखा करें। और आपने किसी तरह से तंग न हों। लाला सोहनलाल यहाँ नहीं है। आप मुझे कृपापत्र ज़रूर जल्दी भेजा करें।

आपका नौकर तीर्थराम

—— ० ——

प्राकृतिक दृश्य का रूप पोंधना

संबोधन पूर्वोक्त, (५६१) १० जुलाई, १८९१

यहाँ कल बड़ी वर्षा हुई थी। आज मैं कालिज से पढ़कर सैर करता हुआ डेरे (अपने घर पर) आ रहा हूँ। इस वक्त बड़ा सुहाना समय है। जिधर देखता हूँ या जल नज़र आता है या हरियाली (सब्ज़ी)। ठंडी ठंडी पवन हृदय को बड़ी प्रिय लगती है। आकाश में बादल कभी सूर्य को छुपा लेते हैं, कभी प्रकट कर देते हैं। नाले नालियों से पानी बड़े वेग से बह रहा है। गोलबाग़ के वृक्ष फलों से भरपूर (भरे पड़े) हैं। टहनियाँ झुक कर पृथिवी से आ लगी हैं। यही प्रतीत होता है कि अनार आड़ू, आम इत्यादि अभी गिरे कि गिरे। कबूतर, कव्वे और चीलें बड़ी प्रसन्नता से वायु की सैर कर रहे हैं। वृक्षों पर पक्षी बड़े आनन्द से गायन कर रहे हैं। तरह तरह (नाना प्रकार) के पुष्प खिले हुए यही मालूम देते हैं कि मानों मेरी बाट देखने के लिये आँखें खोले मुन्तज़िर खड़े थे। पृथिवी पर हरियावल क्या है, मानों मखमल का फ़र्श बिछा है (या मानों मखमल से भूमि आच्छादित है)। सरू और सफ़दा (लम्बे लम्बे वृक्ष) अभी स्नान करके सूर्य की ओर ध्यान करके एक टाँग से (इकटंगे) खड़े हैं, मानों सन्ध्या उपासना में मग्न हैं। आकाश की नीलता और सफ़ेदी ने अद्भुत बहार बनाई है (अथवा अद्भुत समय बाँधा है)। मेंढक वर्षा की खुशियाँ मना रहे हैं। प्रत्येक तरफ़ से खुशी के शंकारे (झार) बज रहे हैं, मानों पृथिवी और आकाश का विवाह होनेवाला है, जिसकी

सन्तान कार्तिक और मार्गशीर्ष के सतोगुणी मास होगी। इस समय मुझे आप याद आते हैं। चूँकि मैं आपको यह सब वस्तुएँ दिखा नहीं सकता, इसलिये लिख देता हूँ।

अब मैं (घर पर) आ पहुँचा हूँ। आपका पत्र मिला है, अत्यन्त खुशी हुई। अब मैं अपनी पढ़ाई का काम आरम्भ करने लगा हूँ, क्योंकि परसों बुद्धवार हमारा इम्तहान * है, इति। यह पत्र चलते-चलते रास्ते में पैन्सिल से लिखा गया था, और घर पर आकर इस कागज़ पर उसकी नक़्ल करता हूँ।

अपने विद्यार्थी के पास हो जाने पर खुशी

सम्बोधन पूर्वोक्त, (४६२) ११ जुलाई, १८६१

भाई †सुन्दरसिंह जो मुझसे पढ़ा करता था और जिसने इस बार चीफ कालिज से मिडिल क्लास की परीक्षा दी थी और जो फ़ेल (अनुत्तीर्ण) हो गया था, उसके पर्चे पुन देखे जाने से वह पास (उत्तीर्ण) हो गया है। खुशी की बात है।

———o———

संबोधन पूर्वोक्त, (४६३) ९ बजे रात, १२ जुलाई, १८६१

आपका पत्र इस वक़्त मिला, बड़ी खुशी हुई। जिस लड़के (जौया लाल) को मैं पढ़ाया करता हूँ, वह मिंटगुमरी में छुट्टियाँ गुज़ारेगा। और मुझे भी साथ रखना चाहता है। आगे जैसा आप हुक्म (आदेश) देंगे। आपकी बीमारी का बड़ा अफसोस (शोक) है। आपने अपनी

---

* यहाँ पर परीक्षा से तात्पर्य गुसाईं जी की एम् ए की मासिक परीक्षा से है क्योंकि बी० ए श्रेणी को उत्तीर्ण करने के पश्चात् वह गवर्नमेंट कालिज लाहौर की एम् ए० क्लास में प्रविष्ट हो गए थे।

† भाई सुन्दरसिंह म ठा • जमींदार व रईस ह था जन दिनों गुसाईं तीर्थराम जी से घर पर पढ़ा करते थे।

था।) चर्जीके की बाबत मिले थे । महाराजजी ! आप मुझ पर दयादृष्टि रखा करें। और आपने किसी तरह से तंग न हो । । लाला सोहनलाल यहाँ नहीं है। आप मुझे कृपापत्र ज़रूर जल्दी भेजा करें।

आपका नौकर तीर्थराम

—— ० ——

प्राकृतिक दृश्य का रूप बाँधना

संबोधन पूर्वोक्त, (४६१) १० अगस्त, १८६१

यहाँ कल बड़ी वर्षा हुई थी। आज मैं कालिज से पढ़कर सैर करता हुआ डेरे (अपने घर पर) आ रहा हूँ। इस वक्त बड़ा सुहाना समय है। जिधर देखता हूँ या जल नज़र आता है या हरियाली (सब्ज़ी)। ठंडी-ठंडी पवन हृदय को बड़ी प्रिय लगती है। आकाश में बादल कभी सूर्य को छुपा लेते हैं, कभी प्रकट कर देते हैं। नाले नालियों में पानी बड़े वेग से बह रहा है। गोलबाग़ के वृक्ष फलों से भरपूर (भरे पड़े) हैं। टहनियाँ झुक कर पृथिवी से आ लगी हैं। यही प्रतीत होता है कि अनार आड़ू, आम इत्यादि अभी गिरे कि गिरे। कबूतर, कव्वे और चीलें बड़ी प्रसन्नता में वायु की सैर कर रहे हैं। वृक्षों पर पक्षी बड़े आनन्द से गायन कर रहे हैं। तरह तरह (नाना प्रकार) के पुष्प खिले हुए यही मालूम देते हैं कि मानो मेरी यार देखने के लिये आँखें खोले मुन्तज़िर खड़े थे। पृथिवी पर हरियावल क्या है, मानों मख़मल का फ़र्श बिछा है (या मानों मख़मल से भूमि आच्छादित है)। सरू और सफ़दा (लम्बे-लम्बे वृक्ष) अभी स्नान करके सूर्य की ओर ध्यान करके एक टाँग से (इस्तादे) खड़े हैं, मानों सन्ध्या उपासना में मग्न हैं। आकाश की नीलाय और सब्ज़ी ने अद्भुत बहार बनाई है (अथवा अद्भुत समय बाँधा है)। मेंढक वर्षा की खुशियाँ मना रहे हैं। प्रत्येक तरफ़ से खुशी के जैकारे (हार) बज रहे हैं, मानों पृथिवी और आकाश का विवाह होनेवाला है, जिसकी

सन्तान कार्तिक और मार्गशीर्ष के सतोगुणी मास होगी। इस समय मुझे आप याद आते हैं। चूँकि मैं आपको यह सब वस्तुएँ दिखा नहीं सकता, इसलिये लिख देता हूँ।

अब मैं (घर पर) आ पहुँचा हूँ। आपका पत्र मिला है, अत्यन्त खुशी हुई। अब मैं अपनी पढ़ाई का काम आरम्भ करने लगा हूँ, क्योंकि परसों बुधवार इम्तहान * है, इति। यह पत्र चलते चलते रास्ते में पैंसिल से लिखा गया था, और घर पर आकर इस कार्ड पर उसकी नक़ल करता हूँ।

अपने विद्यार्थी के पास हो जाने पर खुशी

सम्बोधन पूर्वोक्त, (४६२) ११ जुलाई, १८६३

भाई †सुन्दरसिंह जो मुझसे पढ़ा करता था और जिसने इस बार चीफ कालिज से मिडिल क्लास की परीक्षा दी थी और जो फ़ेल (अनुत्तीर्ण) हो गया था, उसके परचे पुन देखे जाने से वह पास (उत्तीर्ण) हो गया है। खुशी की बात है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६३) ६ बजे रात, १२ जुलाई, १८६३

आपका पत्र इस वक्त मिला, बड़ी खुशी हुई। जिस लड़के (जीया लाल) को मैं पढ़ाया करता हूँ, वह मिन्टगुमरी में छुट्टियाँ गुजारेगा। और मुझे भी साथ रखना चाहता है। आगे जैसा आप हुक्म (आज्ञा) देंगे। आपकी बीमारी का बड़ा अफ़सोस (शोक) है। आपने अपनी

---

* यहाँ परीक्षा से मतलब गुसाईं जी की एम० ए० की मानिंद परीक्षा से है क्योंकि बी० ए० श्रेणी की परीक्षा करने के पश्चात् वह गवर्नमेंट कालिज लाहौर की एम० ए० क्लास में भरती हो गये थे।

† भाई सुन्दरसिंह मजीठा के धर्मशाला के रईस हैं जो उन दिनों गुसाईं तीर्थराम जी से घर पर पढ़ा करते थे।

सेहत (स्वास्थ्य) का हाल फिर अच्छी तरह से लिखना। इस सोमवार को वैरोके प्रभुदयाल की पुत्री का विवाह है, और जंज (बारात) अकाल-गढ़ से भाई रघुवीरदास के चाचे के घर से आनी है। प्रभुदयाल का पत्र भी आया था। अगर आपकी राय (सम्मति) में उचित हो तो मैं सोमवार सायं की गाड़ी वजीराबाद का टिकट ले लूँ। गुजराँवाले स्टेशन पर आपसे मिलूँ और वैरोके दो रात ठहरकर गुजराँवाले चला आऊँ। और वहाँ एक या दो रात रहकर लाहौर चला आऊँ। हमारा इम्तहान हो चुका है। आपने जवाब जल्दी भेजना। और हुक्म कमानी (दोहरे अर्थवाला) न भेजना। जैसा आप लिखेंगे, वैसा ही करूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८६४) १५ जुलाई, १८६३

आपके दो कृपापत्र आज प्राप्त हुए अत्यंत खुशी हुई। मैंने कपड़े धोबी को धोने दिये हुए हैं। अगर उसने कपड़े वापिस द दिये और कालिज से छुट्टी भी मिल गई, तो जरूर आ जाऊँगा। और टिकट मैं गुजराँवाले ही का लूँगा। यह मैंने पहले ही इरादा किया हुआ था।

—— ० ——

मिस्टर बैल प्रिन्सिपल गवर्नमेंट कालिज से अकस्मात् मुलाक़ात्

संयोधन पूर्वोक्त, (८६५) १०½ बजे रात, १६ जुलाई, १८६३

हाल यह है कि मैं कल सोमवार शायद आपकी सेवा में हाजिर न हो सकूँगा। क्योंकि धोबी ने कपड़े अभी तक नहीं दिये और भाड़ा नहीं कि कल दे। क्योंकि यह आजकल एक कारण विशेष से बड़े ग़म और अंदोह (शोक व चिंता) में फँसा हुआ है। परसों या अतरसों अगर मैं आऊँ तो आऊँ, पहले नहीं आ सकता। आज मैं दरिया (रावी) की सैर को गया था। किश्तियों (नौका) के पुल पर फिर रहा था कि मिस्टर बैल गवर्नमेंट कालिज के प्रिन्सिपल (बड़े साहब) वहाँ आ निकले।

बड़ी अच्छी तरह से मिले। कई प्रकार की बातें हुईं, मेरी ऐनक की बाबत, और इस बात की बाबत कि मैं छाता क्यों नहीं लगाता, क्योंकि उस समय बादल आया हुआ था, और छोटी-छोटी बूँदें पड़ रही थीं, इत्यादि, इत्यादि।

फिर मुझे अपनी गाड़ी में बिठा लिया और गाड़ी शहर की ओर लाये। रास्ते में मेरी पढ़ाई के विषय बात हुई। और मुझे लगभग सौ पद (शेर) अँग्रेज़ी भाषा के कण्ठस्थ थे, मैंने वह सुनाये। और गणित शास्त्र के सम्बन्ध में कहा कि मैं इसकी प्रत्येक शाखा की कम से कम चार या पाँच पुस्तकें अवश्य पढ़ा करता हूँ। और जो अँग्रेज़ी साहित्य की पुस्तकें आजकल मैं देखता हूँ, वह मैंने बताईं। बड़े खुश (प्रसन्न) हुए। फिर उन्होंने मेरे पिता माता की बाबत पूछा कि वह धनाढ्य हैं या नहीं। मैंने उत्तर दिया, नहीं। फिर उन्होंने पूछा कि मेरा विचार एम० ए० की परीक्षा के पश्चात् क्या करने का है ? मैंने उत्तर दिया कि मेरा अपना कुछ संकल्प (विचार) नहीं, जो ईश्वर-इच्छा होगी, उसी के अनुसार मैं अपना संकल्प कर लूँगा। और ऐसे यदि मेरी कोई इच्छा है तो यह है कि वह काम करूँ जिससे मैं अपने जीवन का श्वास श्वास परमात्मा की सेवा में अर्पण कर सकूँ। और परमात्मा की सेवा लोगों की सेवा करने में होती है, और लोगों की सेवा मैं सबसे अच्छी तरह गणित पढ़ाने से कर सकता हूँ, इत्यादि।

उन्होंने भी बहुत सी बातें मेरे अनुसार कीं, और यह भी कहा कि हम तुम्हारे काम में जितना भी हो सकेगा यत्न करेंगे। (अब यह साहब पंजाब विश्वविद्यालय के असिस्टेंट रजिस्ट्रार भी हो गये हैं)।

इतने में उनकी कोठी जो कालिज के ठीक समीप है आन पहुँची। पर वह मुझे उस जगह लाये जहाँ विद्यार्थी व्यायाम किया करते हैं, और उन्होंने मुझे व्यायाम करते हुए विद्यार्थी दिखाये, फिर उन्होंने पूछा

कि "तुम किस प्रकार का व्यायाम किया करते हो ?" मैंने चारपाई वाली वर्जिश (व्यायाम) वर्णन करी । उन्होंने एक चारपाई (खाट) मँगवाई । मैंने एक सौ साठ (१६०) बार उसे ऊपर उठाया और नीचे रखा। फिर उन्होंने अन्य विद्यार्थियों से कहा कि चारपाई से व्यायाम करें, उनमें से कोई भी बीस से अधिक बार न कर सका। इसी तरह अन्य विद्यार्थियों का दूसरी विधि का व्यायाम देखने के पश्चात् वह सबको सलाम (नमस्कार) करके अपनी कोठी की ओर चल दिये। और मैंने किञ्चित् आगे बढ़कर कहा कि जी ! मैं आपकी कृपा का अत्यन्त अनुगृहीत (आभारी) हूँ। फिर मुझको नमस्कार (सलाम) करके अपनी कोठी में प्रविष्ट हो गये। और मैं अपने डेरे की तरफ चला आया।

अब महाराजजी ! यह सब आपकी कृपा का फल है। अब मैं आऊँगा, पंडित जियालालजी से मासिक वेतन ले आऊँगा। आपने मुझे अब एक कृपापत्र जरूर भेजना और जल्दी भेजना। मैंने आज यह भी सुना था कि राय सौंधीमल साहब यहाँ आये हुए थे। और आज उन्होंने शायद चला जाना था।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६६) १० बजे रात, २१ जुलाई, १८८१

यहाँ सर्व प्रकार से आनंद है। आपके आनंद की जरूरत है। आप कृपादृष्टि रखा करें। कृपापत्र जल्दी भेजते रहना। यहाँ आज मुहर्रम के कारण बड़ा शोर व गौगा (हुल्लड़) मच रहा है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६७) २१ जुलाई, १८८१

हमें परसों शायद छुट्टियाँ हो जायें। पंडित जियालाल न इस शनिवार को मिंटगुमरी जरूर जाना है। वह कहता है कि वहाँ जाने पर वह मजबूर है, मगर वहाँ से आना किसी कदर उसकी मरजी पर निर्भर

है। और उसने यह इक़रार किया है कि जहाँ तक बन सकेगा वह वहाँ एक मास से अधिक काल तक नहीं ठहरेगा। आगे परमेश्वर की मरज़ी। मुझे भी अब वह अपने साथ ले जायगा। वह कहता है कि वहाँ की आबो-हवा (जलवायु) अति उत्तम है। भूख बहुत लगती है। आपने मुझे कृपापत्र जल्दी भेजना। मिंटगुमरी का पता यह होगा—मुक़ाम मिंटगुमरी, पंडित शालग्राम प्लीडर को पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम को मिले। मैंने चाचाजी की तरफ़ लिख दिया है कि वह पत्र मुझे आपके पते पर भेजा करें।

—— o ——

एक ग़रीब विद्यार्थी से सहानुभूति

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४६८)　१२ बजे दिन, २७ जुलाई, १८८१

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है? हमें आज कालिज से छुट्टियाँ हो गयी हैं। मिशन कालिज भी मैं आज गया था। वहाँ के साहब निहायत मेहरबानी (अत्यन्त सत्कार) से मिले। वहाँ भी आज छुट्टियाँ हो गयी हैं। आज मैं कायस्थ-बोर्डिंग हौस में गया था। वहाँ एक अति ग़रीब विद्यार्थी को देखकर (जिसने छुट्टियों में लाहौर ठहरना है) मेरे चित्त में यह ख़याल आया कि जब मैं मिंटगुमरी जाऊँ, उस विद्यार्थी को अपने पीछे अपने मकान में छोड़ जाऊँ, और जब एक मास के पीछे मिंटगुमरी से वापस आऊँ, तब उसको कहूँ कि बोर्डिंग में चला जाय। ताकि उसको बोर्डिंग की आधी फ़ीस मासिक न देनी पड़े, और मेरा मकान ख़ाली न पड़ा रहे। आगे आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा किया जायगा। अगर आपका उत्तर शनिवार से पहले-पहले न आया तो उस समय जैसा मुझे ख़्याल आयेगा मैं समझूँगा कि यही आपकी आज्ञा है। और तदनुसार चलूँगा, क्योंकि

शनिवार को मैंने लाला जियालाल के साथ जाना है। यहाँ से मैं जल्दी वापिस आ जाने का यत्न करूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६६) ९ बजे रात, २७ जुलाई, १८६६

आपका एक कृपापत्र इस वक्त प्राप्त हुआ। मैं उस दुकान से ही आया हूँ, जहाँ लाला कृष्णचंदजी बैठा करते हैं, वह यहाँ नहीं थे। मगर यहाँ से मालूम हुआ कि रायसाहब इन मुहर्रम की छुट्टियों में आये थे और इस रविवार तक यहाँ ही रहेंगे। सो अब यह यहीं हैं। कल मैं लाला कृष्णचंदजी को भी मिलने जाऊँगा। आपका कृपापत्र आने से पहले मैं पंडित जियालाल को बहुत कहा था कि यहाँ कुछ दिन और ठहरे, मगर वह कहता था कि एक खास ज़ाती (निजी) मुआमले के कारण उसे यहाँ शनिवार को ज़रूर चले जाना चाहिये। अस्तु। मैं अब आपकी तरफ से भी उसे एक बार और कह छोड़ूँगा। आगे उसकी मरज़ी। आप अगर वक्त यहाँ आ जायें तो सब बातों का फ़ैसला हो जाये। अगर मैं चला ही गया तो भी यह मकान आपके क़याम (ठहरने) के लिए तैयार रहेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७०) १० बजे रात, २८ जुलाई, १८६६

आपका कृपापत्र इस समय मिला। बड़ी खुशी हुई। वह जो बोर्डिंग का आदमी था, वह यहाँ अब नहीं आयेगा। क्योंकि उसकी फीस यहाँ शायद मुआफ़ हो गई है। और, मैंने इस मकान में कोई असबाब (सामान) नहीं रहने दिया। अगर रायबहादुर पंडित राधाकृष्णजी भी छुट्टियों में कहीं गये तो जियालाल कहता था कि वह उनके पीछे लाहौर में नहीं रह सकता। मैंने कहा था कि वह मेरे मकान पर रह सकता है। फिर उसने जवाब दिया कि इस बात को रायसाहब नागवार (नापसंद) समझेंगे। यह बातचीत आज इस विषय में हुई थी।

मगर मैं हरचंद कोशिश करूँगा कि जियाशाल लाहौर में जल्दी चला आये। अगर रायसाहब कहीं गये तो वह अब से चार पाँच सप्ताह के अंदर ही अंदर वापिस चले आवेंगे। रूड़मल की औरत (स्त्री) गगरे की बाबत कहती है। कहते हैं मिंटगुमरी का जलवायु अति उत्तम है। कल प्रातः जाने का इरादा (विचार) है। आपने सयरफ़ार से कृपादृष्टि रखनी अपने गुलाम पर।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७१) मिंटगुमरी, १० जुलाई १८६१

महाराजजी ! आपने गुलाम पर किसी बात से खफ़ा (रुष्ट) न होना। यहाँ की आबोहवा (जलवायु) अच्छी है, यद्यपि गरमी पड़ती है, मगर सर्द हवा बराबर चलती रहती है। और रात को बड़ा आनंद होता है। मुझे एक अलग कमरा मिल गया है। मैं शायद पहले की तरह जल्दी पत्र अभी न भेज सकूँगा। मगर आपने कोई किसी प्रकार की और बात न समझ लेनी। आपने कृपापत्र भेजते रहना। अगर परमात्मा की मरज़ी हुई तो मैं जल्दी लाहौर आ जाऊँगा। मेरा पता यह है —"मुकाम मिंटगुमरी, पंडित शालिग्राम सीडर साहब के पास पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम को मिले।"

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७२) मिंटगुमरी, १ अगस्त, १८८१

आपका कृपापत्र कल एक मिला था। निहायत ही बड़ी (अत्यंत) खुशी हुई। आप इसी तरह से दया करते रहा करें। यहाँ दूध एक आने का पका सेर से कुछ ज़्यादा मिलता है। मैं प्रतिदिन प्रातः को एक आने का दूध और डेढ़ पैसे का मीठा पिया करता हूँ। रात को वह भी कुछ दूध देते हैं। प्रातः के दूध के लिए मैंने उनसे अभी से एक ठहरा लिया है। फिर जब ज़रूरत पड़ेगी और ले लूँगा। उनके नौकर मेरे सब काम

करते हैं। यहाँ आठों पहर ठंडी हवा चलती रहती है। आपने गुलाम पर हर तरह से अत्यंत खुश रहना।

—— ० ——

अनाहत शब्द का श्रवण

संबोधन पूर्वोक्त, (५७३) मिंटगुमरी, ४ अगस्त, १८८१

मेरा ध्यान नित्य आपके चरणकमलों में रहता है। आप दया रखा करें। हम शायद अब से सवा महीने को यहाँ से चलेंगे। २७ सितंबर को लाहौर रायसाहब (पंडित राधाकृष्ण कौल) का मकान खुलेगा। तब तक बंद रहेगा, क्योंकि वह कहीं गये हुए हैं। मगर पंडित जियालाल यहाँ से पहले इसलिए चला जायगा कि उसका इरादा सीधा लाहौर जाने का नहीं है, बल्कि सैर करना चाहता है।

यहाँ अनाहत (अनहद) शब्द बहुत सुनाई देता है, और जगह सतोगुणी है। जब छुट्टियों से पहले मैं मिशन कालिज के प्रोफेसरों से मिलने गया था, तब उन्होंने मुझे कहा था कि अगले वर्ष एक लड़के (विद्यार्थी) को विलायत का वजीफा देना है। अगर तुम जाना चाहो, तो तुम्हारा सबसे बढ़कर अधिकार है। मगर महाराजजी! मैं तो केवल आपका आज्ञाधीन हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७४) मिंटगुमरी, ६ अगस्त, १८८१

आप का कृपापत्र आज मिला। अत्यंत खुशी हुई। सरदार मेवासिंह जी को मैं आज मिला था। बड़े खुश थे। लाला अयोध्यादासजी को मेरा मत्था टेकना। आप विवाह पर जायेंगे कि नहीं? और भगत हरभजरायजी भी यहाँ जायेंगे या नहीं। अगर आप जायेंगे तो कब जायेंगे। और सब तरह से खैरियत (कुशल) है। बाबाजी का कोई पत्र आया है या नहीं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५७५)　　मिंटगुमरी, ६ अगस्त, १८६१

मुझे इस बार पत्र लिखने में देर हो गई है। आपने मुआफ़ फ़रमाना। आपका कृपापत्र आने में भी देर हो गई है। आप यहाँ का सब हाल लिखते रहा करें। गुलाम पर सब तरह से खुश रहा करें। और आप भी किसी तरह का फ़िक्र और अंदेशा (शोक चिंता) कदापि मत किया करें। सबको मेरा मत्था टेकना।

—— ० ——

मिंटगुमरी में भैंस का अभाव।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५७६)　　मिंटगुमरी, १३ अगस्त, १८६१

आपका एक पत्र परसों मिला था, अत्यन्त हर्ष का कारण हुआ। यहाँ की एक अद्भुत बात में आपको लिखता हूँ कि यहाँ किसी भी मनुष्य के पास कोई भैंस नहीं है। केवल गौवों का दूध ही पर्वा जाता है। जी! आप मुझ पर सर्व प्रकार से खुश रहा करें। मैं आपका दास हूँ। यहाँ मन अन्तर्मुख बड़ा रहता है। अगर धनलाल ने कोई किताब आदि आपसे माँगी तो आपने ले देनी।

—— ० ——

योगवासिष्ठ का अभ्यास।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५७७)　　मिंटगुमरी, १७ अगस्त, १८६१

आपका कृपापत्र आने में देर हो गयी है, और मुझे भी पत्र लिखने में देर हो गयी है। मुआफ़ (क्षमा) करना। मैं योगवासिष्ठ बहुधा पढ़ा करता हूँ। सरदार जवाहरसिंह जो सिंह सभा पंजाब के मंत्री हैं, वही हैं जो आपके वाक़िफ़ (परिचित) थे। क्योंकि मैंने सुना है कि यह आर्य समाज के मंत्री भी रह चुके हैं। आप गुलाम पर सदा कृपादृष्टि रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७८) मिंटगुमरी, १० अगस्त, १८६१

आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि मैं २ सितंबर को सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। आप कृपादृष्टि रक्खा करें। पिछले दिनों मिंटगुमरी में स्वामी शिवगणचन्द्र जी आये हुए थे। उनसे आपका भी ज़िक्र (चर्चा) किया गया था। आशा है कि वह अब किसी दिन गुजराँवाले में उतरेंगे। और आपसे भी मिलेंगे। पंडित शालिग्राम जी साहब ओवरसियर से भी आपका ज़िक्र किया गया था। आप दया दृष्टि रक्खा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७९) ७३ बजे सायं, २५ अगस्त, १८६१

आशा है कि मैं ३१ अगस्त (माह हाल) को यहाँ से रवाना हूँगा। और लाहौर भी एक दिन या आध दिन ठहरूँगा। फिर आपकी सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। आपने दयादृष्टि रखनी। यहाँ आज वर्षा हुई है। मैं इस वक्त सैर करने आया हुआ हूँ। बड़ी ठंडी हवा चल रही है। बड़ा आनंद है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८०) मिंटगुमरी, २६ अगस्त, १८६१

आप का कृपापत्र कल प्राप्त हुआ था। अत्यंत खुशी हुई। पंडितजी की सलाह मैंने सैर करने की कर दी है, वह देहली और बिजनौर जायेंगे। वहाँ उनके रिश्तेदार (संबंधी) भी हैं। आशा है कि १५ या १६ मास सितंबर को लाहौर में वापिस चले आवेंगे। हम परसों वीरवार यहाँ से चलेंगे, और मैं शायद वीरवार की रात को या शुक्रवार को सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८१) मिंटगुमरी, २६ अगस्त, १८६१

आपका कृपापत्र आज मिला। अत्यंत खुशी हुई। आशा है कि मैं

और पंडितजी १ सितंबर को यहाँ से रवाना होंगे। वह देहली आदि की ओर जायेंगे, और मैं लाहौर से होता हुआ गुजराँवाले आऊँगा। १५ या १६ सितंबर को वह लाहौर आ जायेंगे। और मैं भी आपके पास से और मुरालीवाला से होता हुआ शायद लाहौर आ जाऊँगा। आशा करता हूँ कि गुजराँवाले आठ-दस दिन जरूर रहूँगा। आगे परमेश्वर की मरज़ी। हाँसी से पत्र आया था कि मासदजी (मौलवी) ६ या ७ सितंबर को गुजराँवाले आयेंगे, कालिज के सब लड़कों को मेरा मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४८२)   लाहौर, २२ सितंबर, १८६३

मैं यहाँ पूर्ण सकुशल पहुँच गया हूँ। यहाँ सब तरह से कुशल है। पंडित जियालाल मिले थे। वह इसी जगह रहेंगे। आप जल्दी पदार्पण करें। आपके पास जो अंग्रेजी लिफ़ाफ़ा मेरे नाम का पहुँचा है, वह आपने कृपापूर्वक फाड़कर, उसमें से पत्र निकालकर, एक नये लिफ़ाफ़े में डालकर, उसके ऊपर मेरा यहाँ का पता लिखकर फ़ौरन भेज देना। अगर उसी लिफ़ाफ़े को भेजोगे तो मुझे पूर्ण आशा है कि मार्ग में खो जायगा। यह लिफ़ाफ़ा हमारे प्रोफ़ेसरजी का है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (४८३) ६ बजे दिन, २५ सितंबर, १८६३

आपकी तरफ़ से दो पत्र आज ८ बजे मिले। प्रोफ़ेसर साहब ने अपना हाल लिखा है कि उन्होंने दिन क्योंकर काटे और वहाँ मौसम (ऋतु) कैसा है। साथ इसके वह अक्तूबर की पहली दूसरी तारीख़ को लाहौर आयेंगे, और तब मुझे मिलना चाहते हैं। राय सोंधीमल साहब लाला माधाराम और फ़ग्यूर्सनजी सब अक्तूबर की पहली दूसरी तारीख़ तक यहाँ रहेंगे। लाला माधाराम की तबदीली लाहौर में हो गई है। राय सोंधीमल साहब पहली सितंबर के लाहौर आये हुए हैं। उनकी

तबदीली हिसार से और जगह जरूर होनी है। मगर अभी हुक्म नहीं आया कि किस जगह। लाला कृष्णचंदजी की तबदीली लखनऊ हो गई है। यह आपको आज कल यहां मिलना चाहते हैं। उनको आपका कदापि कोई पत्र नहीं मिला। वरना जवाब जरूर भेज देते। लाला हाकिमराय आजकल पढ़ाई में प्रवृत्त है। शायद ही गुजरांवाले में आये। आप अब यहाँ जरूर जल्दी चले आवें। और किताबें (पोथियाँ) खरीद लें। लाला सोहनामल मिला था। कहता था कि जब कहोगे रुपये दे दूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८४) ५ अक्तूबर, १८६३

आप अपना हाल अच्छी तरह से लिखें। अब पाँव का क्या हाल है ? और यों सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है ? आज लाला कृष्णचंदजी आपको देखने आये थे। यहाँ सब तरह से आनंद है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८५) ७ अक्तूबर, १८६३

महाराजजी ! आपकी तरफ से कोई कृपापत्र नहीं प्राप्त हुआ। अब आपकी सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है। आप बहुत जल्दी सूचित फरमावें। कल मुरारीवाले से पत्र आया था जिससे यह मालूम होता था कि चाचाजी की सेहत अच्छी नहीं है। और बेबे (माता) जी चाहती हैं कि मैं पेशावर को आकर उनको मुरारीवाले में ले आऊँ। अस्तु, मैंने कल फिर मुरारीवाले पत्र लिखा था कि सारा हाल स्पष्ट रीति से लिखो। उसका जवाब आने पर देखा जायगा, आपने भी (अगर हो सका) तो मालूम करना कि क्या बात है। भाई साहब चाचाजी ने बहुत परे के मुलक में गया हुआ है। मुझे किसी तरह तकलीफ नहीं है, जैसा आप हुक्म (आदेश) करेंगे वैसा करूँगा। आपने अपना हाल बहुत जल्दी लिखना। मेरा ख्याल आपकी तरफ रहता है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५८६)　　　　९ अक्तूबर, १८९१

आपके दो कार्ड मिले। एक से आपकी बीमारी का हाल पढ़कर बड़ा रंज हुआ। आशा है कि पेशावर को तो मैं नहीं जाऊँगा, मगर मुरारी-वाला से कोई जवाब मेरे पत्र का नहीं आया, और न चाचाजी की तरफ से कोई पत्र आया है। इसलिये दिल जरा तशवीश (शोक, चिंता) में है, और सब तरह से आनंद है। विलायत से किताबें अभी तक नहीं आई। आप रने अपना हाल जरूर बहुत जल्दी लिखना। आपका पाँव कैसा है। आप दयादृष्टि रखा करें।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५८७)　　　　१२ अक्तूबर, १८९१

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। आपके पाँव को आराम आया पढ़कर खुशी दोचाला (द्विगुणी) हुई। मुरारी वाला से कोई पत्र अभी तक नहीं आया। अभी विलायत से किताबें भी नहीं आई। मंझूमल के घर जो किताबें रखी हुई थीं वह वहाँ बड़ी खराब हो चली थीं। आज उनको इस मकान में अपने पास ले आया हूँ। यहाँ उनको जब खोला तो उनमें से सैकड़ों कीड़े बड़े बड़े लाल रंग के निकले। मैं राजी हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें।

—— ० ——
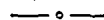
संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५८८)　　　　१४ अक्तूबर, १८९१

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मेरी किताबें आज विलायत से लाला उत्तमचंद की दुकान पर आ गई हैं। परसों या अतरसों मिलेंगी। कारण यह है कि उसके पास कोई चार या पाँच हजार रुपये की सब किताबें आई हैं। और उन सबको छान बीन करने और क़ीमत लगाने पर उनके दो तीन दिन लग जायेंगे, और उसके बाद वह मेरी किताबें मुझको दे सकेंगे। मैं आशा करता हूँ कि मैं शायद

बुधवार एक या दो दिन के वास्ते आपकी सेवा में हाज़िर हूँगा और मुरारीवाला भी आऊँगा। अब से आठवें दिन शनिवार हमारा कालिज खुलना है। आपने राशाम पर दयादृष्टि रखनी। मुरारीवाले से कोई पत्र नहीं आया। योगवासिष्ठ मेरे पास है, अगर हो सका तो मैं साथ ले आऊँगा। साईं लोक का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४८९) ९ बजे रात,१५ अक्तूबर, १८९१

आज मैं रेशा (जुकाम) के कारण बड़ा तंग रहा हूँ। अभी आराम नहीं आया। मैं आशा करता हूँ कि परसों मंगलवार मैं सुबह (प्रात) की गाड़ी से सेवा में हाज़िर हूँगा। आगे देखिये। आशा है किताबें कल मिल जायँगी। आज मैंने किताबें देखी थीं। दो किताबों से अतिरिक्त बाक़ी सब किताबें जो लिखी थीं वह आ गई हैं। इन पर कोई एक सौ बीस १२०) रुपये लगे हैं। और पैंतीस ३५) रुपये के लगभग उनके अगले (पहले के) देने हैं। भविष्य में भी और किताबों की ज़रूरत पड़ती रहा करेगी। कल मिशन कालिज खुलना है। मैं शायद वहाँ मिलने जाऊँगा। आप राशाम पर हर तरह खुश रहना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (४९०) २१ अक्तूबर, १८९१

यहाँ सब प्रकार से आनंद है। आपने अपना हाल जल्दी लिखना और जल्दी तशरीफ़ ले आना। मैं कालिज गया था। सब तरह से आनंद है, और कोई बात अभी लिखने योग्य नहीं है। आज से लेकर मैंने पंडितजी के मकान पर सात बजे आया करना है। इसलिए आप जब यहाँ आयें तो गुजराँवाला से सायं की गाड़ी से सवार न हुआ करना, क्योंकि उस तरह आपके यहाँ आने के वक़्त को मैं मकान पर मौजूद

नहीं हो सका करूँगा। यहाँ सात बजे का आना उन्होंने स्वयं मुझे कहा था, मैंने नहीं कहा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५६१) ११½ बजे दिन, २१ अक्तूबर, १८६१

अब का मैं आया हूँ, बड़ा तंग रहा हूँ। बदन (शरीर) बड़ा ही दुर्बल हो गया है। थोड़ा-थोड़ा तप (ज्वर) भी हो जाता है। और देह पर खुजली भी बराबर जारी है। और जुकाम अभी हटा नहीं। कालिज गया था, बड़ी मुश्किल से वापिस आया हूँ। यह पत्र लेट कर लिखा है, बहुत देर बैठ भी नहीं सकता। इन दिनों मैंने दूध जरा भी नहीं पिया। इति, मैंने बल्ले (खिड़कियों के द्वार) भी मकान के बंद कर दिए हुए हैं और गरम कपड़ा भी ऊपर लेता हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५८०)　११ बजे रात, ६ नवंबर, १८६१

आपका न तो कोई कृपापत्र प्राप्त हुआ है और न आप ही आये हैं। क्या कारण है? इन दिनों में आपका बड़ा इंतजार करता रहा हूँ। मगर आप पधारे नहीं। अगर आप यहाँ चरण डालने की तकलीफ उठावें तो अत्यंत कृपा है। गुलाम पर किसी तरह से खफा (रुष्ट) न होना और गुलाम को याद से न भुलाना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५६३) १०½ बजे दिन, ७ नवंबर, १८६१

आपका कृपापत्र इस वक्त मिला। अत्यंत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि मैं इस शुक्र या शनिवार को यहाँ हाजिर हूँगा। अगर हो सका तो मैं आपका थरमामीटर ले आऊँगा। बाकी कुशल है।

—— ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५६४)　　　　११ नवंबर, १८६१

मैं यहाँ ससुराल पहुँच गया हूँ। आपने यहाँ का हाल लिखा

रहना। रायसाहब ने यह कोठी बदल दी है। मगर यह दूसरी कोठी भी पहली के पास ही है। और कोई बात लिखने के योग्य नहीं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६५) १७ नवंबर, १८६३

आपकी तरफ से कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। वैराग्यशतक सहित यात्री के शतकों के अभी मैंने खरीदा नहीं। जब रुपये मिलेंगे फ़ौरन् ख़रीद लूँगा। और सब तरह से कुशल है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६६) १८, नवंबर, १८६३

आपका एक कृपापत्र डेरे पर मिला था। अत्यंत खुशी हुई। मैं आपकी आज्ञानुसार अमल करूँगा, और तंग कुरते के नीचे और कुरता रखूँगा, जो जल्दी बदल दिया करूँगा। अगर इत्तफ़ाक़ (अवसर) हुआ तो किसी के हाथ वैराग्यशतक भेज दूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६७) २१ नवंबर, १८६३

आपका कृपापत्र आज मिला। अत्यंत खुशी हुई। कल मामा हरनामदास भाई ठाकुरोंवाली का यहाँ आया था, आँखें बनवाने के लिये। आज वह वापिस चले गये हैं। कारण यह था कि उनकी आँख दो मास को ठीक बनाने के योग्य होगी। अभी कची थी। आपने अगले मास के शुरू में यहाँ एक दो दिन के लिए चले आना। अत्यंत दया होगी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६८) २१ नवंबर, १८६०

आपका कृपापत्र कल कालिज में मिला। अत्यंत खुशी हुई। मुझे सुर्फ़ (खारिश) अभी है। पर और सब तरह से सेहत (नीरोगता)

है। कल के स्वामी शिवगणचन्द्रजी यहाँ आये हुए हैं। लाला लक्ष्मी नारायण बैरिस्टर की कोठी पर उतरे हुए हैं। आपको बहुत ही ज्यादा याद-करते हैं। पिछले दिनों में उन्होंने भरतरी के तीनों शतकों का अनुवाद सहित व्याख्या के उर्दू में किया है, और वह स्यालकोट में किसी जिज्ञासु के पास भेजा है। वह शायद छपवा दे। आपको वह जरूर मिलना चाहते हैं। केवल सत्संग की खातिर। आप यहाँ कब आयेंगे? स्वामीजी यहाँ बहुत दिन ठहरेंगे। आप दास पर दयादृष्टि रखा करें।

—— • ——

सम्बोधन पूर्वोक्त, (५९९) ९ बजे दिन, २५ नवंबर, १८९१

आपके दो कृपापत्र मिले थे। अति खुशी का कारण हुए। कल मैं आपके आने का बड़ा इन्तजार करता रहा। मगर आप आये नहीं। अब आपने बहुत जल्दी यहाँ पधारना। आप जब आयेंगे, अपनी मरजी के अनुसार सब किताबें पसंद करके खरीद लेनी। आज कल आर्य्यसमाज के दो सालाना जलसे हैं। स्वामी शिवगणचंद्रजी कल नहीं मिले।

——:o——

संबोधन पूर्वोक्त, (६००) १ दिसंबर, १८९१

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था, अत्यंत खुशी व प्रसन्नता का कारण हुआ। आप जल्दी पधारें। बाकी सर्व प्रकार से कुशल है। इन दिनों अगर मैं तीन बजे के लगभग सैर करने जाऊँगा तो चाबी नीचे हलवाई (बनाने) वाले को दे जाया करूँगा।

—— c ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०१) ६ दिसंबर, १८९१

स्वामीजी मिले थे। मुझे कहने लगे कि "तुमने हमें भगतजी के आने से पहले सूचना क्यों नहीं दी? वरना हम उनसे और बातें करते और

उनके साथ छोड़ने स्टेशन पर जाते।" साथ इसके कहते थे कि "हमें एक ज़रूरी काम था। अन्यथा हम खुद बज़ुद (स्वयं आप) वहाँ आते।" यथोचित शायद फल मिले। मैं सहनशास्त्र का दे दूँगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०२) ६ दिसंबर, १८९३

परसों का मुझे तप (ज्वर) आता है। आज सारा दिन चारपाई से पैर नीचे नहीं धरा। आज सायं के आठ बजे तप उतरा है। मैं कहीं बाहर इत्यादि नहीं जा सका। आज आठ बजे सायं के बाद कुनैन खाई थी। जिसके कारण देह में शक्ति आई है और पत्र लिखने के योग्य हुआ हूँ। मुझे तप के साथ खाँसी भी है। कारण यह मालूम होता है कि मैंने नीबू आचार थोड़ा सा खाया था, और वरज़िश (व्यायाम) नहीं की थी। लछमणदास कभी कभी यहाँ आता है। मगर वह ऐसा आदमी नहीं है जिससे कोई चंदाँ (कुछ) लाभ उठा सकें। अब आपने यहाँ आने की तकलीफ़ बिलकुल न उठानी। अब मुझे सेहत आ जायगी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०३) १५ दिसंबर, १८९३

प्रेमनाथ मिला था। मगर अभी उसने शुरू करने का दिन नियत नहीं किया। पंडितजी की तरफ़ जाने का वक़्त बदला दिया है। मैं आशा करता हूँ कि मैं रविवार को सेवा में उपस्थित हो सकूँगा। अब मुझे आगे से बहुत आराम है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०४) २१ दिसंबर, १८९३

कल लछमणदास का पत्र मिला था, कुछ मुश्किल के साथ पढ़ा गया। उसकी नक़ल यह है—"जनाब मेहरबान गुसाईं तीर्थराम साहब जी। मत्था टेकना के बाद विदित हो। इस जगह कुशल है और आपकी कुशल

सदैव उत्तम चाहता हूँ। यह बंदा (दास) पूर्ण कुशलतापूर्वक लाहौर से रवाना होकर मुकाम पनीरवंद में पहुँच गया। मुझे किसी किस्म की तंगी नहीं है। मैं यहाँ राजी-खुशी हूँ। लाला गुरुदास साहब मुझे मिले थे। कहते थे कि हमने लाला अयोध्यादास की तरफ पत्र लिख दिया है। मैं सरदार साहब के पास हूँ। साथ इसके काम अभी पठानों का टहल में शुरू हुआ है। और काम शायद कम शुरू होंगे। पुनः प्रणाम। बंदा लछमणदास, मुकाम पनीरवद।"

मैंने अभी कोई जवाब नहीं लिखा। लाला सोहनलाल का घर मैं नहीं जानता। और यों मिलने का इत्तफाक (अवसर) नहीं हुआ। इसलिए उनको यह पत्र नहीं दिखाया। लाला अयोध्यादास यहाँ नहीं हैं। आप अगर इन दिनों यहाँ आ जायें तो अति कृपा हो।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०८) ११ बजे रात, २२ दिसंबर, १८६१

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। वह अँगीठी रेल ही में टूट गई थी। आप ने पापाजी का हाल सविस्तर बहुत जल्दी लिखना। रघुरूपदेव को बधाई।

—— ० ——

दादाभाई नौरोजी का आगमन

संबोधन पूर्वोक्त, (६०६) ८ बजे रात, २५ दिसंबर, १८६१

आपका कारड कोई न मिला, पापाजी का हाल आपने नहीं लिखा। आज यहाँ दादाभाई नौरोजी (जो भारतवर्ष का मनुष्य पार्लीमेंट का मैम्बर है) तीन बजे की गाड़ी में आया है। इनके ठाठबाट (आडम्बर) के साथ उसका स्वागत किया गया है कि जिसका कुछ अन्त नहीं। कांग्रेसवालों ने मानो उसको ब्रह्मा और विष्णु की पदवी दे दी है। कई सुनहरी दरवाजे बनाये गये हैं। उसकी गाड़ी शहर (नगर) में

अभी तक फिरा रहे हैं। लाखों मनुष्य साथ आ रहे हैं। उसके चारों ओर (इर्द-गिर्द) दीपमाला है। और बड़े ज़ोर के जैकारे (उच्चनाद) बज रहे हैं। साधारण लोगों के चित्तों में अत्यन्त जोश आ रहा है। इतना जोश कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। मगर मेरे दिल (चित्त) पर इन सब बातों से किञ्चित् मात्र प्रभाव (असर) नहीं हुआ। यह बड़े शुकर (धन्यवाद) की बात है। आज लाला कृष्णचंदजी मिले थे। राय साहब यहाँ नहीं हैं।

गुरुजी का क्रोध और तीर्थरामजी की क्षमा-याचना

संबोधन पूर्वोक्त, (६०७) ६ बजे सायं, २६ दिसंबर, १८९१

गर कुशी वर जुर्म बख़शी, दस्तो सर बर आस्तानम।
बन्द: रा फरमां ने बाशद, हरचे: फरमाई बर आनम॥

(गुलिस्तान सादी)

(अर्थ—चाहे आप मारें चाहे क्षमा करें, मेरा सिर और हाथ दोनों आपकी देहली अर्थात् देहलीज़ पर हैं। दास का आदेश क्या हो सकता है, जैसी आप आज्ञा दें वैसा मैं बर्तावों में लाऊँ।)

महाराजजी! जब आपका पत्र मुझे मिला, अत्यन्त खुशी हुई। मगर (पत्र) पढ़कर चित्त अति शोकातुर हुआ, क्योंकि आप दास पर ख़फ़ा (रुष्ट) हैं। आप अब क्षमा करियेगा, क्योंकि मेरे जैसे ना तजुरबेकार (अनुभवहीन) से भूल चूक बहुधा हो जाती है। "मनुष्य गिर-गिर कर सवार होता है," और कई बार बड़े स्याने (बुद्धिमान्) भी चूक जाते हैं। "तारू (तैराक) डूबते आये हैं"। आप अब यहाँ कब पधारेंगे? जब तक आपका खुशी का पत्र या आप स्वयं यहाँ न आयेंगे, मुझे बड़ी चिन्ता रहेगी। मुझे मालूम है कि इन दिनों आपका तंगी होगी, इसलिये यदि

आप आज्ञा दें तो मैं यहाँ से कुछ अर्ज करूँ* अर्थात् सेवा में कुछ भेजूँ। आपने दास पर किसी प्रकार से रुष्ट न होना। इस वर्ष मैंने ऐसी एक भी पुस्तक नहीं खरीदी जो मेरी वार्षिक परीक्षा में उपयोगी न हो। पहले यह स्वभाव मुझे था, पर अब आपकी दया से दूर हो गया है। खर्च मुझसे निःसन्देह बहुत अधिक हो जाता है, और मैं प्रयत्न कर रहा हूँ कि कम हो। यह खर्च दूध इत्यादि में होता है। मैं जब कांग्रेस का उत्सव देखने गया था, तो इस उद्देश्य से गया था कि वहाँ जो बङ्गाल, मदरास, बम्बई, मध्य प्रान्त, दक्षिण इत्यादि के अभ्यस्त दर्जे के वक्ता (Lecturers) आये हुए हैं, उनके व्याख्यान की विधि आदि देखूँ। नौरोजी के आने के दिन मैंने इस बात का धन्यवाद किया था कि लोगों को जोश खरोश (उत्साह) में देख कर मुझे जोश नहीं आया, सो अब भी मैं आपके चरणों को धन्यवाद देता हूँ कि इन सब बोलनेवालों (वक्ताओं) को सुन कर मुझे जोश न आया।

—— o ——

सन् १८९४ ई०

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईंजी की आयु लगभग साढ़े बीस वर्ष के थी और इसी वर्ष उन्होंने एम० ए० में पढ़ना आरम्भ किया था।)

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६०८)　　　　१ जनवरी, १८९४

आपका कोई कृपापत्र उस गुस्से के (रोष भरे) पत्र के बाद प्राप्त नहीं हुआ। मेरा मन यह कहता है कि आप मुझ पर किसी तरह से खफ़ा (रुष्ट) नहीं हैं। पर आपने मुझे कृपापत्र क्यों नहीं लिखा। अब आपने दो तीन दिनों तक यहाँ जरूर पधारना। आपके आदेशानुसार अब मैं

---

* गुरुजी की भेंट में जब कुछ रुपये भेजना हो तो उसे "अर्ज करूँ" का संकेत तीर्थरामजी ने बना रखा था, उसी संकेत को यहाँ उन्होंने बर्ता है।

प्रातः के समय ही पंडितजी की तरफ से हो आता हूँ। यहाँ कल से वर्षा हो रही है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०९) ३ जनवरी, १८६४

कल आपका एक कृपापत्र मिला था। अत्यंत खुशी का कारण हुआ। मैं आशा करता हूँ कि कल यौरवार सायं से लेकर मैं प्रेमनाथ की तरफ जाया करूँगा, यह मुझे केवल कल ही मिला था। इतनी मुद्दत (देर तक) आपने यहाँ नहीं पधारे। आपने जल्दी आना। हमारी कान्फ्रेंस का जलसा १५ माह हाल (जनवरी) को है। दाँसी से एक आदमी आया था। उसके हाथ मासड़ (मौसा) जी ने मुझे कोई बारह सेर घी अत्यंत शुद्ध भेजा है खाने के लिए। इसमें से आपने भी ले जाना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६१०) ६ जनवरी, १८६४

महाराजजी! आप अभी तक यहाँ तशरीफ़ क्यों नहीं लाये? आप बहुत जल्दी पदार्पण कीजियेगा। इस महीने मुझे कोई वजीफा अभी तक नहीं मिला। मेरी बहन के हाँ लड़का पैदा हुआ है। प्रेमनाथ के पिता को भी रियाजी (गणित शास्त्र) का शौक है। दोनों मेरे से अत्यंत खुश (प्रसन्न) हुए हैं। बहुत ही राजी हुए हैं। यह सब आपके चरणों की दया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६११) ८ जनवरी, १८६४

कान्फ्रेंस का जलसा १५ माह हाल (जनवरी) के स्थान पर २२ जनवरी को होगा। आपका कृपापत्र इस पत्र लिख चुकने के बाद मिला है, अत्यंत खुशी का कारण हुआ है। आप दास पर सदैव राजी रहा करें। रावलपिंडी में एक आर्ट्स कालेज खुला है। वहाँ एक प्रोफेसर रियाजी

की जरूरत होगी। मेरे एक दोस्त (मित्र) लाला गिरिजाप्रसाद बी० ए० का यहाँ से पत्र आया है कि वह मेरे लिए अत्यंत कोशिश करेगा। महाराजजी! आपने हर तरह से खुश रहना।

—— o ——

गौन (Gown) की चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त,		(६१२)		१० जनवरी, १८६४

आपके दो पत्र मिले, एक ७ जनवरी का लिखा हुआ, दूसरा ८ जनवरी का लिखा हुआ। आप खर्च की कुछ परवाह न करें, कोई डर नहीं। परमेश्वर दया करेगा। आप मुझे बहुत जल्दी लिखें कि मैं यह चोगा (गौन) इत्यादि बनवाऊँ या किसी से उधार माँगने का यत्न करूँ। मैंने एक दो से अब तक उधार माँगा है, उन्होंने इनकार किया है। इस वर्ष से पहले एक मनुष्य (दर्जी) यूनीवर्सिटी से ठेका ले लिया करता था और उससे बने बनाए चोगे (गौन) मिल सकते थे। इस बार उसने ठेका नहीं लिया। आप बनवाने में बीस रुपये के लगभग खर्च होते हैं। अगर (विश्वविद्यालय के वार्षिक) उत्सव के निकटस्थ समय पर बनवाया जायगा तो खर्च अधिक पड़ेगा। क्योंकि इस प्रकार का गौन (चोगा) बनानेवाले दर्जी (कारीगर) लाहौर में एक या दो से अधिक नहीं। और उन दिनों उनको काम बहुत विशेष होगा और मजदूरी बहुत माँगेंगे। इस बार मुझको भी खर्च बहुत अधिक हुआ है मगर भविष्य में आप देखेंगे कि मेरा खर्च दूध इत्यादि पर बहुत कम हुआ करेगा। मुझे आज छोटा वजीफा फीस काटकर मिला है। २२ जनवरी सोमवार को जलसा है। आपकी बहन के विवाह में मुझे कल ही मालूम हो गया था। (उसकी मृत्यु से) माँ मुझे शोक हुआ है उसका न लिखना अच्छा है। मैं पढ़ा ही रोया हूँ। मेरी उसके साथ अत्यन्त मुहब्बत (प्रीति) थी।

—— o ——

एक प्रोफ़ेसर साहब का अपना गौन देने के लिये तैयार होना

संबोधन पूर्वोक्त, (६१३) ११ जनवरी, १८९४

आज लक्ष्मणदास* मिला है, चोगा (गौन) किसी लड़के से हाथ नहीं लगा, क्योंकि बहुतों ने तो बनवाया ही नहीं हुआ, और जिन्होंने बनवाया हुआ है, उनसे औरों ने पहले ही से माँग रखा हुआ है। अगर हो सके तो अपने हाकमराय † से चाहिल ‡ सेहरा भेजकर उसका गौन गुजरांवाले से मँगा लेना, और वहाँ से जब यहाँ पधारो तो साथ लेते आना। नहीं तो मेरे प्रोफेसर साहब ने फरमाया था कि "तुमने गौन तो मेरा ले लेना, परन्तु यह गौन विलायत का है और उसमें तथा यहाँ के गौन इत्यादि में थोड़ा सा अंतर (फ़र्क़) है। यह फ़र्क़ दुरुस्त करवाने पर तुम्हारे चार पाँच रुपये खर्च होंगे, क्योंकि एक हुड (Hood) तुमको नया बनवाना पड़ेगा"। यह सब श्रीजी उनके गाँव में चलने से एक दिन पहले भी करवा सकते हैं। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। महाराजजी! प्यार दयादृष्टि रखा करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (६१४) १५ जनवरी, १८९४

आप किस दिन पधारेंगे? स्वामी शिवगणचंद्रजी, जब अब मैं यहाँ

---

* लाला लक्ष्मणदास चाहिल कुड़ना के रहनेवाले थे। गुसाईं तीर्थरामजी के साथ उनकी बड़ी प्रीति थी। उनके बड़े भाई लाला मोहनलाल हैं जो कई वर्षों से लाहौर रहते हैं। उन्होंने तीर्थरामजी को समय-समय पर धन से सहायता दी और अपने पुत्र लाला बालमुकुन्द को विद्यार्थ उन (तीर्थरामजी) के सुपुर्द कर रखा था। आजकल यह लाला बालमुकुन्दजी किसी प्रान्त में असिस्टैंट कमिश्नर के पद पर नियुक्त हैं।

† लाला हाकिमराय भी लाला लक्ष्मणदास के सम्बन्धी हैं।

‡ यह ग्राम ज़िला गुजरांवाले में है

गोस्वामी तीर्थराम एम्० ए०
(यूनिवर्सिटी गौन)

लाहौर १८९६

GOSWAMI TIRTHA RAMA M A
(In University Gown)

Lahore 1896

गवर्नमेंट कालिज के प्रिन्सिपल साहब की सहानुभूति व कृपा

संबोधन पूर्वोक्त, (६१६) ४ फरवरी, १८९४

आज मैं गवर्नमेंट कालिज के बड़े साहबजी* को मिलने गया था, उन्होंने मुझे एक पुस्तक उपहार की रीति से दी है, और यह कहते हैं कि "तुम्हारे उधर (विलायत) भेजने के लिये अगर हमें आकाश और पाताल भी मिलाना पड़ जाये, तो किञ्चित् सकोच (मआफ) न करेंगे" इत्यादि। अब मैं कल परसों यह पूछूँगा कि यह वजीफ़ा † (छात्रवृत्ति) किस तारीख से मिलेगा। पूछ कर लिखूँगा। पंडितजी की तरफ़ ज़रूर जाना, और उन्हें प्रसन्न करना। मैं १।। के समय बस बल्ले ‡ के साथ भी (जो मेरे मकान में लगा हुआ है) वर्जिश (व्यायाम) किया करता हूँ। आप कृपादृष्टि रखा करें।

गुरुजी से सीखा हुआ उपदेश अब गुरुजी की ओर

संबोधन पूर्वोक्त, (६२०) ७ फरवरी, १८९४

आपका कृपापत्र मिला था। आपका गला अभी तक बीमार है, यह पढ़कर अत्यंत अफ़सोस हुआ। इस बार मुझे पत्र लिखने में किंचित् देर हो गई है। मैं आशा करता हूँ कि हमें इस रविवार से लेकर चार पाँच दिन की छुट्टियाँ होंगी। अगर हुई तो मैं शनिवार रात या रविवार की शाम को हाज़िर हूँगा। पंडितजी की तरफ़ आपने ज़रूर जल्दी जाना।

---

* मिस्टर बैल प्रिन्सिपल गवर्नमेंट कालिज से यहाँ अभिप्राय है।

† यह छात्रवृत्ति विलायत की है। जिसका वर्णन पहले भी अगस्त १८९३ के पत्र में हुआ है।

‡ पंजाब के कोल घरों की सामनी सामनी दीवारों में बाहर के दरवाजे की सारी चौखट के बीच एक लकड़ी लगी रहती है, जो बच्चों के लटकाने का काम देती है। उसे लोग बल्ला कहते हैं।

आप अपने वास्तव स्वरूप की ओर ध्यान करने का प्रयत्न करें। संबंधियों की किञ्चित् मात्र परवाह न करें। सत्संग, उत्तम पुस्तक, एकान्त-सेवन के द्वारा अपने स्वरूप में निष्ठा होती है। और अपने स्वरूप में निष्ठा होने से सारा संसार दास बन जाता है। आप अपने सेवक को कभी न भुलायें, सर्वदा कृपादृष्टि रखा करें। एक पत्र में जल्दी और लिखूँगा। धर्मचंद को खुशी।

——.o:——

तीर्थरामजी का समय क्रम

सम्बोधन पूर्वोक्त,　　　(६७१)　११ बजे रात, ८ फरवरी, १८९४

आपका एक कृपापत्र इस समय और मिला। अत्यन्त खुशी हुई। मैं आजकल कोई पाँच बजे प्रातःकाल उठता हूँ। और सात बजे तक पढ़ता रहता हूँ। फिर शौच इत्यादि जाकर स्नान करता हूँ, और व्यायाम करता हूँ, तत्पश्चात् पंडितजी की ओर जाता हूँ। मार्ग में पढ़ता रहता हूँ। वहाँ एक घंटे के बाद भोजन करके उनके साथ गाड़ी में कालिज आता हूँ। कालिज से डेरे (मकान) आती बार रास्ते में दूध पीता हूँ। डेरे कुछ मिनट ठहर कर दरिया (रावी दरिया) को जाता हूँ। वहाँ जाकर दरिया किनारे (नदी तट) पर कोई आध घंटे के लगभग टहलता रहता हूँ। वहाँ से वापस आती बार सारे नगर के इर्द गिर्द (चारों ओर) बाग में फिरता हूँ। वहाँ से डेरे (घर) आनकर कोठे (छत) पर टहलता रहता हूँ। इतने में अँधेरा हो जाता है (मगर यह याद रहे कि मैं चलते फिरते पढ़ता बराबर रहता हूँ)। अँधेरा पड़ने पर व्यायाम करता हूँ। और लैम्प जलाकर सात बजे तक पढ़ता हूँ, फिर भोजन खाने जाता हूँ और प्रेम * की तरफ भी जाता हूँ। वहाँ से आकर कोई दस बारह मिनट अपने मकान के बने

* प्रेम से तात्पर्य प्रेममाया है।

के साथ व्यायाम करता हूँ। फिर कोई साढ़े दस बजे तक पढ़ता हूँ, और लेट जाता हूँ। मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि हमारा मेदा (उदर) ठीक निरोगावस्था में हो, तो हमें अत्यंत आनंद, शान्ति, एकाग्रता, ईश्वरस्मरण और अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त होते हैं। बुद्धि और स्मरण शक्ति का बल अति तीव्र हो जाता है। प्रथम तो मैं खाता ही बहुत कम हूँ, द्वितीय जो खाता हूँ, पचा लेता हूँ।

परसों मुझे प्रेमनाथ का पिता बाबू चंद्रनाथ मित्र के घर ले गया था। मगर आज मैं अकेला बाबू चंद्रनाथ मित्र (जो पंजाब विश्वविद्यालय के सब रजिस्ट्रार हैं) की ओर दफ़्तर में गया था, बड़े आदर-सत्कार से मिले। कहते हैं कि यह वज़ीफ़ा इस वर्ष है, दो सौ पचास रुपय २५०) मासिक का है। साथ इसके (विलायत) आकर चतुर विद्यार्थी और वज़ीफ़े भी ले सकते हैं। अप्रैल मास में प्रार्थनापत्र दिए जायँगे। इस बात का आपने अभी और किसी मनुष्य से भी चर्चा न करना। वहाँ वार्तालाप में उन्होंने कहा था कि "गुजराँवाले के प्रान्त में पहिले एक ब्राह्मण महात्मा * हुए थे जो जम्मू की ओर भी जाया करते थे, उनकी यह बात प्रसिद्ध थी कि वह कई प्रकार की सच्ची भविष्य वाणियाँ कहा करते थे। क्या अब भी कोई ऐसे (महात्मा) हैं। मैंने फिर आपका ज़िक्र (चर्चा) बड़ी अच्छी तरह से किया। और कहा जब कि वह अर्थात् आप लाहौर में पधारेंगे, मैं दर्शन कराऊँगा, इत्यादि।

आज कल राय मेलाराम का पुत्र† जो ऐफ़० ए० में पढ़ता है मुझे कई संदेसे भेज चुका है कि मैं उसे पढ़ाना स्वीकार करूँ। मगर मैंने अभी

* सुना जाता है कि ब्राह्मण महात्मा भावाराम थे जो लगातार १० वर्ष तक एक गुफ़ा में रह के फिर परमात्मा वाणी की सिद्धि में प्रसिद्ध हो गए थे। उनको लोग बहुत मान जाते थे।

† राय मेलाराम के सुपुत्र राय बहादुर लाला रामशरणदास से यहाँ अभिप्राय है।

कोई उत्तर नहीं दिया। समय कहाँ से लाऊँ ? कठिन यह है कि जिनको पढ़ाने लगता हूँ वह फिर छोड़ते बिलकुल नहीं। कोई न कोई उपाय से मुझे रख लेते हैं। प्यार से और मुहब्बत से बाँध लेते हैं। आप कृपादृष्टि रखा करें। गुलाम को याद रखा करें।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६२२)　　　　९ फ़रवरी, १८६४

मुझे छुट्टियाँ नहीं हुईं, इसलिए मैंने यहाँ आने का इरादा मुल्तवी (स्थगित) कर दिया है। वज़ीफ़ा अभी तक कोई नहीं मिला। राय मेला राम के लड़के ने फिर मेरे किसी दोस्त (मित्र) के हाथ कह भेजा था, और फिर आप भी मिला था। मैंने अभी कोई पक्का जवाब नहीं दिया। अब जैसा आप हुक्म (आदेश) दें करूँगा।　　।* मगर यह छुटता नहीं। राय मेलाराम का लड़का एक घंटे के पंद्रह १५) रु० देना चाहता है। आपने वज़ीराबाद ज़रूर जाना। लाला कर्मचंद को मेरी खुशी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६२३)　　　　११ फ़रवरी, १८६४

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हुआ हूँ। और कोई बात इस समय तक लिखने के योग्य नहीं हुई। छोटा वज़ीरा आज मिला था। जिनसे चार रुपये उधार लिए थे, उनको दे दिये हैं। हलवाइयों को भी दे दिया है। आप दयादृष्टि रखा करें। यहाँ आज धूप निकली है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६२४)　　　　रात, १४ फ़रवरी, १८६४

मैं आज लाला रामशरण की तरफ़ गया था। वह अत्यंत खुश हुआ था। पंडित को कहा था कि यहाँ आ जाया करे। और उसने मंज़ूर

* इतना भाग पत्र का कटा रहता था।

कर लिया था। मगर वह तीन दिन आया नहीं। शायद वर्षा के कारण। प्रेम (प्रमनाथ) है। आप ने उस काम के लिए बहुत जल्दी कोशिश करनी। जूती बहुत अच्छी है। और कर्मचंद को खुशी।

—— o ——

संसार की निःसारता

संबोधन पूर्वोक्त, (६२५) १७ फ़रवरी, १८९४

आपका एक भी कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है ? पंडितजी का क्या हाल है ? यहाँ सब बातें बदस्तूर हैं। आप मुक़ाम पर कृपा रक्खा करें। संसार की कोई वस्तु एतबार (विश्वास) और भरोसा (आश्रय) करने के योग्य नहीं। अल्बत्त कृपा परमेश्वर की उन लोगों पर है जो अपना आश्रय और विश्वास केवल एक परमात्मा पर रखते हैं, और चित्त से सच्चे साधु हैं। ऐसे महापुरुषों के चरणों में परमेश्वर की सारी सृष्टि सेवा करती है, अर्थात् आज्ञाधीन रहती है।

—— o ——

विलायत जाने निमित्त वज़ीफ़े का विज्ञापन

संबोधन पूर्वोक्त, (६२६) १९ फ़रवरी, १८९४

आज आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी खुशी हुई। आज यहाँ खूब धूप निकली थी। यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) वालों ने आज ही से उस वज़ीफ़े की बाबत यह विज्ञापन दे दिया है कि जो व्यक्ति यह वज़ीफ़ा लेना चाहते हैं, वह आज से लेकर मई मास से पहले-पहले प्रार्थना-पत्र दे दें। आपने कृपा दृष्टि रखनी। आप स्वयं भी पत्र लिखने का ध्यान किया करें। धैर्य और प्रीति के साथ यह काम करना, मगर जल्दी। मगर आपने किसी प्रकार की चिन्ता न करना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२७) ५ बजे प्रात:, २२ फ़रवरी, १८६४

यहाँ आज कल खूब धूप लगती है। अगर यह काम मास मार्च के शुरू (आरंभ) में हो जाय, तो बड़ी खुशी हो। तब आपने यहाँ आ जाना। आपने किसी क़िस्म का फ़िक्र न करना। आप कारात्र जल्दी भेजते रहा करें। गुलाम पर दयादृष्टि रखा करें। लाजा रामशरण पिछले दो तीन दिन यहाँ नहीं था। पंडित यहाँ कभी नहीं आया।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२८) २३ फरवरी, १८६४

आशा है कल या परसों डॉक्टर से मिलने का इत्तफ़ाक़ (समागम) होगा। आप अपना हाल बहुत जल्दी लिखें। आपकी तरफ़ बड़ा ख़याल है। बड़ी ऐहतियात (परहेज़) के साथ सब खान पान करना। आशा है परमात्मा आपको बहुत जल्द सेहत (स्वास्थ्य) दे देंगे। मेरी किताब को अभी अगर आज शुरू नहीं किया तो अत्यंत जल्दी कर देना। किसी बात का फ़िक्र न करना।

——:०:——

व्यायाम और व्रतों से रोग दूर करना

संबोधन पूर्वोक्त, (६२९) २५ फरवरी, १८६४

महाराजजी! अब आपकी तबीयत (प्रकृति) कैसी है? आपने जितना हो सके कसरत-बदनी (व्यायाम) का प्रयत्न किया करें, और एक दो वक़्त (समय) उपवास करें, तो मैं यक़ीन करता हूँ कि आपको शर्तिया (निश्चयपूर्वक) नीरोगता प्राप्त हो जायगी। मेरे अनुभव में आया है कि खाने पीनेवाली औषधियों का अधिक सेवन भी हमें अत्यंत तंग करता है। परमेश्वर आपको बहुत जल्दी पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें। आपने अपना हाल अत्यंत जल्दी अपने हाथ से लिखना। आपके पत्रों का ख़याल है। इन दिनों लाहौर में करनल अलकाट और मिसिज़ बिसेंट

आये हुए हैं। मेरी किताब तो शायद आपने दे दी होगी। उसका फ़िक्र रखना।

—— ० ——

साधुसेवा और पुस्तकों से लाभ

संबोधन पूर्वोक्त, (६३०) १२ बजे रात, २१ फ़रवरी, १८९४

करनल अलकाट और एनीबिसेंट आज चले गये हैं, ये पक्के सनातन धर्मी हैं और वेदान्त में बड़ा निश्चय रखते हैं। आज आपकी दया से मुझे डॉक्टर का सर्टीफ़िकट बड़ा अच्छा मुस्त मिल गया है। अब आपकी तरफ़ से कसर (न्यूनता) है। आप पुस्तकें निश्शंक होकर खरीद लिया करें। जो कुछ साधुसेवा और पुस्तकों इत्यादि पर लगे, वही लाभ है। आपका अच्छा होने का हाल पढ़कर बड़ी खुशी हुई।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३१) २८ फ़रवरी, १८९४

महाराजजी! आप अपनी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल जल्दी लिख कर भेजते रहा करें। मैं सब प्रकार से आनंद में हूँ। आपके चरणों का ध्यान है। आज दो सर्टीफ़िकेट लिये हैं। और अभी एक और लेना रहता है। सब आपकी कृपा का फल है। आप शरीर पर हर तरह से खुश रहा करें। किसी बात से खफ़ा (रुष्ट) न होना। थोड़े दिनों को तशरीफ़ ले आनी (यहाँ पधारना)। अगर कल यह काम शुरू (आरंभ) हो जाय तो क्या ही अच्छा हो।

—— ० ——

काम का रहस्य

संबोधन पूर्वोक्त, (६३२) प्रातः, ४ मार्च, १८९४

आज मैं देर के बाद विनयपत्र भेजने लगा हूँ। इन दिनों

मुझे अत्यंत काम रहा है। क्योंकि आज मैं सोया भी पाँच घंटे से कम हूँ। प्रोफेसरों का काम भी करनेवाला है। सर्टीफिकेट अत्यंत ही उत्तम मिले हैं। आप सर्व प्रकार से खुश (प्रसन्न) रहा करें। किसी प्रकार की चिंता न करें। अगर हम किसी काम को करना चाहें, तो मेरी राय (सम्मति) में हमको चाहिये कि अपने मन को किञ्चित न डोलने दें (उसको अडोल, अचल और निष्क्रिय रखें), मगर उस काम के करने के लिये अपनी इंद्रियों को किञ्चित् स्थिर (निष्क्रिय) न होने दें। उनको हिलाते और चलाते रहें और कर्म में अत्यंत प्रवृत्त रखें। इस तरह से हमको अवश्य अत्यंत जल्दी कामयाबी (सफलता) प्राप्त होती है। कृष्णजी ने भी ऐसा ही कहा है।

—— ० ——

बहुत काम में बड़ा आनंद

संबोधन पूर्वोक्त, (६३३) ६ मार्च, १८६४

आपका एक कृपापत्र परसों और एक कल मिला था। अत्यंत खुशी हुई। भाई साहब का एक पत्र आया था। वह आज कल पेशावर से आनेवाले हैं। आपके चरणों की तरफ बड़ा ध्यान रहता है। मुझे काम बहुत बड़ा रहता है, मगर काम में बहुत ज्यादा आनंद रहता है। यह सब आपके चरणों की कृपा है। लाला गमचरणदास * ने एक घंटा के फीस २०) रु० मासिक कर दिये हैं, मगर समय अधिक खर्च होता है, क्योंकि मुझे स्वयं पढ़ाने में आनंद आता है। हे परमात्मा! महाराजजी

* यहाँ राय बहादुर लाला मैयाराम साहब के पुत्र रायबहादुर लाला रामशरणदास से अभिप्राय है।

को बिलकुल सेहत (पूर्ण नीरोगता) हो जाय। मुझे आशा है कि मेरा यह काम परमात्मा अब अत्यंत जल्दी कर देंगे।

—— o ——

एम० ए० में तीर्थरामजी के मन्त्र

संबोधन पूर्वोक्त, (६३४) ८ मार्च, १८६४

आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। पिछले दिनों मुझे कपड़ों की बड़ी तंगी थी। धोबी ने मास भर तक कपड़े नहीं दिये थे, इस लिये मैंने पड़ोसी दरजी से एक चोगा, एक कुरता और एक पाजामा मोल ले लिया था। दाम दो रुपये से दो पैसे कम लगे थे। आप अपने स्वास्थ्य का हाल जल्दी लिखें। आपके चरणों की ओर ध्यान रहता है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३५) ६ मार्च, १८६४

आपका कृपापत्र कल मिला था। अत्यंत खुशी का कारण हुआ। अब आपका जी (चित्त) यहाँ आने का ज़रा भी चाहे तो तुरंत चले आया कीजिये। मुझसे कभी मत पूछा कीजिये। क्योंकि मैं तो आपसे सदा ही चाहता हूँ। यह ख़ैमेरा मेरे पढ़ाने से अत्यंत ही खुश है और बड़ा मशकूर (कृपा) है। यह सब परमात्मा की कृपा है।

—— o ——

तीर्थरामजी का केवल दूध पर निर्वाह

संबोधन पूर्वोक्त, (६३६) ११ मार्च, १८६४

आपके कृपापत्र बहुत मिले हैं। मैं सबके जवाब नहीं दे सका। मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाना। महाराजजी ! मैं इन दिनों वास्तव में, केवल दूध पर गुज़ारा (निर्वाह) करता हूँ। और मेरा दमाग़ (मस्तिष्क) बहुत

अच्छी प्रकार से काम करता है। बदन (शरीर) में बल किसी से कम नहीं। मन भी शुद्ध रहता है। अगर आप भी इसी प्रकार केवल दुग्धादि पर गुज़ारह करने का स्वभाव डालें तो मुझे बड़ी खुशी हो। खर्च की कुछ परवाह (चिन्ता) न करें। दूध पीना फ़ज़ूलखर्ची (अपव्यय) नहीं है। दूध अधिक बर्तने से खर्च कदापि कदापि अधिक नहीं होता; और अगर अधिक हो भी तो कुछ परवाह नहीं है। आपने जल्दी यहाँ पधारना। मेरे काम का ख्याल रखना।

संबोधन पूर्वोक्त, (६३७) १२ मार्च, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। चाचाजी की बीमारी का बड़ा अफ़सोस (शोक) है। छुट्टियाँ तो हमें होनी हैं, मगर आशा नहीं कि मैं आ सकूँ, क्योंकि बड़ा फँसा हुआ हूँ। सबके वार्षिक इम्तहान समीप हैं। अब आपने उस काम की बाबत कभी इशारह भी नहीं लिखा। आप गुलाम पर दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (६३८) १४ मार्च, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बहुत काल बीत गया। क्या कारण है? मैं होलियों के अंत में आने की कोशिश करूँगा। आपने हर प्रकार से कृपादृष्टि रखनी। अपना हाल जल्दी लिखते रहा करें।
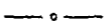
सत्संग और कुसंग के फल

संबोधन पूर्वोक्त, (६३९) १६ मार्च, १८६४

मैं आशा करता हूँ कि सात-आठ दिन तक मेला में हाज़िर हूँगा। लाला रामशरणदास कोई आठ दस दिन के बाद यहाँ वापिस आयगा।

अपनी जागीर के मुक़द्दमात देखने मुलतान की तरफ़ गया हुआ है। आज उसका पत्र आया था। प्रेम को आज जवाब दे दिया है। इसके कई कारण थे। पहला तो यह कि वक़्त बहुत ज़्यादा लगता था और तनख़्वाह (वेतन) थोड़ा। दूसरा यह मिज़ाजदार (अभिमानी) आदमी था, और इत्यादि, इत्यादि। साथ इसके वह इस योग्य हो गया है कि अपने आप जमाअत (कक्षा) में अच्छी तरह से चल सके। इन दिनों आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। बड़ा फ़िक्र लगा हुआ है। आप जल्दी अपने हाथ से लिखकर कृपापत्र भेज दिया करें। और किसी तरह से गुलाम पर ख़फ़ा (रुष्ट) न होवें। मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ, आप आज कल तंग होंगे। अगर आप यहाँ पधारना उचित समझें तो फ़ौरन आजायें। आप किसी क़िस्म का शोक चिंता न करें। परमात्मा बड़ा आनंद देंगे, भीतर भी बाहर भी। सत्संग, उत्तम ग्रंथ और भजन-कीर्तन ये तीन चीज़ें तीन लोकों का राजा बना देती हैं। और हमारा कुसंग परमेश्वर को हमसे कुपित (रुष्ट) करवा देता है। जिसके कारण हम पर नाना प्रकार के कष्ट आ जाते हैं। एकान्त सेवन और थोड़ा खाने से परमात्मा आप आन कर हमारा संग अंगीकार करते हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४०) १८ मार्च, १८९४

आपके दोनों कृपापत्र प्राप्त हुए। अत्यंत आनंद हुआ। महाराजजी! मुझे घर से भी पत्र आया था कि मैं वहाँ जाऊँ, क्योंकि चाचाजी बीमार हैं, और दूसरे अपने भाई का मिलना भी आऊँ। साथ इसके आपके दर्शन किये भी बहुत देर हो गई है। इसलिए इस वक़्त तो मेरा इरादा पक्का आपके चरणों में आने का है, आगे जो परमेश्वर की मरज़ी! मैं शायद शुक्रवार को हाज़िर हूँगा। अगर आप इससे पहले यहाँ तशरीफ़ ले आयें (पधारें), तो बड़ी अच्छी बात है, आपकी कृपा से चित्त बड़ा आनंद में

रहता है। मुझे काम अत्यंत होता है जिसका कोई हिसाब (अंदाज़ा) नहीं। आज-कल मौसम बहुत अच्छा है। आज इस मकान में पोचा फिरवाया (लिपाई करवाई) है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४१) २० मार्च, १८९४

दिल यहाँ आने को बड़ा करता है। मगर यहाँ अभी कुछ काम करनेवाला है। मैं कोशिश करूँगा कि बहुत जल्दी हाज़िर हो जाऊँ। अगर जल्दी न आ सका तो शुक्रवार को शायद ज़रूर आ जाऊँ। आगे परमेश्वर की मरज़ी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४२) २६ मार्च, १८९४

यहाँ सब तरह से कुशल है। आशा करता हूँ कि आप दो तीन दिनों तक यहाँ पधारेंगे। ज़रूर आना। पंडित रामजीदास को कह देना कि निःसंदेह चला आये। मैंने उनको कह दिया है। दो तीन दिनों में उनका काम बन जायगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४३) २८ मार्च, १८९४

आपके दो कार्ड प्राप्त हुए। बड़ी खुशी का कारण हुए। आपने एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो कपड़े साथ ले आने। बाक़ी यहाँ से माँग लेंगे। जब आप यहाँ पधारेंगे, तब जैसा उचित समझकर रामसिंहजी की बाबत कहोगे किया जायगा।

—— o ——

निर्धन और धनी पुरुषों में तुलना

संबोधन पूर्वोक्त, (६४४) ११ अप्रैल, १८९४

आपने हर तरह से खुश रहना। अपना हाल लिखना। मैंने इन दिनों एक नया पद्य (शेर) पढ़ा है—

"तहीदस्तों का रुतबा ऐहले-दौलत से ज्यादा है।
सुराही सर झुका देती है जब पैमाना आता है॥"—(दाग)

अर्थ—खाली हाथ (निर्धन) पुरुषों की पदवी धनाढ्य पुरुषों से अधिक है, अर्थात् निर्धन पुरुष धनी पुरुषों से अच्छे हैं, जैसे जब खाली पात्र (भरी हुई) सुराही के सम्मुख आता है, तो सुराही (उस पात्र को भरने के लिये) अपना सिर नीचे झुका देती है, मानों उस खाली पात्र के आगे प्रणाम करती है और उसको अपने से अच्छा समझती है।

कालिज में हमें थोड़े दिन छुट्टियाँ हैं। मेरा पता यह है:—

लाहौर, गुमटी बाज़ार, हवेली राजा सरदार स्वरूपसिंह व शाला के मध्य में शिवालय के सामने।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६४५) १४ अप्रैल, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। अपने आने की बाबत मैं फिर अर्ज करूँगा। आप कृपापत्र भेजते रहा करें। सरदार रामसिंह मिला था।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (६४६) १९ अप्रैल, १८९४

आपके चरणों का ध्यान रहता है। आप अपना हाल लिखते रहा करें। मैं शायद लाला रामशरणदास के साथ किसी दिन गुजराँवाले में आऊँगा। लाला साहब के यहाँ नानके (ननिहाल) हैं। पर अगर वह रात रहे तो आपके मकान पर रहेंगे। पिछले दिनों मेरा गला दर्द करता था। अब आराम मालूम होता है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (६४७) २१ अप्रैल, १८९४

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हुआ हूँ। और सब तरह से खैरियत (कुशल) है। आपने कृपापत्र भेजते रहना। परसों से लेकर हमारा

कालिज प्रातः छः बजे लगा करेगा। आपने किसी तरह से भी खफा (रुष्ट) न होना। महाराजजी ! आज मैंने भगत हरभजराय को भी पत्र लिखा है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४८) २५ अप्रैल, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। मैंने आज दो कोरी कापियाँ गुसाई राधाकृष्ण के हाथ आपकी सेवा में मौलवी महम्मदअली के लिए भेजी हैं। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। और गुलाम (दास) पर हर तरह से खुश रहा करें।

—— ० ——

मिशन कालिज में अपने प्रोफेसर के स्थान पर काम करना

संबोधन पूर्वोक्त, (६४९) २७ अप्रैल, १८९४

जुलाई मास में मिशन कालिज के गणितशास्त्र के बड़े प्रोफेसर ने अपने घर विलायत छुट्टी पर जाना है। उन्होंने मुझे अपने स्थान पर अपने पीछे काम करने के लिये कहा है और लिखा है। और मैंने स्वीकार कर लिया है। वेतन की बाबत अभी कुछ जिक्र (चर्चा) नहीं किया।* साथ इसके उनके कहने पर मैंने आज यह प्रार्थना-पत्र भी विश्वविद्यालय के दफ्तर में दे दिया है। आगे जो परमात्मा की और आपकी मरजी। आप कृपादृष्टि रखा करें। यह फोटो अभी तैयार हुए कि नहीं। आप जल्दी हाल लिखते रहा करें।

—— ० ——

* इस समय गुसाईंजी एम० ए० कक्षा में पढ़ते थे [illegible] परन्तु अपने भूतपूर्व प्रोफेसर के कहने पर अपना अध्ययन काल के समय भी उनके स्थान मिशन कालिज में पढ़ाते रहे। फिर भी आप एम० ए० की परीक्षा में गणितशास्त्र में [illegible] पास हो गये।

बुरे पड़ोसियों से परहेज़

संबोधन पूर्वोक्त, (६५०) २६ अप्रैल, १८९४

आपका कृपापत्र केवल एक ही आज तक मिला है। लाला रामशरणदास ने मुझे बहुत ही कहा है कि मैं उसकी कोठी पर चल रहूँ। पुनोंचि (तद्नुसार) उसने मुझे आज चार पाँच कमरे एकान्त और सुरक्षित (महफूज़) दिखलाये भी हैं कि उनमें से चाहे कौन सा लेना मैं पसन्द कर लूँ। मगर मैंने जवाब दिया था कि महाराजजी जानकर जैसी मुझे आज्ञा देंगे, वैसे मैं करूँगा। आप लाला साहब घर पर सोया करते हैं, पर कोठी में उनके बहुत से नौकर रखवाली के लिये रहते हैं। उनका स्वभाव निरा साधुओंवाला है। कोठी भाटी दरवाज़े के समीप है। जिस मकान में अब मैं रहता हूँ उसके सामने तीन मकानों में वेश्या रहती हैं, इसलिये बारियाँ (खिड़कियाँ) सदा बन्द रखनी पड़ती हैं। आप जल्दी पधार कर निर्णय कर जावें तो अच्छा हो। कटोरे जल्द ले आने।

—— o ——

कम खाने से चित्त में परमेश्वर आन कर निवास करता है

संबोधन पूर्वोक्त, (६५१) १२ बजे रात, ३० अप्रैल, १८९४

कौलों (कटोरों) की कुछ परवाह नहीं है। आपने कौलों का इंतज़ार न करना। बी० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकल आया है। लाला अमरनाथ, अनंतराम और रहीमबख़्श भी गुजरोंवाले मे पास हैं। वीरवार तक आपने ज़रूर चले आना। चाहे बुद्धवार चले आना। कम खाने से चित्त में परमेश्वर आन कर निवास करता है। यह मुझे पता कह रहे हैं कि यहाँ चल रहूँ।

—— o ——

अँग्रेज शिष्य का बी० ए० पास होना

संबोधन पूर्वोक्त,   (६५०)   ११ बजे रात, २ मई, १८९४

आज मैं आपका बड़ा इंतज़ार करता रहा हूँ। आप आये बिलकुल नहीं। महाराजजी! आप दास पर सर्व प्रकार से खुश (प्रसन्न) रहा करें, किसी तरह से भी खफ़ा (रुष्ट) न होना। मैं तो बिलकुल आपका आज्ञाधीन हूँ। मेरा अँग्रेज़ शिष्य बी० ए० में पास हो गया है। मैं आशा करता हूँ कि कल चार बजे आप लाहौर पहुँच जायँगे।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६५३)   ७ मई, १८९४

गुजराँवाले के ये विद्यार्थी एफ़० ए० में पास हुए हैं:—भगीरथलाल, शंकरदास, देवकीप्रसाद, भगवतसिंह, गोविंदसहाय, बरकतराय, गुरुमुखसिंह, गुरुदास।

अभी भगत हरभजरायजी आये हैं कि नहीं? मिशन स्कूल का ईश्वरदास गुजराँवाले के ज़िले में मिडल के इम्तहान में अव्वल (प्रथम) रहा है और गवर्नमेंट स्कूल का परसराम दोयम (द्वितीय) रहा है।

—— ० ——

निष्काम कर्म

संबोधन पूर्वोक्त,   (६५४)   ९ मई, १८९४

आपका पत्र प्राप्त हुआ। इस संसार में कोई चीज़ हमारी नहीं है। अगर हम सुख चाहते हैं तो हमें चाहिये कि संसार के काम काज करते समय इस शरीर इत्यादि को केवल परमात्मा का समझ कर विचरें, और इसमें राग द्वेष न करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६५५)   १० मई, १८९४

मैं आज से एक समय रोटी यहाँ उनके नौकर से पकवाया करूँगा।

रोटी वह अच्छी पकाता है। आशा है अब आपको रोटी की यहाँ कुछ तकलीफ न होगी। आप कृपापत्र भेजते रहा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५६) १४ मई, १८२४

आपका कृपापत्र आज मिला। बड़ी खुशी हुई। आप निःसंदेह चले आयें। भगत हरभजराय भी आ जायेंगे। इंट्रेंस का रिजल्ट निकलनेवाला था। उसका इंतज़ार करने के कारण पत्र लिखने में इस बार देर लग गई है। रिजल्ट इस वक्त मंगल की सायं को निकला है। मगर भीड़ बड़ी है, कुछ पता नहीं लगता। फिर पत्र लिखूँगा। आप जल्दी पधारें। गुजराँवाले का रिजल्ट सारा फट गया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५७) १८ मई, १८२४

मैं राज़ी हूँ। आप अपना हाल जल्दी लिखते रहा करें। कोई क़िस्म की फ़िक्र (चिंता) न करें। तशरीफ़ जल्दी ले आनी।

—— ० ——

सत्त्वगुणी आहार

संबोधन पूर्वोक्त, (६५८) २७ मई, १८२४

यहाँ सर्व प्रकार से कुशल है। आप अपना हाल (समाचार) जल्दी लिखते रहा करें। थोड़े और सत्त्वगुण आहार से चित्त सदा खुश (प्रसन्न) रहता है। गरम और बहुत देर में पचनेवाली वस्तुओं से प्रकृति सदा तंग रहती है।

—— ० ——

कुसंग के परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (६५९) २६ मई, १८२४

इस वक़्त कोई बात लिखने के योग्य नहीं। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। कुसंग, जिसे "कोहे-संग" अर्थात् पत्थर का पहाड़ कहना ठीक है, हमारी उन्नति की ओर उड़नेवाले वायुओं (पंखों)

पर पढ़कर हमें मुरदा सा (शववत्) बना देता है। और हमें मानों आकाश में से अपने भार के कारण अपने साथ नीचे ही नीचे लिये जाता है। अगर आप भगवद्गीता के अर्थों का एक भोग शनै-शनै विचार पूर्वक इन दिनों में पायें, तो मुझे अत्यंत ही खुशी होगी। आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी। किसी प्रकार से भी खफ़ा (रुष्ट) न होना।

——o——

नगे और लम्बे आँचल (पल्ले) वालों से सुख असम्भव

समाधन पूर्वोक्त,　　　　(६६०)　　　　२ जून, १८६४

आप का कृपापत्र कल मिला था। अत्यंत खुशी का कारण हुआ। मैं आशा करता हूँ कि जल्दी सेवा में हाज़िर हूँगा। मगर यह नहीं कह सकता कि कब। शायद ८ जून से पहले पहले नहीं आ सकूँगा। काम बहुत है। मैं पत्र बराबर अपने मामूल के मुवाफ़िक़ भेजता रहा हूँ। शायद आपको दूर से मिलता होगा, या मेरा आदमी डाक में डालना भूल जाता होगा। वास्तव में जगत् की कोई वस्तु भी स्थायी नहीं। जो मनुष्य इन वस्तुओं पर आश्रय करता है (और अपने आनन्द का आधार परमात्मा पर नहीं रखता), वह अवश्य हानि उठाता है। संसार के धनाढ्य पुरुष नगे (खाली) और दराज़े-दामन (लम्बे आँचलवाले) पुरुषों के सदृश हैं। अर्थात् यह लोग हैं तो बिलकुल नंगे और कंगाल, मगर अपने आपको बड़े लम्बे आँचलवाला अर्थात् वस्त्रोंवाला ख्याल करते हैं। ऐसे नंगे व लम्बे आँचलवालों से हमें क्या सुख मिल सकता है, अर्थात् कुछ भी नहीं।

आपने दास पर सदा कृपादृष्टि रखनी और उसे अपना दीन सेवक निश्चय करना। कोई फ़िक्र (चिंता) न करना। आपने सर्व प्रकार से आनन्द रहना। किसी प्रकार से भी खफ़ा (रुष्ट) न होना। मैं आपका टहलिया (किंकर, अनुचर) हूँ।

——o——

कीड़ियों की मनोहर बातचीत

संबोधन पूर्वोक्त, (६६१) ४ जून, १८६४

महाराजजी ! परमेश्वर बड़ा ही चंगा (अच्छा) है, मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। आप उसके साथ सुलह (मैत्री) रखा करें। आपके साथ जो कभी-कभी किञ्चित् कठोरता बर्तता है, यह उस (ईश्वर) के विलास हैं। वह आपके साथ हँसी-मखौल करना (हँसना खेलना) चाहता है। हमें चाहिये कि हँसनेवालों से खफ़ा (रुष्ट) न हो जायें। किसी और पत्र में मैं आपकी सेवा में उसकी कई बातें बताऊँगा (वर्णन करूँगा)। वास्तव में वह (ईश्वर) बड़ा ही मौजियोंवाला है।

यह पत्र मैं मेज पर रखकर लिख रहा हूँ। यहाँ प्रातः थोड़ी सी खाँड गिर पड़ी थी। उस खाँड के पास मेज पर चार-पाँच कीड़ियाँ एकत्र हो रही हैं, और वह सब मेरी लेखनी की ओर और अक्षरों की ओर तक रही (देख रही) हैं, और परस्पर बड़ी बातें कर रही हैं। जितनी बात चीत मैंने उनसे सुनी है, वह विनय-पूर्वक लिखता हूँ।

(परन्तु पहले मैं यह विनय करना चाहता हूँ कि चाहे मेरे अक्षर बहुत ही बुरे और निषिद्ध तथा कुरूप हैं, पर उन कीड़िया की दृष्टि में तो चीन देश के नक़्शोनगार—सुन्दर तथा आकर्षणीय चित्रों—से कम नहीं)। जो कीड़ी सबसे पहले बोली, वह बड़ी अनजान और निर्दोष बच्ची थी। अभी बहुत छोटी बच्ची थी।

पहली कीड़ी कहती है—"देख, बहन ! इस लेखनी की कारीगरी (चित्रकारी)। काग़ज़ पर क्या गाल-गोल घेरे (चित्र या वृत्त) डाल रही है। इसकी डाली हुई लकीरों अर्थात् अक्षरों को सब लोग बड़ी प्रीति से अपने नेत्रों के पास रखते हैं अर्थात् पढ़ते हैं, और जिस काग़ज़ पर यह (लेखनी) चिड़ कर दे अर्थात् लिख दे, उस काग़ज़ को लोग हाथों में लिये फिरते हैं। काग़ज़ पर मानों मोती डाल रही है, क्या रंगामेज़ियाँ

(चित्रकारियाँ) हैं। बाज-बाज (अमुक-अमुक) अक्षर तो विशेष करके हमारी और हमारी मौसी के पुत्रों (कीड़ों) के रूपों के समान दिखाई देते हैं। क्या ही सुन्दर हैं!

क़लम गोयद कि मन शाहे-जहानम।
क़लमकश रा बदौलत मे रसानम॥

अर्थ—लेखनी कहती है कि मैं जगत् की अधिष्ठात्री (या जगत् की विधाता) हूँ और लेखक को कुबेर भंडारी बना देती हूँ।

इस लेखनी में जान (प्राण) नहीं है, परन्तु हमारे जैसे जानदारों (प्राणियों) को बीसियों बार उत्पन्न कर सकती है।" इतना कहकर पहली कीड़ी चुप हो गयी।

अब दूसरी बोली। यह कीड़ी पहली से कुछ बड़ी थी और उससे अधिक दीर्घ दृष्टि रखती थी।

दूसरी कीड़ी बोली—"मेरी भोली बहन! तू देखती नहीं है कि लेखनी तो बिलकुल मुरदा शै (निर्जीव वस्तु) है, यह तो बिलकुल कुछ काम नहीं कर सकती। यह उँगलियाँ उस पर जोर दे रही हैं। जितनी प्रशंसा तूने लेखनी की की है, वह सब उँगलियों को जानी चाहिये।"

अब एक इन दोनों से बड़ी और सयानी (चतुर) कीड़ी बोली— "तुम दोनों अभी अनजान हो। उँगलियाँ तो पतली-पतली रस्सियों की तरह हैं, यह क्या कर सकती हैं। यह मोटी पीनी (पौंट, भुजा) हाथ की इन सबसे काम ले रही है।"

अब इन कीड़ियों की माँ बोली—"यह सब लेखनी, उँगलियाँ (पीनी), बाजू (भुजा) इत्यादि इस बड़े मोटे धड़ के आश्रय से काम कर रहे हैं। यह सब प्रशंसा उस धड़ के योग्य है।"

इतना कहकर कीड़ियाँ जब चुप हुईं। तो मैंने उनको यह कहा:—कि "ऐ मेरे दूसरे स्वरूपो! यह धड़ भी जड़ रूप है। इसको भी

एक और वस्तु का आश्रय है, अर्थात् प्राण का। इसलिये यह सब प्रशंसा उस प्राण के ही योग्य है।"

जब मैंने इतना कहा, तो मेरे दिल में आपकी तरफ़ से आवाज़ आई। और यह आपके वचन भी मैंने उन कीड़ियों को सुना दिये। उनका सार मैं लिखता हूँ—

"मनुष्य के प्राण से परे भी एक वस्तु है, अर्थात् परमात्मा। उस वस्तु के आश्रय सब भूत चेष्टा करते हैं। संसार में जो कुछ होता है, उसी की मरज़ी से होता है। पुतलियाँ बिना तारवाले (पुतलीगर) के नहीं नाच सकतीं। बाँसरी (मुरली) बिना बजानेवाले के नहीं बज सकती। इसी प्रकार संसार के लोग बिना उस (ईश्वर) की आज्ञा के कोई काम नहीं कर सकते। जैसे तलवार का काम यद्यपि मारना है, मगर वह बिना चलानेवाले के नहीं चल सकती, इसी प्रकार से चाहे कुछ मनुष्यों का स्वभाव बहुत ही ख़राब (बुरा) क्यों न हो, जब तक उन्हें परमेश्वर न उकसाये (प्रेरे), वह हमें कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जैसे महाराजा के साथ सुलह (संधि) करने से सब राज्याधिकारी (अमला) हमारा मित्र बन जाता है, इसी प्रकार परमात्मा को राज़ी (प्रसन्न) रखने से सारी सृष्टि हमारी अपनी हो जाती है।"

महाराजजी ! आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था, अत्यन्त हर्ष का कारण हुआ था। महाराजजी ! अगर आप यहाँ रहना चाहें, तो बड़ी खुशी की बात है। और अगर आप यहाँ एक आदमी रखना चाहें, तो आप (अपनी सेवा के लिये) निःसन्देह रख लें। जहाँ इतना खर्च हो रहा है, वहाँ और एक आदमी का खर्च भी परमात्मा बड़ी अच्छी तरह से दे देंगे। मेरी तरफ़ से कोई फ़र्क़ (कमी या रोक) नहीं। जिस प्रकार से जी (चित्त) चाहे, आप करें।

मुझे किसी पर किञ्चित् क्रोध नहीं है। मैं बड़ा खुश हूँ। बहुधा क्रोध

में आकर मनुष्यों के मुख से कई बातें निकल जाती हैं, हमें सब मुआफ़ (क्षमा) कर देनी चाहियें, आप भी क्षमा कर दें। आप उनसे सुलह (मेल) कर लें। खाना आप उनका चाहे खायें, चाहे न खायें, मगर सुलह (संधि) अवश्य कर लें, और सब अपराध क्षमा कर दें। साधुओं का क्षमा भूषण होता है।

आप इन दिनों कुछ अचाह (इच्छा रहित) हुए थे, इसलिये आपके पिताजी आपके पास आये थे। यह पत्र बेइख्तियार (स्वतः) इतना लंबा हो गया। क्षमा करना। परमेश्वर आपको बड़ी खुशी देगा।

——:o——

गीता पढ़ने का लाभ

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) ६ जून, १८९४

आपका कृपापत्र मिला, आपके चित्त की अवस्था पढ़कर अत्यंत खुशी हुई। थोड़े दिन हुए मैंने भी गीता का एक भोग पाया था। अत्यंत ही उत्तम ग्रन्थ है। इसको समझकर पढ़ने से परमेश्वर के ऊपर इतना विश्वास हो जाता है, जितना संसारी लोगों का अपने शरीर पर होता है। आप फ़िलहाल (अभी) यहाँ रोटी खाना निःसंदेह स्वीकार कर लें। फिर देखा जायगा।

मैं आशा करता हूँ कि मैं इस शनिवार आपकी सेवा में उपस्थित हूँगा। पहले इस कारण से नहीं आ सकता कि प्रथम तो कोई छुट्टी नहीं है, द्वितीय वज़ीफ़ा (छात्र-वेतन) अभी नहीं मिला। और बिना रुपयों के अगर यहाँ (पर) आया जाये, तो सबको निराशा होती है, और न पूरा होवे हैं, और न हमसे ही अधिक सेवा करते हैं। तृतीय मैं आशा करता हूँ कि तब तक उस बड़ वज़ीफ़े के विषय में भी शायद निर्णय हो जायगा। और उस मुआमले का निर्णय हुए बिना जाने में

यह डर है कि शायद वहाँ मेरी हाज़िरी (उपस्थिति) की आवश्यकता हो और मैं उस दिन लाहौर में न मिलूँ ।

यह सब इत्तफ़ाक़ (समागम) दैवयोग से बने हैं, मेरा इनमें कुछ दखल नहीं है। पर अगर आप आज्ञा दें, तो मैं इन सब कारणों के होते हुए भी आपकी सेवा में उपस्थित हो सकता हूँ। आगे जैसी आपकी मरज़ी ।

महाराजजी ! आप दास पर सर्व प्रकार से खुश रहा करें। जो आपकी राय (सम्मति) है मेरी सम्मति उसके विरुद्ध कदापि नहीं हो सकती। दास को आप ही के चरणों का आश्रय है ।

—— ०:——

दूसरों के आगे गुरुजी की महिमा

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) ७ जून, १८६४

महाराजजी ! आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। आज लाला रामशरणदास से आपकी बहुत बात कही गई। यह अत्यन्त प्रसन्न हुआ, और दर्शनों का अभिलाषी हुआ। महाराजजी ! आपकी अति कृपा है। अत्यन्त हर्ष और आनन्द रहता है। आशा है कि जल्दी दर्शन करूँगा।

आजू दारम कि ख़ाके-पाँ क़दम।

तूतियाये-चश्म साज़म दम बदम ॥

अर्थ—मेरी यह याचना अथवा अभिलाषा है कि आपके चरणों की रज को मैं नित्य अपने नेत्रों का सुरमा बनाऊँ।

—— ० ——

विलायत के वज़ीफ़ों का न मिलना

संबोधन पूर्वोक्त, (६६४) ६ जून, १८६४

मैं शायद बुद्धवार हाज़िर हूँगा। क्योंकि वीरवार से हमें इकट्ठी

छुट्टियाँ हैं। अब केवल एक छुट्टी रविवार की है। क्षमा करना। आपका कार्ड मिला था, बड़ी खुशी का काम हुआ। परमेश्वर की मर्जी (इच्छा) नहीं थी कि इस वर्ष में विलायत जाऊँ। सविस्तर हाल मुख से वर्णन करने योग्य है।

—— o ——
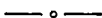
गुरु के पद्य (शेर) की उपमा

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६६५)　　　　११ जून, १८९४

मैं शायद बुद्धवार सेवा में उपस्थित हूँगा। आपका पद्य (शेर) बहुत उत्तम है। लगभग इसी विषय के कुछ पद्य मैं नीचे लिखता हूँ—

१—बगिर्दे खुद हमें गरदम् चो गरदूँ।
　　बरूँ अज खुद खरामीदन नदारम॥

२—हर दम अज नाख़ुन खराशम सीनए-अफ़्कार रा।
　　ता खिज़ल दिल बेरूँ कुनम ग़ैर ख्याले-यार रा॥

३—दिल के आईने में है तस्वीरे-यार।
　　जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली॥

अर्थ १—अपने चारों ओर आकाश के समान मैं घूमता हूँ, अपने से बाहर मैं नहीं टहलता (फिरता)।

२—मैं सदा शोकपरायण (चिन्तामय) हृदय को नखों से छीलता रहता हूँ, अर्थात् शोकों को हृदय से बाहर करता रहता हूँ, ताकि अपने स्वरूप (अपना प्यारे) के विचार से अतिरिक्त विचारों को हृदय से बाहर निकाल दूँ।

३—अंतःकरण के दर्पण में अपने प्रियतम की मूर्ति है। जब भी किञ्चित् सिर झुकाया, तब उसे देख लिया।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) १४ जून, १८९४

मैं बड़ा अफ़सोस (शोक) करता हूँ कि मैं तो बड़ा ही चाहता हूँ कि बहुत जल्दी सेवा में हाज़िर हो जाऊँ। मगर कोई न कोई ऐसी सूरत (दशा) निकल आती है जिससे देर लग जाय। अब मासड़ (मौसा) जी से चार आई है कि वह रविवार को आयेंगे। उन्हें इससे पहले की छुट्टी नहीं मिली। साथ इसके मुझे वज़ीफ़ा भी इस शनिवार को आशा है कि मिलेगा। मैं चाहता हूँ कि मासड़ (मौसा) जी को स्वयं चाचाजी का हाल दिखाकर कुछ इलाज (चिकित्सा) निमित्त राय (सम्मति) पूछूँ। साथ इसके आपसे भी उनकी मुलाक़ात कराऊँ। आपने भी ग़ुलाम पर हर तरह से ख़ुश रहना। जगत् की कोई चीज़ एतबार (विश्वास) के योग्य नहीं।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) २२ जून, १८९४

मासड़ (मौसा) जी, बंसीधर आज रवाना हुए हैं। उनसे आपकी बाबत ज़िक्र (बातचीत) करने का यहाँ अवसर मिल गया था। बड़े प्रसन्न हुए थे। और इस बात के लिए तैयार हुए थे कि आप वहाँ उनके पास हाँसी पधार्पण करने की कृपा करें।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६८) २४ जून, १८९४

आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६९) २९ जून, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ। आप ख़िदमतगार (अपने सेवक) को जल्दी याद फ़रमाते रहा करें।

मैं आपकी दया से आनंद में हूँ। और आपकी भीतरी व बाहरी सेहत (कुशलता व स्वास्थ्य) का इच्छुक हूँ।

जब मैं मुरारीवाले से आया था तो भूआ (फूफी) से इकरार कर आया था कि "गुजराँवाले से एक मोढ़न (ओढ़ने का कपड़ा) मलमल का तीन गज़ लंबा और डेढ़ गज चौड़ा भेजूँगा।" अगर आपको कष्ट न हो तो आपने भेजदेना, नहीं तो यहाँ से भेज दूँगा।

—— o ——

अभ्यासी और शुद्धचित्त मनुष्यों के मिलाप का कारण

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७०)　　　　२८ जून, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। आप निर्संदेह बहुत जल्दी पधारें। अभ्यास करनेवाले और शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों का मिलाप बड़े ही उत्तम कर्मों का फल होता है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७१)　　　　१० जून, १८९४

आपका एक और प्रेमपत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। इस सोमवार से मैंने आपके चरणों की बदौलत (कृपा से) यहाँ काम करना है। मेरठ में एक असामी (प्रोफेसर रियाज़ी की जगह) खाली हुई है। वहाँ डेढ़ सौ १५०) रुपये माहवार देते हैं। उसकी बाबत आपकी क्या राय (सम्मति) है? आप तशरीफ़ अभी क्यों नहीं लाये?

—— o ——

तीर्थरामजी की अत्यन्त प्रवृत्ति

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६८०)　　　　३ अगस्त, १८९४

मैं कल बड़ा ही काम में मसरूफ रहा हूँ, पुनरपि रात के दो बजे सोया था। और आज प्रातः पाँच बजे फिर काम के लिये उठ खड़ा हुआ। इस

लिये पत्र कल नहीं लिख सका। क्षमा करियेगा। मिरान कालिब के लड़के बड़े ही खुश होते हैं। यह सब आपकी दया है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७३) ९ जुलाई, १८९४

मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ कि मैं आपकी सेवा में इससे पहले विनय पत्रिका भेज नहीं सका। आप अभी तक पधारे क्यों नहीं ? आज लाला रामशरणदास साहब गुजराँवाले गये हैं, और फिर आज ही बज़ीराबाद चले जायेंगे। आशा है कि आपको मिलेंगे।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७४) १२ बजे रात, १५ जुलाई, १८९४

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है ?

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७५) १७ जुलाई, १८९४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। अभी मेरे यहाँ आने की तारीख़ का कोई पक्का पता नहीं। मालूम नहीं कि छुट्टियाँ कब होंगी। यहाँ लाहौर में गुसाईं ईश्वरदास मुरारीवाले का आया हुआ है। मेरे पास भी आता है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७६) २० जुलाई, १८९४

कल के लाला अयोध्यादासजी यहाँ आये हुए हैं। रात यहीं सोये थे। उनका मन अच्छा है। आज गुसाईं ईश्वरदास भी मुरारीवाला चले जायेंगे। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७७) २१ जुलाई, १८९४

हमें छुट्टियाँ शायद २८ माह हाल (जुलाई) से होंगी। मैंने अभी

आने का कोई दिन मुकर्रर नहीं किया। आप दया रखा करें। यहाँ वर्षा-ऋतु लगी रहती है।

——:०——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७८)　　　　४ अगस्त, १८६४

भाषाजी रातभर अत्यंत तंग (पीड़ित) रहे हैं। मैं ख्याल करता हूँ कि अभी कुछ दिन तक मैं आपकी सेवा में हाज़िर नहीं हो सकूँगा। आप दया रखा करें। किसी बात से खफ़ा (रुष्ट) न होना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　-(६७६) ३३ बजे साय, २६ अगस्त, १८६४

मैं आज यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गया हूँ। सब कार्यवाही ठीक है। आप जल्दी कृपापत्र भजते रहा करें।

—— ० ——

एकान्त में आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६८०)　　　　१० अगस्त, १८६४

यहाँ मैं एकान्त में हूँ। और जो मुझे यहाँ एकान्तता में आनन्द है, उसका वर्णन करना अत्यंत कठिन है। अगर आप जितना भी हो सके कोठे (छत) पर रहने का स्वभाव डाल, तो आपका पूर्ण आनन्द होगा, और मुझे भी इससे बड़ी खुशी होगी। एक स्वभाव का बदलकर दूसरा स्वभाव डालना कठिन तो है, अगर आप यह स्वभाव कोठे (छत) पर रहने का डाल लेंगे, तो आप बड़े खुश रहा करेंगे। कोठे पर रहकर सत्य विचार के पुस्तक, वासिष्ठ आदिक, पढ़ने से लाभ होगा। नीचे यह पुस्तक विचारे ही नहीं जा सकते।

—— ०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६८१)　　　　४ सितंबर, १८६४

जो सुरत में (बहुत काम से) मैं यहाँ से गैरहाज़िर रहा हूँ, उसका

कुछ नहीं मिलेगा। मगर चला जाने से पहले के कुछ दिनों और इन दिनों का मिलेगा, कोई ६ या १० तारीख के लगभग। आपने अब अमृतसर के लिए तैयार होकर यहाँ जल्दी चले आना। कल रात का मेरे मकान के साथ के हिस्से में दीवान कृपाराम जज आन कर रहा है। वह यहीं रहेगा। दीवान साहब अच्छे स्वभाववाले मनुष्य हैं। वर्षा यहाँ प्रतिदिन होती है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८०) बुधवार, ५ सितंबर, १८९४

आपका एक कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। इसका जवाब मैं आगे लिख चुका हूँ। यहाँ मेरे सगे मामे का लड़का तीन दिन से आया हुआ है। मेरे डेरे ही रहता है। शायद कल जायगा। बड़ा ग़रीब है। आपने चाचाजी को हुब्बे-करामात (औषधि) और मेज देनी। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८३) ७ सितंबर, १८९४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। वह आदमी (मेरे मामे का लड़का) जो यहाँ आया हुआ था वह बीमार पड़ गया है। पर मुझे कोई ज्यादा तकलीफ़ नहीं देता। आपका इन्तज़ार है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८४) ६ सितंबर, १८९४

मेरे मामे का लड़का बड़ा बीमार है और मैं तकलीफ़ में हूँ। अगर आप यहाँ तशरीफ़ ले आयें और उसे अपने गाँव (मौज़ा मानी, मुतल्लिक़ ज़िला दीदारसिंह) भेजने की तजवीज़ कर दें, तो बड़ी अच्छी बात हो। यहाँ से वह चीज़ मुझको मिल गई है। आपका बड़ा इंतज़ार है।

—— o ——

ईश्वर-भक्त के सम्बन्ध में कविता

संबोधन पूर्वोक्त,		(६८५)		१६ सितंबर, १८६४

और कोई मतलब (भाव) लिखने के योग्य नहीं । निम्न शेर (पद्य) ही लिख देता हूँ—

(१) आशिक़ों पर बेनवाई खसरविहों मे कुनद ।
शाही-ए-कोनीन दारद बे सरो-सामाने-इश्क़ ॥

(२) यदिल्क़े फ़क्र, शाही मे कुनम अज़ खूबियेत्ताले ।
न जम दारद न कैये ई तालाए-गरदूँ स्वारे-मन ॥

(३) हुबाब आसा किया है कार इस्तग़ना तमाम अपना ।
रक्खा महरूम मैं क़तरह से इस दरया में जाम अपना ॥

अर्थ—(१) ईश्वर भक्त निर्धन तथा अन्य सामग्री-रहित अवस्था में भी बादशाहियाँ करते हैं, अर्थात् आनन्द भोगते हैं। द्रव्य इत्यादि से रहित रहने की प्रीति दोनों लोकों (लोक-परलोक) का अधिपति बनाती है ।

(२) प्रारब्ध की उत्तमता से मैं कथा में भी राज्य करता (आनन्द भोगता) हूँ। ऐसी आकाश पर सवारी करनेवाली मेरी प्रारब्ध न बादशाह जमशेद रखता है और न कैकाऊस, अर्थात् ईरान देश के बादशाह की भी ऐसी उत्तम प्रारब्ध नहीं ।

(३) बुदबुदा के सदृश हमने अपना काम तमाम कर दिया है, अर्थात् निजानन्द के समुद्र में हमने अपने तुच्छ अहंकार रूपी बुदबुदे को फोड़ दिया है, और इस आनन्द-समुद्र में अपने शरीर-रूपी प्याले (पात्र) को अहंकार-रूपी बिन्दु (बुदबुदा) से रहित कर दिया है ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८६) २२ सितंबर, १८६४

आपका पत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। लाला रामशरणदास आदि कल के दिल्ली गये हुए हैं। कल राय सौंधीमल साहब और उनका दामाद मेरे मकान आये थे और कहते थे कि सप्ताह में दो दिन के स्थान पर तीन दिन हरसुखराय को पढ़ाना मंज़ूर करो। नाचार मंज़ूर करना पड़ा। मगर हरसुखराय आपके पीछे मेरे पास अभी तक बिल्कुल नहीं आया। कल चाचाजी का एक और पत्र आया था। कहते हैं कि दवाई (माशा इत्यादि) की बड़ी ज़रूरत है। पहुँची नहीं? सो अब मंगा देने का इरादा है। आपने हुक्मे-करामात (दवा) उनको ज़रूर भेज देनी। और उसका नुसखा उनको न लिखना। नुसखा न लिखने का एक कारण है। पत्र लिखने के बाद आज मुरारीवाला का एक आदमी मिला था, उसके हाथ उपाया लेकर भेज दिया है। आप कृपादृष्टि रखा करें।

——:o——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८७) २३ सितंबर, १८६४

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। मुझे अत्यंत फ़िक्र (चिंता) लगा हुआ है। आप इस तरह से खामोशी (मौन) न इख़्तियार कर लिया करें। अपने गुलाम की भूलों को बिलकुल मुआफ़ फ़रमाना और मेरे अपराधों और दोषों को दिल में कदापि जगह न देनी। क्योंकि अगर ज़ाहिरा तौर पर मुझसे कोई गुनाह (पाप व अपराध) हो भी जाय, तो दिल से तो मैं हमेशा आपका सेवक आज्ञाकारी हूँ।

——o——

चित्त अभ्यास करने से वश में आता है

संबोधन पूर्वोक्त, (६८८) २६ सितंबर, १८६४

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, बड़ी खुशी हुई। परमात्मा बड़ा ही

कारसाज (काम सिद्ध करनेवाला) और सब पर अत्यंत कृपालु है। हमारे मित्र की सब बदमाशियाँ (दुर्वृत्तियाँ) हैं कि परमात्मा पर विश्वास न लाकर हमें दुःखी पता करती हैं। यह चित्त अभ्यास करने से वश में आता है। अच्छे, उत्तम पुस्तक बासिष्ठ आदिक ऐसे समय पर विचारने चाहिएँ। और सबसे ज्यादा जरूरी यह बात है कि आहार अल्प कर देना चाहिए अथवा बन्द रख लेना चाहिए। यह ऋतु बड़ी सत्त्वगुणी है। अब अगर आप योगवासिष्ठ पढ़ें, तो मुझे बड़ी खुशी हो। तुलसीदासजी लिखते हैं—

　　　　जब दाँत न थे, तब दूध दियो।
　　　　अब दाँत भये क्या अन्न न दे है।

अंहमत्त की गागर (अन्न का बरतन) का जरूर खयाल रखना। आप दास पर सदा प्रसन्न रहा करें। इन दिना खाहमखाह भजन करने को चित चाहता है।

—— o ——

कबीरजी का वाक्य

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६८८)　　　　२६ सितंबर, १८२४

आपका एक कागज प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। कबीरजी का यह वाक्य क्या ही अच्छी अवस्था का प्रकट करता है —

　　　　मन ऐसो निमल भयो जैसे गंगा-नीर।
　　　　पीछे-पीछे हर फिरैं कहत कबीर कबीर॥

अन्नमत्त की गागर का खयाल रखना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६६०)　　　　२ अक्तूबर, १८२४

मुझे पत्र लिखने में शायद देर हो गई है। आप ने मुआफ फरमाना। आज दीवान कृपाराम साहब यहाँ से गुरुदासपुर तबदील होकर चले

गये हैं। शायद आठ-दस दिन को फिर आ जायेंगे। आपने हनुमाननाटक का भोग पाया है कि नहीं? और क्या-क्या पुस्तक आप पढ़ा करते हैं? आपने ध्यास पर कृपादृष्टि रखनी। सतोगुण भोजन और थोड़ा, अमृतवत् हमको खुश रखता है, बीमारियों से बचाता है और हमारी आयु दीर्घ करता है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६९१) १ अक्तूबर, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बहुत काल बीत गया है। क्या कारण है?*

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (६९२) ५ अक्तूबर, १८९४

आपका एक कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। चाचाजी का पत्र भी बड़ी मुद्दत के बाद आज आया है। गाड़ी का वक्त मुझे मालूम है। मैं शायद आऊँगा तो सही, मगर वहाँ बहुत थोड़ा चिर (काल) ठहरना चाहता हूँ, क्योंकि काम बड़ा करनेवाला है और समय इम्तहान में थोड़ा रह गया है। आगे आपकी और परमेश्वर की मरज़ी। आने का दिन मैं आपको पहले लिख चुका हूँ। आप ध्यास पर दया रखा करें।

—:o:—

जीवन से बेज़ारी (व्याकुलता)

संबोधन पूर्वोक्त, (६९३) ६ अक्तूबर, १८९४

थोड़ी देर हुई आपका पत्र मिला। पत्र पढ़ने से कुछ तप (ताप) सा चढ़ गया है। न पढ़ा-लिखा जाता है और न बैठा ही जाता है। तबीयत (चित्त या प्रकृति) ज़िन्दगी (जीवन) से और संसार से बेज़ार (व्याकुल या उपराम) हो गई है। मैं अपनी ओर से दिलो-जान से यत्न करता हूँ कि कोई काम आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो जाये। फिर भी काल की गति कुछ न कुछ

* इससे आगे का भाग फटा हुआ है, इसलिए आगे ठीक नहीं पढ़ा गया, जिससे इतना ही देना पड़ा।

करा देती है, या किसी ऐसे मनुष्य ने जो मेरे और आपके सम्बन्ध से ईर्ष्या रखता होगा, आपको कुछ सिखा दिया होगा। पंचतंत्र और अन्वार-सहेली में एक कथा है, यह सुनने योग्य है। अत्यन्त व्याकुलता है। मैं शायद दसेहरा से एक दिन पहले हाज़िर हूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६६४)　　　　११ अक्तूबर, १८९४

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हूँ। आँखें बनानेवाला साहब यहाँ से कलकत्ता बदल गया है और जो साहब उसकी जगह यहाँ काम करता है, वह बड़ा नातजरुबेकार (अनाड़ी) और नावाक़िफ़ (अनभिज्ञ) है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६६५)　　　　१४ अक्तूबर, १८९४

मैं ख्याल करता हूँ कि कल या परसों से लेकर एक व्यक्ति यहाँ उस कमरे में भी आनकर रहेगा जो मेरे कमरे और डिपुटी कृपाराम साहब-वाले कमरे के बीच का है। और डिपुटी साहबवाला कमरा दो-तीन दिनों का आगे ही रुका हुआ है। कुछ तकलीफ़ होगी। योगवासिष्ठ आपने मेरे लिए लिया है कि नहीं? झंडूमल की गागर का ख्याल रखना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६६६)　　　　१६ अक्तूबर, १८९४

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। अगर आप अमृतसर को यहाँ से होते जायें, तो बड़ी कृपा हो। आगे जैसा आप मुनासिब (उचित) समझें, करें।

आज हमारा कालिज खुला है। मिशन कालिज का प्रोफ़ेसर रियाज़ी सुना है कि आज आ गया है। मगर मैं अभी नहीं मिला। और सब कुशल है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) ३० अक्तूबर, १८९४

कल सायं को मामा(मौसा)जी आये थे। आज प्रात चले गये थे। आपको मिलने का इश्तयाक़ (अभिलाषा) रखते थे। आपकी तरफ़ से भी मैंने उचित तौर पर शौक़ ज़ाहिर किया था। गवर्नमेंट कालिज आज गया था। अभी वज़ीफ़ा नहीं मिला। मैं यथा सम्भव मनीआर्डर द्वारा ही रुपया भेजूँगा। मेरा आना कठिन मालूम देता है। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६८) २ नवंबर, १८९४

मुझे कल तीन महीनों का छोटा वज़ीफ़ा मिला था। जिसमें से एक मास की फ़ीस काट ली गई थी। बाक़ी रुपयों में से जो मैंने लोगों का उधार देना था, वह चुका दिया है। अब थोड़े से रुपये यहाँ रखे हैं। जब दूसरा वज़ीफ़ा मिलेगा, तब सब भेज दूँगा। या अगर संभव हुआ, तो स्वयं हाज़िर हूँगा। सविस्तर फिर सूचना दूँगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६९) ४ नवंबर, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। मैं उस छोटे कमरे में सोया करता हूँ। सर्दी नहीं लगती। कल-परसों का मुझे जुकाम ने तंग किया हुआ है। आप सरना (औषधि) का किस तरह से प्रयोग बताया करते हैं? अभी दूसरा वज़ीफ़ा नहीं मिला। आप कृपादृष्टि रखा करें। मैं आपका दीन दास हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७००) ८ नवंबर, १८९४

आज ८ तारीख़ को बड़ी देर से यहाँ वह चीज़ तक़सीम हुई थी, इसलिए मैं आज कुछ अर्ज़ नहीं कर सका। 'अख़बार' एक मुरशी

का शब्द है, जिसके अर्थ हैं खुशी। इसमें 'ध' दुरुस्त है, इसलिए इसको दो बाराशिनती में लाना चाहिये। 'अफराहाज' से जो निकलता है, वह मैं कल अर्ज करूँगा। आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी। अब लाला साहब शहर में हवेली में पढ़ते हैं। सो मुझे रात को वहाँ आना पड़ता है। सरदी लगती है। आशा है कि अब छोटा वजीफा अक्तूबर का मिलेगा, गरम कोट आदि बनवा लूँगा। जुलाब नहीं लूँगा। आपका कृपापत्र मिलकर अत्यन्त खुशी का कारण हुआ था। इस बार मुझे पत्र में देरी हो गई है। मुआफ़ फ़रमाना। आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

—— ० ——

धन-सम्बन्धी कठिनाइयाँ

सम्बोधन पूर्वोक्त, (७०१) १२ नवंबर, १८६४

चाचाजी का पत्र आया था। वह लिखते हैं कि "पच्चीस २५) रुपये तुमको छोटे वज़ीफ़े के अभी मिलने हैं, वह रख छोड़ने, और पाँच-पाँच रुपये और जोड़कर दस रुपये शुल्क (परीक्षा प्रवेश-फ़ीस) देने के दिनों तक, अर्थात् डेढ़ या पौने दो मास तक, बना लेने। इस प्रकार से पैंतीस ३५) रुपये हुए। और पन्द्रह १५) रुपये हमसे लेकर पचास ५०) रुपये पूरे करके परीक्षा प्रवेश-फ़ीस दे देनी।" अब विनय यह है कि यह पचीस २५) रुपये जो चाचाजी छोटे वज़ीफ़े के लिखते हैं, इनमें से सवा बारह १२।) रुपये तो एक मास की फ़ीस के काटे जाते हैं, और दो ६) रुपये के लगभग उन दिनों के काटे जाते हैं, जब मैं बीमारी के कारण कालिज से गैरहाज़िर (अनुपस्थित) रहा। और गरम कपड़े भी मैंने बनवाने हैं, और कुछ खाना पीना भी है। और फ़ीस काटकर थोड़े से रुपये जो मिला करेंगे, उनमें से पाँच पाँच रुपये जोड़ना (संग्रह करना) भी कठिन है।

कल मैं गरम कपड़े ले आया हूँ, दुबलजीन का पाजामा, एक कुरती,

और एक कशमीरे का कोट लिये हैं, सब पर पौने आठ ७॥।) रुपये लगे हैं। पर अब मैं बाबाजी को इस विषय में कुछ विशेष लिखूँगा नहीं। केवल अपनी दशा जतला दूँगा। आशा है कि मासड़ (मौसा) भी या मेरा सुसर (ससुर) सहायता कर देंगे। जो परमात्मा अब तक सहायता करता रहा है, अब भी कर देगा। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी खुशी हुई।

तीर्थरामजी के पास एक पैसे का भी न होना

संबोधन पूर्वोक्त, (७०२) ११ नवंबर, १८९४

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ, अत्यन्त खुशी हुई। आपके चित्त की दशा का ज़िक्र (प्रसंग) पढ़कर हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। आपको परमेश्वर सदा ऐसा ही खुश रखे। मेरे इस बार देर से पत्र लिखने का कारण यह है कि मेरे कार्ड खतम (समाप्त) हो गये थे, और न मेरे पास कोई पैसा था, न काले (नौकर) के पास। वज़ीफ़ा की प्रतिदिन बाट ताकता था, मगर मिलता नहीं था। कल दस बजे रात के लाला (रामशरण) साहब के दफ़्तर से ठाकुर को कह कर यह कार्ड निकलवाया था। जो अब आपको भेजता हूँ। कपड़े मैंने।सलेसिलाये लिये हैं। एक पुरुष को साथ ले गया था। कपड़े बहुत अच्छे हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (७०३) १७ नवंबर, १८९४

महाराजजी ! आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। दास पर हर तरह से खुश रहा करें। आजकल मुझे काम बहुत है। ध्यान और तवज्जह अधिकतर काम की तरफ़ रहती है। जो पंडित लालाजी का संस्कृत पढ़ाया करता था, उसने मेरी ज़बानी एक बार आपकी तप की गोलियों की सिफ़त (प्रशंसा) सुन ली थी। उस दिन का मुझे प्रतिदिन कहता है। उन गोलियों के बनाने की तरकीब उसे दर्याफ्त कर दूँ।

और जब मिलता है पूछता है कि "अभी पत्र लिखा है या नहीं ?" जैसा आप उचित समझें, करें। आदमी बड़ा भलामानस और नेक है। आपके चरणों की तरफ़ ख्याल रहता है। अब मुझे इस मकान के परले कमरे में (जहाँ लाला हरिकृष्ण रहते थे) चला आना पड़ा है।

धनाढ्य पुरुषों का बर्ताव

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७०४)　　　　१८ नवंबर, १९२४

महाराजजी! आपने दास पर कभी किसी बात पर ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। पत्र भेजने में देरी का कारण एक यह है कि इन दिनों आदमियों के लिए कहीं आने जाने का श्रम करना (जैसे डाक में पत्र डालने जाना) बड़ा कठिन है। और मैं उस समय (आठ बजे रात) के सिवा जब लालाजी की तरफ़ जाता हूँ, कभी डेरे से बाहर नहीं निकलता। आज-कल (यहाँ) जलसा (उत्सव) होने के कारण इस मकान में कई बड़े पुरुष आनेवाले हैं। उनके लिये मेरेवाला कमरा और बीच का कमरा नियत किये गये हैं। और मुझे उस कमरे में आना पड़ा है, जिसमें लाला हरिकृष्ण (प्रसिद्ध नाम डॉक्टर साहब) रहते थे। आज उसमें असबाब ले आया हूँ। आज मुरालीवाले का एक ग़रीब लड़का यहाँ बार की पाठशाला में दाख़िल (प्रविष्ट) होने को आया है। लड़का भलामानस और मेरे कहने पर चलनेवाला है। यदि आप आज्ञा दें, तो उसे मैं अपने मकान में रहने दूँ, नहीं तो निकाल दूँ। आपने उत्तर से शीघ्र कृपा करनी। यहाँ नीचे के लगभग सब कमरों में कपास डाली गई है। और प्रतिदिन कपास के छकड़ों के छकड़े आते-जाते हैं। उनका विचार है कि जिन कमरों में दफ़्तर लगते हैं, वहाँ भी कपास भर दें, और दफ़्तर ऊपर की छत में (अर्थात् जहाँ मैं रहता हूँ) लगाया करें। अब देखिये, मेरे रहने का क्या प्रबन्ध होता है।

मासड़(मौसा)जी की अमूल्य सहायता और गुसाईंजी का सङ्कटहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (७०५) २० नवंबर, १८६४

आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। आपने गुलाम (दास) को भुला न देना। भाई साहब का पत्र आया था। उन्होंने आपको बड़े अदब (सम्मान) के साथ मत्था टेकना लिखा है। मासड़(मौसा)जी का पत्र आया था, वह लिखते हैं कि दाखिला (परीक्षा-प्रवेश फ़ीस) के लिए हमारे से अतिरिक्त और किसी से रुपये न लेने। परमात्मा की सिफ़्त (उपमा) कोई किस ज़बान (वाणी) से करे। चित्त तो आपके दर्शनों को करता है, पर अभी कोई ऐसी सूरत (युक्ति) दिखाई नहीं देती।

संबोधन पूर्वोक्त, (७०६) २१ नवंबर, १८६४

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ था। अति खुशी का कारण हुआ। आज-कल यहाँ बड़े राजे आ रहे हैं। बड़ी धूमधाम है। मुझे शायद जलसा के दिनों में उस नीचे की कोठरी में रहना पड़ेगा जो पहलेपहल मेरे लिये तजवीज़ (निश्चय) हुई थी, और जो कोठे से परे तबेले के पास है। अब आप पहले से अच्छा लिखते हैं, मश्क़ (अभ्यास) करते रहना चाहिये।

संबोधन पूर्वोक्त, (७०७) ६ बजे दिन, २६ नवंबर, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। अत्यंत खुशी हुई। कल मैं राय सौंधीमल साहब की तरफ़ गया था, वह यहाँ नहीं हैं। कल चले गये हैं। मैं अब नीचे अँगरेज़ी दफ़्तर में रहता हूँ। राजे सब आ गये हुए हैं। परेट में खड़े हुए हैं। अभी फ़तहगढ़वाला लाट साहब आवेगा। और व शुरू

को दरबार लगेगा, जिसमें केवल चंद (कुछ एक) व्यक्ति ही जाने पायेंगे। यह लाट नया है, इसलिए सैर करने आया है। जलसे का और कोई विशेष कारण नहीं है। पहली दिसंबर को युनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) का जलसा होगा, जिसमें (इस) लाट साहब को भी खिताब (पद) मिलेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७०८) मार्च, १ दिसंबर, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। कल रात को मैं अंग्रेजी दफ्तर से फारसी दफ्तर के ऊपरवाली मंजिल में आ गया हूँ, जिसमें लाला हरिकृष्ण साहब (डॉक्टर) रहते थे। देखिये, अब इसमें कब तक रहता हूँ। आपके चरणों की दया है। सब तरह आनंद है। कल गुरुदित्ता और दो अन्य व्यक्ति मेरे पास आये थे। आज फिर आयेंगे। मैं आपकी किताब भेज दूँगा। आज यहाँ वर्षा हो रही है। यह ऊपर का कमरा बहुत अच्छा है।

—— ० ——

उधार लेकर कार्ड लिखना

संबोधन पूर्वोक्त, (७०६) ६ दिसंबर, १८६४

इस बार पत्र लिखने में देर का कारण यह है कि पास कोई पैसा नहीं था। पहले के कार्ड खतम हो चुके थे। वजीफे मिलने की आशा पर किसी से उधार नहीं लिया था। सो वजीफा तो अभी तक मिला नहीं। आज अन्त में (निराश होकर) उधार ले कर कार्ड लाया हूँ। मैंने तीन-चार छोटी पोथियाँ (पुस्तकें) आपकी सेवा में गुरुदित्ता के हाथ भेजी हैं। आपको अभी मिली हैं कि नहीं? आप दास पर कृपा-दृष्टि रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१०) दुपहर, ७ दिसंबर, १८९४

इस समय आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मुझे इस बार पत्र लिखने में निःसंदेह देर हो गई है। इसका कारण यह है कि मैं अब नीचे दफ्तर में रहता हूँ और कार्यवाही स्वतंत्र न होने के कारण चित्त पहले की तरह एकाग्र नहीं है। इससे अतिरिक्त काम भी करनेवाला बहुत है। मैं प्रतिदिन पत्र लिखने का इरादा करता रहा हूँ, मगर पत्र लिख नहीं सका। आपने जरूर कृपापूर्वक मुआफ फरमाना।

—— o ——

धन की तंगी के दिन

संबोधन पूर्वोक्त, (७११) ६ दिसंबर, १८९४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत खुशी हुई। डॉक्टर साहब का मैंने आपकी तरफ से खुशी कही थी, खुश हुए थे। मेरे विचार में पुस्तक खरीदने में हमें रुपये का ख्याल कभी नहीं करना चाहिये। उस लाभ की अपेक्षा, जो हमें पढ़ने से प्राप्त होता है, पुस्तक का मूल्य (कितना ही अधिक क्यों न हो) कुछ भी अधिक नहीं होता। एक वह भी दिन थे, जब छोटी-छोटी पुस्तकों के लिखाने पर लोग बीसियों रुपये खर्च कर देते थे। अब से दो सप्ताह तक हमें बड़े दिनों की छुट्टियाँ मिलेंगी। आपका दस्तखत (लिखना) अब पहले से उत्तम है। बारीक लिखने का यत्न किया करें। "बादब" एक शब्द है। जिससे 'ब' के बाद 'अ' को दो बार 'अ' गिनते हैं, उसके अर्थ हैं बहुत अदब (सम्मान) के साथ। मैं आशा करता हूँ कि कल या परसों तक मैं "बाअदब" अर्ज (भेंट) करूँगा। वजीफा अभी नहीं मिला। आज-कल पहले की अपेक्षा धन की तंगी के दिन हैं। कारण आनंद ही होंगे। इस पत्र के लिख चुकने के बाद आपका एक और पत्र मिला। जवाब जल्दी भेजूँगा।

—— o ——

सम्बोधन पूर्वोक्त, (७१२) १२ दिसंबर, १८९४

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। वजीफा अभी नहीं मिला। मालूम नहीं, कब मिले। जब मिलेगा अर्ज की जायगी। मेरा गुजारह (निर्वाह) हुए जाता है। आपको यहाँ से (कुछ रुपये) भेजने का कष्ट उठाने की कुछ जरूरत नहीं। मुरालीवाले से पाँच गज लुध्याना खलाय (घर का बना हुआ कपड़ा) आया था। दो-तीन दिन हुए हैं। मैंने भी कल उसका एक कुरता और एक पाजामा बनना दे दिया था। अब बड़े दिन की छुट्टियाँ समीप हैं। और काम भी बहुत है। आपने गुलाम पर हर तरह से दया की दृष्टि रखनी।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (७१३) १० बजे प्रातः, १५ दिसंबर, १८९४

आपके दो पत्र इस समय मिले। महाराजजी! मैं अत्यंत आजिजी (विनीत भाव) से विनती करता हूँ कि मुझे आज-कल काम बहुत ज्यादा रहा है (जो सब आप ही का काम समझता हूँ)। और तबीयत (वृत्ति) एक ही तरफ अधिक मायल (प्रवृत्त) रही है। इसलिए अगर मुझसे किसी बात की कोताही (न्यूनता) हो गई हो, तो आपने कृपा-पूर्वक मुआफ फरमा देना। मेरे मन में कदापि और कोई बात नहीं है। छुट्टियों में आने का मैं इरादा रखता हूँ। अगर आप पहलेपहल यहाँ तशरीफ ले आयें, तो ऐन (पूर्ण) कृपा हो। वजीफा अभी तक नहीं मिला। देखिये, आज मिलता है कि नहीं।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (७१४) १६ दिसंबर, १८९४

नजामी का एक शेर (पद) है, जो मुझे इस वक्त ठीक याद तो नहीं मगर इस तरह का है—

न घूरे मरा या खुदा गर शुमार।
तुरा नाम कै बूदे आमुरजगार॥

अर्थ—(अगर मेरे कार्य या पद दोष-युक्त न होवे, तो आपका नाम बख्शनहार या क्षमावान् कब होता)।

इस पद का अभिप्राय तो आप समझ ही गये होंगे। मनुष्य से अपराध भी हो जाते हैं, आप मुआफ़ फ़रमा दिया करें। आपकी ख़फ़गी (रोष) से मुझे बड़ी चिंता लग जाती है और पता भी नहीं जाता। मेरे दिल में इसके सिवा कदापि कोई ख्याल नहीं था कि मैंने गुजरांवाले जाना है। और आपको यहाँ तशरीफ़ लाने (पधारने) में कई तरह का कष्ट होता। कल कालिज से यह चीज़* मिली थी। बामदद अर्पण† कर दी थी। और जमाअतों (कक्षाओं) का कल सोमवार से शनिवार तक इम्तहान है।

२४ तारीख़ सोमवार को कालिज लगेगा (खुलेगा), और फिर बड़े दिन की छुट्टियाँ मिलेंगी। लाला साहब ने इस मंगलवार को रियाज़ी (गणित) का इम्तहान देना है। मैं शायद बुद्ध को हाज़िरेख़िदमत (सेवा में उपस्थित) हूँगा। और फिर कराची जायेंगे। २४ दिसंबर का कालिज लगेगा। इसलिए अगर मैं इस बुद्धवार को हाज़िर हूँगा, तो मुझे रविवार को वापिस आना पड़ेगा।

—— o ——

भद्र कोप (क्रन्त) का परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (७१५) १ बजे सायं, १६ दिसंबर १८६४

आपका आज और एक क्रोध से भरा कृपापत्र प्राप्त हुआ। नहीं मालूम,

---

* यहाँ 'चीज़' से अभिप्राय तीर्थरामजी का मासिक वज़ीफ़े से है।

† यह कर दी से अभिप्राय वज़ीफ़े से कुछ रुपये गुरुजी को भेज दिये। देखो तीर्थरामजी का नियम संकेत है।

मेरे दिन कैसे आ गये हैं। मैं अपनी तरफ से तो अत्यन्त एहत्यात (सावधानी) के साथ प्रत्येक काम करता हूँ, मगर फिर भी आप किसी न किसी बात पर रुष्ट हो हो जाते हैं। बहुधा मैं तीसरे दिन पत्र भेजा करता हूँ, मगर कई बार चौथे दिन भी भेजा जाता है। इस बार काम की अधिकता के कारण चौथे दिन भेजा। कोई असाधारण (अपूर्व बात) नहीं थी, परन्तु आप रुष्ट हो गये। पहले कई बार भी मेरा विनय-पत्र देर के बाद गया, पर तब आपने क्षमा कर दिया, और कुछ ख्याल न किया। अस्तु, महाराजजी ! आपका रुष्ट होना भी ठीक उचित, बल्कि मेरे हाल (अवस्था) पर अनुग्रह है।

लबहाये-लअलश मे शवद, तल्खे-तल्खे-शकर खारा।

भावार्थ—मधुर मधुर (मिठास-भरे) ओठों पर कटु शब्द भी युक्त हो जाते हैं। आपके मुखारविन्द से कटु वचन भी मुझे अमृत समान हैं।

मुझे आपके रोष से भी कई प्रकार का लाभ है, कई उपदेश लेता हूँ। मैं सर्व अवस्था में आपका ताबेदार (आज्ञाधीन अनुचर) हूँ।

सरे-तस्लीम खम है जो मिजाजे-यार में आये।

भावार्थ—आपके चरणों में सिर झुका पड़ा है, आपकी जो इच्छा हो करें।

१—राजी हैं हम उसी में जो कुछ दिलरुबा करे।
ख्वाह वह जफा-ओ-जौर करे या करम करे॥

२—मौं रा कि बजा लुत्फ हरदम करमे।
उजरश बिनेह अरकुनद् येह सितमे सितमे॥

भावार्थ—१—जो हमारा प्रियतम प्राणेश हमारे साथ करे, चाहे वह सत्कार करे चाहे तिरस्कार, हम उसी में प्रसन्न वा सन्तुष्ट हैं।

२—जिसकी कि तेरे ऊपर नित्य कृपा रही है, यदि वह सारी आयु में कोई उपद्रव तथा अपराध भी करे, तू उसे क्षमा कर दे।

महाराजजी ! आप इतने खफा (रुष्ट) हुए, और मैं जानता हूँ कि मेरा

मैं परसों बुधवार प्रातः की गाड़ी अगर न आ सका तो सायंकाल की गाड़ी से आने की आशा रखता हूँ। भजन करने से निःसन्देह पूर्णानन्द प्राप्त होता है। और परमात्मा पर सच्चा विश्वास होने से किसी वस्तु की कमी नहीं रहती। मगर जब परिमाण (अन्दाज़े) से अधिक खाया जाय, तो यह विश्वास परमात्मा पर नहीं रहता और वृत्ति विषयों, शोक तथा चिन्ता में पड़ जाती (आसक्त हो जाती) है। दूध का सेवन बड़ा अच्छा है। खर्च की कुछ बात नहीं है। शेख सादी लिखता है कि—

> अन्दरूँ अज़ तुआम खाली दार,
> ता दर ओं नूरे-मार्फ़त बीनी।
> तही अज़ हिक्मती ब इल्लते-आँ,
> कि पुरी अज़ तुआम ता बीनी॥

भावार्थ—उदर को भोजन से खाली रख, जिससे तू उसमें ईश्वर का प्रकाश अनुभव कर सके, क्योंकि भरे हुए पेटवाला अपनी वृत्ति को ईश्वर ध्यान में ठीक नियुक्त नहीं कर सकता। तुझे यह ज्ञान तथा बोध नहीं है, इसीलिये तूने उदर को भोजन से नाक तक भरा हुआ है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१८) २४ दिसंबर, १८९४

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हूँ। आज माईया * गुजरांवाला चला आयगा। आज मैं कालिज आया। वहाँ छुट्टी थी। सरदार ईश्वरसिंह को मैं फिर नहीं मिल सका। झाँसी जाने का इरादा तो किसी क़दर है, मगर अभी कहीं से पत्र हाथ नहीं लगा।

—— ० ——

* पंजाब में प्रायः पिताजी को माईया के नाम से पुकारते हैं। परंतु पिता की आयु के बराबरवाले या पिता-तुल्य सम्मानवाले को भी माईया करके पुकारते हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (७१९) ६ बजे रात, २५दिसंबर, १८९४

आपका कृपापत्र कोई नहीं मिला। भाईया नंदलाल आज प्रातः ६ बजे की गाड़ी चला गया है। मासड़(मौसा)जी का आज फिर एक और बड़ी मुहब्बत का लफाफा आया था। आपको आदाब (सम्मान पूर्वक नमस्कार) लिखा है। और मेरी बाबत लिखते हैं कि "वीरवार की प्रातः को हाँसी स्टेशन पर तुम्हारा स्वागत किया जायगा।" अर्थात् तुम्हारी बाट ताकी जायगी। पर मेरा इरादा कल ६ बज कर ४० मिनट गुज़रे यहाँ से चलनेवाली गाड़ी पर सवार होने का है। महाराजजी! आपने कृपादृष्टि रखनी। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। मैं आपकी आज्ञा से यहाँ चला हूँ। आपने यहाँ कृपापत्र ज़रूर भेजना। मेरा ध्यान आपके चरणों में रहता है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२०) हाँसी, २८ दिसंबर, १८९४

मैं यहाँ कल प्रातः वीरवार साढ़े सात बजे के बाद आ गया था। रास्ते में तकलीफ़ किसी प्रकार की नहीं हुई। फ़िरोज़पुर चार पाँच घंटा अगली गाड़ी तैयार न होने के कारण ठहरना पड़ा था। ज्वालाप्रसाद और दो एक और मित्र मिले थे। किसी तरह की किसी जगह तकलीफ़ नहीं हुई। आशा है कि कल सायंकाल को गाड़ी यहाँ से रवाना हूँगा। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका बंदा (ग़ुलाम वा सेवक) हूँ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२१) लाहौर, ३० दिसंबर, १८९४

मैं कल पौने ६ बजे सायं के हाँसी से रवाना हुआ था। आज नौ बजे प्रातः के लगभग लाहौर स्टेशन पर पहुँच गया हूँ। रज़ाई यहाँ से रात के लिये एक ले आया हूँ। लाला साहब भी फ़रोंची में इसी

गाड़ी में आ गये हैं। यह पत्र रेल में अर्थात् चलती रेल में लिखा है, और पत्र लिखूँगा।

संबोधन पूर्वोक्त, (७२१) १० दिसंबर, १८९४

एक पत्र मैंने आज प्रातः भेजा था, संभवतः मिला होगा। हाँसी* से मैं एक पीपा घी का लाया हूँ। और दाखिला (परीक्षा-प्रवेश-फीस) के लिए रुपया (जब मुझे आवश्यकता पड़ेगी, वह तत्काल मनीआर्डर से भेज देंगे) मैं अपने साथ नहीं लाया। इसके कई कारण थे। प्रथम तो वह मुझे यह रुपया औरों से गुप्त (छुपा कर) देना चाहते थे। द्वितीय मुझे यहाँ लाकर भी तो किसी के पास जाकर रखना ही पड़ता था, इत्यादि। केवल आती बार रेल का टिकट उन्होंने ले दिया था। बड़ी मुहब्बत और सत्कार से मिले थे, और अन्य कई एक भले पुरुषों का मिलना हुआ। आपको (गौसाँजी) बड़े आदाब (सम्मान) से स्मरण करते थे और कहते थे कि यों तो सब कुछ आपकी कृपा से यहाँ बहुत है, केवल आपकी कृपादृष्टि चाहिये। साधारण स्वास्थ्य के लिये उन्होंने उस चूर्ण (हड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, सौंफ़, सरना (सना), सेन्धिया लून) की, जिसका नाम उन्होंने चूर्ण कलाँ बताया है, बहुत प्रशंसा की है।

रेविन्द चीनी की गोलियों के बनाने की यह विधि है — "एक दराम या चार मारो रेविन्द चीनी लेकर उसे बहुत पीस लो, और पानी के साथ उसकी ३० तीस गोलियाँ बना लो"। प्रत्येक मात्रा एक या दो गोली से सात गोली तक। यदि हो सके, तो उस चूर्ण (सफ़ूफ़) में पाँच बूँदें पेपरमिंट तेल की भी डाल लो।

* हाँसी नगर का नाम है जहाँ गुसाँई तीर्थरामजी के मौसा (मामङ) पंडित रघुनाथमलजी असिस्टेंट सर्जन की बदली पर थे।

थोड़ा सा मैग्नेशिया मिलाने से गोली अच्छी तरह से बन जायगी। आपके दो पत्र मिले थे। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें।

——०——

सन् १८९५ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु साढ़े इक्कीस वर्ष के लगभग थी, और इसी वर्ष के आरम्भ में गुसाईंजी ने गणितशास्त्र में एम० ए० पास किया था।)

मिस्टर गिल्बर्टसन का एक उत्तम घड़ी उपहार में देना

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७२३)　　　　२ जनवरी, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। हाँसी का सविस्तर हाल मैं आगे अर्ज़ (स्पष्ट) कर ही चुका हूँ। सरदार ईश्वरसिंह साहब से आपने अमृतसरवाले खालसा कालिज की बाबत दर्याफ्त करना कि आया ईंटूँस की पढ़ाई शुरू होती है कि नहीं, और क्या इंतजाम (प्रबंध) है, इत्यादि। आज मुझे गिल्बर्टसन साहब (मिशन कालिजवाले) ने बुला कर एक बड़ी उत्तम घड़ी उपहार में दी है, जन्जीरी के साथ। यह सब आपकी कृपा का फल है, और यह सब आपकी ही दौलत (संपत्ति) है। चाहे आप यह घड़ी अपने पास रखें, चाहे मेरी टाइमपीस आप ले लें।

——०——

संसार किसी का नहीं

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७२४)　　　　४ जनवरी, १८९५

आपका कृपापत्र मिला, बड़ी खुशी हुई।

जहाँ ऐ बिरादर, नमानद बकस।
दिल अंदर जहाँ आफ्रीं बन्दो बस॥

आपके इख़्तियार में है। एक तकलीफ़ मैं आपको और देनी चाहता हूँ, अगर आप गवारा (बरदाश्त) कर सकें तो। मेरी किताबों में शायद यह अँग्रेजी की किताब होगी जिसका नाम यह है Todhunter's Mensuration अर्थात् "टाड हंटर साहब का रिसाला मसाहत"। अगर यह उनमें हुई तो आपने कृपा करके अपने साथ लेते आनी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२०) २१ जनवरी, १८९५

आपने यहाँ पहुँचकर कोई कृपापत्र नहीं भेजा। यह किताब रिसाला मसाहत टाडहंटर साहब की रचना (Todhunter's Mensuration) यहाँ गुजराँवाले मेरी किताबों में है कि नहीं ? अगर है तो जल्दी कष्ट उठाने की कृपा करें। अभी ऐनक मैंने नहीं बनवाई। वजीफ़ा भी अभी नहीं मिला। रेशा अभी थोड़ा है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२३) २५ जनवरी, १८९५

आज मैंने आपकी सेवा में गुरुमुखी का व्याकरण (छोटा) भेजा है। आपने उसके पहुँचने से जल्दी सूचना देना। आपका कृपापत्र आये देर हो गई है। क्या कारण है ? आपने दास पर किसी बात से ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। अक्सर (बहुधा या प्राय:) अपराध भी हो ही जाया करते हैं। अगर आप यह लिख भेजें कि जो दीवानमौज़ आप चाहते हैं उसके कितने पृष्ठ हैं। और किस व्यक्ति ने उस पर शरह (व्याख्या) की हुई है, और कहाँ छपा है, तो शायद मैं आपको भेज दूँ, नहीं तो उसका पता लगाना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि कई प्रकार का दीवाने मौज़ छपा हुआ है। मालूम नहीं आप कौन सा चाहते हैं।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३४) २७ जनवरी, १८९५

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, अत्यंत खुशी व प्रसन्नता प्राप्त हुई। किताब भी पहुँच गई। पंडित देवकीनंदन का घर मुझे मालूम न था। आज उनके कालिज का एक उस्ताद मुझे मिला था। उसने इक़रार किया था कि वह पंडित देवकीनंदन को कल सोमवार ज़रूर मेरी तरफ़ भेजेगा। प्रथम तो मैं स्वयं ही कल उनके कालिज में चला जाऊँगा और उसे पैग़ाम (संदेसा) दे दूँगा। आपने दीवाने-ज़ौक़ की बाबत कुछ नहीं लिखा। साथ इसके अगर आप पद्मपुराण जैसा आप चाहते हैं विस्तारपूर्वक लिखें तो आशा है कि मैं ख़रीद कर आपकी सेवा में भेजने की कोशिश करूँ। मेरी राय (सम्मति) में अगर आप स्वामी शिवगणचन्जी को बुला लें तो कुछ हर्ज नहीं। ऐनक को मैंने दो रुपये देकर चाँदी की कमानी लगवा ली है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३५) ३० जनवरी, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। आप ज़रूर जल्दी कृपा किया करें। लिहाफ़ आदि की कुछ बात नहीं। यहाँ से माँग सकते हैं। पोथियाँ आपने ख़ुद आनकर ही ले लेनी। अब आपका चित्त वापिस जाने को चाहे आप तशरीफ़ ले जा सकते हैं। चाचाजी को मैं लिखने लगा हूँ कि अनुचित रीति से आपके साथ कभी बर्ताव न किया करें। देवकीप्रसाद को आपका पैग़ाम (संदेसा) दे दिया हुआ है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३६) १ फ़रवरी, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं इसका जवाब पहले पत्र में दे चुका हूँ। आप कल तशरीफ़ लायेंगे। कभी पत्र लिखने

में देरी हो जाय, या कोई अपराध हो, तो आप कृपापूर्वक मुआफ़ फ़रमा दिया करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (७३७) १ बजे रात, ४ फ़रवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। ग़ुलाम पर सर्व प्रकार से ख़ुश रहना।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (७३८) ६ फ़रवरी, १८६५

आपने अभी आने का कोई ठीक दिन नहीं लिखा। आप कब तशरीफ़ लायेंगे। परसों और अतरसों यहाँ वर्षा हुई थी। और ओले भी पड़े थे। मगर अब धूप ख़ूब लगती है। मौसम अच्छा है। आप कृपा की दृष्टि रखा करें। आजकल मुझे काम बहुत है। आप ग़ुलाम पर ख़ुश रहा करें। यहाँ मुंशी सतराम (जो अब मुरारीवाले रहता है और जो मेरा पुराना उस्ताद है) आया था। लाला साहब ने उसे नौकर रख लिया है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (७३९) ११ फ़रवरी, १८६५

आपकी पोथियाँ अभी मैंने नहीं ख़रीदीं। आशा है कि जल्दी ख़रीद लूँगा। आप दया रखा करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (७४०) १५ फ़रवरी, १८६५

कल आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यन्त ख़ुशी हुई। परमेश्वर हमारे चित्तों को सदा ही अपनी तरफ़ लगाये रखे। आपके पास जो संत आये हुए हैं, उनको भी मेरा मत्था टेकना। आपकी पोथियाँ मैं रविवार को ख़रीदने जाऊँगा। "मुत करद चीन" मैंने ॥ को मँगवा लिया है।

अच्छा है। काला राम अपने गाँव गया है, पंद्रह दिन के लिए। और मैं अब केवल दूध पीता हूँ आनंद है।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त,　　　(७४१)　　　१७ फरवरी, १८६५

आपका कल एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मैं आज आशा है कि आपकी पोथियाँ लेने जाऊँगा। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। चाचाजी का कोई पत्र या पैग़ाम (संदेसा) अभी नहीं आया। वह बहुत कम लिखा करते हैं। आज या कल उनको फिर लिखूँगा।

—— ० ——

राय रामशरणदास के घर भोजन का प्रबन्ध

संशोधन पूर्वोक्त,　　　(७४२)　　　२० फरवरी, १८६५

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत खुशी हुई। अब आज से लेकर काला (नौकर) के आने तक मेरा भोजन लालाजी (रामशरण) जी के घर से आ जाया करेगा। आज आया था। उन्होंने अपने आप ही ऐसा प्रबन्ध किया है। यह आपका संकल्प पूरा हुआ है। मेरा अपना विचार तो थोड़ा बहुत था। आपके आने की सूचना पढ़कर बड़ी खुशी हुई। जल्दी पधारिये।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त,　　　(७४३)　　　२७ फरवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अभी ठीक ठीक सेहत (नीरोगता) नहीं आई। मगर आशा है कि जल्दी आ जायगी। मैं रामशास्त्र के रिज़ल्ट (नतीजा) की बाबत जब रिज़ल्ट निकलेगा, लिख दूँगा।

—— ० ——

में देरी हो जाय, या कोई अपराध हो, तो आप कृपापूर्वक मुआफ फ़रमा दिया करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३७) १ बजे प्रात', ४ फ़रवरी, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। गुलाम पर सर्व प्रकार से खुश रहना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३८) ६ फ़रवरी, १८९५

आपने अभी आने का कोई ठीक दिन नहीं लिखा। आप कब तशरीफ लावेंगे। परसों और अतरसों यहाँ वर्षा हुई थी। और ओले भी पड़े थे। मगर अब धूप खूब लगती है। मौसम अच्छा है। आप कृपा की दृष्टि रखा करें। आजकल मुझे काम बहुत है। आप गुलाम पर खुश रहा करें। यहाँ मुंशी सवराम (जो अब मुरारीवाले रहता है और जो मेरा पुराना उस्ताद है) आया था। लाला साहब ने उसे नौकर रख लिया है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३९) ११ फरवरी, १८९५

आपकी पोथियाँ अभी मैंने नहीं खरीदीं। आशा है कि जल्दी खरीद लूँगा। आप दया रखा करें।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४०) १५ फरवरी, १८९५

कल आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। परमेश्वर हमारे चित्तों को सदा ही अपनी तरफ़ लगाये रक्खे। आपके पास जो संत आये हुए हैं, उनको भी मेरा मत्था टेकना। आपकी पोथियों मैं रविवार को खरीदने जाऊँगा। "मुत कदाद चीन" मैंने =)।। का मँगवा लिया है।

अच्छा है। काला राम अपने गाँव गया है, पंद्रह दिन के लिए। और मैं अब केवल दूध पीता हूँ आनंद है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७४१)　　१७ फरवरी, १९२५

आपका कल एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मैं आज आशा है कि आपकी पोथियाँ लेने जाऊँगा। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। चाचाजी का कोई पत्र या पैग़ाम (सन्देसा) अभी नहीं आया। वह बहुत कम लिखा करते हैं। आज या कल उनको फिर लिखूँगा।

—o—

राय रामशरणदास के घर भोजन का प्रबन्ध

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७४२)　　२० फरवरी, १९२५

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत खुशी हुई। अब आज से लेकर काला (नौकर) के आने तक मेरा भोजन लाला (रामशरण) जी के घर से आ जाया करेगा। आज आया था। उन्होंने अपने आप ही ऐसा प्रबन्ध किया है। यह आपका संकल्प पूरा हुआ है। मेरा अपना विचार तो थोड़ा बहुत था। आपके आने की सूचना पढ़कर बड़ी खुशी हुई। जल्दी पधारिये।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७४३)　　२७ फरवरी, १९२५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अभी ठीक-ठीक सेहत (नीरोगता) नहीं आई। मगर आशा है कि जल्दी आ जायगी। मैं रामलाल के रिज़ल्ट (नतीजा) की बाबत जब रिज़ल्ट निकलेगा, लिख दूँगा।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (७४४) २ मार्च, १८६५

मुझे अब पहले से बहुत आराम है। आप दया रखा करें। काका आज आ गया है। चाचाजी का हाल लिखें।

संबोधन पूर्वोक्त, (७४५) ७ मार्च, १८६५

मासड़ (मौसा) जी का पत्र आया है। उन्होंने भी लिखा है कि भगवती इम्तहान के दिनों में तुम्हारे पास रहें, सो बहुत अच्छा है। ब्रज और मोहन पास हो गये हैं। आशा है कि मैं कल खर्च करूँगा, अथात् सेवा में कुछ भेजूँगा। आप दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (७४६) ६ मार्च, १८६५

कल देर से यह चीज यहाँ तक्सीम हुई थी (बँटी थी)। इसलिए आदमी को डाकखाना से यह काम करने के बिना आना पड़ा। आज खर्च (भेंट) की गई है। आप दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (७४७) ११ मार्च, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति खुशी हुई। मैंने तो आपको यह नहीं लिखा कि मेरे पास ब्रज और मोहन आवेंगे। बल्कि अगर इन दिनों आना चाहें तो उन्हें रोक देना चाहिये। मैंने तो केवल यह लिखा था कि वह वार्षिक इम्तहान में पास हो गये हैं। आपने जरूरी तशरीफ ले आनी। और कम-से-कम आठ सात दिन के रहने का इरादा करके आना।

संबोधन पूर्वोक्त, (७४८) १ बजे रात, ११ मार्च, १८६५

मिडिल का रिजल्ट (नतीजा) आज सात बजे सायं के लगभग

निकला है। मैं १२ बजे के लगभग देखने गया था। वहाँ अत्यंत भीड़ थी। एक बड़ा मज़बूत आदमी वहाँ मेरा परिचित निकल पड़ा। उसने मुझे तीन लड़कों का पता कर दिया, जिनकी तफ्सील यह है—

नंबर	नाम	रिज़ल्ट	विवरण
२५९१	अविनाशीराम	पास	यह लड़का मुराली-वाले का है।
१५३३	हरिकृष्णदास	पास	हमारे डॉक्टर साहब।
२६८७	रामलाल	×	यह नंबर और नाम उसे फेहरिस्त में नहीं मिला।

यह किताब जो लखनऊ लिखी थी (पदमपुराण) अभी छपी है कि नहीं ? आप गुलाम पर हर तरह से खुश रहा करें। मेरा रोल नंबर ७१ है। ब्रजलाल का आज पत्र आया है कि उसे निम्नलिखित पुस्तकें यहाँ से खरीदकर डाक से आपकी मार्फ़त भेज दी जायँ। मेरे विचार में अगर आप ही गुसरोंवाले से खरीदकर उसे भेज दें तो अति उत्तम होगा, यद्यपि मुझे डर है कि आपको कष्ट होगा। पंद्रह आने ।।।≡) के लगभग इन पर लगेंगे। किताबें यह हैं —(१) गुलिस्ताँ दो बाब (२) खेती की किताब (३) उर्दू की सातवीं किताब।

———०———

संबोधन पूर्वोक्त,		(७४९)		१२ मार्च, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। धरकसराम इन दिनों यहाँ नहीं था। अन्यथा मैं उससे तुरंत रिज़ल्ट दर्याफ़्त करवा लेता। उस जगह प्रातः भीड़ बहुत ही थी। मैंने कहा तीसरे पहर जाकर ज्यादा हाल दर्याफ़्त कर लूँगा। मगर तीसरे पहर जो यहाँ गया, तो तख़्ता इस तरह खाली पड़ा था कि मानों इस पर रिज़ल्ट कभी लगा ही नहीं। लड़कों ने ऐसा साफ़

किया था। इम्तहान से एक दो दिन पहले आप तशरीफ़ ले आयें, तो अत्यंत कृपा। परकतराम का मत्था टेकना। आपने इस बार वह गोलियाँ जरूर ले आनी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४०) १२ बजे रात, १४ मार्च, १८९५

आपके दो कृपापत्र मिले। अत्यंत खुशी हुई। मज को किताबें मिल गई हैं। आपने बड़ा अच्छा काम किया है। आप अब तशरीफ़ ले आयें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४१) रात, १५ अप्रैल, १८९५

आज भी रिजल्ट नहीं निकला। आपके चरणों का आसय है। आपने याद रखना। मेरे कुसूरों (अपराधों) की तरफ न देखना। अपनी बख्शिश (दया) की तरफ देखना। परकतराम "तसवीरे-आरिफ़" ले आया है। मैं खाली बार ले आऊँगा। परकतराम का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४२) दुपहर, १६ अप्रैल, १८९५

आपका कृपापत्र मिला। हाल मालूम हुआ। रिजल्ट अभी नहीं निकला। मैंने कल सोमवार सारा दिन रिजल्ट का इंतजार करके सायं को आपकी तरफ विनय-पत्र भेजा था। मगर मालूम हुआ कि यहाँ के सन्दूकचों में से दिन चढ़े पत्र ले जाते हैं, सो मेरा कल का पत्र आज प्रातः की गाड़ी में गुजरांवाले नहीं पहुँच सकता था। सो यहाँ से सायं की गाड़ी से जायगा। साथ इसके गुजरांवाले लाहौर की तरफ के पत्र केवल प्रातः के समय तकसीम होते (बाँटे जाते) हैं। सो मेरा कल का लिखा हुआ पत्र आपको भलके (कल) मिलेगा, तीसरे दिन को। खबर आज या कल निकलनेवाली है। आशा है कि जल्दी निकलेगी। मैं खबर निकलने के बाद आने में देर नहीं करूँगा। और आपको सब सूचना दे

दूँगा। अगर आप उचित समझें और आपको कष्ट न हो, तो आप निःसंदेह आने की कृपा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४३) ६ बजे रात, १६ अप्रैल, १८९५

रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। मेरा मन हुलास की दशा में है। आप दया रखा करें। आपने हर तरह से कृपादृष्टि रखनी। जीवनसिंहजी को मत्था टेकना।

—— o ——

गुरुजी से अभेदता

संबोधन पूर्वोक्त, (७४४) ६ बजे रात, १७ अप्रैल, १८९५

आपने जो एम० ए० का इम्तहान दिया हुआ है, उसका नतीजा (परिणाम) अभी नहीं निकला। जब आपके पास हो जाने की सूचना आयेगी, मुझे बड़ी खुशी होगी। यह सब आप ही का काम है। मुझे कोई जल्दी नहीं, जिस दिन यह सूचना निकलने की आपकी इच्छा हो, उसी दिन सही।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४५) दुपहर, १८ अप्रैल, १८९५

रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। अगर कल और परसों भी न निकला, तो परसों सायं की गाड़ी में मैं सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। अगर आज या कल निकल आया तो मैं पहले ही आ जाऊँगा। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४६) रात्रि, १८ अप्रैल, १८९५

रिज़ल्ट अभी तक नहीं निकला। देखिये कब निकलता है। आप दया रखा करें। आपका पत्र भी एक के सिवा और कोई नहीं आया। आप ही का आश्रय है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५७) १९ अप्रैल, १८९५

आज आपका एक कृपापत्र मिला। अत्यंत खुशी हुई। बी० ए० का रिज़ल्ट भी आज निकल आया। गुजराँवाले से फ्तेहउद्दीन (दरज़ी) पास है। मेरा रिज़ल्ट अभी तक नहीं निकला। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५८) रात, १९ अप्रैल, १८९५

बी० ए० के इम्तहान में दो सौ में से चौंसठ (लड़के) पास हो गये हैं, जिनमें से छे मुसलमान थे। मिशन कालिज सबसे अच्छा रहा है। मेरा रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। आप दया रखा करें। मैं कल रात की गाड़ी में आने की आशा करता हूँ। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५९) ५ मई, १८९५

लाला गोपालदास इम्तहान इंट्रेंस में कामयाब (सफल) हो गया है। मेरी तरफ से मुबारकबाद (बधाई)। लाला साहब अभी तशरीफ़ नहीं लाये। मुरालीवाला के लड़कों का पता अभी नहीं लगा। बाक़ी कल लिखूँगा।

—— ० ——

एम० ए० उत्तीर्ण होने के पीछे क्लास खोल कर पढ़ाने का संकल्प

संबोधन पूर्वोक्त, (७६०) ८ मई, १८९५

लाला साहब और सेठ साहब अभी नहीं आये। मैंने अभी तक कोई विचार नहीं किया। कुछ दिन परमेश्वर के रंग देखकर क्लास (श्रेणी) खोलूँगा। शायद कल कुछ अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा। आप दया रखा करें।

—— ० ——

गणितशास्त्र की क्लास खोलने का विज्ञापन

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७६१)　　१० मई, १८९५

कल आशा है यहाँ से कुछ रुपये हाथ लगेंगे। भूर्ज (भेंट) की जायेगी। लाला साहब व सेठ साहब अभी नहीं आये। कई तजवीजों (विचारों) के बाद आज गवर्नमेंट कालिज के प्रिन्सिपल साहब ने मेरी ओर से यह विज्ञापन (नोटिस) छपवाना भेजा है कि एफ० ए० श्रेणी के विद्यार्थी दस रुपया मासिक और बी० ए० श्रेणी के विद्यार्थी पंद्रह रुपया मासिक फ़ीस देकर मुझसे अर्थात् तीर्थराम से आकर गणित पढ़ें। जब विद्यार्थियों की संख्या दस से अधिक हो जायगी, तब काम आरम्भ किया जायगा। आप दास पर दया रखा करें। आपका एक कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

—— o ——

उदासी का नाम तक नहीं

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७६२)　　१२ मई, १८९५

कल आपकी सेवा में भूर्ज (भेंट) की गयी थी, आपका कृपापत्र भी कल मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। आपकी दया से मुझे बड़ा आनन्द रहता है। उदासी का नाम तक भी कभी नहीं आता, और पढ़ने लिखने का काम भी बहुत रहता है। आपका यहाँ पधारना मुझ पर अति कृपा करना है। लाला साहब और सेठ साहब अभी नहीं आये। कल विज्ञापन (नोटिस) छप कर आ गये थे। आज नगर के द्वारों और कालिजों में लगाये जायेंगे। और कल पंजाब प्रांत के अन्य नगरों में जहाँ जहाँ भी कालिज हैं, भेज जायेंगे। एफ० ए० श्रेणी की दस और बी० ए० श्रेणी की पन्द्रह रुपये फ़ीस मेरे प्रोफ़ेसरों ने नियत की है। आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी और कभी रुष्ट न होना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७६१) ११ मई, १८९५

आपका एक कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। आज कुल शहर के दरवाज़ों और कालिजों पर नोटिस अर्थात् विज्ञापन लगाये गये। नोटिस इस प्रकार के हैं जैसा कि आपकी सेवा में भेजा जाता है—

Important notice to students.

The undersigned intends to give Private Tuition in Mathematics to students preparing for the University Examinations at the following rates —

Intermediate Candidates —Rs. 10/ a month, *for* 3 lectures weekly

B A Candidates —Rs. 15/ a month, for 3 lectures weekly

Work will be commenced immediately after 10 students are willing to read at the foregoing rates

No pains will be spared to prove really useful to those who come to seek help

GOSWAMI TIRTHA RAMA M. A.,

11th May 1895 *A. B. Mela Rama's Bungalow Lahore*

इसमें लिखा है कि सप्ताह में तीन तीन लेक्चर दिये जायेंगे। एफ० ए० वालों को अलग, बी० ए० वालों को अलग। दुपहर खाने के पीछे गवर्नमेंट कालिज में। और इस तरह महीने भर के लेक्चरों के पढ़ने में १०) और १५) रुपये फीस ली जायगी। कम से कम दस विद्यार्थी ज़रूर आने चाहियें। और अगर दस से अधिक आ जायें तो इससे बढ़ कर क्या, वह भी फीस दें और पढ़ें।

कल इत्तिफ़ाक़ से मुरारीवाले का हाकिमसिंह (ब्राह्मण) मुझे मिल पड़ा। नगर के द्वारों और कालिजों पर सब नोटिस उसने लगाये हैं। दीवानचन्द (बूढ़े और अंधे) ने भी मदद (सहायता) बहुत दी थी। अब पंजाब के अन्य स्थानों पर (जहाँ जहाँ कालिज हैं) यह नोटिस भेजने का इरादा है।

आज सेठ साहब और लाला साहब तशरीफ़ ले आये हैं। आपकी चीजें खरीदी जायेंगी। आप दया रखा करें।

लेक्चरों का लम्बा या छोटा होना मेरी अपनी मरज़ी पर निर्भर है। एक लेक्चर पर अगर अधिक नहीं, तो कम से कम एक घंटा तो ज़रूर लगा करेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७६४)　　१८ मई, १८६५

कल की कोई नई बात देखने में नहीं आई। लड़के अभी नहीं मिले। लाला साहब व सेठ साहब से भी अभी मुलाक़ात नहीं हुई। आप दया-दृष्टि रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७६५)　　१६ मई, १८६५

मिशन कालिज का प्रिंसिपल यहाँ नहीं है। इसलिए बरेली कालिज अर्ज़ी भेजने की तजवीज़ उसके आने तक मुल्तवी (स्थगित) कर दी है, क्योंकि उसका सर्टिफ़िकट ज़रूरी है। और बहुत व्यक्तियों ने राय (सम्मति) दी है कि अगर यहाँ काम चल पड़े तो बरेली न जाना। कल छुट्टी है। परसों मंगलवार है। बीरवार काम शुरू करने का इरादा है। आप दास पर दया रखा करें। और कृपानम्र जल्दी जल्दी भेजते रहा करें।

—— ० ——

एक प्रोफ़ेसर को गणितशास्त्र पढ़ाना

संबोधन पूर्वोक्त, (७६६) २० मई, १८९९

आपका एक कृपापत्र आज मिला, अत्यन्त खुशी हुई। आपकी दया से मुझे कोई किसी प्रकार की चिन्ता किञ्चिन्मात्र भी नहीं है। इस यीरवार को एक साधारण (पब्लिक) व्याख्यान गणितशास्त्र के लाभों पर देना चाहता हूँ। और शुक्रवार को एक प्रोफ़ेसर साहब को गणित पढ़ाना आरम्भ करने का वादा (इक़रार) किया है। और अगले सोमवार को अपनी क्लास की पढ़ाई आरम्भ करवा देने का विचार है। काम सब परिश्रम माँगता है, आप निश्चिन्त तशरीफ़ ले आयें। बड़ी कृपा है। हमारे ग्राम का सुन्दरदास कल सायंकाल का यहाँ मेरे पास आया हुआ है। अभी तक यह मेरा किसी प्रकार से प्रतिबन्धक (विघ्नकारक) नहीं हुआ। आगे, उसको साथ रखने या न रखने के विषय जैसी आप आज्ञा देंगे किया जायगा। बरकतराम के समान यह भी अलग बैठकर अपना कार्य करता रहता है। आपकी चीज़ें लेने का अभी इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ।

संबोधन पूर्वोक्त, (७६७) २२ मई, १८९९

मुझे आपका बड़ा इंतज़ार रहा है। पर आप तशरीफ़ नहीं लाए। अब आपने जल्दी तशरीफ़ ले आनी। आप दया क्षमा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (७६८) २४ मई, १८९९

आप अभी तक तशरीफ़ नहीं लाये, जब आप तशरीफ़ लावेंगे सेठ साहब को साथ ले जाकर वह चीज़ें ख़रीद लेंगे, क्योंकि वह चीज़ें कई क़िस्म की मिल सकती हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (७६६) २६ मई, १८६५

आप अभी तक तशरीफ नहीं लाये। क्या कारण है? आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७७०) २ जून, १८६५

मुझे इस बार पत्र लिखने में बहुत देर हो गई है। आपने कृपा करके मुआफ़ फ़रमाना। दास पर सदा कृपादृष्टि रखनी। बरेली कालिजवाली अर्जी आदि सब कुछ तैयार है। आशा है कि कल रवाना की जायगी।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (७७१) ४ जून, १८६५

बरेली कालिज अर्जी भेज दी है, आगे जो परमात्मा की मरजी। आप दया रखा करें। मैं राजी हूँ। आप भी कोई फ़िक्र (चिंता) न करें। परमात्मा सब कुछ अच्छा करेगा। हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

—o—

केवल एक विद्यार्थी का पढ़ने आना

संबोधन पूर्वोक्त, (७७२) ५ जून, १८६५

अब केवल एक ही विद्यार्थी पढ़ने आता है। मैं पढ़ाता अति ही उत्तम हूँ। पर कोई इत्तिफ़ाक़ (अवसर) ही ऐसा बन गया है। किसी के पिता माता आज्ञा नहीं देवे। कोई धूप के कारण रुक जाता है। किसी को कोई और रुकावट (विघ्न) सम्मुख आजाती है। अच्छा (अस्तु), परमेश्वर सब कुछ अच्छा करेगा। आपने कोई चिन्ता न करनी।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (७७३) ७ जून, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बड़ा काल बीत गया है। आप जल्दी

जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। आपने दास पर दयादृष्टि रखनी। किसी बात पर रुष्ट नहीं होना। यहाँ किसी बात की फ़िक्र (चिंता) नहीं। आपने भी कोई चिंता नहीं करनी। आशा है कि कुछ उधार लेने के बाद भुर्ज (भेंट) करूँगा। आप दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (७७४) १२ जून, १८९५

इस वक्त आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैंने पत्र लिखने में चार दिन से अधिक वक्फ़ा (विलम्ब) कभी नहीं पड़ने दिया। आपने लिखा है कि इस बार पत्र आये सप्ताह बीत गया है। इससे मालूम होता है कि मेरा कोई पत्र आपको या तो मिला नहीं होगा, या देर से मिला होगा। मैं इन दिनों आपके पवित्र चरणों में हाज़िर ना हो जाऊँ मगर किसी क़दर आशा है कि शायद यहाँ रहने से दो एक अँग्रेज़ मेरे पास पढ़ना शुरू कर दें। साथ इसके विलायतवाले वज़ीफ़े का निर्णय भी अभी निकट ही होनेवाला है। हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना। मैं सदैव अपनी तरफ़ से तो आपकी बातों का उत्तर देता रहा हूँ। आप दया रखा करें। दास की किसी बात पर ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। भजन मैं किया करता हूँ। यह बड़ी चीज़ है। थोड़ी सी भेंट (भेंट) भमो भी गई है। बाक़ी चंद (कुछ) दिनों को करूँगा। अभी इतना ही मिला था।

संबोधन पूर्वोक्त, (७७५) १३ जून, १८९५

(१) ख़ुदा गुर्द ख़ासगानमा निगह दारंदे-बरक़ल्ब था।

(२) दर पैराहन मिनशीं अज़ कुदामरा ना उमीद शुदा।

मसालेह-हाल अज़ दर कुफ़्ल मे रोयद कमीद देखा।

भावार्थ—(१) ईश्वर पर भरोसा करनेवाले (अथवा विश्वास रखने वाले) दासों के लिये परमेश्वर आप रक्षक (मददगार) बना रहता है।

(२) ईश्वर-कृपा का द्वार खुला हुआ है। कठिनाइयों के दूर करने से यहाँ स्पकाशा (आशा-हीन) होकर मत बैठ। बीज (दाना) के समान प्रत्येक रहस्य की ग्रन्थि यहाँ उत्पन्न हुई है।

आपकी दया से चित्त बड़ा आनन्द में है। आप इसी प्रकार कृपा-दृष्टि रखा करें।

(१) भीखा भूखा कोई नहिं, सबकी गठड़ी लाल।
गृह खोल नहीं जान दे, इत विधि भये कंगाल॥
सात गाँठ कौपीन में, साध न माने शंक।
राम अमल माता फिरे, गिने इन्द्र को रंक॥

(२) खिश्त ज़ेरे-सरो बर तारके-हफ़्त अख़्तर पा।
पाये-रिफ़अते निगरो मन्सिबे-साहिब जाही॥

भावार्थ —(१) कोई प्राणी भी नंगा भूखा नहीं है, सबके भीतर बड़े भिवना बड़ा रत्न (लाल) धरा पड़ा है, केवल उसकी ग्रन्थि खोलना नहीं जानते, इसलिये कंगाल बने हुए हैं।

निर्धन पुरुष को कंगाल (दीन या कृपण) नहीं कहते, क्योंकि मस्त साधु के पास एक कौड़ी नहीं होती बल्कि उसकी कौपीन भी फटी पुरानी सात आठ गाँठोंवाली होती है तथापि वह देवताओं के मालिक इन्द्र को भी तुच्छ नहीं गिनता। इसलिये जो अपने आत्मा से विमुख और मूढ़ हैं, वही दीन या कृपण हैं, निर्धन पुरुष नहीं।

(२) ईंट तो जिसका सिरहाना हो और पाँव सातों आकाशों के ऊपर, ऐसे ब्रह्मवित् मस्त की पदवी तुम अनुभव करो।

यह कार्ड (पत्र) लिख चुकने के बाद आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। मैं दर्द नहीं सेवन करा करता। खर्च इत्यादि का निर्वाह होता जायगा। आपने किसी को न लिखना।

—— ० ——

हाकिमसिंह का मत्था टेकना। आपका पत्र और संदेसा भी मिले। बड़ी खुशी हुई।

विलायत जाने से रह जाना

संबोधन पूर्वोक्त, (७८०) २१ जून, १८९५

मैं आशा करता हूँ कि कल फिर पिछली बार के बराबर भ्रमण (सैर) करूँगा। आपका बड़ा इंतज़ार रहा। आप तशरीफ़ लाये नहीं। विलायत का वज़ीफ़ा किसी और विद्यार्थी को मिल गया है। बरलो-कालिज का हाल देखिये क्या बनता (होता) है।

संबोधन पूर्वोक्त, (७८१) ११ बजे रात, २१ जून, १८९५

आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

राज़ी हैं हम उसी में जो तुम दिलरुबा करे,
ख्वाह वह जफ़ा व जौर करे या वफ़ा करे।

अर्थात् हमारा प्यारा चाहे वह हम पर अत्याचार करे, चाहे सख्ती और चाहे वफ़ादारी, जो भी कुछ वह करे हम उसी में ख़ुश हैं।

लाला गुलज़ारलाल और हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

धन की अत्यंत न्यूनता (तंगी)

संबोधन पूर्वोक्त, (७८२) २२ जून, १८९५

आपका एक कृपापत्र कल मिला, अत्यंत खुशी हुई। मैं तो आपको पहले ही लिख चुका हूँ कि आप कृपापूर्वक यहाँ पधारिये और यहाँ (आने का) कष्ट उठावें, (क्योंकि) मेरा वहाँ (आपके पास) आना किञ्चित् कठिन है। इसके कई कारण हैं, जिनमें से एक यह भी है कि

अब मेरे लिये किराये के वास्ते रुपया अथवा दो रुपया उपार्जन करना कुछ सुगम बात नहीं है। लाला मोहनलाल साहब के लड़के बालमुकुन्द का विवाह है। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८२) २९ जून, १८९५

आपकी दया से आनंद है। आप याद रखा करें। आप ही के चरणों का आश्रय है। मैं अब साहबों को मिलूँगा।

—— o ——

सनातन धर्म सभा की विद्यासंबंधीय समिति का सभासद् होना

संबोधन पूर्वोक्त, (७८४) १ जुलाई, १८९५

जबकि आप तशरीफ़ ले गये हैं आपकी तरफ़ से एक पत्र भी नहीं आया, क्या कारण है ? आप दया रखा करें। मुझे उन्होंने (सनातन धर्म सभा के सभासदों ने) सनातन धर्म सभा की विद्यासंबंधीय समिति का सभासद् बना लिया है। यहाँ की इंट्रेंस-परीक्षा भी मैंने ली है। मैं आशा करता हूँ कि इस सप्ताह में कुछ अर्पण (भेंट) करूँगा।

—— o ——

सनातन धर्म सभा की सब-कमेटी (उप-समिति) का मन्त्री होना

संबोधन पूर्वोक्त, (७८५) ४ जुलाई १८९५

लाला हंसराजजी * को भी मैं जाकर मिला था। सनातनधर्म सभा की एक उप-समिति का मैं मंत्री बनाया गया हूँ, जिसके सभासद् निम्न लिखित पंडित हैं।

(१) पं० ईश्वरीप्रसाद साहब, (२) पं० भानुदत्तजी, (३) पं० गणपतिजी, (४) पं० दुर्गादत्तजी, (५) पं० शिवदत्तजी,

---

* लाला हंसराज भूतपूर्व प्रिन्सिपल डी० ए० वी० कालेज लाहौर से यहाँ अभिप्राय है।

(६) लाला अयोध्यादासजी बी० ए०, और (७) मैं। छुट्टियों के कारण अभी साहबों को मिलने का इत्तिफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ। यह चित्र-विद्या (ड्राइंग) बिना फ़ीस के सीखने की मुझे आज्ञा मिल गयी है वैदिक कालिज में। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें। आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८६) ६ जुलाई, १८९५

चित्त आपके चरणों की तरफ रहता है और बड़ा आनंद है। किसी क़दर कोशिश भी की जाती है। और साहबों को मिलने जुलने जाता हूँ। मगर दिल ख्वाहिशों से पाबंद (बद्ध) नहीं। आशा है कि जल्दी भेंट (मेंट) कर सकूँगा।

गुज़श्तम अज़ सरे-मतलब तमाम शुद मतलब।
नक़ाब चेहरहे-मक़्सूद बूवद मतलबहा॥

अर्थात् मुरादों से गुज़रना ही मुरादों का पूरा होना होता है। ये मुरादें (इच्छाएँ) ही ध्येय के मुख पर परदा हैं, अर्थात् ध्येय की प्राप्ति में रुकावट डाले हुए हैं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८७) ८ जुलाई, १८९५

आपकी दया से बड़ा आनंद है। मैंने आज कल श्रीमगवद्गीता का एक भाग पाया है। अत्यंत आनंद हुआ है। आप भी यह पुस्तक आज कल फिर पढ़ें। आप कृपा रखा करें।

—— ०:——

प० दीनदयालजी से भेंट (मुलाक़ात)

संबोधन पूर्वोक्त, (७८८) ८ जुलाई, १८९५

आज बेल साहब को भी मिला था। और वह कहते हैं कि एक प्रार्थना-

पत्र इस विषय का आप डायरेक्टर साहब को भेज दो कि "विद्या-विभाग (महक्मा-तालीम) में मैं नौकरी करनी चाहता हूँ। और जब आवश्यकता पड़े, मुझसे काम लिया जावे।" साथ इसके सुना है कि अमृतसर कालिज का गणित शास्त्र का प्रोफ़ेसर अधिक वृद्ध होने के कारण नौकरी छोड़ने लगा है। मगर पक्का पता नहीं।

आज पं० दीनदयालजी से (जो कल के यहाँ आये हुए हैं) किसी ने सभा में मेरी मुलाक़ात करा दी थी, वह अत्यन्त प्रसन्न हुए थे। मित्रों के समान कंठ से लगे थे और कहते थे कि मैं इनको अर्थात् मुझको पहले ही जानता हूँ। आपके दो कृपापत्र मिले, बड़ी ख़ुशी हुई। वह किताब म भेज दूँगा। आप दास पर दया रखा करें। मैं आशा करता हूँ कि कल अर्ज़ कर सकूँगा। मुलखयाल और हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८९) १० जुलाई, १८९५

पेशावर में एक हेडमास्टरी की जगह ख़ाली है। आज सर्विस्ग दर्ख़ास्त करूँगा। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। आपकी दया से बड़ा आनंद है। आपकी किताब मैंने ख़रीदी हुई है। जल्दी भेज दूँगा। लाला मुल्खयाल व हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना। इस पत्र का लिख चुकने के बाद आपका एक कृपापत्र मिला। बड़ा आनंद हुआ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७९०) १२ जुलाई, १८९५

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति आनन्द हुआ। यह किताब जो मेहरचंद ने दी है, इसके पहले पृष्ठ पर "वेदान्त नामावली भाषा" लिखा हुआ है। और पिछले पृष्ठ पर कोई नाम नहीं लिखा हुआ। अगर आप आज्ञा दें, तो भेज दूँ। अन्यथा न भेजूँ। मेहरचंद कहता था कि "मर

पास इस क़िस्म की और कोई किताब नहीं।" आप दया रखा करें। मेहर चंद ने यह किताब अभी मँगाई है। हाकिमसिंह व मुरलदयालजी का मत्था टेकना।

पशावर हाईस्कूल की हेडमास्टरी का ख्याल

संबोधन पूर्वोक्त, (५६१) १४ जुलाई, १८९५

पेशावर में एक हेडमास्टरी मिल सकती है। मगर वेतन थोड़ा है। कोई पचास, साठ रुपये। जैसी आप आज्ञा करें, वैसा किया जायगा। यदि आपकी इच्छा हो, तो यत्न किया जावे। पत्र से शीघ्र सूचना दें। डायरेक्टर साहब की तरफ़ भी अर्जी (प्रार्थना-पत्र) भेज दी गई है।

गुसाईंजी का कार्य-क्रम

संबोधन पूर्वोक्त, (५६२) १९ जुलाई, १८९५

मेरे बड़े प्रोफ़ेसर साहब का कुछ काम करनेवाला है। मेरे दूसरे प्रोफ़ेसर साहब भी इस सोमवार मेरे मकान पर पधारेंगे, और कुछ काम (एफ़० ए० और बी० ए० के पर्चे रखने का) दे जायेंगे। अपनी पुस्तकें भी जितना हो सके देखता हूँ। सनातनधर्म स्कूल के सम्बन्ध में भी कुछ न कुछ कार्य रहता है, अर्थात् उनकी लिखित परीक्षा लेना, उनको विज्ञान-शास्त्र (साइन्स) और गणित शास्त्र का कुछ बताना, इत्यादि। भजन भी करता हूँ। आपके चरणों का ध्यान रहता है।

पं० दीनदयालजी के पाँच व्याख्यान सुने, विश्राम पर। बड़ा आनन्द हुआ। अब उन्होंने इस पीरवार से उपासना पर व्याख्यान देने आरम्भ करने हैं। आपकी दया से बड़ा आनन्द रहता है। यह चाबी मैं आपकी सेवा में आज ही भेज दूँगा, हाकिमसिंह का माथा टेकना।

प्रत्येक दशा में आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (७६३) १७ जुलाई, १८६५

एक पत्र जिसमें पेशावर की बाबत लिखा है उसके सम्बन्ध में यह प्रार्थना है कि मैंने बेल साहब से उसका ज़िक्र (चर्चा) किया था। वह कहने लगे कि "वहाँ कदापि न जाओ। क्योंकि प्रथम तो पेशावर का डिपुटी कमिश्नर उस स्कूल के अत्यन्त विरुद्ध है, द्वितीय डायरेक्टर और इन्स्पेक्टर साहब दोनों उसके विरुद्ध हैं। तृतीय वहाँ मैं तुमको कोई सहायता नहीं दे सकूँगा। चतुर्थ वहाँ तुम्हारे काम का मान नितान्त नहीं होगा, क्योंकि स्कूल सरकारी नहीं है। थोड़ा काल धैर्य धरो, परमेश्वर कोई बड़ा अच्छा अवसर निकाल देगा।" उस स्कूल से मुझे सत्तर ७०) रुपये मासिक मिल सकते थे। मगर बेल साहब ने बहुत रोका है। इस लिये वहाँ जाना उचित नहीं। मुझसे पूछिये तो मैं प्रत्येक दशा में बड़ा आनन्द हूँ। अभी कुछ दिनों तक मेरे वहाँ (आपके चरण-कमलों में) उपस्थित होने में कुछ प्रतिबन्ध (रुकावटें) हैं। पंद्रहवें या सोलहवें दिन तक उपस्थित हो सकूँगा। अभी न तो किराया पास है और न प्रोफ़सरों के नाना प्रकारों के कामों से छुटकारा। आगे जैसे आप आज्ञा दें, वैसा कर देता हूँ। चित्त तो मेरा भी चाहता है कि आपके दर्शन करूँ, परन्तु हाल (अवस्था) यह है।

अमृतसर कालिज की प्रोफ़ेसरी निमित्त यत्न

संबोधन पूर्वोक्त, (७६४) १६ जुलाई, १८६५

आपके दो कृपापत्र आज मिले, अत्यन्त आनन्द हुआ। बेल साहब ने कहा है कि "तुम अमृतसरवाली जगह की बाबत सारा हाल पूछकर विस्तार पूर्वक मुझे सूचना दो। फिर मैं तुम्हारे लिये यत्न करूँगा। विशेष करके यह

पता लगाओ कि वह (प्रोफ़ेसर) कब जायेंगे।" मैं अब अपने गणित शास्त्र के एक प्रोफ़ेसर से सम्मति लूँगा कि आया मैं अमृतसर जाऊँ और उस कालिज के प्रिन्सिपल से मिल आऊँ या क्या करूँ? आज मैं देरा (मुकाम) के कारण बहुत तंग (दुःखी) रहा, आशा है कि कल आराम रहेगा। पंडित दीनदयालजी के व्याख्यान हो रहे हैं।

प्रिन्सिपल की डायरेक्टर के पास पहले से ही सिफ़ारिश

संबोधन पूर्वोक्त, (७६५) ११½ बजे रात, २० जुलाई, १८९५

कल एक प्रोफ़ेसर साहब से मालूम हुआ कि अमृतसर कालिज वाले गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर ने पेन्शन निमित्त अर्ज़ी दी हुई है। मगर कमेटी ने (क्योंकि वह कालिज म्योनिसपल कमेटी का है) उसकी अर्ज़ी डायरेक्टर साहब की तरफ़ भेजी है, और उसके साथ यह प्रार्थना लिखी है कि प्रोफ़ेसर को एक वर्ष और इस कालिज में रखा जाये। आज मैं बेल साहब को मिला था, वह कहते थे कि "मेरी बाबत मैंने पहले ही डायरेक्टर साहब को लिख भेजा है कि मुझे उस कालिज में ले लें।" अब जो परमात्मा की इच्छा होगी, हो जायगा। आप दया रखा करें। आपकी दया से आनंद है। हाकिमसिंहजी व लाला मुरलदयाल का मत्था टेकना।

पंडित दीनदयालजी से मेल-जोल

संबोधन पूर्वोक्त, (७६६) २१ जुलाई, १८९५

कल पंडित दीनदयालजी से मैं उनके स्थान पर जाकर मिला था। बड़े खुश हुए थे। आपको भी कुछ हाल बताया था, और अपने विचार भी प्रकट किये थे। आज गवर्नमेंट कालिज के प्रोफ़ेसर साहब लगभग सारे कालिज के गणित-शास्त्र की परीक्षा के पर्चे मुझे मुफ्त लगाने और

शुद्ध करने के लिये दे गये हैं। आप दया रखें। आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बड़ा काल बीत गया है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७९७) २४ जुलाई, १८९५

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। अति आनंद हुआ। अखलाक़े-नासरी का अनुवाद मैं ज़रूर सुधारा करूँगा और भेज दूँगा। मैं छुट्टियों में सेवा में ज़रूर उपस्थित हूँगा। मगर अभी यह नहीं कह सकता कि किस दिन आऊँगा। मजलाल आपको मिलने नहीं आया। बड़े अफ़सोस की बात है। यह कुसंग का फल है। माई साहब का पत्र आया है कि वह मुरारी-वाला आये हुए हैं। आपको मिले हैं या नहीं? लाला मुरलीधर और हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७९८) २५ जुलाई, १८९५

कल कशमीरी बाज़ार और लाहौरी दरवाज़े की एक एक दुकान से मैंने दर्याफ़्त किया कि किसी के पास अखलाक़े-नासरी का उर्दू अनुवाद हो। मगर सबने "नहीं, नहीं" ही जवाब दिया। फिर मेरा एक पुराना सहपाठी मिला, वह कहने लगा कि "छपा हुआ तो है" मगर मैंने एक और दोस्त (मित्र) के पास देखा था, सो आज कल फ़रीदकोट की रियासत में है। अगर संभव हुआ, तो मँगा दूँगा। आप दया रखा करें। बस बारह दिन को मजलाल का विवाह है। हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (७९९) अड़ियाला १०, अगस्त, १८९५

कल रात को हम यहाँ अड़ियाला पहुँच गये। लाला जगाध्यादास की बैठक के ठीक सामने बरात उतरी है। लाला साहब बड़ी मुहब्बत (प्रेम) और कृपा के साथ पेश आये (मिले) हैं। आपको बहुत याद करते हैं। बड़ा आनंद हुआ। कल उनके यहाँ दूध भी खूब पिया। परसों यहाँ से

रवाना डाक्टर मुरारीवाला चलेंगे। लाला साहब का यही मुहब्बत (भक्ति) से माथा टेकना *।

—— ० ——

धनाढ्य पुरुषों के घर में कमरों का घड़ी घड़ी बदलना

संबोधन पूर्वोक्त, (८००) लाहौर, २१ अगस्त, १८९९

मैं आज कुशलता से यहाँ पहुँच गया हूँ। बादामी बाग़ के स्टेशन पर हाकिमसिंह और एक अन्य मनुष्य मुझे लेने के लिये आये हुए थे। असबाब उन्होंने उठा लिया। और हम सब कोठी को चले आये। बरबाले कमरे में एक अँगरेज़ इंजीनियर (जिसे लाला साहब ने नौकर रक्खा है) रहता है। मेरा अन्य असबाब तो उन्होंने बड़ी ड्योढ़ी में जहाँ डॉक्टर साहब रहते हैं, मेरे पीछे रखवा दिया हुआ था। मगर मेरी पुस्तकें पहले ही अलमारियों में बन्द थीं। यह पुस्तकें अब मैं बड़ी ड्योढ़ी पर ले आया हूँ। एक तरफ़ डॉक्टर साहब रहते हैं, दूसरी तरफ़ मैं रहता हूँ। यह भी अच्छा मकान है। कष्ट कोई नहीं। लाला साहब पढ़ा करेंगे। आपने कृपापत्र भेजते रहना। हाकिमसिंह की ओर से अत्यंत (प्रेम से) हाथ जोड़कर माथा टेकना।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८०१) २६ अगस्त, १८९९

आपका कोई कृपापत्र नहीं प्राप्त हुआ। आप जल्दी जल्दी कृपा करते रहा करें। आशा है लाला साहब पढ़ा करेंगे। मिशन कालिज के प्रिंसिपल साहब से भी मिलता हूँ। सब कुछ परमेश्वर के हाथ है। हाकिमसिंह का हाथ जोड़कर माथा टेकना।

—— ०. ——

* [illegible] में दिया गया है।

संशोधन पूर्वोक्त, (८००) २७ अगस्त, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति आनंद हुआ। अभी कोई विशेष बात लिखने योग्य नहीं। साहब का स्यालकोटवाली मिशन से कोई संबंध नहीं। लाला साहब ने कल पढ़ना शुरू किया है। आप अमृतसर कब तशरीफ़ ले जाने का इरादा (विचार) रखते हैं? हाकिमसिंहजी का हाथ जोड़कर चरण वंदना।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (८०१) २९ अगस्त, १८९५

आपका एक कृपापत्र मिला था। अति आनन्द का कारण हुआ। आपकी कृपा से मेरा चित्त हर हाल से प्रसन्न है। आप दया रखा करें। आपने अमृतसर जाते हुए यहाँ कब आना है। हाकिमसिंह की तरफ़ से अत्यंत प्रीति के साथ हाथ जोड़कर चरण वंदना। मेरे कपड़े जो धोबी को धोने दिये हुए थे, अगर वापिस आये हों तो भेज देना। धोती की अधिक ज़रूरत है।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (८०२) ३१ अगस्त, १८९५

आपका कृपापत्र आये बहुत देर हो गई है, आपका इंतज़ार है। आज राय सोंधीमल साहब यहाँ आये थे। मैंने कारख़ाना इत्यादि दिखलाया था। उस वक्त लाला साहब यहाँ नहीं थे। राय सोंधीमल साहब एक दो दिन लाहौर में ठहरेंगे, आज हमारे घर काट रहे हैं। मगर डॉक्टर साहब ने जल्दी करके प्रत हो बिगाड़ दिया है। हाकिमसिंह की हाथ जोड़ चरण वंदना।

—— ० ——

तीर्थरामजी के साथ बड़े लाला साहब का बर्ताव (सलूक)

संबोधन पूर्वोक्त, (८७५) १ सितम्बर, १८९९

अभी यहाँ मेरी रोटी का कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है, क्योंकि बड़े * लालाजी ने उस मेरे रोटी पकानेवाले को मेरे पीछे मेरी रोटी पकाने से रोक दिया था। पर आशा है कि लाला रामशरणदास शीघ्र प्रबन्ध कर देगा। लाला रामशरणदास यहाँ कपास का कारखाना खोलने लगा है, जिसमें अनेक प्रकार आदमियों को रोजगार (कार्य) मिल जायेगा। आपका पत्र कोई नहीं आया।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८७६) २ सितंबर, १८९९

आपका इंतजार है। आप जल्दी यहाँ पधारें या पत्र दो। अजमेर अगर जाऊँ तो दौसी के रास्ते जाना पड़ता है। दौसी में मासड़ (मौसा)जी का पत्र भी आया है। उन्होंने भी मिलने की अभिलाषा प्रकट की है। हाकिमसिंहजी की ओर से हाथ जोड़कर मत्था टेकना। आज लाला साहब का एक कारकुन (कारिन्दा) पूरा बाबा (लाला गुलाबराय) पूरा हो गया (मर गया) है।

—— ० ——

बैकुण्ठपुरी भी दोष रहित नहीं

संबोधन पूर्वोक्त, (८७७) ८ सितंबर, १८९९

आपका एक कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई। मैं तो आशा करता हूँ कि यहाँ रहने से आपको तंगी नहीं होगी। और मेरा यह भी निश्चय है कि किसी न किसी दोष से रहित तो यह लोक क्या, अपितु बैकुण्ठपुरी

* बड़े लालाजी से अभिप्राय यहाँ राय बहादुर रामशरणदास जी के [illegible] राय बहादुर [illegible] राम जी है।

का भी कोई मकान (स्थान) नहीं है। जहाँ आप होंगे, वहाँ संगी भला कहाँ। यह मकान मेरी समझ में तो बहुत उत्तम है। हाकिमसिंह की ओर से हाथ जोड़कर चरण वंदना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८०८) १० बजे रात, ८ सितंबर १८९५

लाला सोहनलाल ने यह पत्र दिया। उन्होंने मंजूर कर लिया है। और वापसी डाक में जवाब माँगा है। सो मैंने मंजूरी का जवाब इस वक्त भेज दिया है। कल प्रातः मिशन कालिज के प्रिन्सिपल साहब से मिलूँगा। अगर उनके कहने से सलाह बदल गई तो आपकी राय (सम्मति) से सियालकोट नामंजूरी की तार दे दूँगा। शायद परसों अगर मैंने आना हुआ तो आऊँगा। सियालकोट १६ सितंबर से पहले पहुँचना चाहिये। उस तारीख़ यह स्कूल खुलेगा। आप दया रखा करें। हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८०९) सियालकोट*, २० सितंबर, १८९५

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप दया रखा करें। जल्दी-जल्दी कृपापत्र से अनुगृहीत करते रहा करें। प्यारे ताराचंद का हाथ जोड़कर अति सत्कार व सम्मान से मत्था टेकना। शनिवार की प्रातः का आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी खुशी हुई।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८१०)   २२ सितंबर, १८९५

आपकी दया से बड़ा आनंद है। मैं आशा करता हूँ कि छुट्टियों में हाज़िर हूँगा। ताराचंद भी आयेगा।

—— o ——

* यहां से अप्रैल १८९६ तक सब पत्र प्रायः सियालकोट से भेजे गये हैं। इसलिए बार-बार 'सियालकोट' देना उचित नहीं समझा गया।

संबोधन पूर्वोक्त, (८११) (रात, २९ सितंबर, १८९५

कृपा करके दास के सब पाप व अपराध क्षमा फरमाने। आज रात को रावलपिंडी यहाँ आ पहुँचा। जब गुजरांवाले था तब मैं वहाँ भी गया था। और एक व्याख्यान गुजरांवाले सनातन धर्म सभा में भी देने का इत्तफाक हुआ था। आपके चरणों की तरफ़ चित्त रहता है। भगत हरभजरायजी आज गुजरांवाले मिले थे। गुसाईं जोधारामजी ने अपना बड़ा लड़का गोवर्धनदास मेरे साथ भेजा है। यहाँ इंट्रेंस में पढ़ा करेगा। आपने दया रखनी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१२) १ अक्तूबर, १८९५

दास सकुशल है। आप कृपा करके दास को याद रखा करें। आपकी सेहत (स्वास्थ्य) का बहुत ख्याल रहता है। आप जल्दी जल्दी अपने हालात से सूचित करवाते रहा करें। आशा है कि जल्दी अर्ज (भेंट) करूँगा। जब कुछ मिलेगा।

—— o ——

गुरु-इच्छा विरुद्ध कोई बात न करना

संबोधन पूर्वोक्त, (८१३) ३ अक्तूबर, १८९५

मैं आशा करता हूँ कि कल अर्ज (भेंट) कर सकूँगा। महाराजजी आप दया रखा करें। मैं अपनी इच्छा से तो कोई बात भी नहीं करता, यदि अपनी बिरादरी, कुल अथवा जाति के बुजुर्गों (वृद्ध पुरुषों) के सम्मान के विचार से अथवा किसी और वजह (प्रेरणा) के प्रभाव से मुझसे कोई अपराध हो गया हो, तो आप कृपापूर्वक क्षमा करें। साथ इसके सर्व प्रकार से आप ही के सेवक अधिक हो रहे हैं। दास की तो उलट (प्रतिकूल) काम करने की मजाल (ताकत) नहीं। आप यहाँ कब पधारेंगे?

—— o ——

तीर्थरामजी का सियालकोट में व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (८१४) ६ अक्तूबर, १८९५

आपके कृपापत्र मिले, बड़ा आनंद हुआ। आज यहाँ व्याख्यान हुआ था, लोग अत्यंत खुश हुए थे। आप यहाँ जल्दी तशरीफ़ ले आयें तो अच्छा हो। आपने दास के अपराधों को क्षमा फ़रमाना। छुट्टियों में आशा करता हूँ कि दीवाली को दो होंगी। कल गोवर्धनदास (गुसाईं जोधाराम का लड़का) यहाँ से चला गया है। अब शायद इम्तहान ईट्रेंस के समीप आये।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१५) ६ अक्तूबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैंने आपकी सेवा में अर्ज़ की थी कि मैं शायद दीवाली को लाहौर जाऊँ। मगर अब मालूम हुआ कि दीवाली को दो छुट्टियाँ इकट्ठी नहीं होनी। इसलिए आख़ीर (अंतिम) हफ़्ते को लाहौर जाने की सलाह करनी पड़ी है। क्योंकि तब शनिवार और रविवार की दो छुट्टियाँ होंगी। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आपका यहाँ आने का इरादा पढ़कर बड़ी खुशी हुई।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१६) ११ अक्तूबर, १८९५

आपने यहाँ आने का इरादा तो लिखा था, मगर तशरीफ़ नहीं लाये। क्या कारण? आपका दीवाली को अमृतसर जाने का मक़सद है कि नहीं। आपका चर्चा यहाँ बहुत किया जाता है। लोग बड़े खुश होते हैं।

——१० ——

तीर्थरामजी के पास आनेवाले सब खुदा बन गये

संबोधन पूर्वोक्त, (८१७) १८ अक्तूबर, १८९५

आपका पत्र कोई नहीं आया। आप दया रखा करें। आपकी दया से यहाँ आनेवाले सब लड़के खुदा (ईश्वर) बन गये हैं। मगर भजन भी किया करेंगे। आप दया रखा करें।

—— ० ——

तीर्थरामजी के व्याख्यानों में प्रारम्भ से ही प्रभाव

संबोधन पूर्वोक्त, (८१८) २१ अक्तूबर, १८९५

पंडित साहब के नौकर कर्मचन्द ने मुझे दस १०) रुपये रखने को दिये थे। और मेरी बड़ी भूल थी कि मैंने रख लिये। वह रुपये मेरे सन्दूक में से किसी ने चुरा लिये हैं। और मैंने उसे उधार लेकर भर दिये (दे दिये) हैं। अस्तु, कुछ शोक नहीं, परमात्मा ने अच्छा किया, उपदेश मिल गया। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ा आनन्द हुआ। कल उन्होंने (सनातनधर्म सभा के लोगों ने) मेरे व्याख्यान का विज्ञापन नहीं दिया था, पर आपकी कृपा से मेरे बोलते-बोलते सनातन धर्म मंदिर का मैदान मनुष्यों से बिलकुल भर गया था। डिप्टी साहब और बड़े-बड़े राज्याधिकारी (ओहदादार) भी थे। देश पर भी बोला था। पर लोगों के नेत्र अश्रुओं से भरे दिखाई देते थे। और तालियाँ भी बहुत बजी थीं। आपका दास शायद इस शुक्रवार रात की गाड़ी से लाहौर जायगा। आपने दया रखनी। छपे रजवजी के पहुँच गये हैं।

—— ०। ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१९) २१ अक्तूबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि इस शुक्रवार की रात को जो गाड़ी लाहौर जाती है, उसमें सवार होकर वहाँ जाऊँगा। यहाँ से यह गाड़ी १२ बजे चलती है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२०)　　　　२८ अक्तूबर, १८९५

मैं आज साय को अमृतसर अर्जी भेज देने का संकल्प रखता हूँ। जो परमात्मा की मरज़ी और आपकी मरज़ी है, हो जायगा। सुना है, कोई आदमी अभी वहाँ रखा नहीं गया।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२१)　　　　३० अक्तूबर, १८९५

अमृतसर अर्जी भेज दी है। आगे जो आपकी और परमात्मा की मरज़ी। आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२२)　　　　३१ अक्तूबर, १८९५

आपका एक कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। महाराजजी! मैंने आते ही एक पत्र लिखा था, मगर अब भाई भगवान सिंह से दर्यास्त करने पर मालूम हुआ कि उसे डाक में डालना याद नहीं रहा था। अगर वह पत्र मिल पड़ा, तो सेवा में रवाना किया जायगा। अपने दास पर हर तरह से खुश रहना।

—— o ——

घर पर प० गणेशदत्त शास्त्री गोस्वामी का आगमन

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२३)　　　　२ नवंबर, १८९५

कल अमृतसर से जवाब आया है कि वहाँ मेरी अर्जी पहुँचने से पहले अन्य मनुष्य रखा गया है। आज पंडित गणेशदत्त शास्त्री गोस्वामी संस्कृत-प्रोफ़ेसर मिशन कालिज लाहौर के यहाँ आये हुए हैं। मेरे मकान (स्थान) पर उतरे हैं। सभा में व्याख्यान देंगे। आप कृपा रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२४) ६ नवंबर, १८६५

आप जल्दी जल्दी अपनी कुशलता की सूचना देते रहा करें। आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए थे। बड़ा आनंद हुआ। आपकी दया है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२५) १० नवंबर, १८६५

आपका शुक्रवार का लिखा हुआ कृपापत्र प्राप्त हुआ था। बड़ी खुशी का कारण हुआ। मुझे शायद इस बार कार्ड लिखने में देर हो गई है। काम बहुत ज्यादा था। मुआफ़ फरमाना। आज कल छुट्टी है। एक लेक्चर अँग्रेज़ी में भी दिया था। अब एक और है। उर्दू के लेक्चर भी होते रहते हैं। भाई (गुरुदास साहब) यहाँ नहीं आये, न उनका पत्र ही आया।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२६) ११ नवंबर, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। मैं आशा करता हूँ कि जल्दी लाहौर आऊँगा। और आपके भी दर्शन करूँगा। उस ग्रंथ का नाम क्या है, जो आप आजकल पढ़ते हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२७) १५ नवंबर, १८६५

आज पं० रामरतनजी की मार्फ़त सरदार बघेलसिंह साहब के मकान में मैं आ गया हूँ। किराया मुआफ़ है। मकान पहले की अपेक्षा बहुत अच्छा है। आज भाई साहब यहाँ आ गये हैं। आप क्यों नहीं आये। आप भी उनके साथ चले आते। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२८) १८ नवंबर, १८९५

महाराजजी! जब का मैं इस मकान में आया हूँ, आपका एक कृपापत्र भी मुझे नहीं मिला। आप जल्दी-जल्दी दया करते रहा करें। आपकी कृपा से बड़ा आनंद है। यह मकान एकमंजिला ही है और पहले से खुला है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र मिला।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२९) २० नवंबर, १८९५

इस वक्त बहुत ही ज्यादा काम है, मगर बड़ा आनन्द है। आप कृपा रखा करें। भाई साहब अभी यहाँ ही हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३०) २२ नवंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं इस आखिरी हफ्ते का जो आठवें दिन को है, लाहौर जाऊँगा। और छाती पार आपके पास भी रहूँगा। आप कृपादृष्टि रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३१) २७ नवंबर, १८९५

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, जिनमें पुस्तकों की बाबत ज़िक्र (चर्चा) था। मैं आशा करता हूँ कि सब ले आऊँगा। आगे जो परमात्मा की मरज़ी। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३२) २ दिसंबर, १८९५

मैं यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गया हूँ। भगवानसिंह यहाँ नहीं हैं। शायद गाँव चला गया है। मैं आशा करता हूँ कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) करूँगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३३) ५ दिसंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं पूरी रजाई ही बनवाऊँगा। आप कृपा रखा करें। जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३४) ८ दिसंबर, १८९५

आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र से अनुगृहीत करते रहें। आपकी दया से बड़ा आनंद है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३५) ९ दिसंबर, १८९५

कल रावलपिंडी से वह व्यक्ति (सेवक) आया है, जिसको जब मैं पहलेपहल सियालकोट आया था तो भाई साहब ने मुझे भेजा था। उसके इतनी मुद्दत (काल) तक न आने का कारण यह था कि वह बाबाजी के साथ पेशावर से भी परे दूर को गया हुआ था। अभी भगवानसिंह के आने या रहने का कोई इंतजाम नहीं किया। आपकी बड़ी कृपा है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३६) ११ दिसंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। अस्तु, जो परमात्मा की मरज़ी। १५ तारीख़ तक अगर चोग़ा का बंदोबस्त न हुआ, तो मुझे लिखना। सियालकोट में भी चोग़ा तैयार हो सकता है। दर्याफ़्त किया है। यहाँ के एक दरज़ी ने पहले भी बनाये हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३७) १२ दिसंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। विशनदास ने मुरादी

घाते जाना है, आपको जरूर मिलेगा। आपने (अगर कष्ट न हो) तो उसके साथ ही वापस यहाँ पधारने की कृपा कर देनी। आकर भगवान सिंह के रखने या न रखने का भी बंदोबस्त कर जाना। और घोड़ा आदि का भी इंतजाम कर जाना। और यों दर्शन भी दे जाओगे। लगभग ग्यारह-बारह दिन बड़े दिनों की छुट्टियों में रह गये हैं।

दरूने-क़स्रे-दिल दारम यके शाहे कि गर शाहे।
ज़ि दिल बेरूँ चनद् खेमा ब बेहरोबर नमे गुञ्जद ॥

अर्थात्—मेरे हृदय भवन में ऐसा बादशाह रहता है कि जब वह दिल से बाहर होकर अपना डेरा डालने लगता है, तो पृथ्वी व समुद्र में भी वह समाने नहीं पाता, अर्थात् वह देश कालातीत होता है।

——o——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८३८)   १६ दिसंबर, १८६५

आजकल यहाँ एक बड़े उत्तम पंडितजी आये हुए हैं। उनका यहाँ व्याख्यान भी कराया था। एक और संत भी उनके साथ हैं। आप यहाँ तशरीफ नहीं लाये, अफ़सोस है। घोड़े का अभी तक कोई बंदोबस्त नहीं। पिरान यहाँ से गया तो है। आपको अभी मिला है कि नहीं। आपकी कृपा से बड़ा आनंद है।

——:o——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८३६)   १८ दिसंबर, १८६५

आपका कृपापत्र इस समय प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मगर मैंने अभी तक कोई घोड़ा बनने नहीं दिया। पिरान ने आपको ग़लती से कहा है। पिरान को यहाँ जल्दी भेज देना। क्योंकि भगवानसिंह आज यहाँ से अपनी मरज़ी से चला गया है। और अब मेरे पास कोई आदमी नहीं। लक्ष्मीचंद भी किसी प्रकार बीमार होने के कारण घर रहता है। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें।

फ़कर। प्याहर मबीं कि हाफ़िज़ रा।
सीना गंजीना-ए-मुहब्बते-ओस्त ॥

अर्थात्—यहाँ परमात्मा के नाम के ख़ज़ाने हैं। यद्यपि देखने में फ़क़ीर है।

—— ० ——

तीर्थरामजी का मिशन कालिज में प्रोफ़ेसर नियत होना

संबोधन पूर्वोक्त, (८४०) २१ दिसंबर, १८६५

आपके दो कृपापत्र मिले, बड़ी ख़ुशी हुई। मिशन अभी नहीं आया। ख़ैर (अस्तु), अब उसे भेजना भी न, क्योंकि तीन-चार दिन तक मैंने ख़ुद यहाँ आ जाना है। पंडित नानकचंदजी और पंडित रामधनजी यहाँ नहीं हैं, दौरे पर गये हुए हैं। घोड़ा अभी बनने नहीं दिया। लाहौर से आपकी कृपा और दया के कारण पत्र आया है कि मिशन कालिजवालों की समिति ने मुझे गणितशास्त्र के बड़े प्रोफ़ेसर की पदवी देना स्वीकार कर लिया है। और प्रिन्सिपल साहब ने मुझसे पूछ भेजा है कि यह मुझको स्वीकार है या नहीं। अप्रैल के अन्त से लेकर यहाँ काम करना है। पहले वर्ष वेतन १००) (एक सौ) रुपया, तत्पश्चात् अधिक। इस शुकराने (कृतज्ञता) में परमात्मा का भजन अधिक करना। और मेरी मंद मति में यह उचित है कि इस बात की चर्चा अभी सर्वसाधारण से न करना चाहिये। इस बात की स्वीकृति में पत्र का उत्तर मैं आज लाहौर लिखने लगा हूँ। महाराजजी! यदि कोई अपराध हो तो क्षमा करना, मैं पत्र तो नित्य भेजता रहा हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८४१) २२ दिसंबर, १८६५

आपका कृपापत्र इस समय एक प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। मैंने अभी घोड़ा के लिए अस्बाब नहीं ख़रीदा। जैसा आप फ़रमायेंगे,

वैसा ही करूँगा। मैं बुद्ध या वीरवार को यहाँ से चलूँगा। क्योंकि मेरे ख्याल में बुद्ध से छुट्टियाँ शुरू होती हैं।

—— ० ——

दूध मात्र आहार होने पर ३० मील का चक्कर लगाना

संबोधन पूर्वोक्त, (८४२) २२ दिसम्बर, १८९५

मैं शायद कल सोमवार ही यहाँ से रात की गाड़ी में चला आऊँ। मुझे आठ दिन अन्न (रोटी) खाये हो गये हैं। केवल दूध पीता हूँ। किन्तु आज पूरे तीस मील का चक्कर सैर (भ्रमण) की रीति से लगा आया हूँ, और जरा मालूम तक भी नहीं हुआ। आशा है कि चोगा (गौन) * यहाँ से भी मिल जायेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८४३) † दुपहर, १७ अप्रैल, १८९५

अभी तक रिजल्ट नहीं निकला। आज सायं को देखिये, शायद निकल आये। महाराजजी ! आप दया रक्षा करें। आप ही का आश्रय है।

—— ० ——

सन् १८९६ ई०

(इस वर्ष के आरम्भ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु साढ़े बाईस वर्ष के लगभग थी और इसी वर्ष मिशन कालिज में गणित शास्त्र के प्रोफ़ेसर के स्थान पर यह नियुक्त हुए थे।)

संबोधन पूर्वोक्त, (८४४) ८ जनवरी, १८९६

भगवानसिंह इसी जगह है। यह मेरे पास रहेगा। मैं शायद कल

---

* चोगा से तात्पर्य वह गौन है जिसको पहन कर उन्होंने विद्यार्थी बी० ए० या एम्० ए० की परीक्षा कॉन्वोकेशन हाल में जाकर लेते हैं।

† यह पत्र भूल से अपने स्थान नं० ७२४ पर देने से रह गया था। इसलिए अब इसी वर्ष के अंत में नं० ८४३ पर दे दिया गया है।

अर्पण (भेंट) करूँगा। मैं कल यहाँ आया। इस जगह सब चीज अपनी अपनी ठौर (स्थान) पर ठीक पाई। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्व क्र, (८३४) १२ जनवरी, १८९६

आपका कृपापत्र बिलकुल कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप जल्दी जल्दी अपना हाल लिखा करें। कृपा रखनी। दया रखनी। अपराध मुआफ़ फ़रमाने। मुझे आम-फ़ज़ बड़ा काम है।

—— ० ——

अपयश दिलानेवाले का संग-त्याग

संबोधन पूर्वोक्त, (८३६) १४ जनवरी, १८९६

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। आप जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचना देते रहा करें। लक्ष्मीचंद का आचरण ठीक नहीं है, इसलिए उसको अपने पास से निकाल देने का विचार करता हूँ। वह बदनामी दिलानेवाला पुरुष है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३७) १५ जनवरी, १८९६

कल एक पत्र मैंने लिखा था। वह मालूम हुआ कि ऐसी संदूकची में पड़ गया, जिससे डाक ली ही नहीं जाती। आपका केवल एक कृपापत्र आज तक मिला है। उसको पढ़कर बड़ी खुशी हुई। आप दास के अपराधों को मुआफ़ फ़रमा कर कृपादृष्टि रखा करें। लक्ष्मीचंद का आचरण खराब होने के कारण उसको अपने पास न रखने का विचार है।

—— ०: ——

अपने पास अच्छे विद्यार्थी रखने की प्रतिज्ञा

संबोधन पूर्वोक्त, (८३८) १८ जनवरी, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यन्त आनन्द हुआ। लक्ष्मीचंद अब

(अपने) घर रहता है। पढ़ने आया करेगा। मैं अपने पास अच्छे विद्यार्थियों को रक्खूँगा। आप कृपा करके यहाँ पधारिये।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८४६) २१ जनवरी, १८९६

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। आप जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचित करते रहा करें। मैं अत्यंत अफ़सोस करता हूँ कि आप की सेवा में यह पत्र पहुँचने में देर हो गई है। डाकख़ाना यहाँ से दूर है, और मेरे पास आज-कल कोई आदमी न था। और काम बहुत ही ज़्यादा था। इस वक़्त आपका कृपापत्र मिला है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८५०) २५ जनवरी, १८९६

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप कृपा करके जल्दी अपने हालात से सूचित करते रहा करें। काम बहुत रहता है, कई प्रकार का। आप दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८५१) ३१ जनवरी, १८९६

आपने मेरे सब अपराध मुआफ़ फ़रमाने, यद्यपि बाहर से पत्र लिखने में कभी देर कर दूँ। मगर दिल से तो सर्वदा आपके चरणों में हूँ।

दयाग्राद तो अम जानों व मी दानम कि मी दानी,
कि हम नादीदा मी दानी व हम ननविश्ता मी ख़्वानी।

भावार्थ—ऐ प्यारे! मैं जानता हूँ कि तुझे यह पता है कि मैं आपका प्रेमी हूँ और तू बिना मुझे देखे मेरे दिल को जान लेता है, और बिना पत्र लिखे मेरे हृदय को पढ़ लेता है।

भगवानसिंह एक और व्यक्ति के साथ किसी गाँव में एक साधु से

अपने रोग की दवा पूछने गया था। कल आ गया है। नुसखा लिखवा लाया है। सैरोकेवाले प्रभुदयाल के लड़के का विवाह है। उन्होंने वज़ीराबाद बरात ब्याह के विवाह करने जाना है। मुझे उन्होंने पत्र भी लिखे हैं और बुला भी भेजा है। मेरा इरादा है कि वहाँ आज शुक्रवार जाऊँ और सोमवार वहाँ से चला आऊँ। जो नुसखा भगवानसिंह के लिए तजवीज़ करके आप लिखेंगे, वह उसको बनवा दिया जायगा। और कोई नहीं। लछमीचंद अब बराबर पढ़ने आता है। आपकी दया से बड़ा आनंद है।

संबोधन पूर्वोक्त, (८५२) * ३ फ़रवरी, १८६६

मैं राज़ी हूँ। आज जंज (बरात) रुख़सत हो जानी है। अभी इस बात की कुछ सलाह नहीं हुई कि मैं किस दिन आपके पास आऊँगा, और कब लाहौर जाऊँगा। आपने दया रखनी।

गुजरात (पंजाब) में रहना

संबोधन पूर्वोक्त, (८५३) ५ फ़रवरी, १८६६

आपका एक कृपापत्र आज मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मैं आज वज़ीराबाद से यहाँ आया हूँ। स्कूल में छुट्टी है। वज़ीराबाद से पत्र नहीं लिख सका। आपने दया करके मुआफ़ फ़रमाना। गुजरात भी एक रात गया था, भगत († हरभजराय) जी नहीं मिले। अलबत्ता गुजरात और

---

* यह पत्र बिना डाक की मोहर के था, पर मज़मून पढ़ने से पता लगा कि इसका मेल यहाँ खाता है इसलिए इसे यहाँ दे दिया गया है।

† भगत हरभजराय टंडन वासी गुजरात (पंजाब) के निवासी थे। वहाँ स्टेशन ब्रेकर थे पर चित्त से बड़े शान्त, शुद्ध और धार्मिक थे। गोस्वामीजी के साथ वह कपालराज हरिद्वार और अमरनाथ यात्रा में भी गये थे।

वजीराबाद के एंट्रेंस क्लास में पढ़नेवाले विद्यार्थियों ने बहुत लाभ उठाया, और अत्यंत प्रसन्न हुए। अन्य भी कई महापुरुषों से मुलाक़ात हुई। आपके पत्र में स्वामीजी का हाल पढ़कर मेरा भी (चित्त) कर आया है कि लाहौर आकर स्वामीजी के दर्शन भी करूँ और अन्य लोगों को भी मिल आऊँ। आप भी साथ चलें। उत्तर जल्दी लिखना और किस दिन चलें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(८४२)　　　७ फ़रवरी, १८९६

आपका कृपापत्र इस समय प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक तीन चार दिन तक आपकी सेवा में अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा। इस समय तो मेरे पास केवल दो २) रुपये ही मौजूद हैं। आपने कोई भ्रम न करना। ऐसा इत्तफ़ाक़ हो गया है। मैं आपका दीन सेवक हूँ। आपने कृपादृष्टि रखनी। अपराध मुआफ़ फ़रमाने।

—— ० ——

गुसाईंजी का चार घंटे तक व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(८४४)　　　९ फ़रवरी, १८९६

आज मैं बड़सल * गया था। वह ग्राम मुरालीवाले † से कुछ बड़ा है, और केवल क्षत्री लोगों की बस्ती है। घर सब पक्के हैं। घरों की सभा में लाहौर की साधारण सभा से भी अधिक रौनक़ (शोभा) पाई। दो बजे से कुछ पीछे से लेकर छः बजे के लगभग तक मेरा व्याख्यान होता रहा। लोग जम्मू की अपेक्षा से भी अधिक प्रसन्न हुए। आप कृपा रखा करें। कुछ बरातों के लोग भी आये हुए थे।

—— ० ——

* बड़सल सियालकोट ज़िला में एक क़स्बा (कस्बा) है।

† गुसाईं तीर्थरामजी की जन्मभूमि है।

संबोधन पूर्वोक्त, (८४६) ११ फ़रवरी, १८९९

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यन्त आनन्द हुआ। लाहौर जाने का इरादा (संकल्प) तो था और अब भी है। मौक़ा मिला, तो शायद इसी हफ़्ता (शनिवार) को ही आ जाऊँ। मगर पक्की रीति से नहीं कह सकता। आपने कृपा रखनी। आपकी दया की ज़रूरत है।

—— ० ——

पूरे दो घंटे निर्विकल्प समाधि

संबोधन पूर्वोक्त, (८४७) १४ फ़रवरी, १८९९

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था, अत्यंत आनंद हुआ। शायद इस बार मुझे पत्र लिखने में देरी हो गई है। मुआफ़ फ़रमाना। आपकी कृपा से पूर्ण आनंद (निजानंद) रहता है। कल यहाँ सत्संग था। पूरे दो घंटे तो निर्विकल्प शांतात्मा होकर चुपचाप सब समाधि में बैठे रहे। फिर दो घंटे मैं कुछ कहता रहा। आप कृपादृष्टि रखा करें। सब आपका ही चहुग (चमत्कार) है। मैं लाहौर आना तो चाहता था, मगर कल शनिवार को यहाँ आने से किसी साहब को नहीं मिल सकता, इसलिए इरादा मुल्तवी (संकल्प स्थगित) रखता हूँ। पंडित रामधनजी का नमस्कार।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८४८) १७ फ़रवरी, १८९९

आपका कृपाप्रार्थी हूँ। पत्र में शायद एक दिन की देरी हो गई है। मगर चित्त से तो सदैव आपके चरणों में हूँ। आपकी दया से चित्त बड़े आनंद में है। यद्यपि ज़रा ज़रा (किंचित्) रेशा (जुकाम) ने तंग किया हुआ है।

अगर बज़ ख़िदमतत दूरं चि दिल शर्मिंदगी दारम्।
पज़े क़ुमरी सिफ़त हस्तम कि तौक़ेबंदगी दारम्॥

अर्थात्—मगर आपकी सेवा से वंचित होता हूँ, तो चित्त में लज्जा सी आती है। मगर मैं बुलबुल के गुणवाला हूँ कि सेवा का पट्टा गले में रखता हूँ।

—— • ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८५६)   १६ फ़रवरी, १८६६

मुझे अब पहले की अपेक्षा आराम है। मगर बिलकुल सेहत (नीरोगता) नहीं आई। आप दया रखा करें। मैं होलियों में लाहौर और आपकी सेवा में उपस्थित होने की आशा करता हूँ।

—— •। ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८६०)   २२ फ़रवरी, १८६६

मैं बैठके गया हुआ था। मेरे लालाजी (रामचंद्र साहब) * अत्यत बीमार हैं। शायद आज या कल गुज़र गये (स्वर्गवास) हो गये होंगे। उन्होंने बुला भेजा था। देखिये, क्या होता है। एक रात मैं वहाँ रहा था। मैं स्वयं भी अभी बिलकुल तंदुरुस्त नहीं हुआ। आप कृपापत्र जल्दी-जल्दी भेजते रहा करें, और दया रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८६१)   २५ फ़रवरी, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यत आनंद हुआ। मैं अब बिलकुल राज़ी हूँ। हमें तीन छुट्टियाँ होनी हैं। शुक्रवार, शनिवार और रविवार की। इनमें बैठके भी जाना है, लाला रामचंद्रजी की सुरत (ख़बर) लेने। आप के चरणों में भी उपस्थित होना है। और हो सके, तो लाहौर और मुरारी वाला भी थोड़ा थोड़ा जाने का संकल्प है। आगे जैसी आप आज्ञा देंगे किया जायगा। आप दास पर दया रखा करें।

—— ० ——

---

* ला० रामचंद्र [illegible] के ससुर थे।

संबोधन पूर्वोक्त, (८६२) २ मार्च, १८९६

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। आप दया रखा करें। इस शनिवार का मेरा इसका आने का संकल्प है। आप कब तशरीफ़ लायेंगे?

बोडिंग का अध्यक्ष (मोहतमिम) होना

संबोधन पूर्वोक्त, (८६३) ५ मार्च, १८९६

अभी कुछ मिला नहीं, आशा है कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) करूँगा। हमारे स्कूल के बोर्डिङ्ग हौस का अध्यक्ष (सुपरिन्टेंडेंट) पहले एक मुसलमान अध्यापक था। पिछले दिनों उसने यहाँ एक अत्यंत अनुचित चेष्टा की (अर्थात् *हिन्दू जिस प्राणी की शपथ खाते हैं, उस का मास बोर्डिङ्ग में मँगवाया*)। इस बात की ख़बर हो गई, सो उस को निकाल दिया गया है। अब बोर्डिङ्ग का मुख्याधिकारी (सुपरिन्टेंडेंट) मेरे से अतिरिक्त और कोई हिन्दू अध्यापक नहीं बन सकता। इसलिये मुझ को प्रबंध सँभालना पड़ा है। आज वहाँ (बोर्डिंग) में चले जाना होगा। जो जगह मैंने यहाँ ली है, वह इस स्थान से बहुत अच्छी है। और आप को वहाँ बहुत सुख होगा। एकान्त भी है। आप कब पधारेंगे? पंडित रामधनजी की तरफ से बहुत-बहुत नमस्कार।

संबोधन पूर्वोक्त, (८६४) ७ मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र एक आज मिला। अत्यंत आनंद हुआ। आप कल ज़रूर तशरीफ़ ले आयें। आज मैं अर्ज़ (भेंट) करने लगा था। किंतु अब मैंने कहा कि इन्होंने स्वयं यहाँ पधारना है। इस बोर्डिंग में परसों रात का एक युवक ब्राह्मण इंट्रेंस का विद्यार्थी अति सुंदर, तहसीलदार का दामाद स्वर्गवास हो गया है, अफ़सोस है।

सयोधन पूर्वोक्त, (८६४) १४ मार्च, १८९६

आपने अपने स्वास्थ्य के विषय बहुत जल्दी लिखना। अगर कष्ट न हो तो वह उशाया जो आपके मकान में है, वह ज़रूर ही चाचाजीको भेज देना। आगे ही बड़ी देर हो गई है। संकोच न करना। उनका पता यह है—

"इलाक़ा स्वात, मुक़ाम मलाकंड। केसरमल दुकानदार को पहुँचकर गुसाईं हीरानंद या गुरुदास को मिले।" उशाया चाहे नया ख़रीदना पड़े, भेज ज़रूर देना। डाकख़ाना से पूछकर उस पर टिकट लगवा देना। यह कष्ट देता हूँ। मुआफ़ फ़रमाना।

—— ० ——

जगत् के सब पदार्थ खोये जानेवाले हैं

सयाधन पूर्वोक्त, (८६६) १६ मार्च, १८९६

आपके दो कार्ड प्राप्त हुए। आपकी धोती वाशिंग हाउस में कहीं नहीं मिली। पता नहीं कहाँ खोई गयी। इतना मैं कह सकता हूँ कि जिस किसी ने उस धोती को गँवाया है, गलती से गँवाया है, जान बूझकर अथवा बुरे चित्त से किसी ने यह काम नहीं किया। अच्छा, परमेश्वर और दे देगा। जगत् की सब वस्तु एक दिन खोई जानी हैं। आप दया रखा करें। उशाया अगर अभी तक नहीं भेजा, तो अब भेजना। मैं स्वयं भेज दूँगा। पर सूचना दे देना।

—— ० ——

संयाधन पूर्वोक्त, (८७०) १८ मार्च १८९६

मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ कि शायद हम यार मुझसे पत्र भेजने में देर हो गए हैं। आपने मुआफ़ फ़रमाना। दया रखनी।

आपने उशाया भेज दिया है, बड़ा अच्छा काम किया। लेकिन मैं ख़याल करता हूँ कि जिस पता पर उन्हें भेजा है, शायद उस पते पर उन्हें न मिले। आपने ग़ुलाम पर दया रखनी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१८) २० मार्च, १८६९

सियालकोट के लड़के जो आज-कल गुजरात इम्तहान देने गये हुए हैं, उन्होंने मुझे बुला भेजा था किंचित् उत्साह के लिए। कल मैं वहाँ गया था। आज वापस आ गया हूँ। गुजरात से रियाज़ी (गणित) के परचे मैं साथ ले आया हूँ। आप दया रखा करें।

—— ० ——

गुसांईजी की अत्यन्त नम्रशीलता

संबोधन पूर्वोक्त, (८२१) १० बजे रात, २१ मार्च, १८६९

आपका खफ़गी (रोष) का पत्र मिला, चित्त को बड़ा ही रंज (खेद) हुआ। महाराजजी ! मेरे अपराधों को मुआफ़ फ़रमायें। मैं बड़ा नालायक़ (अयोग्य) हूँ। आज-कल मेरी शारीरिक सेहत (स्वास्थ्य) में कुछ विकार है। क़ब्ज़ की शिकायत है, अर्थात् मलावरोध रहता है। और सिर भी ठीक अवस्था में नहीं। शायद कोई सख़्त शारीरिक बीमारी (रोग) न आ घेरे। उधर से आप ख़फ़ा (रुष्ट) हो गये हैं। मैं तंगी की दशा में हूँ। अगर मुझसे अपराध हो गये हैं, तो मैं निश्चय दिलाता हूँ कि उनका कारण केवल यही है कि मेरी शारीरिक दशा (स्वास्थ्य) ठीक नहीं। आप दया करके मुआफ़ फ़रमायें। यद्यपि बाहर से पत्र भेजने में मैं कभी चूक भी जाऊँ, तथापि चित्त से तो मैं सर्वदा आपके चरणों में हूँ।

हमाख़ाहे-तो अम जानों व मी दानम कि मी दानी।
कि हम नानविश्ता मी ख्वानी व हम नादीदा मी दानी॥

भावार्थ—ऐ प्राणाधार ! मैं तेरा प्रेमाकांक्षी हूँ और जानता हूँ कि तुझे यह पता है (कि मैं तेरा प्रेमाकांक्षी हूँ), और बिना पत्र लिखे तू मेरे हृदय का पढ़ लेता है, और बिना मुख देखे तू मेरे अन्तःकरण को जान लेता है।

आज मैंने थोड़ी सी सरना (सना) खाई है। शायद इससे कुछ

आराम आ जाये। अब मैं इंट्रेंस के परचे देखने आरम्भ करने लगा हूँ। आपने कृपादृष्टि से सब कार्य भले प्रकार से शीघ्र सपूर्ण करा देना। जैसी आप आज्ञा देंगे, वैसा वैसाखी मेले को जाने के विषय में किया जायगा।

जो अपराध इस दीन सेवक से हुआ है, उससे कृपया बहुत शीघ्र सूचना दें, ताकि भविष्य में एहत्यात (सावधानी) की जाये। इस अपराधी के अवगुणों को चित्त में न रखना। न पता, इस जगत् में कितने दिन और रहना है ताकि इस हसरत (शोक) को लेकर शरीर न त्यागूँ।

—:o—

संशोधन पूर्वोक्त, (८७०) २१ मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप जल्दी जल्दी दया किया करें। दो हजार के लगभग परचा (उत्तर-पत्र) देखनेवाला हूँ। आप दयादृष्टि रखें।

—o—

संशोधन पूर्वोक्त, (८७१) २६ मार्च, १८९६

दास कुशल पूर्वक है। आप अपनी कुशलता (स्वास्थ्यादि) का हाल लिखें, काम बहुत है। कल शुक्रवार इन्सपेक्टर साहब हमारे स्कूल की इंट्रेंस कक्षा का इम्तहान लेंगे।

—o—

संशोधन पूर्वोक्त, (८७२) २८ मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है? आप जल्दी जल्दी दया किया करें। दास का चरणों की ओर ध्यान है।

—o:—

शारीरिक आरोग्यता की आवश्यकता

संशोधन पूर्वोक्त, (८७३) ३० मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र मिला, बड़ा आनन्द हुआ। शारीरिक महत्व

(स्वास्थ्य) या नीरोगता नि सन्देह आवश्यक वस्तु है। इसके अच्छा होने से मन भी अच्छा रहता है। यहाँ एक जलसा (उत्सव) हुआ था जिसमें बाहर के सन्त, ब्राह्मण भी बुलाये गये थे। मगर उपदेशक मैं ही था। चार घंटे मेरा व्याख्यान होता रहा। आपकी कृपा से लोग बड़े प्रसन्न हुए। नगर के धनाढ्य लोग भी लगभग सब उपस्थित थे।

संबोधन पूर्वोक्त, (८७४) १ अप्रैल, १८९६

पैरोके समस्त सम्बन्धियों का इकट्ठ (अमाव) था, लालाजी की माई के पूरा (स्वर्गवास) हो जाने के कारण। लगभग चार सौ आदमी के एकत्र थे। मैं भी गया था। कल गया था, आज आ गया हूँ। लोग अभी वहीं हैं। भगवानसिंह आपकी सेवा में आया है। उसकी प्रार्थना सुन लेनी। और जो आपकी मरजी हो करनी। मगर दारोगा साहब की और मेरी राय (सम्मति) में आदमी बिल्कुल निर्दोष है। यद्यपि हमारी बुद्धि बहुत ही तुच्छ है। दिल उसका साफ है, यद्यपि बुद्धि बहुत मोटी है। आपने मेरे अपराध मुआफ फरमाने और दया रखनी।

संबोधन पूर्वोक्त, (८७५) ५ अप्रैल, १८९६

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनन्द हुआ। अगर बैसाखी तक पर्चे खतम हो गये तो कहीं जरूर जाऊँगा, जहाँ आपकी मरजी हुई। अगर न हुए, तो शायद यहीं रहूँ। जो परमेश्वर की मरजी होगा, हो जायगा।

संबोधन पूर्वोक्त, (८७६) ६ अप्रैल, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। दोनों पंडित साहब राजी हैं, वह पिंडदादनखाँवाले भगतजी भी राजी हैं। उनकी तरफ से

मत्था टेकना। मैं कल अर्ज (भेंट) करूँगा। अब स्कूल में कक्षाबंदी हो गई है। मुझे काम बहुत बढ़ गया है। बोर्डिंग में लड़कों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है। निर्सन्देह चित्त की एकाग्रता में पूर्ण आनंद है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८७७)　　　　१० अप्रैल, १८९६

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। बड़ा आनंद हुआ। पत्र लिखने में देर इसवास्ते हो गई है कि मैं किंचित् बीमार था। कुछ पेट में दोष (विकार) था और कुछ दाई आँख की ऊपर की तरफ एक फुंसी थी, जिससे तबीअत (चित्त) में व्याकुलता थी। इस समय दोनों को आराम मालूम होता है। भगवानसिंह जिस दिन आपसे रुखसत हुआ था उससे अगले दिन बेचारह कुछ रास्ता पैदल चलकर और कुछ इक्के पर चलकर यहाँ पहुँच गया था। आपने लाहौर की बाबत जैसा फरमाया है, वैसा किया जायगा। पर्चे एक चौथाई रहते हैं।

—— ० ——

संबोधन पर्वोक्त,　　　　(८७८)　　　　१२ अप्रैल, १८९६

कल बैसाखी का दिन बीत गया है। परमेश्वर के भजन में बड़ आनंद के साथ बीता है। अब मैं राजी हूँ। आप दया रखा करें।

—— ० ——

तपोवन के दर्शन का संकल्प

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८७९)　　　　।१२ अप्रैल, १८९६

आपकी दया से पर्चे आज समाप्त हो गये। अब यदि आपकी आज्ञा हो तो तपोवन के दर्शन के संकल्प से मैं यहाँ से चला आऊँ। वहाँ से वापस आकर लाहौर चले आयेंगे। लाहौर से मंजूरी आ गयी है। प्रथम मई मास तक वहाँ चले जाना है।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (८८०) १५ अप्रैल, १८९६

महाराजजी ! मैंने एक पत्र आपकी सेवा में भेजा हुआ है, जिसमें पूछा था कि मुझे अब क्या आज्ञा है। क्या इस नौकरी से चला आऊँ कि इकट्ठे हरद्वार तपोवन की तरफ सैर दर्शन परशन कर आयें ? मगर हरभजरायजी को भी बुलायें या किस तरह करें। अयोध्यादास की तरफ लिखें या न लिखें। आपने कोई उत्तर नहीं दिया। परचों का काम खतम हो गया हुआ है। अगर आप उचित समझें, तो स्वयं यहाँ आने की कृपा करें। मगर जल्दी।

—:o:—

संशोधन पूर्वोक्त, (८८१) २१ अप्रैल, १८९६

मुझे छुट्टी मिल गई है। सोमवार दो बजे की गाड़ी से मैं यहाँ से चलूँगा। और सीधा लाहौर चलूँगा। असबाब भी साथ होगा। आप दया रखा करें। आप मुझसे पहले जायँगे, या साथ ही गाड़ी में ?

—o—

संशोधन पूर्वोक्त, (८८२) लाहौर, १० अप्रैल, १८९६

मैं यहाँ सुसराल पहुँच गया हूँ। आज रोटी मकान पर तैयार हुई थी। कल लड़कों को वैदिक* स्कूल में प्रविष्ट करा देने की मरज़ी है, क्योंकि यहाँ शास्त्री पढ़ाने का प्रबंध अत्यंत उत्तम है। उस स्कूलवाले लाला देवीदयाल साहब बी० ए० आज मेरे मकान बड़ी देर बैठे रहे। आप दया रखा करें। बड़ी जल्दी पत्र लिखा करें। आज मैं कालिज गया था। कल यहाँ काम शुरू करना है।

—o—

* वैदिक स्कूल से अभिप्राय आर्य-समाज के० डी० बी० कालिज के स्कूल से है।

बी०-ए० के सब विद्यार्थियों का गणित लेना

संबोधन पूर्वोक्त,   (८८३)   लाहौर *, २ मई, १८६६

आपका कोई कृपापत्र नहीं आया। आप दया रखा करें, ऐंट्रैंस का रिज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। बी० ए० श्रेणी के जितने विद्यार्थी हमारे कॉलिज में प्रविष्ट हुए हैं, सबने गणित लिया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८८४)   ५ मई, १८६६

आप कृपादृष्टि रखा करें। आज ऐंट्रैंस का रिज़ल्ट निकला है। भीड़ बड़ी थी। मकान की कोठड़ी यह नहीं खोल देता। और नक्शे का किराया भी हमारे ही ज़िम्मे डालता है। अभी तक तो और कोई मकान देखा नहीं। आगे जैसी आप आज्ञा देंगे, किया जायेगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८८५)   ६ मई, १८६६

आपका एक कृपापत्र भी प्राप्त नहीं हुआ। इस पत्र के देखते ही आप कृपापत्र से कृतार्थ कीजिये। आप यहाँ तशरीफ़ कब लायेंगे? मदरसा अभी नहीं खुला।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८८६)   ८ मई, १८६६

मैंने कई पत्र भेजे हैं, आपकी ओर से एक भी नहीं पहुँचा। आज लछमणदास की ज़ुबानी मालूम हुआ कि आपने भी भेजे हैं। मकान का पता शायद आप ग़लत लिखते होंगे। पता यह है —"लाहौर, गुमटी बाज़ार, गली चौधरी हरजसराय, मकान पैण्डोदास पर तीर्थराम को मिले।"

—— ० ——

* इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि गुसाईंजी अब लाहौर रंगलिश कॉलेज में गणित शास्त्र के प्रोफेसर की पदवी पर नियत हो गये हैं। और आगे के सर्व पत्र प्रायः लाहौर से हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (८८७) ९ मई, १८९९

आपके तीन पत्र आज कालिज में मिले, जो कालिज के पते पर लिखे हुए थे। टिकट के दो पैसे देने पड़े। बड़ा आनंद हुआ। मकान फिलहाल (अभी तो) यही रखेंगे। पता —"लाहौर, गुमटी बाज़ार, गली हरजसराय जौहरी, मकान वैष्णोदास, तीर्थराम को मिले।" आज पिंडदादनखाँवाले कृष्णचंद का पत्र भी आया था। अपने पुत्र की बाबत लिखता है। जैसा फ़रमाआगे किया जायगा। अब कृपा हो तशरीफ़ ले आवें। और आनंद है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८८८) ११ मई, १८९९

आपका एक कृपापत्र कल और एक आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। आप अब जल्दी तशरीफ़ ले आयें। नलका अभी नहीं खुला। भूआ जी (फूफी) आँखें बनवाना चाहती हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (८८९)* ११ मई, १८९९

कल कृष्णचंद और उसका लड़का यहाँ आ गये थे। रोटी अपने खर्च से खाते हैं। आपके दर्शन हुए देर हो गई है। यहाँ भी आज-कल काम का ज़ोर है। दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (८९०) १८ मई, १८९९

अभी नलका नहीं खुला। और वह अरज़ लिखवाने भी नहीं आया। इस बार आपको लाहौर में तकलीफ़ हुई है। मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ। आपने मेरे अपराध मुआफ़ फ़रमाने। और जल्दी तशरीफ़ लानी। चाचाजी आशा है कि आज मुरारीवाला आ गये होंगे। किरायानामा लिखवाकर ले गया है।

—— ० ——

* यह पत्र भेजा डाकखाने की माहर ९ का पर इसका मज़मून यहाँ मेल खाता देखकर इस पत्र। न० ८८६ पर द दिया गया है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८६१)　　२१ मई, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। नलका अभी नहीं खुला। देखिये कब खुलता है। चाचाजी मुरारीवाले आ गये हुए हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८६२)　　२२ मई, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनद हुआ। नलका आशा है कि खुल जायगा। किरायानामा लगभग उसी तरह से लिखा है जैसा कि मसौदा बनाया गया था। लक्ष्मीचद मियालकोट से यहाँ पढ़ने आया है। सबसे ऊपर की मंजिल में रहा है। कालिज अभी दाखिल नहीं हुआ।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८६३)　　२४ मई, १८६६

नलका तो खुल गया, बड़ा आनद हुआ। लेकिन लक्ष्मीचंद के यहाँ होने से कल्पना है। शायद उसे जबाब देना पड़े। यह लड़कों के लिए बुरा नमूना सामने है। आप दया रक्षा करें।

—— o ——

साढ़े तीन सौ रुपयों का तत्काल खपा देना

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८६४)　　२७ मई, १८६६

आपका कृपापत्र मिला, बड़ा आनंद हुआ। लक्ष्मीचंद स्वयं ही यहाँ से बोर्डिंग होम में चला गया है। पंडित दीनदयालजी कश्मीर गये हुए हैं। विश्वविद्यालय से साढ़े तीन सौ रुपये ३५०) मिले थे। ऋण देने-वालों को भेज दिये हैं। मासिक भाड़ा, मास भर के लिये आटा, घर के लिये बर्तन, चारपाइयाँ और अल्मारी खरीद ली है। दूध का हिसाब खतम कर दिया है। अब केवल एक रुपया देना रहा है। इन रुपयों से पूर्वोक्त कार्यों से अतिरिक्त और कुछ कार्य नहीं हो सका। आपने खाद्य ( ) होना, आपको जिस बात की जरूरत हो, वह अब भी अच्छी तरह से

पूरी हो सकती है। पुस्तकें भी कुछ ली हैं। आपकी बड़ी कृपा हुई है। आपने दया रखनी।

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वोक्त, (८९५) १० मई, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आप दया रखा करें। चाचाजी शायद वैरोके से वापस होकर यहाँ आवेंगे। आप कब तशरीफ लावेंगे। मनलाल आपको मिला ही होगा।

—— ०: ——

चाचाजी का रोष

संबोधन पूर्वोक्त, (८९६) ११ मई, १८९६

चाचाजी मुझ पर अत्यन्त खफा (रुष्ट) हैं और विशेष करके इस बात पर कि मैं बरखाला को अपने साथ ले आया हूँ। शायद दो तीन दिन तक यहाँ आयें। पर कुछ पक्का पता नहीं। आपने दया रखनी।

—— ०: ——

सम्बोधन पूर्वोक्त, (८९७) १ जून, १८९६

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। बड़ा आनंद हुआ। महाराजजी! आपको जिस चीज की जरूरत हो, या जो कुछ आप चाहते हों वह आप इस दास को आदेश करें, हो जायगा। सब कुछ आपका ही है। लाला अयोध्यादास अब लाहौर ही में रहेगा। यहाँ आया हुआ है। उसका मत्था टेकना। अगर चाचाजी शनिवार तक यहाँ न आये, तो मैं स्वयं शनिवार को यहाँ लाने के लिए जाऊँगा।

—— ० ——

तीर्थरामजी का तीव्र त्याग

संबोधन पूर्वोक्त, (८९८) ४ जून, १८९६

आपका एक कृपापत्र प्राप्त मिला और एक फार्म मिला था। मैं तो

बिलकुल ही आपका हूँ। किसी वस्तु को अपना नहीं समझा हुआ। सांसारिक धन को एकत्र करना खुशी का कारण नहीं समझा हुआ। न गहना (भूषण) बनाने का और न पदार्थों के उपार्जन करने का खयाल है। आपकी कृपा से वृक्ष की छाया अगर घर के बदले, भस्म वस्त्रों के बदले, भूमि शय्या के बदले और भिक्षान्न खाने के लिये यदि मिल जाये, तो भी यहां आनंद माना हुआ है। किस धन के लिये मैं आपको कष्ट कर दूँ ? यदि भिक्षुओं की तरह रहने की मुझे आज्ञा दो, तो मैं तय्यार हूँ सब कुछ छोड़कर साधुओं के समान रहने को। कालिज में काम भी करता रहूँगा, जो कुछ यहाँ मिले, जिस तरह आपका चित्त चाहे, वर्ते लिया करना। हमारे घर भी जो उचित समझें दे दिया करना। यह दीन सेवक तो केवल काम करने और परमात्मा को चित्त में धारण रखने से यह सुख पाता है कि जो किसी बाह्य विषय सुख अथवा आडम्बर और ठाठ बाठ की किञ्चित् भी आवश्यकता नहीं रखता। मुझे तो जो ईश्वर निमित्त काम करने से सुख होता है वही काफ़ी वेतन है। मेरा वेतन जाने और आप जानें। मेरा आत्मा तो इन चीज़ों से न बना है, न बढ़ता है। मेरा आनन्दस्वरूप है। यह सब आपकी कृपा का फल है। जब आप पधारेंगे, विस्तारपूर्वक कथन करूँगा। कल के चाचाजी (पिताजी) यहाँ पधारे हुए हैं, सो मैं कल शनिवार को आपके चरण कमल स्पर्श नहीं कर सकूँगा। जो आपका मनशा (विचार) हो मुझे स्पष्ट लिख दिया करो।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८६६)　　८ जून, १८६६

कृपापत्र आपका प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आप दास पर कृपा रखा करें। चाचाजी कल तशरीफ़ ले गये हैं। आपकी दया से आनंद है। आप कृपादृष्टि रखा करें।

—— ० ——

सर्वाधन पूर्वोक्त, (९००) [६ जून, १८९९

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आपकी दया से सदा आनंद है। हर हालत में चैन (सुख) है। चाचाजी ज्यादा खफ्रा (रुष्ट) नहीं हुए।

शरीर से बाहर स्थिति

सर्वाधन पूर्वोक्त, (९०१) ११ जून, १८९९

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, बड़ा आनन्द हुआ। चाचाजी बहुत ही खफ़ा (रुष्ट) नहीं हुए। और होते क्योंकर ? मैं तो शरीर से बाहर स्थिति रखता था। परन्तु पचास रुपये जो मेरे पास बचे थे, वह उनकी सेवा में भेंट किये गये। अब मैं उधार लेकर काम चला रहा हूँ। और आनन्द हूँ। अयोध्यादास लाला गोविंदराम वकील के पास रहता है। मुझे केवल दो दिन मिला है। और रघुनाथ अपने भाँजे को यहाँ पढ़ने के लिए प्रतिदिन भेजा करता है।

जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य्यजी * मुझे अपने साथ एक दिन के लिये जम्मू ले जाना चाहते हैं। उनको जम्मू के राजा ने बुला भेजा है। उनका प्रस्थान कल शुक्रवार सायंकाल को यहाँ से होगा। परसों शनिवार को वहाँ रेल के रास्ते से पहुँच जायेंगे। उनके साथ राजा हरवंशसिंह का

---

* जगद्गुरु श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजी से अभिप्राय द्वारकामठ (शारदापीठ) के परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी राजराजेश्वर तीर्थजी हैं जो उन दिनों देशाटन करते करते लाहौर पधारे थे और इनके सिंहासन के दरमियान में भी गोस्वामी (मराम) अलग थे। इनही से गुसाईं तीर्थरामजी को संन्यास धारण करने की आज्ञा इन शब्दों में मिली थी कि "जब आत्मानुभव में तुम पूर्ण मग्न हो जाओ तो स्वयं विद्वत् संन्यास ले लेना।" जिस आज्ञानुसार गुसाईंजी ने उस अवस्था को प्राप्त होने पर टेहरी के समीप गंगातट पर संन्यास ले लिया, और उनको अपना परम गुरु मानकर अपने नाम के पीछे तीर्थ शब्द लगा लिया जिससे रामतीर्थ नाम प्रसिद्ध हुआ।

वज़ीर, पं० दीनदयालजी और लाहौर के कुछ एक धनाढ्य पुरुष होंगे। मुझे भी ले जाना चाहते हैं, केवल महाराजा जम्मू से मेल कराने के लिये। मैंने अभी कोई पक्का संकल्प नहीं किया। जैसे आपकी भीतर से आज्ञा होगी, वैसा किया जायगा। मैं आपका एक दीन दास हूँ। यदि आपको तकलीफ़ न हो, तो आपने भी गुजराँवाले रेल्वे स्टेशन पर तशरीफ़ ले आनी। यदि मैं (उनके साथ) हुआ, तो आपने भी जम्मू चले चलना।

—— o ——

शंकराचार्यजी की आज्ञानुसार तीर्थरामजी का जम्मू जाना

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६०२)　　　　११ जून, १८९६

महाराजजी ! मैं कल स्वामीजी के साथ जम्मू नहीं गया। क्योंकि आज छुट्टी नहीं थी। पर आज वहाँ पहुँच जाने का वचन (इक़रार) है, कल रविवार की रात्रि को यहाँ वापस आ जाना होगा। रात की गाड़ी में आना जाना होगा। दिन को सियालकोट भी शायद कुछ घंटे ठहरूँ। महाराजजी ! मैं चाहे क्या ही करूँ, मेरा चित्त आपही के चरणों में है। जगद्गुरुजी के साथ पं० भानुदत्त, पं० गणपति, पं० दीनदयाल, अमृतसर के पाँच बड़े प्रसिद्ध पंडित और लाहौर के कुछ धनाढ्य पुरुष गये हुए हैं। मुझ (फ़क़ीरों) आज शायद मेरे साथ गाड़ी में बैठ कर मुरारीवाला जायें। आपने इस दीन और सदैव अपराधी दास के अवगुणों को क्षमा करना और कृपादृष्टि रखनी।

—— o ——

हरदिलअज़ीज़ी (सबसे प्रेम)

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६०३)　　　　१५ जून, १८९६

मैं कल रविवार प्रातःकाल की गाड़ी से जम्मू गया था और कल रात की गाड़ी से लाहौर आ गया था। जो आज सोमवार प्रातःकाल लाहौर

पहुँची। स्टेशन से सीधा कालिज पढ़ाने चला गया था। सियालकोट के लोग रात को स्टेशन पर मिलने के लिये आ गये थे। पचास से अधिक मनुष्य थे। सब बड़े प्रेम से मिले, जम्मू में भी मुलाकात हुई। (यहाँ लोगों का) हजूम (जनसमूह मिलने के लिये आया हुआ) था। महात्मा निरञ्जनदास भी मिले, अमृतसर के पंडित गिरधारीलाल शास्त्री और पं० मोहनलालजी बड़े प्रेमी हैं। आप शीघ्र पधारें।

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वोक्त, (६०४) १७ जून, १८९६

आपका एक कृपापत्र इस समय आया। अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। जिसमें मोहन और लखासिंह के यहाँ आने का ज़िक्र (चर्चा) था। आप कब तशरीफ़ लायेंगे? अब आप भी तो इधर पधारें। गुलाम पर दया रखा करें।

—— ० ——

मिशन कालिज में व्याख्यान

सम्बोधन पूर्वोक्त, (६०५) २० जून, १८९६

कल मोहन, लखासिंह और हाकमसिंह मुरालीवाले से यहाँ आये हैं। आप कब पधारेंगे? मेरा आज मिशन कालिज में व्याख्यान* हुआ था। लोग बड़े खुश हुए थे। और मिशन कालिज के प्रिन्सिपल साहब ने उसके छपवा देने की फ़रमाइश (हिदायत) की थी। मैं शायद कल जम्मू आऊँ, पर पक्का नहीं कह सकता। परसों छुट्टी है।

—— ० ——

* यह व्याख्यान अंग्रेज़ी में था, जिसका विषय "गणितशास्त्र, उसकी आवश्यकता और उस में उन्नति पाने का उपाय" (Mathematics: Its importance and the way to excel in it) था। वह तत्पश्चात् पुस्तकाकार छप गया था और अब भी श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग लखनऊ से पुस्तकाकार में संक्षिप्त अंग्रेज़ी सहित ॥) को मिलता है।

संबोधन पूर्वोक्त, (६०६) २७ जून, १८२६

यहाँ कुशल है। आपकी कुशल सदा चाहता हूँ। बेबेजी (माताजी) तीन चार दिन तक यहीं ठहरेंगी।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०७) २९ जून, १८२६

कल आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। चाचाजी ने लिखा है कि मोहन को शुक्रवार भजना गुजराँवाले। और शनिवार वापस लाहौर भेज देंगे। चाचाजी मौलवी साहब पर अत्यंत खफा (रुष्ट) हैं। मुझे अंदेशा है कि चिट्ठी नालिश न कर दें। बेबेजी भी शुक्रवार यहाँ से जायेंगी। आपकी दया से चित्त आनंद रहता है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०८) १ जुलाई, १८२६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैं तो अपने नियमानुसार बराबर पत्र भेजता रहा हूँ। बदन के रेशा (जुकाम) के कारण किसी कदर तंग होने की वजह से पत्र भेजने में एक दिन की देर शायद हुई हो, सो कुछ आश्चर्य नहीं। नहीं तो इसमें ज्यादा देर कभी नहीं हुई होगी। आप गुलाम पर दया रखा करें, आशा है कि कल नज़र (भेंट) करूँगा।

—— :o ——

गुरुजी के लिये बोटी बोटी भी काटी जाय तो आनन्द है

संबोधन पूर्वोक्त, (६०९) २ जुलाई, १८२६

मैं आज तक नज़र (भेंट) नहीं कर सका, क्षमा कीजियेगा। जब देर का कारण मालूम होगा, तो आप चित्त में कोई ख्याल (आशंका) नहीं रखेंगे। आप अपने दीन दास पर रुष्ट मत हुआ करें। हम दास

अमृतसर चले गये हैं। कुछ बीमार हैं। आप जल्दी तशरीफ लायें। कृपा रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६१७) भिवानी, १ अगस्त, १८९६

मैं कल रात के ग्यारह बजे भिवानी पहुँच गया। पंडितजी से मिल लिया। डॉक्टर साहब (मौसाजी) हिसार से हाँसी तक मेरे साथ रेल में सवार रहे। उनसे भी मिल चुका। अब पंडितजी की मरज़ी यकायक (एकाएक) वृन्दावन आने की हो गई है। आज या कल आशा है कि चल पड़ेंगे। आपके चरणों की तरफ़ ध्यान रहता है। आपकी दया से प्रसन्नता है, यहाँ वर्षा बहुत है। पर हिसार से फ़िरोज़पुर तक बिलकुल नहीं। अगर वृन्दावन के रास्ते में मुझसे आपकी सेवा में पत्र भेजने में देर लग जाय, तो मुआफ़ फ़रमाना। रेल में मुझे ज़रा तकलीफ़ नहीं हुई।

—— ० ——

मथुरा में गमन

संबोधन पूर्वोक्त, (६१८) मथुरा, ३ अगस्त, १८९६

पंडित (दीनदयाल) साहब के साथ मैं कल यहाँ (मथुरा में) पहुँच गया। भिवानी से यहाँ तक छब्बीस (२६) घंटे में आये। शहर अति सुन्दर है। और विशेष करके मंदिर तो अत्यंत ही नफ़ीस अजीब (अद्भुत और रमणीय) हैं। श्री तीन दिन तक वृंदावन जावेंगे। वहाँ का पता इन दिनों काल में नारायण स्वामीजी का आश्रम है। फिरने का यहाँ अच्छा अवसर मिलता है। वर्षा इधर बहुत है। दूध का यही भाव है, जो लाहौर में।

—— ० ——

व्रज की यात्रा

संबोधन पूर्वोक्त, (६१९) मथुरा, ६ अगस्त, १८९६

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनन्द हुआ। आज हम व्रज की

यात्रा को चले हैं। तीन चार दिन लगेंगे। गोवर्धन, बरसाना, नन्दग्राम, गोकुल, बलदाऊ यह मुकाम (स्थान) दर्शेगे। आशा है कि मास सितम्बर में आपके चरण-कमलों में उपस्थित हो जाऊँगा। आपने जो पत्र पहले पते पर ही लिखना। तीन महात्माओं के दर्शन हुए। पता:—श्रीवृंदावन-धाम, केशी घाट, नारायण स्वामीजी के द्वारा तीर्थराम को मिले। पंडित (दीनदयाल) जी की ओर से जय श्रीकृष्णचंद्र महाराज की।

—— ० ——

ब्रज-यात्रा से वापसी

संबोधन पूर्वोक्त, (१२०) वृंदावन, १५ अगस्त, १८९६

हम सब कल ब्रज की यात्रा से वापस आये। अब कोई दो सप्ताह से थोड़े दिन यहाँ रहने की आशा है। बहुत घूमे और फिरे। यह भूमि प्रत्येक प्रकार से सैर (भ्रमण) के योग्य है। आप दया रखा करें। पंडितजी का नमस्कार। मदन को बहुत जल्दी लाहौर वापस भिजवा देना। उसको ज्ञान लाहौर से मुरालीवाला ले गया था। सविस्तर जब आऊँगा अर्ज करूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१२१) २० अगस्त, १८९६

आपका कृपापत्र कोई इन दिनों प्राप्त नहीं हुआ। आपने कृपा करके दास के अपराधों को मुआफ फरमाकर कृपापत्र रवाना करना, यहाँ लिखने लिखाने का अवसर ज़रा कम मिलता है। आज-कल यहाँ सत्संग का अवसर प्रायः मिल जाता है।

पता—"वृंदावनधाम, केशीघाट, नारायण स्वामी का आश्रम।" यह कार्ड लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ।

—— ० ——

वृंदावन से वापसी

संबोधन पूर्वोक्त, (६२२) मथुरा, २४ अगस्त, १८९६

अब हम वृंदावन से रुखसत होकर मथुरा चले आये हैं। दो तीन दिन यहाँ रह कर दिल्ली जायेंगे। वृंदावन में व्याख्यान हुए, यहाँ भी होंगे। दिल्ली (देहली) से शायद मैं भी पंडितजी के साथ शिमले जाऊँ, मगर पक्के निश्चय से कुछ नहीं कह सकता। हर हालत में दो सप्ताह तक लाहौर पहुँच जाने की आशा है। अब मदन की छुट्टियाँ खतम हो गई होंगी। उसे लाहौर पहुँचा देना।

मथुरा म व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (६२३) मथुरा, २८ अगस्त, १८९६

आपका एक कृपापत्र मिला, अत्यंत आनन्द हुआ। मेरा अपना चित्त भी अति शीघ्र आपके चरणों में उपस्थित होने को चाहता है। परंतु अब शिमले में जन्माष्टमी के दिन धार्मिक उत्सव है। पंडितजी ने मेरे वहाँ आने की भी सूचना शिमला-निवासियों को भेज दी हुई है। और उन्होंने वहाँ विज्ञापन इत्यादि में मेरा नाम भी छाप रखा है। और अब पंडितजी मुझे वहाँ ले जाना चाहते हैं। येन केन रीति से वहाँ (शिमला) से नौ दस (९, १०) दिन तक लाहौर पहुँच जाने की आशा है। चित्त आपके चरणों में रहता है। कल मेरा यहाँ अंग्रेजी भाषा में व्याख्यान हुआ था। आज पंडितजी का है। नगर के सारे धनाढ्य और सभ्य पुरुष भी सुनने आये थे। आप दया रखा करें। पंडितजी की ओर से आपको जय श्रीकृष्णचंद्रजी की। शिमले का पता यह है — "मुकाम शिमला, पास बाबू नानकचंद साहब प्रेसीडेन्ट सनातन धर्म सभा के पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम का मिले।"

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७४)　　　शिमला, ६ सितंबर, १८६६

मैं इस बीरवार १० सितंबरको यहाँ से रवाना होने की आशा करता हूँ। मेरा अपना चित्त भी उदास है। आपके चरणों का ध्यान रहता है। आप दया रखा करें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७५)　　　शिमला, ६ सितंबर, १८६६

मैं परसों शायद यहाँ से चलूँगा। यहाँ कालिज के प्रिन्सिपल साहब, तालीम के महकमा के समग्र अफ़सर और डॉक्टर साइम डायरेक्टर साहब से मुलाक़ात हुई। व्याख्यान भी हुए। आपने दया रखनी। पंडित साहब की आपको जय श्रीकृष्ण स्वीकार हो। यहाँ से हरद्वार समीप है। मैं शायद यहाँ भी हो आऊँ, पर पक्का पता नहीं।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६२६)　　　लाहौर, १४ सितंबर, १८६६

मैं कल प्रातः चार बजे शिमला से रवाना हो आज प्रातः ४ बजे यहाँ पहुँच गया हूँ। हरद्वार नहीं गया। यहाँ से शुक्रवार गुजराँवाले हाज़िर होने की आशा है। इतने में आप अगर यहाँ पधारने की तकलीफ़ उठायें तो अत्यंत कृपा हो। पंडित साहब शिमले में हैं, किसी क़दर बीमार थे।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६२७)　　　२२ सितंबर, १८६६

चाचाजी हरद्वार नहीं गये। और मेरा पैर अभी राज़ी नहीं हुआ। शुक्रवार पंचमी का श्राद्ध माई का (माता का) करके मैं सेवा में उपस्थित होने की आशा करता हूँ। आपने कृपादृष्टि रखनी।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६२८) मुरारीवाला, २४ सितंबर, १८६६

कल पता लगा कि पंचमी की तिथि जो मैं शुक्रवार को समझे हुए

था रविवार को है। सो मैं शुक्रवार को सेवा में उपस्थित नहीं हो सकता। चाचाजी यहाँ हैं, गंगाजी नहीं गये, आपने कृपादृष्टि रखनी।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२६) लाहौर, १० अक्तूबर, १८९६

मैं कुशलपूर्वक यहाँ पहुँच गया हूँ। ब्रज * और मदन कल सायं की गाड़ी में यहाँ नहीं आये। देखिये आज सायं को आते हैं कि नहीं। आप लाला सोहनामल आदि कोई नहीं मिला।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३०) १२ अक्तूबर, १८९६

कल ब्रज * और मदन प्रातः की गाड़ी मे यहाँ आ गये। चले तो परसों थे और टिकट भी खरीद चुके थे, पर परसों ऐमनाबाद के स्टेशन पर गाड़ी में सवार न हो सके। और वह टिकट भी खाया (व्यय) गये। लाला सोहनलाल अभी तक नहीं मिले। और कोई मित्र भी छुट्टियों के कारण से यहाँ नहीं है। आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३१) १४ अक्तूबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। हाल मालूम हुआ। मैं आशा करता हूँ कि कल शायद कुछ थोड़ी सी भर्ज (भेंट) कर सकूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३२) १७ अक्तूबर, १८९६

मंगलवार कालिज खुलेगा। वेवे भी शायद मंगलवार यहाँ औरतें चनवाने आयेंगी। आप दया रखा करें।

—— ० ——

* ब्रज तो तीर्थरामजी का भतीजा है और मदनमोहन पुत्र है।

संशोधन पूर्वोक्त, (६३३) १९ अक्तूबर, १८९६

आपका पत्र आज एक प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। कल हमारा कालिज खुलेगा।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६३४) २१ अक्तूबर, १८९६

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। बड़ा आनन्द हुआ। मैं आशा करता हूँ कि कल आपकी पुस्तक आपकी सेवा में भेज दूँगा। और कुछ थोड़ी सी भर्ज (भेंट) भी कर दूँगा। आज कल काम बहुत बढ़ गया है कालिज का। पंडित देवकीनंदन आज मिला था। सैरोकेवाला मुकुन्दलाल यहाँ नौकरी की तलाश में आया हुआ है। बेबे (माता) अभी नहीं आई।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६३५) २२ अक्तूबर, १८९६

न पंडितों के पुस्तकालय में और न मेहरचंद के पास सरल व्याकरण नवीनचंद्रकृत मौजूद है। वह कहते हैं अब कहीं नहीं मिलती। कल अर्ज (भेंट) की जावेगी।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६३६) २५ अक्तूबर, १८९६

परसों रात के चाचा (पिताजी), बेबे (माताजी) और हमारे ग के दो और आदमी यहाँ आये हुए हैं। बेबे की आँखें कल दिखायेंगे। आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। एक सप्ताह तक कुछ और अर्ज (भेंट) की जावेगी। आप दया रखा करें। इति।

—— ० ——

संशोधन पूर्वोक्त, (६३७) २५ अक्तूबर, १८९६

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मेरे पास व्याकरण हैं। कल भेज दूँगा, आप निःसंदेह तशरीफ ले आवें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३८) २७ अक्तूबर, १८६६

आपका कृपापत्र आज एक मिला, अत्यंत आनंद हुआ। गुलाबसिंह के पास भी दरियाफ़्त करने से आज किताब नहीं मिली। अगर लिखा हो और कोई किताब व्याकरण की आपकी सेवा में भेज दूँ। नहीं तो आपने स्वयं आकर ले लेनी। चाचाजी और येवेजी सब यहीं हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३६) ३१ अक्तूबर, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। दो व्याकरण भेज दिये हैं। येवेजी की आँखों में दारू (औषधि) प्रतिदिन डलवाया जाता है, पर अस्पताल में अभी दाख़िल नहीं की गई। चाचाजी यहीं हैं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४०) ६ नवंबर १८६६

आपका कृपापत्र दो तीन दिन हुए प्राप्त हुआ था। बड़ी खुशी हुई। चाचाजी घर गये हुए हैं। शायद आजकल आ जायें। आप अपना हाल लिखें, इति बारंबार प्रणाम।

—— o ——

अतिथियों की अधिकता और उधार लेकर काम चलाना

संबोधन पूर्वोक्त, (६४१) ६ नवम्बर, १८६६

यहाँ पं० रामधन * और एक अन्य पुरुष आये हुए थे। आज प्रातःकाल की गाड़ी से चले गये हैं। किसी कार्य-निमित्त आये थे। आप कब पधारेंगे ?

यहाँ बहुत अतिथि आते हैं। मुरालीवाला (जन्मभूमि) के दो और मनुष्य इस समय आये हैं। कम से कम तीन रुपये प्रतिदिन का ख़र्च है। ऋण (उधार) उठा रहा हूँ।

—— o ——

* पं० रामधन जम दिनों जम्मू रियासत में मैजिस्ट्रेट थे।

संबोधन पूर्वोक्त, (६४२) १९ नवंबर, १८९६

मैं आज बैठने योग्य हुआ हूँ। बहुत बीमार पड़ गया था। तप (ज्वर) था और गला सारा दर्द से व्याकुल किये हुए था। कालिज भी तीन दिन नहीं गया। इस वक़्त बहुत आराम है। मेघेजी को हस्पताल से जवाब मिल गया है। वह कहते हैं यह आँखें बनने योग्य नहीं। अब अमृतसर मिलरौनी साहब का आँखें दिखाने का इरादा है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४३) २२ नवबर, १८९६

मैं अब पहले की अपेक्षा बहुत आराम में हूँ, यद्यपि अभी कुछ दर्द गले में बाक़ी है। आप दया रखा करें। चाचाजी अभी इसी जगह हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४४) प्रातः, २४ नवंबर, १८९६

आपके दो कृपापत्र मिले। बड़ी खुशी हुई। मैं पिछले सप्ताह एक दिन भी कालिज नहीं जा सका, कल गया था। पर आते ही हरारत हो गई थी (ज्वर पड़ गया था)। रात भर तंग रहा। इस वक़्त आराम है। शायद कालिज जाऊँ। मासड़ (मौसा) जी ने बहुत दवाइयाँ बड़े प्यार से भेजी हैं। अब पुड़िया खायी है। तबीयत (चित्त) को शांति हुई है। रात को हलवा खाऊँगा। चाचाजी, मेघेजी, कृष्णचंद हाकिमसिंह सब यहीं हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४५) २७ नवंबर, १८९६

मुझे अब पहले की अपेक्षा आराम है, यद्यपि बिलकुल सेहत (आराम) नहीं। चाचाजी यहीं हैं। उन्होंने अख़राजात (खर्च खर्च) बहुत कम कर दिये हुए हैं। मालूम हुआ है कि भाई बहुत ही कमीर रक़म (बहुत ज्यादा रुपया) खाता रहा है। आप दया रखा करें।

पेनीविसट यहाँ है। कल शायद चली जाये। समाजों के जलसे रविवार और शनिवार को होने हैं। मुझे काम अभी बहुत है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४६) २६ नवंबर, १८९६

आपके दो कृपापत्र इस वक्त प्राप्त हुए, एक कल मिला था। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अभी जुकाम है। आशा है कि जल्दी अर्ज (भेंट) करूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४७) ३० नवंबर, १८९६

आपका एक कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आशा है कि कल अर्ज (भेंट) करूँगा। चाचाजी थोड़े काल के लिए गागट गाँव (मुरारीवाले) जायेंगे।

—— ०! ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४८) ४ दिसंबर, १८९६

मैं कल फिर बीमार हो गया था। कालिज से आते ही बेहोश सा होगया। कल चाचाजी और पेवेजी मुरारीवाला गये हैं। चाचाजी दो तीन दिनों को फिर आ जायेंगे। आज कृष्णचंद रोटी पकायेगा, आप अपना हाल लिखें। कृपा रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४९) ५ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र इस वक्त प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। कृष्णचंद को यहाँ मुद्दत (अवधि) का अपने कालिज में मिठाई इत्यादि बेचने की दुकान का ठेका दिलवा दिया हुआ है। हाकिमसिंह भी यहीं है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५०) ७ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। अब मुझे केवल

(जुकाम) का आराम है। मगर पेट में कुछ खलल (गड़बड़) अभी है। आशा है, जल्दी सेहत (स्वास्थ्य) हो जायगी। आप कृपा रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५१)　　　　६ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, हाल मालूम हुआ। आप जरूर जल्दी कृपया यहाँ पधारकर दर्शन दें। अत्यंत दया होगी। मैं तो सदैव दर्शन का अभिलाषी हूँ। आपकी दया अब होती है, आप कृपा करते हैं। आप मालिक हैं। मालिक को कुल्ली इख्तियार (पूरा-पूरा अधिकार) होता । दास के कहने की कुछ जरूरत नहीं। आप दया रखा करें। चाचाजी कल के आये हुए हैं।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५२)　　　　१६ दिसंबर, १८९६

चाचाजी का घर पत्र लिख दिया है कि यह आपको मिल जायें। मैं पक्का तो नहीं कह सकता, पर संभव है कि मैं भी एक दिन के लिए लड़कों के साथ गाँव (मुरारीवाला) तक चला आऊँ। पर संभवतया नहीं आऊँगा।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५३)　　　　२१ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं २८ की साँझ को यहाँ से चलकर सेवा में उपस्थित हूँगा। और एक रात गाँव रहकर फिर होसी जाने का इरादा रखता हूँ। हमारा कालिज डिस्ट्रिक्ट में पंजाब में प्रथम रहा है।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५४)　　　　२२ दिसंबर, १८९६

इस वक्त कालिज जाते हुए आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। मैं रैगन

हूँ कि आपको यह खयाल क्योंकर आ गया कि मैं आपके दर्शन किये बिना मुरारीवाले चला जाऊँगा। कभी ऐसा हुआ है? असल मंशा तो गुजरांवाले आने का होता है। मुरारीवाले जाना तो बहाना है। वहाँ मेरा काम ही क्या है? वहाँ थोड़ी सी किताबें पड़ी हैं, वह लानी चाहता था। जैसी आज्ञा आगे किया जायेगा, पिछले दिनों कई कारणों से चित्त को अशांति रही है। अब आपकी दया है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५५) २५ दिसंबर, १८९६

ब्रजलाल और मदन ने मेरे न आने का कारण तो अर्ज किया ही होगा? आज मैं अकेला हाँसी चला हूँ। हाकिमसिंह हाफिजाबाद जायेगा। मकान पर कृष्णचंद सोया करेगा। ३१ दिसंबर तक वापिस आ जाने का इरादा है। कालिज ४ जनवरी का खुलेगा। हाँसी से वापिस आने पर भी मुरारीवाला जाने को जी (चित्त) नहीं चाहता। आप दया-दृष्टि रखा करें। आपके चरणों का ध्यान है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५६) हाँसी, २८ दिसंबर, १८९६

मैं परसों रात को कुशलपूर्वक यहाँ पहुँच गया। ३१ (दिसंबर) को लाहौर पहुँच जाने की आशा है। आप अपनी कुशलता की जल्दी सूचना दें। मासड़ (मौसा) जी को आदाब व न्याज (अति सम्मानपूर्वक प्रणाम या नमस्कार)।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५७) हाँसी, ३१ दिसंबर, १८९६

आपका कोई भी कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। मैं आज सायं की गाड़ी यहाँ से रवाना होने का इरादा रखता हूँ। कल प्रातः लाहौर पहुँच जाऊँगा। आपके दर्शन कब होंगे? जल्दी हों।

—— ० ——

सन् १८९७ ईसवी

(इस वर्ष के प्रारंभ में गुसाईं रामतीर्थजी की आयु साढ़े तेईस वर्ष के लगभग थी।)

संबोधन पूर्वोक्त, (६५८) २ जनवरी, १८९७

मैं कल यहाँ पहुँच गया हूँ। अगर गुजरोंवाले आऊँ, तो मुरालीवाले भी जाना पड़ेगा। और वहाँ मैं अभी जाना चाहता नहीं। अगर आप यहाँ तशरीफ़ ले आयें, तो अत्यंत कृपा हो। इति।

—•—

धन की तंगी और सबंधियों का क्रोध

संबोधन पूर्वोक्त, (६५९) ५ जनवरी, १८९७

मैं कल आपकी सेवा में अठाईस २८) रुपये भूर्ज (भेंट) करूँगा। आये चाचाजी (पिताजी) को दे देने। उनको लिख चुका हूँ। इस मास मेरे पास केवल तीन रुपये बचे हैं। और सारे मास का खर्च अभी सिर पर है। न आटा ही है, और न अन्य कुछ घी के अतिरिक्त है। इस बार ऋण (उधार) की एक कौड़ी भी नहीं वापस की। और किसी विद्यार्थी का भी किञ्चित् सहायता नहीं दी। तिस पर भी सब रुष्ट हैं। और उलाहना पर उलाहना (उपालम्भ) दे रहे हैं। इस समय मेरे पास कोई भोजन बनानेवाला मनुष्य (रसोइया) नहीं है। तंग हूँ।

—०—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६०) ८ जनवरी, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। आप दया रखा

करें। आपके चरणों का ख्याल रहने से सदा आनंद रहता है। अगर चाचाजी तीन चार दिन तक आपसे रुपया लेने न आयें, तो उनमें से तेरह १३) रुपये आपने मुझे भिजवा देने।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६१) ६ जनवरी, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। जवाब मैं पहले लिख चुका हूँ। रोटी की अत्यंत तंगी थी। आज एक आदमी रखा है। मालूम तो होशियार (चतुर) होता है, आगे देखिये। आप यहाँ कब तशरीफ लायेंगे। दर्शनों का चित्त चाहता है। हाकिमसिंह आज यहाँ आया है। लोहड़ी (सक्रांत) के बाद फिर हाफ़िज़ाबाद जायेगा। यह आदमी ३) रुपये और रोटी पर रहा है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६२) ११ जनवरी, १८६७

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। आपकी बीमारी का हाल पढ़कर अत्यंत अफ़सोस हुआ। अब तबीअत (स्वास्थ्य) कैसी है? यह रसोइया राय मेलाराम के लड़के रामशरणदास के रसोइये के द्वारा तथा फलाराम के द्वारा मेरे पास आया है। अब प्रबंध अच्छा है। आपका इन्तज़ार है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) १६ जनवरी, १८६७

आपकी बीमारी का बड़ा अफ़सोस है। आप जल्दी अपनी सेहत (स्वास्थ्य) से सूचित करें। अभी रेशा (जुकाम या श्लेष्मा) दूर हुआ कि नहीं? आप व्यायाम शायद नहीं करते और पानी का अधिक इस्तेमाल (प्रयोग) हो गया है। भगत हरभजरायजी अगर आपके पास हों

तो उनको मेरा बहुत-बहुत नमस्कार। चाचाजी इस बात से ख़फ़ा (रुष्ट) हो गये हैं कि मैंने रुपये आपके द्वारा उनको भेजे।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६४) १८ जनवरी, १८९७

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। स्वास्थ्य का हाल सुनकर बड़ा आनंद हुआ। हमारे मना करने के बावजूद भी चाचाजी ने मरोके पत्र लिख दिया था कि यहाँ से उनका लड़का मेरे पास काम करने को आ जाये। वह कल चला आया है। अब क्या किया जाये। आप जब सशरीर लाओगे, काम ठीक हो जायेगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६५) २६ जनवरी, १८९७

आपका कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है ? आप कृपापूर्वक जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचित करते रहा करें। गुलाम पर दयादृष्टि रखा करें। अपराधों को मुआफ़ फ़रमायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) २९ जनवरी, १८९७

आपका एक कृपापत्र भी प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है ? आप दया करके जल्दी जल्दी अपने कुशल-समाचार से सूचित करते रहा करें। मैं शायद अगले सप्ताह को अगर बसंतपंचमी की छुट्टी हुई तो सेवा में उपस्थित हूँगा, और मुरारीवाले भी हो आऊँगा।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) ३० जनवरी, १८९७

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, जिनमें बसंतपंचमी के अवसर पर यहाँगाबाद आने का संकल्प ज़ाहिर किया हुआ था। आप यहाँ निस्संदेह सशरीर ले आवें, लोगों को कृतार्थ करें। मेरा उस दिन लाहौर ठहरने का

अभी कोई पक्का इरादा नहीं। जैसी आज्ञा होगी, करूँगा। घर से पत्र आया था, उन्होंने बुला भेजा था, इसलिए इरादा हो पड़ा था। अव्वल तो छुट्टी की पक्की खबर नहीं।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६८) १ फ़रवरी, १८९७

आज भूर्ज (भेंट) की गई है, आशा है मिल गई होगी। मैं शुक्र की रात को आने की आशा करता हूँ। शर्त यह कि छुट्टी वसंत पंचमी को हो जाये, और कुशल रहे।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६९) ११ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। भाषाजी का पत्र भी आज मिला। कहते हैं कि उनके पत्र में कार्यवाही हो गई। मगर ठीक-ठीक तौर पर नहीं लिखा। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७०) १२ फ़रवरी १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैं तो पत्र अपने समय पर सेवा में भेज दिया करता हूँ, शायद आपको मिला कर न होगा। आपकी कृपा है। चित्त आनंद में है। अगर हो सके, तो समाप्ति की किताबवाले इलाज लिखवाकर भिजवा दन।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७१) १५ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र बहुत देर हुई नहीं मिला। आप कृपा रखा करें। यहाँ तीन-चार आदमी मुरारीबाबा के रात आये थे। आज शायद चले जायेंगे।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६७०)　　　१७ फ़रवरी, १८९७

यह पहाड़ी ब्राह्मण जो हमारा नौकर था, वह चोर निकला। चीजें चुराकर बेचता फल पकड़ा गया। उसे मौकूफ़ कर दिया है। आज और लड़का रखा है। यह कर्मोंके का है। छत्री है। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६७३)　　　१६ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति आनंद हुआ। मुझे आन-कल काम अति अधिक रहता है, लड़कों के इम्तहान समीप होने के कारण और अन्य कारणों से। आप कब पधारेंगे? शायद २१ फ़रवरी को सनातनधर्म सभा, लाहौर का जलसा है। २४ फ़रवरी को हमारे प्रिंसिपल साहब ने लाहौर से विलायत को रवाना होना है। आप दया रखा करें।

—— o ——

स्वरूप में स्थित होने से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६७४)　　　२१ फ़रवरी, १८९७

अब अवकाश मिलता है वेदान्त के ग्रंथ अंग्रेज़ी में देखता हूं। और छुट्टी के दिन चित्त एकाग्र करने का भी अधिक समय मिलता है। आनन्द केवल अपने स्वरूप में स्थित होने में है। और अधिकार (इख़्तियार) भी समस्त जगत् पर अपना ही है। व्यर्थ हम अपने आपको औरों (पक्ष-सर्गों इत्यादि) के अधीन मान लेते हैं। आप दास पर दया रखा करें।

—— o: ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६७५)　　　२५ फ़रवरी १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनन्द हुआ। आपके कल सशरीर आने की आशा है। आज हमारे कालिज के प्रिंसिपल साहब विलायत चले गये। उनके स्थान पर और साहब काम करते हैं।

—— o: ——

सम्बोधन पूर्वोक्त, (६९६) ७ मार्च, १८९७

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप जल्दी जल्दी लिखते रहा करें। मुझे पिछले दिनों काम अत्यंत ज्यादा था।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (६९७) ९ मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। जिस दिन आप सरारीक से गये हैं, उस दिन कालिज में जल्द वापिस आने की आशा थी, पर आना नहीं हुआ था। मैं १२½ बजे मुकाम पर पहुँचा था। फिर पादामीबाग गया था, पर गाड़ी चली गई थी।

—— ० ——

जुकाम से शरीर तंग, पर पारमार्थिक ग्रंथों से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (६९८) १० मार्च, १८९७

आपकी कृपा से अत्यंत आनन्द रहता है। जुकाम ने शरीर को किसी प्रकार तंग कर रखा है। परन्तु पारमार्थिक ग्रंथ देखने और अन्य काम में चित्त प्रसन्न रहता है। आप कृपा रखा करें।

—— ० ——

चित्त की स्थिरता

संबोधन पूर्वोक्त, (६९९) १२ मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त मिला। अत्यन्त आनन्द हुआ। जिस समय आपने कल लिखा था, मैं भी उस समय ठीक उसी अवस्था में था, जिसमें आप थे। और आपकी ओर लिखने के लिये यह कार्ड उठाया था। पर फिर सिरनामा लिखकर रख छोड़ा था। आपकी कृपा से अब भी अत्यन्त आनन्द है। यह अच्छे भाग्य होने से चित्त स्थिर होना मालूम होता है। *

—— ० ——

* भगत धन्नारामजी का उन दिनों का सम्बन्ध [illegible]

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६८०)　　१४ मार्च, १८९७

हमें होली की छुट्टियाँ नहीं हुआ करतीं। और काम इन दिनों बहुत ज्यादा है। पर शायद मैं कल कालिज में काम करके चला पड़ूँ, और गुजरांवाले मुरारीवाले होकर परसों कालिज पढ़ाने के वक्त वापिस चला आऊँ। और वक्त नहीं मिल सकता।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६८१)　　१६ मार्च, १८९७

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। हमें अगले शनिवार से छै छुट्टियाँ होंगी। पर सब मेरे पास परचे कालिज के और इंट्रेंस के देखने को होंगे। यह छुट्टियाँ वैसाखी से पहले खतम हो जाती हैं। मेरा आना मुश्किल है। वैसाखी की एक छुट्टी होगी। आप दया करें।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६८२)　　२० मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। तार के इम्तहान का प्रॉस्पैक्टस भेज दूँगा। आज प्रातः ८ बजे से ८ बजे सायं तक जहाँ बी० ए०, एम० ए० के इम्तहान होते हैं, वहाँ निगरानी के लिए रहना पड़ा। सोमवार को अपने कालिज के सिमाही इम्तहान की निगरानी करनी है।

काम कराना हो वह मनुष्य चाहे कितनी ही दूरी पर क्यों न हो। अपने आत्मात्मक बल से वह उस मनुष्य से काम करा लिया करते थे। इस बार तीर्थरामजी से उन्होंने वही [illegible] लिखवाना चाहा था और स्वयं लिखकर तीर्थरामजी को भेज रहे थे। और इस पत्र में तीर्थरामजी ने स्वयं माना भी है कि उनके भीतर भी वही [illegible] विचार की प्रेरणा है। यह दो व्यक्तियों की मनोदशा या विचार का स्पष्ट प्रमाण है और इससे स्पष्ट हो रहा है कि दो मनुष्य हजारों मीलों की दूरी पर रहते हुए भी अपने चित्तों की एकाग्रता से बिना डाक तारघरों के भी बातें कर सकते हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (१७६) ७ मार्च, १८९७

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप जल्दी जल्दी लिखते रहा करें। मुझे पिछले दिनों काम अत्यंत ज्यादा था।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (१७७) ९ मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनन्द हुआ। जिस दिन आप तशरीफ़ ले गये हैं, उस दिन कालिज से जल्द वापिस आने की आशा थी, पर आना नहीं हुआ था। मैं १२॥ बजे स्टेशन पर पहुँचा था। फिर बादामीबाग़ गया था, पर गाड़ी चली गई थी।

—o—

कुकाम से शरीर तंग, पर पारमार्थिक ग्रंथों से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (१७८) १० मार्च, १८९७

आपकी कृपा से अत्यंत आनन्द रहता है। कुकाम ने शरीर को किसी क़दर तंग कर रखा है। परंतु पारमार्थिक ग्रंथ देखने और अन्य काम में चित्त प्रसन्न रहता है। आप दया रखा करें।

—o—

चित्त की स्थिरता

संबोधन पूर्वोक्त, (१७९) १२ मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र आज मिला। अत्यन्त आनन्द हुआ। जिस समय आपने पत्र लिखा था, मैं भी उस समय ठीक उसी अवस्था में था, जिसमें आप थे। और आपको पत्र लिखने के लिये यह कार्ड उठाया था। पर फिर सिरनामा लिखकर रख छोड़ा था। आपकी कृपा से अब भी अत्यन्त आनन्द है। बड़े अच्छे भाग्य होने से चित्त स्थिर होना मौक़ूफ़ है। *

—o—

* इसका अभिप्राय यह है कि उन दिनों वह [illegible] था कि [illegible] में [illegible]

संबोधन पूर्वोक्त, (९८०) १४ मार्च, १८९७

हमें होली की छुट्टियाँ नहीं हुआ करतीं। और काम इन दिनों बहुत ज्यादा है। पर शायद मैं कल कालिज में काम करके चल पड़ूँ, और गुजरोंवाले मुरारीवाले होकर परसों कालिज पढ़ाने के वक्त वापिस चला आऊँ। और वक्त नहीं मिल सकता।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (९८१) १६ मार्च, १८९७

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। हमें अगले शनिवार से छै छुट्टियाँ होंगी। पर तब मेरे पास परचे कालिज के और इंट्रेंस के देखने को होंगे। यह छुट्टियाँ वैसाखी से पहले खतम हो जाती हैं। मेरा आना मुश्किल है। वैसाखी की एक छुट्टी होगी। आप क्या करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (९८२) २० मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। तार के इम्तहान का प्रॉस्पैक्टस भेज दूँगा। आज प्रातः ८ बजे से ४ बजे सायं तक यहाँ बी० ए०, एम० ए० के इम्तहान होते हैं, यहाँ निगरानी के लिए रहना पड़ा। सोमवार को अपने कालिज के सिमाही इम्तहान की निगरानी करनी है।

काम कराना हो वह मनुष्य चाहे कितनी ही दूरी पर क्यों न हो अपने आत्मानन्द में मग्न रहकर उस मनुष्य से काम करा लिया करते थे। इस बार तीर्थरामजी ने इन्हीं की खबर लिखवाना चाहा था और तार रखके लिखकर तीर्थरामजी को भेज रहे थे। और इस पत्र में तीर्थरामजी ने स्वयं माना भी है। इनके भीतर का भाव किस [illegible] का पड़ता है। यह दो चित्त की एकता का विचार का प्रत्यक्ष प्रमाण है और इससे स्पष्ट हो रहा है कि दो मनुष्य हजारों मील की दूरी पर रहते हुए भी अपने चित्त की एकाग्रता से बिना तार लगाये के भी बातें कर सकते हैं।

बी० ए० परीक्षा का खराब परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (३३०) १५ अप्रैल, १८९७

मेरे पैर का छाला अब बहुत दर्द (दुःखी) करता था। आज बी० ए० की परीक्षा का रिजल्ट (नतीजा) निकला है, ऐसा बुरा नतीजा कभी नहीं निकला। सारे पंजाब में चौथा भाग भी विद्यार्थी पास नहीं हुए। सब विषयों में बहुत फेल हुए हैं। मेरे शिष्यों में से एक तीसरा नम्बर रहा है और एक पाँचवाँ रहा है। गणित-शास्त्र में भी सारे कालिजों के बहुत विद्यार्थी फेल हुए हैं। मेरे वेतन में वृद्धि इस वर्ष नहीं होगी। इतना तो परिश्रम किया और परिणाम यह निकला। चित्त अब बहुत उचाट (उपराम) हो रहा है। आप कब आयेंगे ?

विशेष वेदान्त-चर्चा

संबोधन पूर्वोक्त, (३३१) १८ अप्रैल, १८९७

मैं आपकी कृपा से अपना समय व्यर्थ कामों में खर्च नहीं करता। और विशेष करके वेदान्त-चर्चा ही होती है। भविष्य में आपकी आज्ञानुसार अन्य प्रकार की बातचीत बिलकुल त्यागने का यत्न करूँगा। आप दया रखा करें। चित्त आज-कल उदास है। गुरुदक्षिणा ठठियार आपसे मिला था कि नहीं ?

संबोधन पूर्वोक्त, (३३२) २५ अप्रैल, १८९७

आपकी कृपा से अब चित्त आनंद में है। आज पाँव के छाले में से बहुत सा गंदा मादा निकला है। एफ० ए० का रिजल्ट (नतीजा) अभी नहीं निकला। इसलिये कल आ जायगा।

एफ़० ए० परीक्षा का अच्छा परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) २८ अप्रैल, १८९७

कल एफ़० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकला है। समस्त कालिजों के विद्यार्थी आधे के लगभग पास (उत्तीर्ण) हुए हैं, मिशन कालिज अच्छा रहा है। आपकी कृपा से गणित-शास्त्र में भी अच्छा रहा है। केवल पाँच विद्यार्थी गणित-शास्त्र में फ़ेल हुए। वह भी साठ (६०) में से। वज़ीफ़े (छात्र-वेतन,) भी चार मिशन कालिज में आये हैं।

——:o——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६४) २ मई, १८९७

आपके शरीर में किस प्रकार का विकार है ? ऐसा है या और कुछ ? अगर ज़्यादा तकलीफ़ है, तो मैं भी किसी दिन सबर से आन जल्दी आ जाऊँगा, आप वापसी डाक से सूचना दें। परमेश्वर जल्दी सेहत (स्वास्थ्य) दे।

——o——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६५) ४ मई, १८९७

हमें अभी तक कालिज से कुछ मिला नहीं। नया प्रिंसिपल ज़रा सुस्त है, इसलिए देर कर रहा है। इन दिनों अज़हद तंगी है। जो भगवत् की इच्छा सो चाह था। धन्य परमात्मा है। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। किसी क़दर सेहत (स्वास्थ्य) होने का हाल पढ़कर आनंद हुआ। परमात्मा बिलकुल शफ़ा (नीरोगता) बख़्शे। मोहनलाल यहाँ है। आज जिस समय मैं कालिज गया हुआ था, मेरे पीछे एक सिपाही हमारा घर दरियाफ़्त करके मोहन को पूछता हुआ आया। घर में उस समय और कोई नहीं था। केवल मोहन ही मौजूद था। यह बहुत डर गया और उसने कहा कि मोहन यहाँ नहीं है। तिस पर सिपाही वापिस चला गया। मालूम होता है कि मौलवी साहबवाले मुक़द्दमे की फिर तहक़ीक़ात होने

लगी है। कल प्रात हाकिमसिंह और मोहन को यहाँ से मुरारीवाले का रवाना कर दूँगा।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) १० मई, १८८७

आपका दा कृपापत्र मिले। बीमारी का हाल पढ़कर बड़ा शोक हुआ। मेरा ध्यान उसी तरफ है। शायद शनिवार को मैं आ ही जाऊँ। आप कुनैन का प्रयोग जरूर करें। हाकिमसिंह यहाँ नहीं है। रोटी की बड़ी तंगी है। वह कभी आता है, कभी चला जाता है।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) १२ मई, १८८७

आज मैं भी बीमार हूँ। कल का रेशा ने बहुत तंग किया हुआ है। आप अपना हाल लिखें। दिल आपकी तरफ है। आप जल्दी हाल लिखें। हाकिमसिंह अभी नहीं आया। लाला मोहनलालजी व धन्नागुरु द का मत्था टेकना।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (६६८) १४ मई, १८८७

अगर मुझको यहाँ से किराया के लिए कुछ मिल गया, तो कल मैं अवश्य सेवा में हाजिर हो जाऊँगा। परमात्मा आपको जल्दी राज़ (स्वास्थ्य) बख्शेगें।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) १६ मई, १८८७

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप जल्दी अपनी तबीयत के हाल से सूचित करें। आप सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है? आपके चरणों का ध्यान है।

— ० —

संशोधन पूर्वोक्त, (१०००) २४ मई, १८६७

परमात्मा आपको बहुत जल्द बिलकुल सेहत दें। तप (ज्वर) अभी टूटा कि नहीं ? और गिलटी का क्या हाल है ? ध्यान आपकी तरफ रहता है। काम आज-कल बहुत ज्यादा है।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१००१) २४ मई, १८६७

आपके दो कृपापत्र इस वक्त मिले। परमेश्वर बहुत जल्द बिलकुल सेहत (स्वास्थ्य) दे देगा। यद्यपि मुझसे पत्र लिखने में देर हो गई है, दिल तो आप ही के पास रहा है। जाहरी (बाह्य, दिखलावे-मात्र की) देर का मुआफ़ फरमावें।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१००२) २६ मई १८६७

आपके कृपापत्र प्राप्त हुए। धन्य है, आपकी बीमारी ज़रा कम है। परमेश्वर करे, बहुत जल्दी बिलकुल आराम आ जावे। अब अपना हाल जल्दा जल्दी लिखते रहा करें।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१००३) ३० मई, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। परमात्मा जल्दी शफ़ा (स्वास्थ्य) दें। मदन * के गले में आप जैसी गिलटियाँ हैं। और भाव कल हो और लड़के भी मैंने देखे हैं, जिनको यही बीमारी है। मेरा यह ख्याल है कि कुछ बीमारियाँ (रोग) दवाई से तत्काल नहीं चली जातीं। धीरज से इलाज करना चाहिये। आप सब कुछ जानते हैं।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१००४) ५ जून, १८६७

मैं आज भूख करने गया। पर चूँकि ४ बजे से पीछे अवसर मिला

* मदन से अभिप्राय श्रीचरणवर्मा का बड़ा पुत्र कुमार मन्मथमोहन है।

था, समय नहीं था । कल रविवार है । परसों काम किया जायगा। आप अब अपनी तबीयत का हाल लिखें । पालमुकुन्द का मत्था टेकना।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(१००५)　　　　　८ जून, १८९७

अब आप तबीयत (स्वास्थ्य) का हाल लिखें । दूध निस्संदेह उत्तम चीज़ है, बहुत मुफ़ीद है । इसके प्रयोग से सब रोग भाग जाते हैं। परमात्मा आपको बहुत जल्दी यहाँ तशरीफ़ लाने (पधारने) के योग्य बना दे ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(१००६)　　　　　१० जून, १८९७

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। आपकी सेहत (स्वास्थ्य) की सूचना पाकर अत्यंत आनंद हुआ । मैं तो सदैव आपका गुलाम हूँ। आप कोई किसी प्रकार का ख़याल दिल में मत करें। मैं तो अपने ख़याल में अवसर अवसर पर नियमानुसार पत्र भेजता रहा हूँ। अगर ग़लती हो गई हो, तो कृपापूर्वक मुआफ़ फ़रमायें । मर्दानों का शायद हमें छुट्टियाँ होंगी। हाकिमसिंह को आज मुरारीवाले भेज दिया है। उसके दिन समीप आ गये हैं ।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(१००७)　　　　　१४ जून, १८९७

मैं जिस दिन मदन का स्टेशन पर किसी आदमी का आदमी सदा में पहुँचा इस निमित्त सिपुर्द करने गया था उसी दिन पर मलाबार मद (???) से बीमार हो गया। कल शाम को आराम आया । अब सेहत (स्वास्थ्य) है । पढ़ाने भी चला गया था । आपके बच्चों का प्यार है । आपका पत्र भी मिला । अत्यंत आनंद हुआ । आप कब तशरीफ़ लायेंगे ?

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००८) १६ जून, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। आनंद हुआ। मदन वैरोके चला गया है। अच्छा हुआ। हाकिमसिंह यहाँ से मुरारीवाला गया हुआ है। उसके पैसे दिन हैं। अर्थात् ढाई महीने हो जाने का मौका है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००९) १७ जून, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अब विल्कुल सेहत (स्वास्थ्य) है। आप कृपा रखा करें। मदन अभी नहीं आया।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त (१०१०) २१ जून, १८९७

आप अभी तक पधारे क्यों नहीं ? मदन को मैं इस वक्त लिखने लगा हूँ कि फ़ौरन यहाँ चला आवे।

—— ० ——

वेदपाठ के श्रवणमात्र से समाधि

संबोधन पूर्वोक्त, (१०११) २१ जून, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। वेदों का केवल पाठमात्र सुनने से मेरे चित्त को समाधि की दशा प्राप्त हो जाया करती है, और अत्यन्त आनन्द की अवस्था आच्छादित हो जाती है। यह अति उत्तम कार्य है। ऐसे (वेदपाठी) पुरुष • की सहायता करनी उचित है। भोग के बाद आप तशरीफ़ ले आयें।

—— ० ——

• दक्षिण देश का एक पंडित था जो केवल वेदपाठ ही करना जानता था और अर्थ में ओर बोध नहीं रखता था, और अत्यन्त मधुर स्वर से वह वेदपाठ करता था। उनकी प्रार्थना पर उसका पाठ करवाया गया। और जो प्रभाव इस पाठ से गुसाईंजी के चित्त पर पड़ा वह उपरोक्त वर्णन किया है। ऐसे पुरुष की सहायता के लिए गुसाईंजी अपने गुरु के नाम लिखा है।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१२) २९ जून, १८९७

आपका पत्र एक शाम मिला। अत्यंत आनन्द हुआ। आपकी दया से आपका दास अति आनंद की हालत में है। आपके चरण का ध्यान रहता है, और सरूर (प्रसन्न चित्त या हर्ष) रहता है। आप दया रखा करें। सरदार निहालसिंह की तरफ से हाथ जोड़कर मत्था टेकना।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१३) १८ जून, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, गुजरांवाला में तो आप ही हैं, जिनकी हमें जरूरत है। आप अपने आपको ही ले आयें। मदन को बुलाने के लिए मैंने पहले पैतड़े लिखा था। कोई जवाब नहीं आया। अब फिर लिखता हूँ।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१४) ९ जुलाई, १८९७

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। जल्दी अपने हालात से सूचित करें। काम बहुत है। पर आपकी दया से आनन्द है।

— • —

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१५) १२ जुलाई, १८९७

एक पत्र मिला, अत्यन्त आनंद हुआ, जो कुछ मंगलाचरण महाराज की इच्छा होगी, उसमें दास अत्यंत खुश (प्रसन्न) है। आप ही गुलाम के हाकिम (दास के मालिक) हैं और आप ही अफसर। आपके पास ध्यान से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। रहिमसिंह कल गाँव गया है। बंगाल का पावन ठाठ ऐसा कभी कुछ नहीं किया।

— ० —

संबोधन पूर्वोक्त (१०१६) ११ जुलाई, १८९७

आपका पत्र आये देर हो गई है। यहाँ तो हर रोज (प्रतिदिन)

आपका चर्चा लोगों से हो जाता है और आपका ध्यान रहता है। काम आज-कल ज़रा ज़्यादा है। आप कृपादृष्टि रखा करें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१७) १६ जुलाई, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आप दया रखा करें। गुलाम का आपके चरणों में ध्यान है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१८) २२ जुलाई, १८६७

आपका पत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मकान* की तजवीज़ हो गई है। हरिचरण की पौड़ियों में परसराम तहसीलदार का मकान लाला सोहनामल ने १०) रुपया मासिक किराये पर नियत करा दिया है। नल का किराया अलग देना पड़ेगा। मकान में मैदान भी है और मकान अत्यंत नफ़ीस है। आज शायद काग़ज़ लिखा जाय। हाकिमसिंह अभी इसी जगह है, शायद जायगा नहीं। मदन के वदन पर आराम है। कोई शिकायत नहीं। वर्षा यहाँ भी हुई है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१९) २४ जुलाई, १८६७

मैं आज घेरोके चला हूँ। सोमवार व कालिज लगना है और प्रातः मे पहले की गाड़ी में मुझे वापिस आ जाना चाहिये। शायद गुजरात भगत हरभजराय के पास भी हो आऊँ। फिर कहीं जाने आने की सलाह करेंगे।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२०) २७ जुलाई, १८६७

मैं घेरोके और गुजरात हो आया हूँ। जाती दफ़ा भी लाहौर से गन

* इस मकान में तीर्थरामजी जुलाई १६ तक रहे और यहीं से पहाड़ों को पधारे थे।

की गाड़ी पर आ सका और आती बार भी रात की गाड़ी में आया। रास्ते में आपके दर्शनों से वंचित रहा। हाकिमसिंह की नौकरी का और किसी जगह इन्तज़ाम बनने की आशा नहीं रही। क्योंकि आज मिन्टगुमरी से बाबू लक्ष्मणसिंह का पत्र आ गया है कि वहाँ कोई जगह नहीं। कर्मदास को नौकर करा दिया था, मगर वहाँ से उसने छोड़ दी है। अब और जगह नौकरी तलाश करनी चाहता है। यह उसने अच्छा काम नहीं किया। वैराके से अमो में किसी को साथ नहीं लाया। मगर हरभजरामजी साथी थे।

कल या परसों हम दूसरे मकान में चले जावेंगे। कागज़ लाला सोहनलाल के द्वारा लिखा दिया है। यह मकान हरिचरण की पौड़ियों में लाला परसराम तहसीलदार का है। आप कब इस मकान को पवित्र करेंगे?

आपने गुलाम पर हर प्रकार से दया रखना। गुलाम आपका ही है। सब अपराध मुआफ़ फरमावें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त (१०२१) २६ जुलाई, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यन्त आनंद हुआ। आज मुर्ड (सेंट) की गई है। कल सायं को उस मकान में चला जाना है। आज किसी कदर असबाब वहाँ पहुँचाया गया। मैं शायद १० अगस्त का आज कल में आऊँगा। आप गुलाम पर दया रखा करें।

—— ० ——

हरिचरण* की पौड़ियों में निवास

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२२) १ अगस्त, १८९७

हम इस नये मकान में आ गये हैं। यह हरिचरण की पौड़ियों में है।

* [illegible] की पौड़ियाँ है।

हरिचरणों में (तीर्थ) श्रीगंगाजी का निवास है, और तीर्थ (राम) को भी हरिचरणों ही में रहना उचित है। यहाँ जप का आया हूँ, हरिचरणों में ही ध्यान है। और अपने स्वरूप के श्रीगंगाजल में आप की दया से स्नान कर रहा हूँ। लाला कृष्णचंद, बालमुकुन्द, पंडित प्रभुदत्त और रामजी का मत्था टेकना।

वेदान्त विचार और भजन

संशोधन पूर्वोक्त, (१०२३) ५ अगस्त, १८९७

आपके कृपापत्र मिले, अत्यन्त आनन्द हुआ। मैं छुट्टियों के अन्त में गणितशास्त्र की कोई पुस्तक लिखूँगा। आजकल तो वेदान्तविचार, भजन और एकान्त-सेवन ही को कुल समय देता हूँ। इसमें वह आनन्द है कि छोड़ने को जी (चित्त) नहीं चाहता। आपकी अत्यन्त दया है। लड़केवाले (बालक) सब भज दिये हुए हैं। मैं अकेला ही हूँ। थोड़े दिनों को शायद आपके चरणों में आऊँ।

मनुष्य-देह कब सफल है

संशोधन पूर्वोक्त, (१०२४) ७ अगस्त, १८९७

यदि व्यवहार-काल में चलते-फिरते और सब काम करते हमारी वृत्ति मतवाली रहे और चित्त अर्श-आला (सबसे ऊँचे आकाश अर्थात् उच्च अवस्था) से कभी नीचे न उतरे, तो धन्य है हमारा जीवन, नहीं तो मनुष्य-देह निष्फल खो दिया।

वेदान्तशास्त्र ही परम सत्य है

संशोधन पूर्वोक्त, (१०२५) ६ अगस्त, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। वास्तव में किञ्चिम्

मात्र अभ्यास करने से शास्त्रों के बिलकुल अनुसार फल प्राप्त होता है। संसार में यदि कोई वस्तु सत्य है, तो वेदान्तशास्त्र है। बड़ी कृपा आपने की है। धन्य है।

—:०:—

वेदान्त के मनन से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२६) ११ अगस्त, १९०१

आपका कृपापत्र कल मिला। अत्यन्त आनन्द हुआ। वेदान्तशास्त्र के सम्बन्ध में अँग्रेजी में बहुत से ग्रन्थ पढ़ता हूँ। मगर पढ़ने में वह आनन्द नहीं आता, जो उनको एकान्त में बैठकर विचारने और अपने अंदर धारण करने में आता है। जो कुछ इस प्रकार आपकी कृपा से प्राप्त होता है, वह बहुधा जिज्ञासुओं का अंग्रेजी में उपदेश भी कर देता हूँ। जी (चित्त) चाहता है कि इसी आनन्द में छुट्टियाँ व्यतीत करूँ। मगर लोगों से मालूम (मौसा) न मिला है कि नौ-दस दिन को वहाँ के रातों (रात्रियों) हैं, वहाँ मेरा आना लाजमी है। क्या करूँ। वहाँ जाने से पहले आपकी सेवा में जरूर हाजिर हूँगा।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२७) १३ अगस्त, १९०१

यहाँ कल भी वर्षा हुई थी, आज भी हो रही है। मैं कल मेरा में नवरियत जाने का इरादा रखता हूँ। २० अगस्त को लोगों में वहाँ की रातों (रात्रियों) हैं। उस से पहले वहाँ पहुँचना जरूरी है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२८) हाँसी, २१ अगस्त, १९०१

कल यहाँ की रातें हो गई हैं। मैं अब जल्दी लाहौर आने की कोशिश करूँगा। यहाँ भी सामान बहुत है और अति उत्तम मकान मेरे रहने के लिए मुझे मिला हुआ है। आपके चरणों का ध्यान रहता है।

—o—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२६) लाहौर, १० अगस्त, १८६७

मैं लाहौर आ गया हूँ। हाँसी में आती बार रस्ते में भी ठहरा था। आपकी कृपा से अधिकतर आप ही के असली स्वरूप में निवास था, बैरूनी तौर पर (बाहर देखने में) पत्र लिखने में यद्यपि कोताही (कसर) हो गई है। .. * रोटी (चावल) उनके हाँ से खाना मंजूर करा लिया है। इसलिए रोटी का फ़िक्र भी नहीं।

—— o ——

मौसाजी से स्वर्ण की घड़ी का उपहार

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३०) २ सितंबर १८६७

आपका केवल एक कार्ड हाँसी मिला था, और एक फिर लाहौर आनकर। आपने दास पर दया रखनी। शायद पुस्तक सा मैं लिख जाऊँ और लिखूँगा अवश्य, पर आजकल तो वेदान्त-विचार और एकान्त-सेवन पर जो (चित्त) लगा हुआ है। हाँसी के लोग आस्तिक थे, और कोई भाई वेदान्त को भी अच्छी तरह समझते थे। भिवानी के लोग अधिक सत्संगी थे। हिसार के लोग बहुधा आर्यसमाजी थे। पर खुशमूू (अच्छे स्वभाववाले) थे। मुझसे सब प्रीति करते थे। मामड़ (मौसा) जी ने मुझे एक सुनहरी घड़ी उपहार में दी है। आपका चर्चा सत्संगियों में बहुत आया था।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३१) ५ सितंबर, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। क्या कारण है? अगर आपकी इच्छा हो, तो आप यहाँ तशरीफ़ ले आवें। और अगर उचित समझें, तो रामजी को यहाँ रवाना कर दें। आपकी कृपा से दास बहुत

* इस पत्र का कुछ टुकड़ा कटा हुआ है।

आनंद म है। मुझे मालूम होता है कि मुझे जल्दी आपकी सेवा में और मुरारीवाला आना पड़ेगा।

—— ० ——

वेदान्त-अभ्यास से धारणा का बढ़ना और संकल्प सिद्धि की विधि

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३०) ८ सितम्बर, १८६७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। मैं कोई पाँच-छः दिन को चरणों में उपस्थित हूँगा। मैंने लाहौर में रहकर बीस या अधिक पुस्तकें अंग्रेजी म वेदान्त की इनी और विचारपूर्वक पढ़ी हैं। इन पुस्तकों में उपनिषदों और अन्य प्रामाणिक ग्रन्थों के भाग प्राय दिये हुए थे। ग्रन्थों के समझने से धारणा बहुत बढ़ती है, और वास्तविक आनन्द धारणा ही में है। स्मरण और संकल्प के बढ़ने से संकल्प सिद्धि होती है, जैसे बीज पृथिवी में गाडने से उगता है। आपको इस विषय में बहुत अनुभव है। माया और जगत् से चित्त हटा आन (उपराम होने) म जगत् सेवक बन जाता है, जैसे छाया की ओर पीठ करके सूर्य की ओर जाने से छाया पीछे चलती है। आप दास पर कृपादृष्टि रक्खा करें।

—— ० ——

निर्भय पद की प्राप्ति

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३३) ११ सितम्बर, १८६७

मैं संभवत परसों यहाँ म रवाना होकर सेवा में उपस्थित हूँगा। रामजी मेरे पास है। आपकी दया म कार्य बस तो निर्भय पद प्राप्त है अर्थात् निशान्त निर्भयता और सब दशा में आनंद की अवस्था है। आपकी दया हुई, तो गुसाँईजी मानंद सब जगह वह दरस रहेगी।

—— ०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३४) गुजरात, १४ सितम्बर, १८६७

मैं अभी गुजरात में हूँ। मकान का पता यह है "गुजरात (पंजाब)

कोठी पंडित किशोरीलाल, सीथेराम गोस्वामी।" पंडित किशोरीलाल के साथ में शादीवाल भी हो आया हूँ और एक और मुक़ाम 'क़िलादार' भी गया था। स्वामी शिवगणचन्द्र का आश्रम इस कोठी के समीप ही है। ये दिन आपकी दया से आनन्द में गुज़रे हैं। यहाँ एक-दो दिन और ठहरने का संकल्प है। आप दया रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०३५)　　गुजरात, २८ सितंबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनन्द हुआ। मेरा चित्त अब आने को चाहता है। आज यहाँ से रुख़सत हूँगा। सियालकोट एक-आध दिन ठहरकर जल्दी चल पड़ूँगा। यहाँ सत्संग का अत्यंत सुख पाया। भगत हरभजरायजी भी हरदम साथ रहे। लेक्चर भी यहाँ बहुत हुए। आप दयादृष्टि रखें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०३६)　　लाहौर, ४ अक्तूबर, १८९७

मैं यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गया हूँ। एक आदमी रख लिया है, दो रुपये महीना और रोटी पर, आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०३७)　　७ अक्तूबर, १८९७

कुछ दिन हुए कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। अभी मैंने कोई किताब नहीं ख़रीदी, रुपये के न मौजूद होने के कारण। बड़ी ख़ुशी की बात है कि आप दीवाली के मौक़े से पहले यहाँ तशरीफ़ ले आयेंगे।

—— o ——

चित्त निजस्वरूप के आनन्द में रहता है

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०३८)　　१० अक्तूबर, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मैं सपुर्दगी आपकी

सेवा में थोड़े दिनों पर रवाना कर दूँगा। आप दयादृष्टि रखा करें। आपकी कृपा से चित्त निज स्वरूप के आनन्द में रहता है। यही दौलत और धन सच्चा है। आपकी अनन्य-दया है।

—— ० ——

सुख केवल ब्रह्मनिष्ठ पुरुष को है

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३६) ११ अक्तूबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनन्द हुआ। बड़ी खुशी की बात है कि आप यहाँ पधारने का संकल्प रखते हैं। सुख केवल ब्रह्मनिष्ठ पुरुष को है।

—— ० ——

आजकल का अभ्यास

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४०) १८ अक्तूबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। निरंजन के बीमार होने का अफसोस है। आज हमारा अभिप्राय पूरा है। आजकल इस पर अभ्यास है —

'तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुञ्चथ अमृतस्यैष सेतुः'।

(मुण्डकोपनिषद्)

एकमात्र आत्मा को जानो, इसके सिवा और कोई बात कहनी मत कहो, सुनो, यही अमृत का सेतु (पुल) है।

—— ० ——

अपने पिता को पत्र*

मेरे परम पूज्य पिताजी महाराज! (१०४१) २५ अक्तूबर, १८९७

आपकी कृपा मुझ पर नित्य रहे। पत्र-प्रार्थना। आपका कृपा-

---

* [illegible]

पत्र प्राप्त हुआ, अत्यन्त आनंद हुआ। आपके पुत्र तीर्थराम का शरीर तो अब बिक गया। बिक गया राम के आगे। उसका अपना नहीं रहा। आज दीपमाला (दीवाली) को अपना तन हार दिया और महाराज को जीत लिया। आपको धन्यवाद हो। अब जिस वस्तु की आवश्यकता हो, मेरे मालिक (स्वामी) से माँगो। तत्काल वह स्वयं देंगे, या मुझसे भिजवा देंगे। पर एक बार निश्चय के साथ आप उनसे माँगो तो सही। उन्नीस-बीस (१९ २०) दिन के मेरे सारे काम बड़ी निपुणता से अब वह आप करने लग पड़े हैं, आपके क्यों न करेंगे। घबराना ठीक नहीं। जैसी उसकी आज्ञा होगी, वैसा बर्ताव में आता जायगा। महाराज हैं। हम गुसाइयों का धन हैं। अपने निज के सच्चे और अमूल्य धन का त्यागकर संसार की झूठी कौड़ियों के पीछे पड़ना हमको उचित नहीं। और उन कौड़ियों के न मिलने पर शोक करना तो बहुत ही बुरा है। अपने वास्तविक धन और सम्पत्ति का आनंद एक बार ले तो देखो।

—— ० ——

संपाधन पूर्वोक्त,   (१०८२)   १० अक्तूबर, १८२७

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है ? आप दया रखा करें। आपकी दया से दास अत्यंत आनंद में है।

—— ० ——

जब अपना आप हो गये तो पत्र किसको ?

संपाधन पूर्वोक्त,   (१०८३)   ८ नवम्बर, १८२७

महाराजजी! चाचाजी यहाँ आये थे और होकर चले गये हैं। यद्यपि मैंने

---

*भगवन्! आपको मगन से आज इक्वर नू अर्थात् सारे कुटुंब को जवाब मिला है। हमने आपको बुद्धिमान् समझकर इसको आपके सिपुर्द किया था। पर यह परिणाम निकला।" इसलिये यह पत्र भी भगवान् ने ही लिखा था और अब उसके पत्रों के साथ ही दे दिया गया है।

इतने दिन पत्र नहीं लिखा, परन्तु आपके स्वरूप में स्थित रहने के अतिरिक्त और कोई काम भी नहीं किया। जब अपना आप हो गये, तो पत्र किसको लिखें ?

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४४) १३ नवंबर, १८९७

स्वामी विवेकानंदजी के लेक्चर सुने। अत्यंत लायक (योग्य) हैं। इन दिनों अवकाश बहुत कम मिला। आपका कृपापत्र भी कोई प्राप्त नहीं हुआ। आर्यसमाज को बहुत नुकसान (क्षति) पहुँचा है।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४५) १६ नवंबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। स्वामी विवेकानंदजी अब चले गये हैं। मेरे पास इन दिनों खर्च इत्यादि की तंगी है। जब हो सकेगा, आपको पोथी भेज दी जावेगी।

किसी काम के लिए तीव्र संकल्प नहीं फुरता

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४६) २१ नवंबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। आनंद हुआ। कल पंचदशी सेवा में भेज दी जायगी। महाराजजी ! सचाई से इतर और कोई चीज आपकी सेवा में बनावट बनाकर कभी नहीं लिखी जाती। आपकी जरूरतें मेरी अपनी जरूरतें हैं। मगर मेरी अन्य जरूरतों का अब यही हाल है कि किसी काम के लिए तीव्र संकल्प नहीं फुरता। जैसा हो खाम आनंद रहता है। खुदमुख्तारी के संबंध में यह अर्ज (विनय) है कि कर्ता (या मुख्तार) बनकर बहुत कम चेष्टा की जाती है। और यह हालत आप ही की कृपा की बदौलत (कारण से) है। यह आपका अपना काम है। इसे ख्वाह अच्छा समझो, ख्वाह बुरा। जैसा गुजरौंवाला शरीर

आपका है वैसा ही लाहौरवाला। दोनों से काम लेना या न लेना आपके इख्तियार (अधिकार) में है। जब रुपया दिलवाओगे, किताब को जल्दी सेवा में भेज दूँगा।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४७) २६ नवंबर, १८९७

जिस दिन मैंने आपकी सेवा में इससे पहले का कार्ड रवाना किया था, उसी दिन उसी वक्त अकालगढ़ के एक गुसाईं विद्यार्थी के हाथ पंचदशी भी सेवा में भेज दी थी। आपने उसके पहुँचने की सूचना नहीं दी। क्या कारण है? आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें। बिलकुल आपका हूँ।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४८) ३० नवंबर, १८९७

अभी पोथी आपको मिली है कि नहीं? उस गुसाईं विद्यार्थी का नाम विश्वनाथ है। वह शायद अकालगढ़ चला गया होगा। अगर नहीं मिली तो कोई ख्याल न करें। उस व्यक्ति ने लाहौर आना है। वह यहाँ पढ़ता है और हमारा सम्बन्धी भी है। उससे लेकर रवाना कर दी जायगी। आपकी कृपा से अत्यंत आनंद रहता है।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४९) १ दिसंबर, १८९७

आपके पिछले दो कृपापत्र प्राप्त हुए, मगर वह कृपापत्र जिसका आपने जिक्र (चर्चा) किया है नहीं मिला। अभी कालिज से कुछ नहीं मिला। आज मदन की माता को साथ लेकर चाचाजी शायद आवें। भगत हरभजरायजी यहाँ हैं; एक दो दिन के आये हुए हैं और उनके ठहरने की अवधी का कुछ पता नहीं। आपकी कृपा से हरवक्त ही मस्ती

का-सा आलम (दशा) रहता है। आज-कल इस आनंद के कारण से पढ़ा भी नहीं जाता।

—— ० ——

स्वरूप में स्थिति और सन्यासावस्था का आच्छादन होना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५०) ९ दिसंबर, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। आपकी अत्यन्त दया है। बहुत आनन्द है।

मैं तो आप कुछ नहीं करता। उचित समय पर सब काम अपने आप हो रहे हैं। किसी दिन मस्ती और संसार की ओर से बेहोशी (अभाव धानता) बिना बुलाये आ जाये, तो मेरा क्या अपराध? बिना किये काम हो रहे हैं। सूर्य और शेषनाग तो हमारे दास हैं। हमारा काम तो शेषनाग की शय्या पर आराम (शयन) करना है। सूर्य को हम प्रकाशित करते हैं, और आज्ञाधीन बनकर वह चक्कर लगता है। स्वरूप तो सबका एक ही है, पर स्वरूप में स्थिति की जरूरत है। और तुर्यावस्था तथा समाधिकाल की कहीं महिमा नहीं आई? श्रीरामचन्द्रजी तथा श्रीकृष्णचन्द्र परमात्मा आप ऐसे महात्माओं के चरणों पर सिर (मस्तक) रखते रहे हैं। और याज्ञवल्क्य तथा अष्टावक्रजी की पदवी राजा जनक से बढ़कर है।

राजा जनक और कृष्ण परमात्मा तो बी० ए० श्रेणी के हैं, और याज्ञवल्क्य तथा अष्टावक्र एम्० ए० श्रेणी के। मान यद्यपि बी० ए० और एम्० ए० का एक समान होता है, मगर सचाई का छुपाना ठीक नहीं। जो बड़ा है, उसी को बड़ा कहना ही उचित है।

ग्रास के विषय अभी कुछ काल तक कोई चिन्ता तथा भय नहीं करना चाहिये। मलाईवाला दूध और वह भी मिसरी से मिला हुआ तो एक बार पीने को मिलते हैं, और बाजरा वा ज्वार की रोटी दूसरी ओर।

मैं यह नहीं कहता कि बाजरा तथा ज्वार की रोटी बुरी है (क्योंकि वह भी तो मैं ही हूँ), मगर मेरे उदर के अनुसार नहीं। मेरे उदर में तो दूध मिसरी ही पचते हैं।

अब राजाधिराज के काम बिना हाथ-पाँव हिलाये हो रहे हैं, तो वह मजदूरों के साथ मिलकर टोकरी क्यों ढोये ?

बल्टोही (बटलोही) में गरम खलानेवाले पानी में उबलने से बचने के लिये देगची (बटलोही) से बाहर जा पड़ना ही उचित है, देगची के साथ लगे रहना उचित नहीं।

श्रीशंकराचार्यजी ने गीता-भाष्य में अत्यन्त स्पष्ट रीति से सिद्ध कर दिखाया है कि अन्त में कर्म का नितान्त त्याग हो जाना चाहिये, यद्यपि आप उन दिनों वह थोड़ा बहुत कर्म करते ही थे। दास के लिये भी ऐसे दिन आने में अभी देर है।

कारा आनाँ कि ऐबे-मन जुस्तन्द।
रूयत ऐ दिलस्ताँ बवीदंदे॥

अर्थात्—ईश्वर करे जिन्होंने मेरे पाप (अपराध) देखे हैं, ऐ प्यारे! वह तेरा मुख देखें।

ईं खिर्क कि मन दारम, दर रहने-शराब औला।
व ईं दफ़तरे-बेमानी गर्क़े-मये-नाब औला॥

अर्थात्—यह कंथा जो मैं पहनता हूँ निजानन्दरूपी मदिरा के बदले गिरवी (रखी गई) है, और यह निरर्थक पुस्तकें उस आनन्दरूपी वास्तविक मदिरा में डूबी हुई हैं।

अन्त के पद का तात्पर्य यह है कि:—"यह किताबें, पुस्तकें, दफ़्तर इत्यादि नितान्त व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल और निकम्मे हैं, यदि उनके पढ़ने से यह परिणाम नहीं निकलता कि हम उनको शुद्ध मस्ती की शराब में ऐसा डाल दें कि वहाँ नितान्त गल-सड़ कर क्षीण हो जायें, और उनका

रूह व जान (सानि) है, पर शरीर बेचारा सर्वदा बदलता रहता है और प्रतिक्षण मृत्यु के समीप जा रहा है, और कदापि सुखी नहीं रह सकता।

आत्मा के विषय में तुम्हारा प्रश्न नहीं बन सकता, क्योंकि वह नित्य ही आनन्दघन है। और ऐसे ही किसी शरीर के विषय में भी तुम्हारा पूछना योग्य नहीं हो सकता, क्योंकि यह तो सदा ही महादु:खी है। तो फिर दशा किसकी पूछते हो?

ससार क्या है? इसके उत्तर में दृष्टान्त—

बच्चे थे चार मुस्तक़बिला जमों के।
अन्क़ीमा के पिसर हरसू दवाँ थे॥
अजब मल मल सुराबों में नहाये।
ज़मीं पर रोज़ के तारे लगाये॥
व फिर सबने की उन्क़ा पर सवारी।
ससी के सींग से की तीर मारी॥
अरे ओ आस्माँ! यह नील दे जा।
हमारी कुमक को आता है हव्वा॥

भावार्थ—भविष्यकाल के चार बच्चे थे। बन्ध्या (बाँझ) स्त्री के बालक सर्व ओर दौड़ रहे थे। मृगतृष्णा के जल में विचित्र रीति से मल-मलकर स्नान किया था। भाल (माथे) पर दिन के समय के तारे लगाये, और फिर हुमा पक्षी (जो कदापि आकाश से पृथिवी पर उतरता नहीं है) की पीठ पर हमने सवारी की। और शशक (खरगोश) के सींग से तीर चलाये। फिर आकाश को कहा कि ऐ आकाश! तू नीला रंग दे जा, नहीं तो तेरे मारने के लिये हमारी सहायता को हव्वा आता है। तात्पर्य यह कि जैसे यह सब पूर्वोक्त कथन असंभव, मिथ्या और कहनेमात्र हैं, ऐसे ही यह संसार मिथ्या और कहनेमात्र है।

——०——

सम्बोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०५४)　　　　२१ दिसम्बर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। हमें कल से बड़े दिन की छुट्टियाँ होंगी। गुजरात आश्रम से तीन चार पत्र आये हैं। वहाँ इतवार को जलसा है। मेरा अभी तक कोई किसी तरह का सकल्प नहीं। शायद शनिवार को यहाँ से चलूँ और आपकी सेवा में उपस्थित होकर गुजरात जाने का इरादा करूँ। आपकी इच्छा हो, तो आप भी वहाँ तशरीफ़ ले चलें। समय है कि गुजरात से आनकर आपके चरणारविंद में उपस्थित हो सकूँ। अभी कोई पक्का संकल्प नहीं। आपके असल स्वरूप की अकसी (प्रतिबिंबित) तस्वीर दिल में ज्यादा रहने लगी है। लेखक, राम

—— ० ——

गुरुजी से सपूर्ण अभेदता

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०५५)　　　　२४ दिसम्बर, १८९७

रात के आठ बजनेवाले हैं। व्यायाम कर चुका हूँ। अदर बिलकुल साफ़ है, और अत्यन्त आनन्द की अवस्था है। इस समय अत्यन्त प्रेम के साथ आप याद आते हैं। आप धन्य हैं, जिनकी कृपा से इस प्रकार आनन्द के समुद्र में स्नान होते हैं। आप पर बलिहार। संपूर्ण एकता (अभेदता) की दशा है। आपसे इस समय एक बाल-मात्र भी किसी बात में किञ्चित् भेद नहीं।

मन तो शुदम, तो मन शुदी, मन तन शुदम तो जाँ शुदी।
ता कस न गोयद बाद अज़ीं, मन दीगरम तो दीगरी॥

भावार्थ—मैं तू हुआ, तू मैं हुआ, मैं देह हुआ तू आप हुआ।
अब कोई यह न कह सके, मैं और हूँ तू और है॥

लेखक, आप स्वयं।

—— ०: ——

सन् १८६८ ईसवी

(इस वर्ष के आरम्भ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु साढ़े चौबीस वर्ष के लगभग थी।)

भ्रम से रोकने का यत्न

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५६) १ जनवरी, १८६८

आप कृपा करके यहाँ शीघ्र पधारिये। यहाँ आने पर किसी प्रकार विरोध नहीं रहेगा। मेरा और आपका प्रत्येक बात में इत्तफाक़ (एकमत) है। लोगों से हाल सुनकर या ऊपर की किसी कार्रवाई से कोई परिणाम कदापि न निकालना, जब तक कि सामने बातचीत करने से यह न देख लोगे कि सेवक बिलकुल आपका हमदिल (एकदिल) और हमख्याल (एकचित्त) है। लेखक, राम

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५७) २ जनवरी, १८६८

आजकल काम बहुत ज्यादा है, और सब तरह से आनंद है, आप आनंददृष्टि रखा करें।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५८) १५ जनवरी, १८६८

एक अंगरेजी ग्रंथ की कापी (जो ईशावास्योपनिषद् का उर्दू अनुवाद है) सेवा में भेजी है। यह वह पुस्तक है, जिसका यहाँ आपने जिक्र आया था (बातचीत हुई थी)। अत्यंत उत्तम अनुवाद है। कृपापत्र से कृतार्थ करते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०५९)　　　　१७ जनवरी, १८९८

आपका कृपापत्र मिला, आनंद हुआ। यह गुच्छियाँ* पंडित गोपाल दासजी दे गये थे, मेरी अनुपस्थिति में। ब्रज † कहता है कि यह पंडित देवकीनंदनजी के पिताजी को देनी हैं। आज-कल मेरे मकान के दो खाली चुबारों में दो व्यक्ति रहते हैं। एक तो स्वामी बोधानंदजी साधु हैं, दूसरा लाला अमीचंद हमारे कालिज का एक ग़रीब विद्यार्थी है।

दोनों लोकों का क्षेत्र हमारे बाग़ का कोणा है

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०६०)　　　　२५ जनवरी, १८९८

आपका कृपापत्र मिला, आनन्द हुआ।

हासले हर दो जहाँ खोशाए अज़ खिरमने-मास्त।
साहते कौनो मकाँ गोशाए अज़ गुल्शने - मास्त॥

भावार्थ—दोनों लोकों की आमदनी (आय) हमारे खलियान का एक गुच्छा (सिट्टा) है, और दोनों लोकों का क्षेत्र (मैदान) हमारे बाग़ का एक कोना है, अर्थात् हमारे स्वरूप के साक्षात्कार की अपेक्षा यह सब कुछ भी नहीं।

मेरा थोड़े से दिनों का एक दोहा है—

हे मृग, तेरी सुगन्ध सों भयो यह बन भरपूर।
कस्तूरी तो निकट है, क्यों धावत है दूर॥

अद्वैतामृतवर्षिणी सभा की स्थापना

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०६१)　　　　४ फ़रवरी, १८९८

कल अर्ज़ (भेंट) की जायेगी। यहाँ एक "अद्वैतामृतवर्षिणी सभा'

---

* एक प्रकार की बंजार की तरकारी है।

† ब्रज से अभिप्राय गोस्वामी ब्रजलाल है जो गोस्वामी तीर्थरामजी का भतीजा है।

स्थापित की है, जिसमें विशेष करके साधु-महात्मा ही प्रविष्ट हैं। इसके इकठ (एकत्र) होने का स्थान मेरा ही घर है, और प्रत्येक बृहस्पतिवार को इकठ होता है, जिसमें उपदेश इत्यादि भी होते हैं, पर केवल वेदान्त पर।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६२) १० फ़रवरी, १८६८

पेशावर सभा का जलसा फ़रवरी के अंत में है। उन्होंने मुझे बुलाया है। शायद मैं चला आऊँ। लेकिन बाबाजी की यह राय (सम्मति) है कि भजलाल को साथ ले आकर उसकी बहू को भी यहाँ से साथ लाना चाहिये। अगर आपके चित्त में संकल्प यहाँ आने को पुरा है, तो फ़ौरन तशरीफ़ ले क्यों नहीं आते ?

एकान्त-सेवन और अन्तर्मुख होने का फल

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६३) १४ फ़रवरी, १८६८

जिन दिनों पेशावर जलसा है, हमारे कालिज में छुट्टियाँ हैं। लाहौर सनातन धर्म का जलसा इसी बुद्धवार से शुरू होगा और रविवार तक रहेगा। अब आप तशरीफ़ ले आओ। भाई गुरुदास आज यहाँ लाहौर आया है। आपका इंतज़ार है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि जो आनन्द एकान्त-सेवन और अंतर्मुख होने में है, और कहीं नहीं। और करोड़ों अश्वमेध-यज्ञ किये हुए हों, तो हरदम स्वरूप में निष्ठा रहती है।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६४) १६ फ़रवरी, १८६८

यहाँ वर्षा बहुत हुई है। मौसम अच्छा है। आप भी कृपा करके इस अच्छे मौसम (ऋतु) को और अच्छा कर दो। और तशरीफ़ ले आओ।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६५) २ मार्च, १८९८

मैं परसों का पेशावर मे आ गया हूँ। जलसा समाप्त हो गया है। आनंद से सब काम संपूर्ण हुए। आयन्दा लैक्चर आदि देने का इरादा मौक़ूफ़ किया। घड़ी मुझे पंडितजी ने वापिस दे दी है। आपकी कृपा से सब तरह से आनंद है। आप दया रखा करें। आप कृपापत्र जल्दी अरसाल फ़रमावें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६६) ४ मार्च, १८९८

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। पेशावर का जलसा २८ फ़रवरी तक रहा। मगर मैं जलसे के पूरे दिन शरीक नहीं रह सका, छुट्टियों के काफ़ी न होने के कारण। आती बार जिस दिन रेल में रहा, उस दिन कालिज लगा था, बल्कि एक दिन की गैरहाज़िरी रही। इस कारण गुजराँवाले उतरने का मौक़ा (अवसर) नहीं मिला। मुआफ़ फ़रमायें। साथ इसके गुजराँवाले में केवल आप ही के साथ दिली प्रीति है, और कोई कशश (आकर्षण) वहाँ नहीं। और आपके दर्शन तो आपकी दया से होते ही रहते हैं। साथ इसके वहाँ उतरने में एक रुकावट है, जो आपको विदित ही है। आज अर्घ (भेंट) की गई है।

—— ० ——

बाहर होली और भीतर समाधि

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६७) ८ मार्च, १८९८

मिडिल (परीक्षा) का नतीजा कल निकल गया। मेरे मकान के समीप इस समय बड़ा रौला (शोर) पड़ रहा है, होली के कारण। पर आपकी कृपा से दिल के मकान में (चित्त के भीतर) कोई किसी प्रकार का शोर-शराबा नहीं। आनन्द है। जिस प्रकार शिवजी के चारों ओर भूत-प्रेत रौला और बावेला (शोर-गुल) मचाते रहते हैं, पर वह आनन्द

की समाधि में निर्विघ्न मग्न रहते हैं, इसी प्रकार संसार के जीव अज्ञान की कालिमा और गुलाल मुखों पर मले अपने निज स्वरूप को छुपाकर नित्य शोर मचाते रहते हैं। इस सबके होते हुए शिवस्वरूप अपने आपमें किसी क़दर निवास होने के कारण क्षीरसमुद्र में रहने का सुख है।

अब आपके सेवक को एफ० ए० के गणित-शास्त्र की परीक्षा का भी परीक्षक बनाया गया है, फ़ारसी और संस्कृत-भाषा के विद्यार्थियों के लिये।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६८) १५ मार्च, १८९८

मैं निकट ही एक सविस्तर पत्र आपकी सेवा में भेजता हूँ। आपकी कृपा से बहुत आनद है।

जिनके पिया परदेश बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती।
मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं, न कहीं आती न जाती॥

—— ० ——

मिजाज पुरसी (प्रकृति-सम्बन्धी प्रश्न) का उत्तर

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६९) १८ मार्च, १८९८

आपके कृपापत्र प्राप्त हुए। अत्यन्त आनन्द का कारण हुए। एक राजा ने एक महात्मा से पूछा कि आपकी तबीयत (प्रकृति) कैसी है ? उन्होंने उत्तर दिया कि—"जिसकी इच्छा बिना एक पत्ता न हिल सके, जिसकी आज्ञा सूर्य और चन्द्र मानें, नदियाँ और पवन जिसकी आज्ञा को एक क्षणमात्र के लिये भी न तोड़ सकें, जहाँ चाहे खुशी भेज दे और जहाँ चाहे शोक भेज दे। और ऐ राजन्! जिसकी आज्ञा के बिना तेरे मुख के दाँत हिल नहीं सकते, और जिसकी इच्छानुसार राजाधिराजों की नाड़ियों में रुधिर चक्कर लगाता है, ऐसे सामर्थ्यवान् (सर्वशक्तिमान्) के आनन्द का क्या ठिकाना है ? हे राजन! तू आप ही अंदाज़ा लगा ले (अनुमान कर ले)।"

राजा भोजा—धन्य हो, ऐसा ही है। जिसका अल्पज्ञ भाव उठ गया है, और जिसकी जीव-बुद्धि नष्ट हो गई है, और ब्रह्ममय हो गया है, वह प्रजापति (ब्रह्मा) स्वरूप बना हुआ समस्त जगत् के सारे काम कर रहा है। और उसकी सारी इच्छायें नित्य पूरी हो रही हैं। और आनन्द का समुद्र है।

"अहो अहं। यस्य मे नास्ति किञ्चिन।
अथवा यस्य सर्वं यद्वाङ् मनसि गोचरं॥"

भगवान् शंकर कहते हैं—"वाह कैसा सुन्दर और आश्चर्य है मेरा अपना आप। कि जिस मेरे अपने आपका जितना यह जगत् है (जो कुछ देखने, सुनने और खयाल में आ सकता है), यह सब कुछ जिस मेरे अपने आपका है (परन्तु ऐसा होत हुए भी मेरे अपने आपका कुछ नहीं है), ऐसा जो मैं हूँ, उसके तइ मेरा बहुत बहुत नमस्कार और प्रणाम है।"

आजकल काम बहुत अधिक रहा, इम्तहानों के निकट होने के कारण। कालिज की परीक्षाओं के लिए परचे भी बनाने थे। साथ इसके विद्यार्थियों की दिक्कतें भी निवारण करनी पड़ती हैं। मगर चित्त एकान्त में रहा।

—— ० ——

सम्बोधन पूर्वोक्त,		(१०७०)		२२ मार्च, १८९८

बाबाजी बहुत बीमार हैं, फोड़ों के कारण से। आप अगर उचित समझें, तो जाकर उनकी खबर ले आओ। मैं भी, आशा है कि आऊँगा, मगर इन दिनों आपका मुरारीवाले अकेले जाना ही दुरुस्त है। बी० ए०, एम्० ए० आदि के इम्तहान हो रहे हैं। मुझे वहाँ निगरानी (देख-भाल) के लिए जाना पड़ता है। इसके बाद इन्ट्रैंस के परचे भी आ जाते हैं। फिर भी मैं जल्दी आने की कोशिश करूँगा।

—— ० ——

लोगों का परिचय कम करना

संबोधन पर्वोक्त, (१०७१) ४ अप्रैल, १८९८

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। परचे बहुत हैं। परन्तु देखे अभी थोड़े हैं। विशेषतः सत्संग के कारण परचे कम देखे जाते हैं। पर लोगों का परिचय मैं दिन प्रति दिन कम कर रहा हूँ। आपसे मिलने को जी (चित्त) चाहता है, बैसाखी (मेला) को इकट्ठे कहीं जायें, तो अति उत्तम हो।

सब वेद-वेदांग हमारे भीतर हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७२) १७ अप्रैल, १८९८

कटास* की यात्रा ने जो उपदेश दिया, यह अत्यन्त ठीक है। जो सुख एकान्त-सेवन और निजधाम में है, वह कहीं भी नहीं।

"हे मृग, तेरी सुगंध सो भयो यह वन भरपूर।
कस्तूरी तो निकट है, क्यों धावत है दूर॥"

अपना ही आनन्द जगत् के पदार्थों में आनन्द भावना कर दिखलाता है। सब वेद-वेदांग हमारे भीतर ही हैं।

मिशन कालिज के बी० ए० श्रेणी की परीक्षा का परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७३) २२ अप्रैल, १८९८

आज बी० ए० का नतीजा निकला है। मिशन कालिज के विद्यार्थी सब कालिजों से अधिक पास हुए हैं। और मेरा एक विद्यार्थी पंजाब

---

* कटासराज एक तीर्थ का नाम है जो पिण्डदादनखाँ नगर और ज्योरा की निमक की खानि के समीप है। यहाँ प्रतिवर्ष बैसाखी के दिन मेला लगता है, और इस मेले में साधु-महात्मा बहुत दूर-दूर से आकर एकत्र होते हैं।

में तीसरा नम्बर रहा है। और जो विद्यार्थी प्रथम रहा, वह एक वर्ष और आठ मास मेरे पास हमारे कालिज में पढ़ता रहा, पीछे किसी साहब से लड़कर आर्या कालिज में जा प्रविष्ट हुआ था। और जो विद्यार्थी द्वितीय रहा, वह भी मेरा मित्र गवर्नमेंट कालिज में पढ़नेवाला था। यह सब आपकी कृपा है। दया रखा करें। गणित-शास्त्र में इस बार तेईस (२३) में से केवल तीन फ़ेल हुए हैं।

—— ० ——

एकान्त-सेवन में अधिक आनन्द

संयोधन पूर्वक्त, (१०७४) २७ अप्रैल, १८९८

पिछले दो-तीन दिन (तबीयत) किञ्चित् तंग (खराब) रही है। ऋतु कठिन (प्रतिकूल) है। आज कुछ सेहत (स्वास्थ्य) प्रतीत होती है। सर्वसाधारण के मेल-मुलाक़ात की अपेक्षा एकान्त-सेवन में अधिक आनन्द और सुख है।

—— ० ——

तीक्ष्ण वस्तुओं का त्याग और एफ़० ए० का परिणाम

संयोधन पूर्वोक्त, (१०७५) २९ अप्रैल, १८९८

मुझे अब पहले की अपेक्षा रेशा (ज़ुकाम) कम है। तीक्ष्ण वस्तुओं का सेवन आज कल नितान्त त्याग देना चाहिये। सब विकार इनसे उत्पन्न होते हैं। इनसे तृषा लगती है और अधिक जल सब बहुत हानिकारक होता है। एफ़० ए० की वार्षिक परीक्षा का रिज़ल्ट (नतीजा) निकला है। मिशन कालिज का विद्यार्थी पंजाब में प्रथम रहा है, और यहाँ से विद्यार्थी भी अन्य सब कालिजों की अपेक्षा अधिक पास हुए हैं।

—— ०: ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७६) १० मई, १८६८

अब के आप तशरीफ़ ले गये हैं, कोई कृपापत्र आपकी ओर से प्राप्त नहीं हुआ। आपकी सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है, लिख भेजें।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७७) १२ मई, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। हरभगवान् और ठाकुरदास को कालिज में दाखिल कर लिया है। उनकी फीस इत्यादि का प्रबंध हो जायगा। लड़के अच्छे हैं, आपकी बहुत तारीफ़ (प्रशंसा व उपमा) करते हैं।

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७८) १७ मई, १८६८

मैं आशा करता हूँ कि मैं गुजराँवाला आऊँगा। मगर यह नहीं मालूम कि कब आऊँगा। मुहब्बतवालों के लिए अब भी गुजराँवाले ही हूँ।

—— ० ——

चित्त अचल

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७६) २५ मई, १८६८

आपका कृपापत्र मिला, आनन्द हुआ। आपकी दया से चित्त तो दिन प्रति दिन अचल होता जाता है। इसमें किञ्चित् अंतर नहीं आता। मेरे शारीरिक व्यवहार से चित्त-वृत्ति का अन्दाजा लगाना ठीक नहीं। पिछले दिनों काम किञ्चित् विशेष रहा।

—— ० ——

सरपूजा खाने का फल

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८०) ३० मई, १८६८

आपकी दया से बहुत आनन्द है। सरपूजा खाना दिमाग़ का थाए करने के लिये अति लाभदायक प्रतीत होता है, परन्तु अन्त में अत्यन्त

हानिकारक सिद्ध होता है। प्रकृति को तंग रखता है और उदर को बिगाड़ता है।

—— o: ——

गणितशास्त्र पर गुसाईं तीर्थरामजी का लेख *

संशोधन पूर्वोक्त, (१०८१) १ जून, १८९८

जो पुस्तक मैंने बनाई है, उसकी एक प्रति भी मेरे पास नहीं है। लाहौर में अनारकली बाजार के "लाला रामकृष्ण ऐंड संस" अँगरेजी पुस्तक बेचनेवाले की दुकान पर बिकती है। दुकान का पता यह है—Messrs Rama Krishna & Sons, Anarkali, Lahore। पुस्तक का मूल्य चार आना है। पुस्तक पर सहित विज्ञापन की छपाई इत्यादि के एक सौ पचीस (१२५) रु० खर्च आये हैं। एक सौ प्रति पुस्तक को मैंने मुफ्त बाँटी है। भारतवर्ष के अँगरेजी गणितज्ञों ने अत्यन्त उत्तम समालोचनाएँ इसकी प्रशंसा में लिखी हैं।

—— o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१०८२) ५ जून, १८९८

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। आपकी दया से आनंद है।

—— :o ——

संशोधन पूर्वोक्त, (१०८३) १६ जून, १८९८

बरेली के एक अति विद्वान पंडित लाहौर में आये हुए हैं। उनके दो व्याख्यान भी हुए। मदनलाल की माता एक विवाह के सम्बन्ध में पेशेके

* यह पुस्तक 'How to excel in Mathematics' है जो पहिले अँगरेजी विभाग चौथा (English Complete Works of Rama vol. IV) में छपाई गई थी अब अँगरेजी फिर बाद और अलग पुस्तकाकार में भी प्रकाशित की गई है।

में है। मुझे फ़स्ल तप (ज्वर) हो गया था। अब सेहत (स्वास्थ्य) है। आपका कृपापत्र मिला।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८४) २७ जून, १८९८

आज कल कालिज के इम्तहान शुरू होनेवाले हैं, इसलिए काम बहुत है। बात जो आप कहनी चाहते हैं, चाहे किस तरह कह दें, जिस तरह आप आनंदपूर्वक करनी चाहें कर दें।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८५) १ जुलाई, १८९८

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। उस लड़के की सारी कैफ़ियत (विवरण) मुझे लिखो, या आकर बता जाओ। जो कुछ मेरी ताक़त (शक्ति या अधिकार) में होगा, अवश्य कर दूँगा।

बख़्याबे ख़ुद दर आ ता क़ियमता-ए-स्ताहनियाँ बीनी।
बर्मी दर आयना ता आतशे-सदख़ार्मों बीनी॥

घट में घट जाना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८६) हरिद्वार, १४ अगस्त, १८९८

आज † ठाकुरदास को लाहौर भेज दिया है। इतने दिनों में यहाँ के देखने योग्य मुक़ामात (स्थान) देखे हैं। सन्तों के दर्शन किये हैं। अब

---

† यह ठाकुरदास गुजरांवाले का विद्यार्थी था। मिशन कालिज लाहौर में गुसाईं तीर्थरामजी के पास पढ़ता था। निर्धन होने के कारण गुसाईंजी ने इसकी फ़ीस भी कालिज-कमेटी से आधी मुआफ़ करवा दी थी। इसका कोई भाई इसका हमजमाअत (सहपाठी) था उसकी फ़ीस भी आधी मुआफ़ करवा रखी थी। इसलिये यह दोनों प्रतिदिन गुसाईंजी के पास आया-जाया करते थे। इस बार गुसाईंजी ठाकुरदास को हरिद्वार अपने साथ ले गये थे। इनका घर गुजरांवाले में भगत धन्नारामजी के घर के पास है। सुना जाता है कि आजकल यह प्यारे गुजरांवाले खालसा स्कूल में हेडमास्टर है।

रखकर (गुप्त होकर) अपने घर के द्वार बन्द करके अपने घट में घट आने को जी (चित्त) चाहता है। महाराजा जम्मू की हवेली में ठहर रहा हूँ। मेरे रहने का कमरा हरिद्वार में सबसे उत्तम है।

—— o ——

घर आने की प्रार्थना पर उत्तर

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०८७)　हृषीकेश, २२ अगस्त, १८९८

एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, जिसमें घर आने के लिये प्रेरणा थी। इस पत्र को लेकर मैंने फ़ौरन् परमधाम को भेज दिया, अर्थात् श्रीगंगाजी में प्रवाह दिया। यदि किसी ख़ानगी (गृहस्थी या कुटुम्ब सम्बन्धी) मुआमले (कामधंधों) के शोक की बाबत पूछो, तो आपकी अत्यन्त कृपा है।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना॥

अर्थ—इन पदार्थों के आदि और अन्त का पता नहीं। केवल मध्य-मध्य का पता है, ऐसी अवस्था में शोक किस काम का?

रहा लोगों के गिले उलाहने, उनके विषय में यह निवेदन है—

कफ़न बाँधे हुए सिर पर तिरे कूचे में आ बैठे।
हजारों ताने अब हम पर लगा ले जिसका जी चाहे॥

भावार्थ—ऐ प्यारे! तेरे द्वार पर शव-वस्त्र सिर पर ओढ़े हुए हम बैठे हैं (तेरे निमित्त मरने के लिये उद्यत हैं)। अब हमें कोई चिन्ता नहीं, जिसको चित्त चाहे, अनन्त उलाहने या ताने लगाये।

हे भगवन्! आप ही की आज्ञा पालन कर रहा हूँ। अपने घर (निज धाम) को जा रहा हूँ। आपके असल (वास्तविक) स्वरूप से मिल रहा हूँ। पंजाब जो पाँच नदियों (रक्त, वीर्य, मूत्र, स्वेद, राम) से मिलकर बना हुआ हमारा शरीर है, इसके अभ्यास को त्यागकर ही अपने असल (वास्तविक) धाम (हरिद्वार) की प्राप्ति होती है।

इस समय रात के बारह बज चुके हैं। न आदमी है, न आदमी की जात, अन्दर में अनहद (अनाहत) की घनघोर है और बाहर से श्रीगंगाजी ने अनाहत की गरज लगा रक्खी है। भीतर से ठंढ है और बाहर में आनन्द है। यार (अपने स्वरूप) से मिलनेवाली अँधेरी रात ने जगत् के नाम-रूप पर कालिमा फेर रक्खी है, अर्थात् जगत् को बाहर और भीतर दोनों ओर से शून्य कर दिया हुआ है। इस अँधेरी रात्रि में क्या भीतर, क्या बाहर ? सम्मुख झलकते हुए अमृत के दरया (नद) बह रहे हैं। ऐसे समय पर जगत् (संसार) का स्मरण कराना ? हाय शोक !

"ऐ सिकन्दर ! न रही तेरी भी आलमगीरी।
कितने दिन आप जिया जिस लिये दारा मारा ॥"

भावार्थ—सिकंदर ! तेरी भी विश्वविजय अन्त में न रही, यह बता, कितने दिन तू आप जिया है जिस (क्षणभंगुर जीवन) निमित्त तूने दारा मारा।

ऐसे अवसर पर सिकंदर का अमर जीवन एक ओर था, और जवाना मर्ग (जवानों की मृत्यु) दूसरी ओर।

चि' निस्बत खाक रा ब आलिमे-पाक।

भावार्थ—पर आप जैसे शुद्धात्मा महापुरुष की उस विषयगामी तथा देहाध्यासी सिकन्दर से भला क्या तुलना !

यारवालों को कह दो कि मिलना उस केन्द्र पर ही उचित है, जहाँ पर मिलन से फिर जुदाई न हो।

स्फुरत्स्फारज्योत्स्नाधवलितवले क्यापि पुलिने
सुखासीनाः शान्तध्वनिषु रजनीषु द्युसरितः
(भर्तृहरि-वैराग्यशतक)

अनुवाद—जहाँ पर चमकता और फैली हुई चाँदनी के सदृश जल है,

ऐसे गंगातट पर आराम से (सुखपूर्वक) बैठा रहूँ। जब सारे शब्द (अथवा ध्वनियाँ) बंद हों तब रात्रि में शिव शिव (प्रणवरूप) हृदयवेधक ध्वनि द्वारा सांसारिक दुःख और शोक से मुक्त होकर आनन्दाश्रुओं से नेत्रों का होना सफल करूँ। ऐसे मेरे दिन कब आवेंगे ?

राजा लोग, राज-पाट का त्याग करके, ऐसे आनन्द की इच्छा करते थे। देवतागण स्वर्ग, वैकुण्ठ का ध्यान छोड़कर इस गंगा-तीर की कामना रखते थे। तो मेरी ही क्या प्रारब्ध फूट गयी है कि इस प्राप्त हुए आनन्द को छोड़कर झूठे पदार्थों के पीछे दौड़ूँ ?

लोग तीर्थों पर आया करते हैं। तीर्थ कभी लोगों के पास चलकर नहीं जाते। घरवालों का कहना था कि तीर्थ में रमण करनेवाला जो तीर्थ-राम परमात्मा है, उसके चरणों में चलें, तब तीर्थराम गुसाईं का मिलाप हो सकता है, नहीं तो नहीं। जब तक हमारे घर में सत्संगरूपी गंगा न बहेगी, मेरा वहाँ चित्त नहीं लगेगा, एक पल भर नहीं ठहर सकूँगा।

मर हुओं को मिलने के लिए लोग उनको संदेशा भेजकर अपने पास नहीं बुला सकते। अलबत्ता आप मरकर उनसे मिल सकते हैं। हम तो मर चुके। जीते जी ही मर चुके। घरवाले हमको बुलाने का यत्न न करें। हम जैसे हो जायेंगे, तो तब मेल बहुत सुगमता से हो सकता है।

मुरालीवाला अगर मुरारीवाला होकर तीर्थ बन जाये, तो तीर्थों का रमणीक बनानेवाला तीर्थराम वहाँ आ सकता है। सत्त्वगुण या गंगा वहाँ न हो, हमारा वहाँ होना कठिन है।

जब सब ही ने अंत में सूखे फूल (हड्डियाँ) बनकर गंगा में आना है, तो क्यों नहीं अपने हरे फूल की न्याईं शरीर का दान-गंगा में आनंद पूर्वक प्रदान करते ? अथवा अपनी अस्थियों को इंधन (लकड़ी) बनाकर,

मज्जारूपी घृत डालकर, प्राणरूपी वायु (पवन) से ज्ञानाग्नि में स्वाहा कर देते और इस प्रकार नरमेध का पुण्य लेते ?

यहाँ आठ पहर में केवल रात्रि को संतों के दर्शन के लिये कभी बाहर निकलना होता है। नहीं तो कोई आना-जाना नहीं। और आठ दिन में केवल रविवार को ब्राह्मणों और संन्यासियों की सभा में व्याख्यान देने के लिये जाना पड़ता है। और कहीं नहीं।

पाँच-छे दिन हुए, कोई सौ के लगभग महात्माओं को भोजन कराया था। अत्यंत आनंद हुआ। यहाँ सत्त्वगुण का प्रभाव था। इन दिनों बालमुकुन्द और ठाकुरदास दोनों को रवाना कर दिया हुआ है।*

आपका अपना आप,
तीर्थराम

हृषिकेश, ब्रह्मपुरि, तपोवन, लक्ष्मणझूला के समीप।

(१०८८) १० अगस्त, १८९८

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

---

* गुसाईं तीर्थरामजी तीव्र वैराग्य-वश हुए इस बार हरिद्वार हृषीकेश और तपोवन एकांत अभ्यास के लिये आये थे। उनके पिताजी ने कुछ पत्र इनको लिखे होंगे जब उनके एक पत्र का भी उत्तर उनको न मिला तो उन्होंने भगत धन्नारामजी को पत्र लिखने के लिये प्रार्थना की होगी जिस पर भगतजी ने अपनी ओर से बहुत युक्तियुक्त विस्तार-पूर्वक गुसाईंजी को वापस घर में लौट आने के लिये लिखा होगा जिसके उत्तर में यह पत्र है। पर इस उत्तर के पश्चात् फिर गुसाईंजी को समझाने में भगतजी को गुरु उस पदवी तथा उपमा से नहीं संबोधन किया जो आज तक वह सन् १८८८ से करते आये थे। और अल्सा बोहतार नामी उर्दू लेख में (जो उर्दू कुल्लियात-राम जिल्द दूसरी में प्रकाशित है) राम ने स्वयं अपनी लेखनी से इस उत्तर को अधिक विस्तार से दिया है।

अर्थ—पूर्ण वह (लोक) है, पूर्ण यह (लोक) है, पूर्ण से पूर्ण निकाल लिया जाय, पूर्ण का पूर्ण लिया जाय, तो पूर्ण ही बाक़ी रह जाता है।

क्या हम अकेले हैं ?

(१) तनहास्तम तनहास्तम दर येहरों-बर यक्तास्तम।
जुज़ मन नबाशद हेच शै मन आस्तम मन मास्तम ॥

भावार्थ—(१) मैं अकेला हूँ, मैं अकेला हूँ पृथिवी और समुद्र में भी अद्वितीय हूँ। मेरे से अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु है नहीं। मैं ही भूमि हूँ, मैं ही जल हूँ।

कोई विद्यार्थी साथ नहीं, नौकर पास नहीं, गाँव बहुत दूर है। मनुष्य का नाम काफ़ूर है। अरण्य है, सुनसान है। सारी भरी रात, आधी इधर, आधी उधर है, पर क्या हम अकेले हैं ?

अकेली हमारी सत्ता ! अभी वर्षा लौंडी स्नान करा कर गयी है। हवा बाँदी (दासी) चारों ओर दौड़ रही है। यह किसी रफ़ीक़ (साथी) ने वृक्षों में से आवाज़ दी "हाज़िर जनाब" (अर्थात् सेवक उपस्थित है)। (मालूम होता है, सिंह-नाद है अथवा हाथी की चिंघाड़ है)। सैकड़ों नौकर हमारे मक्खियों में दबे बैठे हैं, बिलों में शयन कर रहे हैं।

हम अकेले क्यों ?

पर हाँ, हम अकेले हैं। यह आदम-बादम (नौकर-चाकर) कोई नहीं, हम ही हैं, यह वृक्ष नहीं हैं, हम ही हैं; पवन नहीं, हम ही हैं, गंगा कहाँ ? हम हैं, यह चाँद नहीं, हम हैं, खुदा (ईश्वर) नहीं, हम हैं; प्रियवर कौन ? हम हैं, मिलाप क्या ? हम हैं। अरे "अकेले" का शब्द भी हमसे दौड़ गया।

(२) ई नारद-श्रो ई नारदवनो, नीज ई सदरा।
अराजारो कोहस्तानो शयो-रोज़ो-नगारा ॥

ईं मारो-माशूक़ मसालो धमे हिज्राँ।
माह अख़्तरमो गंगा-जलो-अबरो-महे-ताबाँ॥
काग़ज़ क़लम चशमत व मज़मून सो ख़ुद ओ।
ईं जुमलगी रामस्त मरा दाँ मरा दाँ॥

भावार्थ—यह गरज, यह गरजनेवाला, और यह अरण्य, वृक्ष, पर्वत, रात, दिन, प्रेमरका (ज़ुल्फ़, माल) और प्यारा, मिलाप और विरह का समय, चाँद, तारे, गंगाजल, बादल और चमकता हुआ चाँद, काग़ज़, लेखनी और मेरे नेत्र, विषय और ऐ प्यारे ! तू स्वयं, यह सबके सब राम है, ऐसा मुझको तू समझ, ऐसा मुझको तू समझ।

हमारा पता पूछो, तो यह है

निशानम बेनिशाँ मे दाँ। मकानम दर क़लब मे दाँ।
जहाँ दर दीदहम पिन्हाँ। मरा जोयन्द गुस्ताख़ाँ।

भावार्थ—मेरा निशान बेनिशान समझ। मेरा स्थान अपने हृदय में देख। जगत् मेरी दृष्टि में छुपा है। मुझको गुस्ताख़ लोग (अपने से बाहर) ढूँढते हैं।

आत्मसाक्षात्कार की अवस्था व स्थान

मन का मानसरोवर अमृत से लबालब (भरपूर) हो रहा है, और आनन्द की नदी हृदय में से बह रही है। प्रत्येक राम कृतकृत्य है। विष्णु के भीतर सत्त्वगुण इतना भरपूर हुआ कि समा न सका। इस सत्त्वगुण के सरोवर (धारा) में चरणों द्वारा गंगा जल बनकर सत्त्वगुण बह निकला। ठीक उसी प्रकार से इस समय

नारा (जल या सत्त्वगुण) में शयन करनेवाला नारायण
तीर्थ (जल रूप सत्त्वगुणों) में रमण करनेवाला } तीर्थराम नारायण
तीर्थों को रमणीय (शोभायाला) बनानेवाला }

सत्वगुण या आनन्द से भरपूर हो रहा है। उसका महानंद समेटे से सिमटता नहीं। परमानंद की सरिता या स्रोत बनकर यह तीर्थराम साक्षात् विष्णु, पूर्णानन्द की धारा (नदी) जगत् को कृतार्थ करने के लिये भेज रहा है। खुशहाली (प्रसन्नता) और फ़ारगुलबाली (विश्रामता) की विमल-वायु संसार को भेज रहा है। कौन कहता है, यह बेकार (निष्कर्मी) बैठा है ? मैं सच कहता हूँ, इस तीर्थराम के दर्शनों से कल्याण होता है, यह गंगा है, यह तुर्या राम है, यह राम है।

धन्य भूमि धन्य काल देश यह।
धन्य माता, धन्य कुल, धन्य समधी॥
धन्य धन्य लोचन करहिं दरस जो।
राम विहारी सर्वज्ञ समधी॥

मेरी

बाँकी अदायें देखो ! चाँद का सा मुखड़ा पेखो (टेक)
वायु में, बहते जल में, बादल में मेरी लटकें।
तारों में, नाज़नीं में, मोरों में मेरी मटकें॥ (टेक)
चलना ठुमक-ठुमक कर बालक का रूप धरकर।
घूँघट अगर उलटकर, हँसना वह बिजली बनकर॥ (टेक)
शबनम गुल और सूर्य, चाकर हैं तेरे दर के।
यह आन बान सब धज, ऐ राम ! तेरे सदके॥ (टेक)
जगत् सारा वार डारूँ, राम तेरे नाम पर।
इन्द्र ब्रह्मा वार डारूँ, राम ! मेरे धाम पर॥

मैं ऐसा खूबसूरत (सुन्दर) हूँ ! मेरी मोहनी सूरत, मेरी मोहनी सूरत, मेरी झलक, मेरी ढलक, मेरा हुस्न (सौंदर्य), मेरा [illegible]

ईं मारो-माशूक़ बसालो दमे-हिज्राँ।
यार अन्जमो गंगा-जलो-अबरो-मदे-तार्बां॥
काग़ज़ क़लम चश्मत व मजमून् तो खुद जाँ।
ईं जुमलगी रामस्त मरा दाँ मरा दाँ॥

भावार्थ—यह गरज, यह गरजनेवाला, और यह अरण्य, वृक्ष, पर्वत, रात, दिन, भ्रमरका (ज़ुल्फ़, बाल) और प्यारा, मिलाप और विरह का समय, वायु, तारे, गंगाजल, बादल और चमकता हुआ चाँद, काग़ज़, लेखनी और मेरे नेत्र, विषय और ऐ प्यारे! तू स्वयं, यह सबके सब राम हैं, ऐसा मुझको तू समझ, ऐसा मुझको तू समझ।

हमारा पता पूछो, तो यह है

निशानम बेनिशाँ मे दाँ। मकानम दर क़ल्ब मे ज्वाँ।
जहाँ दर दीदहअम पिन्हाँ। मरा जोयन्द गस्ताख़ाँ।

भावार्थ—मेरा निशान बेनिशान समझ। मेरा स्थान अपने हृदय में देख। जगत् मेरी दृष्टि में छुपा है। मुझको गुस्ताख़ लोग (अपने से बाहर) ढूँढ़ते हैं।

आत्मसाक्षात्कार की अवस्था व स्थान

मन का मानसरोवर अमृत से लबालब (भरपूर) हो रहा है, और आनन्द की नदी हृदय में से बह रही है। प्रत्येक रोम कृतकृत्य है। विष्णु के भीतर सत्त्वगुण इतना भरपूर हुआ कि समा न सका। उस सत्त्वगुण के सरोवर (धारा) से चरणों द्वारा गंगा जल बनकर सत्त्वगुण बह निकला। ठीक उसी प्रकार से इस समय

नार (जल या सत्त्वगुण) में शयन करनेवाला नारायण

तीर्थ (जल रूप सत्त्वगुणों) में रमण करनेवाला } तीर्थराम नारायण
तीर्थों को रमणीय (शोभावाला) बनानेवाला }

सम्यगुण या आनन्द से भरपूर हो रहा है। उसका महानंद समेटे से समिटता नहीं। परमानंद की सरिता या स्रोत बनकर यह तीर्थराम साक्षात् विष्णु, पूर्णानन्द की धारा (नदी) जगत् को कृतार्थ करने के लिये भेज रहा है। खुशहाली (प्रसन्नता) और फ़ारगुलबाली (विश्रामता) की विमानस्थायु संसार को भेज रहा है। कौन कहता है, यह बेकार (निष्कर्मी) बैठा है ? मैं सच कहता हूँ, इस तीर्थराम के दर्शनों से कल्याण होता है, यह गंगा है, यह तुर्या राम है, यह राम है।

धन्य भूमि धन्य काल देश यह।
धन्य माता, धन्य कुल, धन्य समधी॥
धन्य धन्य लोचन करहुँ दरस जो।
राम विहारो सर्वज्ञ समधी॥

मेरी

बाँकी अदायें देखो! चंद का सा मुखड़ा पेखो (टेक)
वायु में, बहते जल में, बादल में मेरी लटके।
तारों में, नाचनी में, मोरों में मेरी मटकें॥ (टेक)
चलना ठुमक-ठुमक कर बालक का रूप धरकर।
घोंघट अधर उलटकर, हँसना यह बिजली बनकर॥ (टेक)
रायनम गुल और सूर्य, चाकर हैं तेरे पद के।
यह आन बान सज धज, ऐ राम! तेरे सदके॥ (टेक)
जगत् सारा वार डारूँ, राम तेरे नाम पर।
इन्द्र ब्रह्मा वार डारूँ, राम! तेरे नाम पर॥

मैं कैसा खूबसूरत (सुन्दर) हूँ! मेरी मोहनी मूरत, मेरी मोहनी मूरत, मेरी मलक, मेरी छलक, मेरा हुसन (सौंदर्य), मेरा तमाम

(शोभा या कान्ति), इसको मेरी आँख से अतिरिक्त किसी और की आँख देखने की ताब (शक्ति या साहस) नहीं ला सकती।

आजकल छदमणभूले से परे गंगा-तट पर पर्वतों में निवास है। गंगा क्या है विराट् भगवान् परमात्मा का हृदय। परमात्मा के हृदय या छाती पर परमात्मा का आत्मा बनकर विश्राम करता हूँ।

लेखक, राम

मेरा अटल राज, बड़े-बड़े प्रताप

(१०८६) हरद्वार, १६ सितंबर, १८६८

ॐ

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

अर्थ—उस परम स्वरूप के दर्शन से हृदय की सब ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं, सारे संशय दूर हो जाते हैं और सब कर्म नष्ट हो जाते हैं।

बाहर जिस ओर ध्यान करता हूँ, प्रत्येक परमाणु से इस ओंकार की गूँज उठती है। तत्त्वमसि (तू ही है, तू ही है)। अन्दर की ओर मुख करता हूँ अर्थात् ध्यान देता हूँ, तो यह छाल कुछ और सुनने नहीं देता। अहं ब्रह्मास्मि, अहं ब्रह्मास्मि। मैं कहाँ हूँ, क्या हूँ ?, मेरे महलों में कौन, कब, क्या, इत्यादि चूँ-चरा (क्यों, कब) का दखल नहीं। मन को बन्दरों ने छीन लिया, बुद्धि गंगा में बह गयी। चित्त का चोर्में (पशी) चाप गयी। अहंकार मछलियों की भेंट हुआ। पापों को हवा उड़ा ले गयी। सारा संसार जीत लिया है। मेरा अटल राज, बड़े-बड़े प्रताप।

नास्ति मत्तः सदानन्दमिति मे दुमति स्थिता।
क गता क्व न जानामि यदाहं तद्वपुः स्थितः॥

अर्थ —मैं ब्रह्म नहीं हूँ, ऐसी मेरी गधे की बुद्धि थी। वह ख्याल अब कहाँ छुप गया, किधर उड़ गया, कहीं दृष्टि में नहीं आता।

घशमे लैला हूँ दिले-क़ैस व दस्ते-फ़रहाद।
बोसा देना हो तो दे ले, है लबे-जाम मेरा॥

अर्थः—लैला की आँख हूँ। मजनूँ का दिल और फ़रहाद का हाथ हूँ। मेरा ओंठ समीप है, यदि चूमना हो, तो चूम ले।

—— ० ——

दुनिया नहीं, पार्वती है

(१०९०) लाहौर, २८ सितम्बर, १८९८

आ मेरे भंगिया ! तू आ भंग पी जा।
आ मेरे भंगिया ! निरंग भग पी जा॥
भर-भर देनियों में भंग दे प्याले।
निरंग भंग पी जा, निहंग भंग पी जा॥

दुनिया नहीं, पार्वती है, भंग हर वक्त घुट रही है। शिव की आँख खुली, प्याला झट हाज़िर हुआ। बल्कि इसको भंग या शराब कहना भी ठीक नहीं। यह तो शराब का नशा है, यह तो भंग की मस्ती है। आपको मेरी क़सम (शपथ), सच कहो, इस मस्ती और आनन्द के बिना जगत् तीन काल में कभी कुछ और भी हुआ है ? कदापि नहीं।

मैं यह नशा, यह मस्ती, शिव, भला क्या सोचूँ, क्या समझूँ ? राम क्या सोचे-समझे ?

(१) सोचना नामालूम (अज्ञात) वस्तु के लिये होता है, उसे सब मालूम (ज्ञात) है।

(२) सोचना ग़ायब (अदृष्ट) वस्तु के लिये होता है, उसके लिये सब हाज़िर (दृष्ट) है।

(३) सोचना किसी मुराद (इष्ट) की प्राप्ति के लिए होता है, उसको

समस्त मुरादें (इच्छायें) सदा प्राप्त हैं। जिसका संसार में सोच-समझ और बुद्धि कहते हैं, यही महान मूर्खता है।

जित देखूँ तित भरया जाम।
पी पी मस्ती आठों याम॥
नित्य तृप्त सुख-सागर नाम।
गिरे थके हम तो आराम॥
दम्या सुना खपाना काम।
तीन लोक में है विश्राम॥
क्या सोचे क्या समझे राम।
तीन काल जिसको निज धाम॥

महावाक्य

(१) बुद्ध कद के क्यों चन्न मुँह वत्ते, ओहले रहीं रखो ?
फ़क़ीरा ! आपे अल्लाह हो। (टेक)

(२) तेरे घट विच राम वसेंदा, क्यों पया भरना हैं तो ? "
(३) राम रहीम सब बंदे तेरे, मैनूँ किस दा भौ ? "
(४) तू मौला, नहीं बंदा चंदा, भुठ दी छड दे ग्यो। "
(५) छड मोहरा सुन राम दादाह, अपना आप न खोह ? "

राम

—— • ——

राम का नाच

लेखक भीष्मारामजी* । (१०९१) पत्र लामको (स्वनाधीन है)
लाहौर, १ अक्तूबर, १८९८

मा रा नफ़ुनेद यार-दरग़िम। मा गुर दम्नाम यार मे गा।

* यह पत्र गुसाईं तीर्थरामजी ने अपने गुरुजी के लिए अनेक शब्द लिखा है कि प्रथम स्थान पर गुरु का नाम भगवान के रूप में लिया गया है।

भावार्थ—मुझको आप याद कदापि नहीं करते, अथवा न करें, हम स्वय अपने अहंकार से रहित हुए याद स्वरूप हो गये हैं।

रो के जो इल्तमास की, दिल से न भूल्यो कभी।
दुई मिटा, अहद बना, उसने भुला दिया कि यूँ ॥

भावार्थ—मैंने रोकर प्रार्थना की मुझे चित्त से कदापि न भूलिये। पर उत्तर में उसने अपना द्वैत भाव मिटा दिया, और इस प्रकार से मुझे और परिच्छिन्न अपने आप दोनों को नितान्त भुला दिया।

आज तो नाचने को चित्त चाहता है।

नाचूँ मैं नटराज रे, नाचूँ मैं महराज! (टेक)

(१) सूरज नाचूँ, तारे नाचूँ, नाचूँ घन महताय रे। (टेक)
(२) तन तेरे में दम हो नाचूँ, नाचूँ नाड़ी नाव रे। ,,
(३) थावर नाचूँ, वायु नाचूँ, नाचूँ नदी अरु नाय रे। ,,
(४) पर्वत नाचूँ, समुद्र नाचूँ, नाचूँ मोपरा काज रे। ,,
(५) गीत राग सब होवत हरदम, नाचूँ पूरा साज रे। ,,
(६) घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूँ पा पा दाज रे। ,,
(७) मधुआ लम, बदमस्ती वाला, नाचूँ पी पी आप रे। ,,
(८) राम ही नाचत, राम ही गावत, नाचूँ हा निरलाज रे। ,,

———o———

व्याधिरूपी भाँडों का मुजरा (नाच)

(१०*२) ६ नवंबर, १८९८

ॐ श्री

सत्यं ज्ञानमनन्तं (ब्रह्म) आनन्दामृत, शान्ति निकेतन,
मंगलमय शिवरूपं, शुद्धमपापविद्धम् ॥

हमारे शरीररूपी महल में तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) रूपी कचनी का अपना राग रंग सुनाते और तमाशा दिखाते बहुत दूर हो गयी थी। अब

ज्वर, उदर-पीड़ा, श्वास-रोग और खाँसीरूपी भाँडों के मुजरे (नाच) की बारी थी। सो उन्होंने एक पूरा सप्ताह अपनी शोर-गुलवाली महफ़िलों से धूम मचाये रक्खी। कालिज जाना बंद रहा, आज भाई गुरुदास और पारा चूटामल भी यह तमाशा देख कर मुरारीवाला को रुख़सत हुए (गये) हैं। अमृतसर जाना हो तो वीरवार से पहले चले आना।

ॐ ॐ ॐ

—— ० ——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६३) १६ नवंबर, १८९८

हे भगवन्! घोड़ा तैयार पड़ा है। कोई आदमी मिला, तो उसके हाथ भेज दिया जायगा, आपको कोई आदमी लाहौर आनेवाला मिले तो उसके हाथ मँगा लेना। खाँसी पहले से कम है।

ॐ ॐ ॐ

—— ० ——

वास्तविक आनन्द दिन प्रति दिन बढ़ता जाता है

ॐ श्री

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६४) २० नवंबर, १८९८

शरीर में रेशा (जुकाम) अभी है। मिशन कालिज की नौकरी में शायद कोई तबदीली (हलचल) शीघ्र पड़ जाये। असली (वास्तविक) आनन्द दिन प्रति दिन बढ़ता जाता है।

> मरे न टरे न जरे हरे तम, परमानंद सो पाया।
> मंगल मोद भरयो घट भीतर, गुरु मुनि 'ब्रह्म त्वमेव' बताया॥
> लय मुझमें सब गया रहे पानी, वासुदेव मार्ह फिर भारी।
> टूटी ग्रन्थी अविद्या भारी, अघूर सत्य राम अविनाशी॥

—— ० ——

बिना कौड़ी राम बादशाह

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६५) ११ दिसंबर, १८९८

कृपापत्र मिला। जिसमें लिखा था कि "पता नहीं आप क्या ख्याल करते रहते हैं"। निश्चय जानो कि जिस तरह आपके गुजराँवाले शरीर को पता नहीं कि तीर्थराम क्या ख्याल करता रहता है, ठीक उसी तरह आपके लाहौरवाले शरीर को भी कुछ पता नहीं कि राम क्या ख्याल करता रहता है। राम में कोई ख्याल दृष्टि में नहीं आता, कोई ख्याल हो तो दिखाई दे। निःशंक स्वरूप और निर्मल चिदाकाश में ख्याल रूपी धूल कहाँ?

राम—चिदाकाश निर्मल घन माँहि।
फुरना धूल कदाचित् नाँहि॥

पत्र लिखने में देर का एक कारण यह है कि कोई कार्ड लिफाफा पास नहीं था और कोई पैसा इत्यादि भी पल्ले न था। आज एक पुस्तक में से तीन टिकट मिल गये, और आपका उत्तर माँगता हुआ कार्ड सम्मुख मौजूद पाया। पत्र लिखा गया है। यही हाल खाने पीने के सम्बन्धी पदार्थों (आटा घृत इत्यादि) के विषय में रहता है। आज लैम्प में तेल नहीं है, इसलिये आज रात घर नहीं ठहरेंगे। नगर के चारों ओर सैर की जायगी। दोनों हाथों में लड्डू हैं।

पूर्वोक्त वृत्तान्त से यह न नतीजा निकाल लेना कि हाय! हाय!! राम बड़ा तंगदस्त (धनहीन) और दुःखी रहता है, कदापि नहीं। इस बाह्य निर्धनता और तंगी के कारण से ही आत्यन्तिक (परले सिरे की) अमीरी अर्थात् धनाढ्यता और बादशाही कर रहा है। यह पाठ पक गया है कि अब किसी अर्थ को सिद्ध करने के साधन उपस्थित न हों, तो उसकी आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। (और वास्तव में जब साधन पास न हों, तो आवश्यकता का प्रतीत होना केवल झूठी भूल है)।

पहले तो बड़ी चिन्ता के साथ आवश्यकताओं को पूरा करने का यत्न हुआ करता था, पर अब आवश्यकताएँ बेचारी स्वयं पूरी होकर सम्मुख आ जायें, तो उन पर दृष्टि पड़ जाती है, नहीं तो उनके भाग्य में राम का ध्यान कहाँ? प्रारब्ध कर्म और कालरूपी सेवकों पर सौ बार आवश्यकता हो, तो आनकर राम बादशाह के चरण चूमें। नहीं तो उस शाहनशाह को क्या परवाह है इस बात की कि अमुक सेवक मुजरा कर गया है कि नहीं।

राम—सौ बार सर्व होवे तो धा धा पियें क़दम।
क्यों चर्खे-मिहरा-गार पै मायल हुआ है तू॥
ख़ंजर की क्या मजाल कि इक ज़ख़्म कर सके।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू॥

—:o—

सूर्य में न रात है न दिन

ॐ, ॐ, ॐ

संशापन पूर्वोक्त, (१०८६) १९ दिसंबर, १८९८

आनन्द, आनन्द, आनन्द, बहुत आनन्द है।

रात और दिन केवल पृथिवी ही के लिए हैं, सूर्य में न रात है न दिन है। वहाँ तो प्रकाश ही प्रकाश है। सुख-दुःख, तृष्णा और सन्ताप सांसारिक लोगों के लिए हैं, आप तो परमानन्दरूप हो। प्रकाश ही प्रकाश हो।

राम—आर्निशा का सूर्य में नाश।
सर्व प्रकाश, प्रकाश प्रकाश॥
अग्नि को ठंडक लगे, जल को लगे प्यास।
आनन्दघन राम राम में क्या भासा का भास॥

इकाई बात में मेरी असंखों रंग दीखें हैं।
मज़े करता हूँ मैं क्या क्या, अहाहाहा ! अहाहाहा !!

मेथेजी की बाईं आँख बन गयी है। बाबू नानकचंद मिश्र को खबर दे देनी। राम

—— ० ——

ॐ
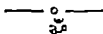
संबोधन पूर्वोक्त, (१०६७) २७ दिसम्बर, १८९८

छुट्टियों में अभी तक तो कहीं शरीर के आने की आशा नहीं, कुछ पता भी नहीं।

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥

भावार्थ—हम चल हैं, हम चल हैं नाहीं, हम नेड़े, हम दूर।
अन्दर सबके बानन हम ही, बाहर हैं हम नूर ॥

राम

—— ० ——

सन् १८९९ ई०
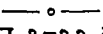
(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु २५.३ वर्ष के लगभग थी।)

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६८) ८ जनवरी, १८९९

यदि हो सके तो किसी दिन यहाँ लाहौर सशरीर ले आओ। ज़रूर। अंदर आनंद है, बाहर आनंद है। राम

—— ० ——
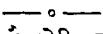
मिशन कालिज का छोड़ना और ओरियंटल कालिज में नौकरी करना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६९) २२ जनवरी, १८९९

आनन्द, आनन्द, आनन्द,

मिशन कालिज में आपकस काम छोड़ दिया हुआ है। केवल एक

घंटा अभी यहाँ काम किया जाता है। यह भी महीना आध तक छोड़ दिया जायगा। ओरियंटल कालिज में दो घंटा प्रतिदिन काम आरम्भ कर दिया हुआ है। जवाहरसिंह को कोई किसी प्रकार का पैग़ाम (संदेसा) नहीं भेजा।

राम

——०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११००) १ फ़रवरी, १८६६

स्थान—आपका दिल, तारीख़—अब।

(१) जाँ तूँ दिल दियाँ चशमाँ खोलें।
हु अल्लाह, हु अल्लाह बोलें॥
मैं मौला कि मारें चीक।
अल्लाह शाहरग थीं नजदीक॥

(२) आम शराबे — महव्वतवाला।
पी, पी हरदम रहो मतवाला॥
पी मैं पारी ला के ठीक।
अल्लाह शाहरग थीं नजदीक॥

(३) गिरजा तसबीह जंजू तोड़ें।
दीन दुनी वल्लों मुँह मोड़ें॥
आप पाक नूँ ला न लीक।
अल्लाह शाहरग थीं नजदीक॥

(४) जे हैनूँ राम मिलन दा चाओ।
ला ले छाती लग्गा दाओ॥
नाम छोड़े दा धरिया पीक।
अल्लाह शाहरग थीं नजदीक॥

(५) सुन सुन सुन लै राम दोहाई।
बे अंता क्यों अंत है पाई॥

मासिके-फ़ुल सूँ मँग न भीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक॥
(६) न दुन्या दी लेह झगड़ा।
हाहाकार न शोर मचा॥
छद रोना हस्स गाओ ते गीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक* ॥

—— o ——

मज़हबे-इश्क़ अज़ हमा मिल्लत जुदास्त।
आशिक़ों रा मज़हबो-मिल्लत ख़ुदास्त॥

भावार्थ—प्रेम का धर्म सब मतों से भिन्न है, और प्रेमियों का मत व धर्म तो केवल ईश्वर है।

—— o ——

संबोधन पूर्वोक्त, (११०१) १२ फ़रवरी, १८९९

आनंद, आनंद। पूर्ण आनंद है।
घट घट अंतर सर्व निरंतर
पूर्ण पूर सरूर रह्यो है

—— o ——

समुद्र में एक और नदी आन पड़ी

संबोधन पूर्वोक्त, (११०२) २५ फ़रवरी, १८९९

आनंद, आनंद,

आपके एक पत्र से, जो रावल्पन (संभवतः) सरदार साहबसिंहजी के

---

* यह पत्र सारा का सारा कार्ड पर छपा हुआ है। ऐसा मालूम होता है कि मुरीद नाम पत्र में गुसाईं तीर्थरामजी ने इसे कार्डों पर छपवाकर सब अपने परिचित सज्जनों के पास भेजा है।

हाथ का लिखा हुआ था, मालूम हुआ कि लड़का (पुत्र) * उत्पन्न हुआ है। समुद्र में एक नदी आन पड़े तो कुछ अधिकता नहीं हो जाती, और यदि नदी कोई न गिरे तो कुछ न्यूनता नहीं हो जाती। सूर्य का जहाँ प्रकाश हो, वहाँ एक दीपक रक्खा गया तो क्या और न रक्खा गया तो क्या। जो ठीक उचित है वह स्वतः पड़ा होगा। किसी प्रकार का शोक तथा चिंता हम क्यों करें? यह शोक या चिन्ता करना ही अनुचित है। हम ज्ञानी नहीं, ज्ञान हैं। देह से सम्बन्ध ही कुछ नहीं, देह और उसके सम्बन्धी जानें और उनकी प्रारब्ध जाने। हमें क्या?

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं।
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे॥
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायु।
चिदानन्दरूप शिवोऽहं शिवोऽहं॥

अभिप्राय—न मन हूँ न बुद्धि, न हूँ चित्त अहंकार।
नहीं कर्ण जिह्वा न चक्षु निराकार॥
न हूँ पृथिवी, अप, तेज, नाकाश इव हूँ।
चिदानन्द हूँ रूप, शंकर हूँ, शिव हूँ॥

—— o ——

गृहस्थियों की आवश्यकताओं से साधुओं की आवश्यकताओं की तुलना

संबोधन पूर्वोक्त, (११०३) ६ मार्च, १८६६
आनंद, आनंद, आनंद,

सविनय प्रार्थना यों है कि यहाँ कोई किसी प्रकार का अनुमान नहीं दौड़ाया गया। सत्तर से भी एक दो कम रुपये मास के मिले

* लड़के से अभिप्राय यहाँ गोस्वामी तीर्थरामजी के दूसरे पुत्र गोस्वामी ब्रह्मानन्दजी से है, जो आजकल किसी रियासत के बच्चों का गार्डियन (संरक्षक) है।

ये। उसमें से कौड़ी तो सचय करनी नहीं। जो जो आवश्यकतायें सामने आईं भुगत गयीं (पूर्ण की गयीं)। शेष आवश्यकताओं को जवाब देना पड़ा, अर्थात् बिना पूर्ण किये छोड़ना पड़ा। कुल (केवल) बारह रुपये घर भेजे गये, जहाँ आठ मनुष्य खानेवाले हैं। गृहस्थ, स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों को अधिक आवश्यकता होती है और अत्यन्त हाजतमंद (जरूरतोंवाले) होते हैं साधुओं की अपेक्षा कि जिनके लिये शहद की मक्खी (मधुकर) की न्याईं अनेक पुष्पों (घरों) से मधूकरी (भिक्षा) खाना भूषण है। और जो हो रहा है वह अति उचित और ठीक हो रहा है।

—— o ——

हे भगवन्!　　　　(११०४)　　　　११ मार्च, १८६६

मिशन स्कूल के दो विद्यार्थी तो ज़ेर तजवीज़ (विचाराधीन) हैं, जिनकी बाबत अभी कुछ नहीं कह सकते। बाक़ी कुल (समस्त) विद्यार्थियों के नंबर निम्न-लिखित हैं—

रामलाल, सुलतानअली, रहीमबख्श, गुरुदास, बिहारीलाल, सावनमल,
४४१　　५०८　　५१४　　५५१　　४४७　　३६८

बेलीराम, महम्मदहसन, मुहम्मदअली, मतिराम, लाभचन्द, रलाराम,
३३३　　२५६　　३५०　　३७६　　३२७　　३०२

बद्रीनाथ, हरिचंद, जार्ज, मेदूक, मुहम्मद अफ़ज़ल, दीवानचंद, प्रभुदयाल,
१३४　　३३३　　१०२　　३००　　४१६　　२१४　　२३१

अब्दुलहाजी, हंसराज, हरिचंद प्रथम, दीवानचंद, बलवंतसिंह, मूलराज,
२५८　　२७३　　५७८　　४६८　　२२६　　२५४

केसरमल, सरदारीमल, चौंडीराम, बोधराज, अराकामल, छज्जाराम,
३४६　　३७६　　४४३　　४६७　　४२६　　४८२

गुलामसुहम्मद, मोहनलाल, दीनानाथ, इक़बालसिंह, अमरसिंह,
४४४　　३३८　　३३७　　२६८　　३२३

मुहम्मदरमज़ान, गंडामल।
१०६ ४३४

साँड का कुत्ता गधा चूहा चल्ला।
मुँह में डालो चायक्म है साँड का॥

आपका अपना आप, राम

प्रारब्ध और काल हाथ बाँधे गुलाम (दास) हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (११०४) १७ मार्च, १८९९

विचाराधीन विद्यार्थियों (Students under consideration) की बाबत दरियाफ्त करना अभी उचित नहीं है। कल परसों तक शायद सूचना दी जाये।

प्रारब्ध और काल प्रत्येक व्यक्ति के हाथ बाँधे गुलाम (दास) हैं। इसमें संशय करना ही अज्ञान है।

आपका राम

चेतन में फुरने (स्फुरण) का अभाव

संबोधन पूर्वोक्त, (११०६) १७ मार्च, १८९९

आनंद, आनंद,

कूटस्थ चेतन या साक्षी चेतन में फुरने या ख्याल का नाममात्र भी नहीं। उससे गिरकर अर्थात् उस अवस्था से उतर कर ही मनुष्य के दिल में फुरणा भासता है।

जैसा जी (चित्त) चाहे सरनामा लिखो, सब मंगलमय, आनंद-रूप, शुद्धस्वरूप ही है।

मिल गया माल तो क्या परवाह।
उतर गयी खाल तो क्या परवाह।

आपका राम

ॐ श्री

महानन्द आपका स्वरूप है

श्रीमहाराजजी,　　　　(११०७)　　　　८ जुलाई, १८६६

महात्मा तो आनन्दघन होते ही हैं। महानन्द आपका स्वरूप है। यहाँ फ़िक्र और कदूरत अर्थात् चिन्ता और मलिनता का क्या काम ?

सूरज में अहर्निश का नाश।
अहं प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश॥
कहूँ क्या हाल इस दिल का कि शादी मौज मारे है।
है इक उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा अहाहाहा॥

आपका राम

—— o ——

पत्र न लिखने का कारण

(११०८)　　　　२२ नवंबर, १८६६

पीतम पतियाँ तब लिखूँ, जब तुम होव विदेश,
तन में, मन में, नैन में, ताको क्या संदेश* ?

—— o ——

राम सर्वत्र

(११०६)　　　　२६ नवंबर, १८६६

मनम खुदाए-यगाँगे-यलन्द मे गोयम।
हरों कि परतौ दिहद मिहरा-माह रा ओयम॥

भावार्थ—'मैं मस्त हूँ,' यह गरज कर मैं कहता हूँ। और जो सूर्य और चन्द्र को प्रकाश देता है वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा मैं हूँ।

—— o ——

* इस पत्र में केवल यह दोहा ही लिखी हुई थी, इससे अतिरिक्त और कुछ नहीं।

ईशावास्योपनिषद् के मंत्र ८ में ज्ञानवान् की उपमा में वेद ऐसे कहता है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य ।

भावार्थ—(१) है शुहीदो-मनज्ज़हो वो अवदाँ ।
रगो-पै है कहाँ, हम वाँ, हम याँ ॥
(२) वह बरी है गुनाहों से रिंदि-पामाँ ।
वस्ता-नेक का उसमें नहीं है निशाँ ॥
(३) वह बसुर्गो-बसुग़ा है राहते-जाँ ।
वह है पाका से पाला, व नूरे-जहाँ ॥
(४) वही खुद है जुनों व मूँ ख़िमियाँ ।
दिये उसने अज़ल में हैं रँगतो-शाँ ॥
(५) यही राम है दीनों में सबके निहाँ ।
यही राम है बहर में बर में अयाँ ॥
मन हमान मन हमानं मन हमाँ ।
हर कुजा बरामत ख़िज़द जुज़ मन मबाँ ॥

भावार्थ—मैं वही हूँ, मैं वही हूँ, मैं वही हूँ, और जहाँ भी तेरी दृष्टि पड़े उसे तू मेरे से भिन्न मत समझ ।

राम

—— ० ——

(१११०) १ दिसंबर, १८९९

बिगड़े सों जे होय कुछ बिगड़नवाली शय ।
अकाश अछेद्य अशोष्य को कौन राक्षस को भय ॥

—— ० ——

परमहंस स्वामी रामतीर्थ

लखनऊ (संन्यासाश्रम की पहली फोटो) १९०२
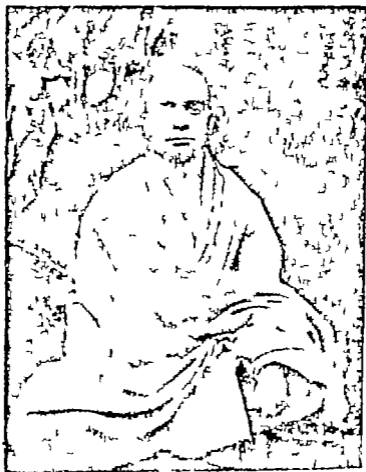
SWAMI RAMA TIRTHA

(First photo as Sannyasin)

Lucknow 1902

सन् १९०० ईसवी

(इस वर्ष के आरम्भ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु २६½ वर्ष के लगभग थी।)

(११११)　　　　४ जनवरी, १९००

ॐ नारायण,

ॐ आनन्द　　　　ॐ आनन्द　　　　ॐ आनन्द

राम

—o—

आनन्द प्रेस का खुलना और मासिक पत्र अलिफ़ का प्रकाशित होना

(१११२)　　　　६ जनवरी, १९००

ॐ नारायण,

शांतं, शिवं, अद्वैतं, ॐ शांति, शांति, शांति,

आनन्द,　　　　आनन्द,

भगवन्, वेतन अभी नहीं मिला। जब मिलेगा, कुछ खर्च (भेंट) हो जायेगी। *लोग यहाँ रात को उपनिषदें पढ़ने आया करते थे। उन्होंने

---

* नारायण और बाबू हरलाल डिस्ट्रिक्ट नाज़र लाहौर दोनों गुसाईं तीर्थरामजी के पास रात्रि को उपनिषदें पढ़ने आया करते थे। और इन्हीं [illegible] के पश्चात् गुसाईंजी की आज्ञा पर आनन्द प्रेस खोला गया था और उसमें एक मासिक पत्र अलिफ़ नाम का प्रकाशित किया गया था, जिस समस्त कार्य का प्रबन्धकर्ता नारायण नियत हुआ था। इस पत्र के केवल १ नम्बर निकलने पाने के बाद गुसाईंजी वानप्रस्थाश्रमी होकर वनों में चल दिये। और तत्पश्चात् इसी सन के अन्त में वह सन्यासाश्रम में प्रविष्ट हुए।

एक प्रेस (छापाखाना) खोला है, केवल इस नीयत (निश्चय) से कि जो कुछ यहाँ से पढ़ें, वह छपवा दें। साथ इसके यह रिसाला (मासिक पत्र) बल्कि रसूल (अलिफ़ नाम का) प्रकाशित किया गया है। आपकी सेवा में तीन कापियाँ भेजी जाती हैं। एक आपके लिये, दो जिस-जिस को आप उचित समझें दे दें। विज्ञापन भी साथ भेजे गये हैं, सत्संगियों में बटवा देने। यह आपका अपना काम है। आनन्द आनन्द।

बस कर जी, हुन बस कर जी।
काई गल्ल असाँ नाल हस कर जी॥

—— o ——

* सन् १६०६ इसवी

(११११) सितंबर, १६०६

(पूर्णसिंहजी के द्वारा भेजा हुआ पत्र)

मे, भेद ते भर्म दी माड़ियाँ ते।
हल बाह सुहागड़ा फेर दित्ता॥
फर्श कर्श ते रार्श दे बेलड़े नूँ।
अग्ग ला के शेर नूँ घेर लित्ता॥
बिना राम दे नाम भी होरदा सी।
सुरग कड्ड पलीतड़ा गेर दित्ता॥

* गृहस्थाश्रम छोड़ने के पश्चात् अर्थात् सन् १६ के पीछे स्वामीजी का पत्र-व्यवहार पूर्व आश्रम सम्बन्धी पुरुषों से नितान्त बन्द रहा था, इसलिये भगतजी को इन ६ वर्षों के भीतर-भीतर कोई पत्र नहीं भेजा गया। अगस्त सन् १६०६ में स्वामीजी के प्रिय भक्त सरदार पूर्णसिंहजी लाहौर से जंगलों में केवल दर्शनार्थ आये थे और भगत धन्नारामजी से मुलाम संदेशा भी लाये थे जिसके उत्तर में स्वामीजी ने यह पत्र लिखकर उन्हीं (सरदार पूर्णसिंहजी) के हाथ से भेज दिया। यह पत्र स्वामीजी के शरीरत्याग से केवल एक दो मास ही पहिले भेजा गया था।

परमहंस स्वामी रामतीर्थ

लखनऊ (ध्यानावस्था में) १९०५

SWAMI RAMA TIRTHA

(In Meditation mood)

Lucknow 1905

अज नूरहा शूकदा हद आया।
दशों दिशा आनन्द ख़ज़ेर दिला॥

भावार्थ—द्वैत दृष्टि अथवा भाव को हमने ज्ञानरूपी हल से नितान्त मिटा दिया है। सर्व प्रकार के भ्रमों की नौका को ज्ञानाग्नि से जला दिया है, और उस नौका के अन्दर जो सिंह (अभिमान इत्यादि) था, उसे वश में कर लिया है। और जो कुछ ब्रह्मभाव से अतिरिक्त दृष्टि में आता था उसे ज्ञान की ज्वाला से नितान्त नाश कर दिया है। अब आनन्द और प्रकाश की धारा उमड़ उमड़ कर अन्दर से बह रही है, और चारों ओर आनन्द बिखर रहा है।

अब मुक़ाम (स्थान)—हज़ूरका दिल (आपका हृदय)

भल्ला भल्ला जानियाँ मौजाँ क़ुद्रियाँ ज्ञानियाँ।
ख़ुशी रहना कार है, सोग सोगयाँ ख़ार है॥

——०:——

(निम्नलिखित पत्रों की असल कापी नहीं मिलती, पर निर्धन गुजराँवाला से प्रकाशित उर्दू-आवृत्ति में ये छप हुए हैं, अतएव उन्हें अंत में दे दिया है)

समोधन पूर्वोक्त,　　　　(१११४)　　　　लाहौर, २८ मई, १८८८

जनाब श्रीभगतजी महाराज, दाम अल्ताफ़हू मरथा टेकना, मैं रविवार प्रातः को यहाँ पहुँच गया हूँ, और आपकी कृपा का अति आभारी हूँ। और आप आने की ख़बर दें कि यहाँ कब तशरीफ़ लाओगे। लाला अयोध्यादास यहाँ पहुँच गया है और मकान की बाबत आपका क्या इरादा है। नित्य मुक़र्रर दया दृष्टि रखा करो। इति।

आपका दास तीर्थराम, लाहौर मिशन कालिज

——०——

स्वामी राम की आज्ञा पर नारायण स्वामी का पत्र भगत धन्नारामजी के नाम

सम्बोधन पूर्वोक्त, (१११५) देवप्रयाग, १ जनवरी, १९०१

ॐ जय, जय, आनंद ! आनंद !!

भगवन्,

स्वामी रामतीर्थजी महाराज (मुरालीवाले के) जो आजकल हिमालय में एकांत सेवनार्थ आये हुए हैं। उन्होंने वार्तालाप में कई एक बार आपको याद फरमाया था और आपके साथ अपने प्रेम व भक्ति की दास्तानें (कथा व वृत्तांत) हम लोगों को सुनाई थीं, जिस पर आज्ञा हुई कि कोई याददाश्त (स्मृति, यादगार) आपकी सेवा में भेजी जाय। अतएव आपकी सेवा में दो रिसालों का एक पैकट (जिसमें स्वामीजी महाराज के लेक्चर छपे हैं) बहुत प्रेम व सत्कार (प्रतिष्ठा) के साथ भेजा है। भविष्य के रिसाले नंबर भी शायद आपकी सेवा में पहुँचते रहेंगे, क्योंकि संपादक महोदय को आपके लिए लिख दिया है। और सबको ॐ आनंद, ॐ आनंद। आज टेहिरी का हम लोग जाने लगे हैं।*

आपका अपना

नारायण स्वामी

शिष्य स्वामी रामतीर्थजी महाराज

डाकघर देवप्रयाग, जिला गढ़वाल (हिमालय)

---

* अमरीका आदि विदेशों का भ्रमण करने के बाद जब राम नवम्बर १९०२ में हिमालय में देवप्रयाग के समीप व्यासघाटी के सामने 'वी' के जंगल में एकांत निवास करने गये तो उन दिनों वहाँ नारायण स्वामी उनके साथ उनकी सेवा में था। वार्तालाप में कई एक बार भगत धन्नारामजी का चर्चा आया था जिस पर नारायण को पत्र लिखने की आज्ञा हुई और नारायण ने उपर्युक्त पत्र भेजा।

श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग के ग्रंथ—हिंदी में

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१	श्रीरामतीर्थ-ग्रंथावली २८ भागों में, पूरा सेट	१०)	१५)
	फुटकर भाग	।)	॥)
२	उक्त ग्रंथावली की सशोधित आवृत्ति के पहले १८ भाग छः जिल्दों में। प्रति जिल्द	१)	१॥)
३	बादशाह (राम बादशाह के १० हुक्मनामे)		१)
४	राम-वर्षा भाग १-२ एक जिल्द में	१)	१॥)
५	खुम-खाना-ए-राम (कुल्लियाते-राम) जिल्द प्रथम (जिसमें रिसाला अलिफ़ के पहले १२ नंबर हैं)	१)	१॥)
६	वृहत् राम-जीवनी (उर्दू कुल्लियाते-राम, जिल्द दूसरी का हिंदी-अनुवाद) पृष्ठ ६७२	२॥)	३)
७	श्रीमद्भगवद्गीता, श्री० आर० एस० नारायण स्वामी-कृत व्याख्या-सहित, दो जिल्दों में, पृष्ठ लगभग २०००	४)	६)
	प्रति जिल्द	२)	३)

आत्मदर्शी बाबा नगीनासिंह बेदी-कृत

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
८.	वेदानुवचन, प्रथम आवृत्ति, पृष्ठ लगभग ५५०	१॥)	१॥।)
	,, द्वितीय आवृत्ति पृष्ठ लगभग ७१५	२॥)	३)
९.	आत्मसाक्षात्कार की कसौटी, पृष्ठ १७२	।)	॥)
१०	रिसाला मजामुल-इल्म अर्थात् भगवत्-ज्ञान के विविध रहस्य, पृष्ठ १६०	।)	॥)

उर्दू में

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१	कुल्लियाते-राम जिल्द १ (रिसाला अलिफ़ के एक वर्ष के १७ अंक), पृष्ठ लगभग ५००	१॥)	२)
२.	कुल्लियाते-राम जिल्द २ (अर्थात् स्वामी राम की सविस्तर जीवनी), पृष्ठ लगभग ५००	१॥)	२)
३	कुल्लियाते राम जिल्द ३ (अर्थात् राम बादशाह के १२ हुक्मनामे) पृष्ठ लगभग ४००	१॥)	२)
४	राम-वर्षा, दोनों भाग एक जिल्द में पृष्ठ लगभग ५२५	१)	१॥)
५	खतूते-राम (गुरु जी के नाम राम के पत्र) पृष्ठ २०८	।)	॥)
६	संक्षिप्त राम-जीवनी, साइज़ छोटा, पृष्ठ लगभग १३०	॥)	१)

सं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
	आत्मदर्शी बाबा नगीनासिंह बेदी-कृत		
७	वेदानुवचन (वेदों का सार), पृष्ठ लगभग ५२०	१॥)	३)
८	मियारुल मिकाशफ़ा, पृष्ठ लगभग १७०	॥)	१)
९	रिसाला अजायबुल-इल्म, पृष्ठ लगभग १२०	।=)	॥।)
१०	जगजीत-प्रश्न (ईशावास्योपनिषद् की शांकर भाष्यानुसार व्याख्या) पृष्ठ लगभग १००	।=)	॥)

अँगरेज़ी में

सं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१	स्वामी राम के समग्र अँगरेज़ी उपदेश व लेख, आठ जिल्दों में, पूरा सेट बिना कमीशन	७)	१४)
	प्रति जिल्द	१)	२)
२	पैरेबल्स आफ़ राम (उक्त उपदेशों में स्वामी राम से वर्णित समग्र कहानियाँ), पृष्ठ लगभग ५००	२)	३)
३	स्वामी राम की नोटबुक्स, दो जिल्दों में ..	२)	४)
	प्रति जिल्द ..	१।)	२)
४	सरदार पूर्णसिंह-कृत स्टोरी आफ़ स्वामी राम द्वितीयावृत्ति, पृष्ठ लगभग १९५	२॥)	३)
५	पं० ब्रजनाथ शर्मा-कृत स्वामी राम की सविस्तर जीवनी और उपदेश-सार, पृष्ठ ७५० के ऊपर	३)	३॥)
६	हार्ट आफ़ राम	।)	
७	पोइम्स आफ़ राम	।)	॥)
८	संक्षिप्त राम-जीवनी सहित गणित पर के व्याख्यान के		।=)
९	प्रैक्टिकल गीता (बा० नारायणस्वरूप-कृत)		।)

स्वामी राम के छपे चित्र भिन्न-भिन्न आकृति में

प्रति चित्र सादा)॥, तिरंगा बड़ा =), छोटा -)

राम कैलेंडर (जिसमें अति सुंदर तिरंगा चित्र छपा हुआ है), प्रति कापी सहित तारीख के =)

मैनेजर—श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग, लखनऊ.